"અહો ! શ્રુતજ્ઞાનમ્" ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૧૭૦

યોગ ચિંતામણિ સટીક

: દ્રવ્ય સહાયક :

પૂ. આચાર્ય શ્રી ૐકારસૂરિજી સમુદાયના
પૂ. સાધ્વીજી શ્રી કૈવલ્યરત્નાશ્રીજી મ.સા. ની પ્રેરણાથી
ૐકારસૂરિજી આરાધના ભવન,
એમ.એમ. જૈન સોસાયટી, સાબરમતીના
જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-૫
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૬૯ ઈ. ૨૦૧૩

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६५ (ई. 2009) सेट नं.-१

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रमांक	पुस्तकनुं नाम	कर्त्ता-टीकाकार-संपादक	पृष्ठ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454
026	तत्त्पोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192

030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	**824**
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	**288**
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**520**
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**578**
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**278**
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**252**
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**324**
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – બાબુલાલ સરેમલ શાહ
શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.
(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.ahoshrut.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**374**
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**238**
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	**194**
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**192**
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	**254**
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**260**
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**238**
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**260**
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	**114**
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	**910**
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	**436**
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	**336**
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	**230**
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	**322**
089	ઐન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	**114**
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	**560**

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाशः	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भाषवति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६९ (ई. 2013) सेट नं.-५

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
154	उणादि सूत्रो ओफ हेमचंद्राचार्य	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	जोहन क्रिष्टे	304
155	उणादि गण विवृत्ति	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	पू. मनोहरविजयजी	122
156	प्राकृत प्रकाश-सटीक	भामाह	व्याकरण	प्राकृत	जय कृष्णदास गुप्ता	208
157	द्रव्य परिक्षा और धातु उत्पत्ति	ठक्कर फेरू	धातु	संस्कृत /हिन्दी	भंवरलाल नाहटा	70
158	आरम्भसिध्धि – सटीक	पू. उदयप्रभदेवसूरिजी	ज्योतीष	संस्कृत	पू. जितेन्द्रविजयजी	310
159	खंडहरो का वैभव	पू. कान्तीसागरजी	शील्प	हिन्दी	भारतीय ज्ञानपीठ	462
160	बालभारत	पू. अमरचंद्रसूरिजी	काव्य	संस्कृत	पं. शीवदत्त	512
161	गिरनार माहात्म्य	दौलतचंद परषोत्तमदास	तीर्थ	संस्कृत /गुजराती	जैन पत्र	264
162	गिरनार गल्प	पू. ललितविजयजी	तीर्थ	संस्कृत/गुजराती	हंसकविजय फ्री लायब्रेरी	144
163	प्रश्नोत्तर सार्ध शतक	पू. क्षमाकल्याणविजयजी	प्रकरण	हिन्दी	साध्वीजी विचक्षणाश्रीजी	256
164	भारतिय संपादन शास्त्र	मूलराज जैन	साहित्य	हिन्दी	जैन विद्याभवन, लाहोर	75
165	विभक्त्यर्थ निर्णय	गिरिधर झा	न्याय	संस्कृत	चौखम्बा प्रकाशन	488
166	व्योम वती-१	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत युनिवर्सिटी	226
167	व्योम वती-२	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत विद्यालय	365
168	जैन न्यायखंड खाद्यम्	उपा. यशोविजयजी	न्याय	संस्कृत /हिन्दी	बद्रीनाथ शुक्ल	190
169	हरितकाव्यादि निघंटू	भाव मिश्र	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	शीव शर्मा	480
170	योग चिंतामणि-सटीक	पू. हर्षकीर्तिसूरिजी	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	लक्ष्मी वेंकटेश प्रेस	352
171	वसंतराज शकुनम्	पू. भानुचन्द्र गणि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	खेमराज कृष्णदास	596
172	महाविद्या विडंबना	पू. भुवनसुन्दरसूरि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	सेन्ट्रल लायब्रेरी	250
173	ज्योतिर्निबन्ध	शिवराज	ज्योतिष	संस्कृत	आनंद आश्रम	391
174	मेघमाला विचार	पू. विजयप्रभसूरिजी	ज्योतिष	संस्कृत/गुजराती	मेघजी हीरजी	114
175	मुहूर्त चिंतामणि-सटीक	रामकृत प्रमिताक्षय टीका	ज्योतिष	संस्कृत	अनूप मिश्र	238
176	मानसोल्लास सटीक-१	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	166
177	मानसोल्लास सटीक-२	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	368
178	ज्योतिष सार प्राकृत	भगवानदास जैन	ज्योतिष	प्राकृत/हिन्दी	भगवानदास जैन	88
179	मुहूर्त संग्रह	अंबालाल शर्मा	ज्योतिष	गुजराती	शास्त्री जगन्नाथ परशुराम द्विवेदी	356
180	हिन्दु एस्ट्रोलोजी	पिताम्बरदास त्रीभोवनदास	ज्योतिष	गुजराती	पिताम्बरदास टी. महेता	168

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७१ (ई. 2015) सेट नं.-६

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
181	काव्यप्रकाश भाग-१	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	364
182	काव्यप्रकाश भाग-२	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	222
183	काव्यप्रकाश उल्लास-२ अने ३	उपा. यशोविजयजी		संस्कृत	यशोभारति जैन प्रकाशन समिति	330
184	नृत्यरत्न कोश भाग-१	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	156
185	नृत्यरत्न कोश भाग-२	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	248
186	नृत्याध्याय	श्री अशोकमलजी		संस्कृत /हिन्दी	श्री वाचस्पति गैरोभा	504
187	संगीरत्नाकर भाग-१ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	448
188	संगीरत्नाकर भाग-२ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	444
189	संगीरत्नाकर भाग-३ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	616
190	संगीरत्नाकर भाग-४ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	632
191	संगीत मकरन्द	नारद		संस्कृत	श्री मंगेश रामकृष्ण तेलंग	84
192	संगीत नृत्य अने नाट्य संबंधी जैन ग्रंथो	श्री हीरालाल कापडीया		गुजराती	मुक्ति-कमल-जैन मोहन ग्रंथमाला	244
193	न्यायबिंदु सटीक	पूज्य धर्मोतराचार्य		संस्कृत	श्री चंद्रशेखर शास्त्री	220
194	शीघ्रबोध भाग-१ थी ५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	422
195	शीघ्रबोध भाग-६ थी १०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	304
196	शीघ्रबोध भाग-११ थी १५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	446
197	शीघ्रबोध भाग-१६ थी २०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	414
198	शीघ्रबोध भाग-२१ थी २५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	409
199	अध्यात्मसार सटीक	पूज्य गंभीरविजयजी		संस्कृत/गुजराती	नरोत्तमदास भानजी	476
200	छन्दोनुशासन	एच. डी. वेलनकर		संस्कृत	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ	444
201	मग्गानुसारिया	श्री डी. एस शाह		संस्कृत/गुजराती	ज्ञातपुत्र भगवान महावीर ट्रस्ट	146

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com

शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७२ (ई. 201६) सेट नं.-७

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची ।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
202	आचारांग सूत्र भाग-१ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	285
203	आचारांग सूत्र भाग-२ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	280
204	आचारांग सूत्र भाग-३ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	315
205	आचारांग सूत्र भाग-४ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	307
206	आचारांग सूत्र भाग-५ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	361
207	सुयगडांग सूत्र भाग-१ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	301
208	सुयगडांग सूत्र भाग-२ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	263
209	सुयगडांग सूत्र भाग-३ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	395
210	सुयगडांग सूत्र भाग-४ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	386
211	सुयगडांग सूत्र भाग-५ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	351
212	रायपसेणिय सूत्र	श्री मलयगिरि	गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	260
213	प्राचीन तीर्थमाळा भाग-१	आ.श्री धर्मसूरि	सं./गुजराती	श्री यशोविजयजी ग्रंथमाळा	272
214	धातु पारायणम्	श्री हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	आ. श्री मुनिचंद्रसूरि	530
215	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-१	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	648
216	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-२	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	510
217	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-३	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	560
218	तार्किक रक्षा सार संग्रह	आ. श्री वरदराज	संस्कृत	राजकीय संस्कृत पुस्तकालय	427
219	वादार्थ संग्रह भाग-१ (स्फोट तत्त्व निरूपण, स्फोट चन्द्रिका, प्रतिपादिक संज्ञावाद, वाक्यवाद, वाक्यदीपिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	88
220	वादार्थ संग्रह भाग-२ (षट्कारक विवेचन, कारक वादार्थ, समासवादार्थ, वकारवादार्थ)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	78
221	वादार्थ संग्रह भाग-३ (वादसुधाकर, लघुविभक्त्यर्थ निर्णय, शाब्दबोधप्रकाशिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	112
222	वादार्थ संग्रह भाग-४ (आख्यात शक्तिवाद छः टीका)	रघुनाथ शिरोमणि	संस्कृत	महादेव शर्मा	228

॥ श्रीः ॥

श्रीमद्भिषक्छिरोमणि श्रीहर्षकीर्तिनिर्मितः ।

योगचिन्तामणिः ।

माथुरवंशावतंस श्रीयुत कन्हैय्यालाल पाठकतनय

दत्तरामचौबेकृत-

माथुरीमंजूषाभाषाटीकासहितः ।

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक-"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,

कल्याण--बम्बई.

संवत् २०१०, शके १८७[illegible]

1954

प्रस्तावना।

आजतक भगवदवतार धान्वन्तरिजी जिस वैद्यकशास्त्रको भूमण्डलमें प्रसिद्ध किया है, उस विषयमें हजारों ग्रन्थ प्रचलित हुए है कि, जिनमें न्यारा न्यारा विचार करके रोगोंका निदान और निराकरण कहा है, इन ग्रंथोंका भली-भाँति ज्ञान होना साधारण श्रेणीके मनुष्योंको दुर्लभ था. इस कारण श्रेष्ठ वैद्योंने इन ग्रन्थोंके तात्पर्य लेकर अनेक ग्रंथोंकी रचना किये हैं. तदन्तर्गत " **योगचिन्तामणि** " नामक ग्रन्थ वैद्यवराग्रगण्य **श्रीहर्षकीर्तिजीने** निर्मित किया, इसमें प्रत्येक रोगोंका निदान, पूर्वरूप अच्छे प्रकार कथन कर उनके ऊपर कषाय, रसायन, मात्रा, पाक, चूर्ण; तेल, गुटिका, अवलेह इत्यादि सर्व रोगोंकी औषधी विचारपूर्वक वर्णन की है और समस्त औषधि बनानेकी विधिभी सुगमतासे कही है ऐसे लाभदायक ग्रंथका ज्ञान प्राकृत मनुष्योंको भी हो इसलिये माथुरवंशावतंस श्रीयुत कन्हैयालालपाठकसूनु **दत्तराम** चौबेजीने " **माथुरीमंजूषा** " भाषाटीका बनाकर प्रथम 'श्यामकासी यंत्रालय' मथुराजीमें छपवाया था, परंतु पुस्तक रुचिर आकृतिमें न होनेसे भिषग्वरोंको उपयोगी न हुआ, अत एव चिकित्साभिलाषियोंके सौलभ्यार्थ हमने टीकाकारसे सब ग्रंथाधिकार लेकर राजिस्टरी कराय सुन्दर टैपके अक्षरोंमें चिकने कागजपर शुद्धतापूर्वक मुद्रितकिया है। टीका बहुत

Aho ! Shrutgyanam

सुगम और उत्तम स्पष्ट है जिसके द्वारा सर्वसामान्य जनोंको भी बोध हो सकता है।

अबकी बार फिरभी शुद्ध कराय उत्तमतासे मुद्रित कर प्रकाशित करता हूं, आशा है कि अनुग्राहक ग्राहक इसे स्वीकार कर स्वयं लाभ उठावेंगे और हमारेभी परिश्रमको सफल करेंगे।

आपका कृपाभिलाषी-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक-"**लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर**" स्टीम्-प्रेस, कल्याण-मुंबई.

Aho ! Shrutgyanam

श्रीः ।

योगचिन्तामणिः-विषयानुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठ.
पाकाधिकारः १.	
मंगलाचरणम्	१
वैद्यके लक्षण और कर्तव्य	२
नाडीपरीक्षा	,,
मूत्रपरीक्षा	६
नेत्रपरीक्षा	१०
मुखपरीक्षा,	११
जिह्वापरीक्षा	१२
मलपरीक्षा,	,,
शब्दपरीक्षा, स्पर्शपरीक्षा,	१४
आयुर्विचार	,,
आयुर्लक्षण,	,,
कालज्ञान	१५
देशज्ञान	१६
औषधोंके (मागध) मानकी परिभाषा	१७
अथ शारीरक	२१
अथ पाकविधि,	२५
तत्रादौ शिक्षा	,,
बृहत्पूगीपाक	२९
कामेश्वर मोदक, छोटा सुपारीपाक	३१
विजयापाक	३२
कामेश्वरपाक (दूसरा विजयापाक)	३४
स्त्रीयोग्य सौभाग्यशुण्ठी	३५
सौभाग्यशुण्ठी,	३६
आम्रपाक	३७
बृहद् मुसलीपाक	३९
नारियलपाक	४३
गोखरूपाक १-२	४४
कौंचपाक	४६
पीपलपाक १-२	४७
पेठ पाक १-४	४९
असगन्धपाक	५२
अफीमपाक,	५५
दोला यन्त्र	५६
अगस्त्यहरीतकी,	,,
मधुपक्वहरीतकी	५७
आमलापाक (च्यवनप्राश)	५९
अडूसापाक १-२	६०
नारंगीपाक,	६२
कटेरीपाक	६३
भिलावापाक	६४
सूरणपाक	६५
आदरकपाक	६६
लहसनपाक	६७
स्त्रीयोग्य कसेलापाक,	६८
अण्डीपाक	६९

Aho ! Shrutgyanam

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
चूर्णाधिकारः २.		अमलवेतसचूर्ण	९८
कुंकुमादिचूर्ण	७१	अतीसारे–लघुगंगाधरचूर्ण	,,
लवंगादिचूर्ण, बृहल्लवङ्गादिचूर्ण	७२-७३	अतीसारे वृद्धगंगाधरचूर्ण	९९
पिप्पल्यादिचूर्ण	७५	कपित्थाष्टकचूर्ण	,,
शुण्ठ्यादिचूर्ण, त्रिकुटादिचूर्ण	,,	यवान्यादिचूर्ण	१००
एलादिचूर्ण १–४	,,	दाडिमाष्टकचूर्ण	,,
श्वासमे एलादिचूर्ण, चातुर्जातकचूर्ण	७८	उरःक्षतशिरोगमें वचादिचूर्ण	१०१
त्रिजातादिचूर्ण, त्रिफलादिचूर्ण	७९	दन्तपीडामे जातीपत्रादिचूर्ण	१०२
तालीसादिचूर्ण १–२	८०	दन्तमसी,	१०३
गगनेशयचूर्ण, सितोपलादिचूर्ण	८२	कायाकल्पमें भृङ्गराजचूर्ण	,,
श्रीखण्डादिचूर्ण	८३	आमलकादिचूर्ण	१०४
शंखादिचूर्ण, कायफलादिचूर्ण	८४	स्तंभनचूर्ण	,,
षड्योगचूर्ण, मिश्रादिचूर्ण,	,,	बुद्धिवृद्धिके लिये सारस्वतादिचूर्ण	१०५
कीटकादिचूर्ण, पञ्चनिम्बचूर्ण,	८५	**गुटिकाधिकारः ३.**	
सुदर्शनचूर्ण	८६	रुचिकर अमृतप्रमानाम	
षोडशांगचूर्ण, अरिष्टादिचूर्ण	८८	गुटिका १–२	१०७
शृंग्यादिचूर्ण, लवणभास्करचूर्ण,	८९	वटप्रवाहादिगुटिका, राज-	
वज्रक्षारचूर्ण	९०	गुटिका १–२	१०८
विडलवणादिचूर्ण सामुद्रिकचूर्ण	९१	उन्मत्तलीगुटिका, गुडचतु-	
हिंग्वष्टकचूर्ण, हिंगुपंचक चूर्ण	९२	ष्पयवटिका	१०९
हिंग्वग्योविंशतिचूर्ण	,,	मूषणादिवटिका,	,,
तुम्बरादिचूर्ण, अजमोदादिचूर्ण	९३	कांकायनीगुटिका	११०
उदरविकारमें विजयचूर्ण,	९४	अभयादिमोदक	१११
नारायणचूर्ण	९५	अजमोदादिगुटिका याचूर्ण १–२	११२
त्रिलवणादिचूर्ण	९६	उदरविकारमें एलादिवटिका	,,
क्षीरामृत	९७	पाण्डुरोगमें नवरसादिगुटिका	११४

Aho ! Shrutgyanam

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
वृद्धिनवरसगुटिका	११४	ग्रहणीकपाटगुटिका	१३३
प्रमेहमें चन्द्रकलागुटिका	११५	एलादिगुटिका, तालीसादिगुटिका	१३४
पीनसादिमें व्योषादिगुटी, मरिचादिगुटी	,, ११६	कामदेवगुटिका	१३५
खैरसारादिगुटिका	,,	लघुकामेश्वरगुटिका	१३६
बीजपूरादिवटिका	११७	स्तम्भनगुटिका, नेत्राम्बुजवटी	,,
कासरोगमें बबूलगुटिका	,,	चन्द्रप्रभावर्त्तिः	१३७
आमलादिवटिका	११८	नेत्रस्राव गुटिका, रात्र्यन्धतायां गुटिका	१३८
शंखवटी १–२	,,	सप्तामृतगुटी, अतिनिद्रायां गुटिका	,,
चतुरशीतिवाते अमरसुन्दरी गुटिका	११९	नयनामृताञ्जनम्	१३९
विजयादिगुटिका	,,	बावले कुत्तेके काटनेपर गोली	१४०
क्षयरोगमें शिवागुटी, शिवगुटिका	१२२	कुष्ठविकारे त्रिफलादिगुटिका	१४१
ज्वरघ्नी गुटी	१२४	सञ्जीवनी गुटिका	१४३
विरेचननाम गुटिका	१२५	**क्वाथाधिकारः ४.**	
विषूचिकाहरगुटिका	१२६		
विषूचिकामें अंजनगुटिका	१२७	तत्रादौक्वाथभेदाः	१४४
प्रचेतागुटिका	,,	सर्ववायुविकारे रास्नादिक्वाथः	१४५
सर्षपादिगुटिका, चिन्तामणिरसगुटिका	१२८	लघुरास्नादिक्वाथः, सान्निपातलक्षणम्	१४६
वडवानलरसगुटिका	१२९	सन्निपाते हरीतक्यादिक्वाथः	१४७
पंचाननरसगुटिका १–३	,,	सन्निपाते तगरादिक्वाथः	,,
ज्वरांकुशरसगुटिका	१३१	सन्निपाते दाहस्थानम्	१४८
घोडाचोली,	,,	सन्निपाते भार्ङ्ग्यादिक्वाथः	१४९
प्रभावती गुटिका	१३२	रुधिरविकारे मंजिष्ठादिक्वाथः १–२	,, ,,
अतीसारे अरलूगुटिका	१३३		

Aho ! Shrutgyanam

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
मांजिष्ठादिचतु:षष्टिकाथ:	१५१	वृद्धगुडूच्यादिकाथ:	१६२
कुष्ठे खदिरादिकाथ:	१५२	चन्दनादिकाथ:, वृद्धचन्दनादिकाथ:	,,
सन्निपातज्वरे भूनिम्बादिकाथ:	,,	त्रायमाणादिकाथ:,	१६३
अष्टादशांगकाथ:,	१५३	वृद्धत्रायमाणादिकाथ:	१६४
विषमज्वरे दार्व्यादिकाथ:	,,	द्राक्षादिकाथ:	,,
दशमूलकाथ:	१५४	वासादिक्वाथ: १-२	,,
वातशोफे पुनर्नवादिकाथ: १-२	,,	पटोलादिक्वाथ:	१६५
कफरोगे कट्फलादिकाथ:	१५५	ज्वरातिसारे नागरादिक्वाथ:	,,
शृंग्यादिकाथ:	,,	अतीसारे वत्सकादिक्वाथ:	,,
कफविकारे गुडूच्यादिकाथ:	१५६	अतीसारेकुटजाष्टकक्वाथ:	१६६
वातरोगे लहशुनादिकाथ:	,,	मोचरसादिक्वाथ:, दार्व्यादिक्वाथ:	,,
शिरोव्यथायां श्रेष्ठादिकाथ:	१५७	हारिद्रादिज्वरेगुडूच्यादिक्वाथत्रयम्	१६७
पथ्यादिकाथ:	,,	कमलवाते रजन्यादिक्वाथ:	१६८
ज्वरे उपद्रवा दश भवंति । तन्नामानि	१५८	कमलवाते फलत्रिकादिक्वाथ:	१६९
ज्वरे क्षुद्रादिकाथ:, वृद्धक्षुद्रादिकाथ: १-२	,,	मूत्रकृच्छ्रे एलादिक्वाथ:	१७०
		छर्दिरोगे क्वाथ:	१७१
		बालरोगे क्वाथ:	१७२
शुण्ठ्यादिकाथ: धान्यपंचकक्वाथ: १-२	१५९	कासरोगे क्वाथ:	,,
		सर्ववायुविकारेशुण्ठ्यादिचतु:षष्टिका०	,,
आरग्वधादि पंचकक्वाथ:	१६०	ज्वरे अष्टावशेषपानीयम्	१७४
पंचभद्रकाथ:	,,	पंचकोलक्वाथ:, दशांगक्वाथ:	,,
शट्यादिकाथ: बृहच्छट्यादिकाथ:	,,	अम्लपित्तविकारे यवादिक्वाथ:	१७५
पटोलादिकाथ:	१६१	मद्यविकारे क्वाथ:	,,
मुस्तादिकाथ:	,,	**घृताधिकार: ५.**	
वृद्धमुस्तादिकाथ:	१६२	तत्रादौ सर्वोन्मादेषु कल्याणघृतम्	१७७
गुडूच्यादिकाथ: १-२	,,		

Aho ! Shrutgyanam

विषय.	पृष्ठ.
महाकल्याणघृतम्	१७८
मतान्तरे कल्याणघृतम १-२	१८०
ब्राह्म्यादिघृतम्	१८१
बुद्धिवर्धकमहापैशाचिकघृतम्	,,
सन्तानार्थं फलघृतम् १-२	१८२
उदररोगे बिन्दुघृतम	१८४
दुष्टव्रणादौ जात्यादिकं घृतम्	१८५
रुधिरविकारे महातिक्तकं घृतम्	,,
मस्तकरोगे षड्बिन्दुघृतम्	१८७
वायुविकारे दशमूलादिघृतम्	,,
अश्वगंधाघृतम्	,,
वातरक्ते गुडूचीघृतम	१८८
वातशूलेशुंठीघृतम	,,
लूताविचर्चिकायां कासीसादिघृतम्	,,
पंचतिक्तकं घृतम्	१८९
पुष्टौ कामदेवघृतम्	१९०
रुधिरविकारे मंजिष्ठादिघृतम्	१९१
संग्रहणीविकारे कल्याणगुडः	१९२
तैलाधिकारः ६.	
सर्ववातेषु नारायणतैलम्	१९३
जीर्णज्वरे तापातिदाहादौ च लाक्षादितैलम् १-२	१९४
दद्रुमण्डलपामाविचर्चिकादौ मरिचादितैलम्, वृद्धमरिचादितैलम्	१९६
सर्ववातरोगे विषगर्भतैलम १-२	१९८
मस्तकरोगे षड्बिन्दुतैलम्	२०१
वातरोगे शतावरीतैलम्	२०२
वातपित्तादिरोगे बलाद्यतैलम्	२०४
वातरोगे प्रसारणीतैलम्	२०५
साधारणगुणभूषाद्यहचंदनादितै०	२०६
कुष्ठदद्रुविकारे वज्रतैलम्	२०८
कुष्ठे कालानलतैलम	२०९
सिन्दूरादितैलम् १-२	,,
गुञ्जादितैलम्,	२१०
भल्लातकतैलम	२११
अर्कतैलम्, नीलकाद्य तैलम्	,,
रोमशातने नाडीव्रणादौ च क्षारादितैलम्	२१२
स्तनविकारे कासीसादितैलम	२१३
मिश्राधिकारः ७.	
तत्रादौ विषयनिरूपणम्	,,
प्रथमं गूगलप्रकरणम्	२१५
तत्र वातव्याधौ योगराजगुग्गुलः १-२	,,
किशोरगुग्गुलुः	२१८
त्रिफलागुग्गुलुः	२१९
कांचनारगुग्गुलुः	२२०
गोक्षुरादिगुग्गुलुः	२२१
सिंहनादगुग्गुलुः	,,
प्रमेहे मूत्रकृच्छ्रे च चन्द्रप्रभागुग्गुलुः	२२२

Aho ! Shrutgyanam

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
शंखद्रावः	२२४	रसकर्पूरविधिः	२४६
गन्धकविधिः	२२५	शुद्धरसस्य मुखकरणम्	२४७
शिलाजतुशोधनप्रकारः	२२६	पारदमारणविधिः	,,
शिलाजतुसत्त्वम्	२२७	हिंगुलसे–पारा काढनेकी विधिः	२४९
स्व ादिधातुमारणम्	२२८	हरतालशुद्धिः	,,
मृगांकविधिः १–२	,,	नागतांबाविधिः	२५०
राजमृगांकरसः,	२३१	सुवर्णमाक्षिकशोधनम्	,,
ताम्रमारणविधिः	२३२	रूपमाक्षिकशोधनम्	२५१
तस्य गुणा दोषाश्च	२३३	मनःशिलाशोधनम्	,,
वङ्गमारणविधिः सीसकमारण विधिः,	२३४	नीलांजनशोधनम्	२५२
		रसप्रकरणम् ।	,,
सारमारण विधिः	,,	लोकनाथरसः	२५३
मण्डूरकरणम्	२३५	कफकुंजररसः १–२	२५४
अभ्रकमारणविधिः	२३६	श्वासकुठारो रसः	२५५
अपुनर्भवीकरणम्	२३७	आनंदभैरवरसः	,,
सर्वधातुसत्त्व विधिः १–२	२३८	कालारिरसः १–	२५६
मृतधातुसंजीवनी	२३९	चैतन्ये–सूचीभरणो रसः	२५७
पारदशोधनविधिः	,,	आमवाते–उदयभास्कररसः	२५८
हरगौरीरसः	,,	वातकासे भूतांकुशो रसः	२५९
रससिन्दूरम्	२४०	तक्रेश्वरः	२६०
मदनमुद्रा १–२	२४१	अतिसारे रसः	२६१
वज्रमुद्रा	२४२	अतिसारे–आनन्दभैरवरसः	२६२
पारदगुणाः	,,	कनकसुन्दररसः	,,
पारदविकारशान्तिः	२४३	अजीर्णे–क्रव्यादरसः	२६४
भस्मसूतम्	२४४	वाजीकरणे–चन्द्रोदयरसः	,,
हरितालशुद्धिः	,,	कामदेवरसः,	२६५

Aho ! Shrutgyanam

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
शुक्ल औषधिः, विरेचकरसः	२६६	अग्निदाहे लेपः	२८९
ज्वरहारी रसः	२६७	हस्तपाददाहे लेपः	,,
ज्वरादौ -चिन्तामणिरसः १--२	,,	अंत्रवृद्धौ लेपः	२९०
त्रिपुरभैरवरसः	२६८	नलवृद्धौ लेपः	,,
महावातज्वरांकुशरसः	,,	अर्शांसि लेपः	,,
सर्वज्वरे मृत्युंजयरसः	२६९	भगन्दरे लेपः	,,
आसवः ।		कुष्ठे लेपः	२९१
द्राक्षासव	२७१	श्वेतकुष्ठे लेपः	२९१
द्रक्षारिष्टम्	२७२	पामाकण्डूनां लेपः	,,
लोहासवः	२७३	पादस्फुटितोपरि लेपः	,,
दशमूलासवः	२७४	मस्सालेपः	,,
कूष्माण्डकासवः	२७६	प्रहारोपरि लेपः, ग्रन्थ्युपरि लेपः	२९३
उदर विकारे--जंबीरद्रावः	२७८	स्फोटका (फोडा) यां लेपः	,,
लेपप्रकरणम् ।		वातरक्ते लेपः	,,
विसर्पादौ लेपः, शोफे लेपः,	२७९	पादस्फोटोपरि लेपः	,,
शिरोर्तौ लेपः	२८०	भगे लेपः	२९४
कर्णपीडायां लेपः	२८१	लिङ्गदृढीकरणम	२९४
उदरपीडायां लेपः	,,	मलहम १--२	२९५
शूले लेपः	,,	उदरोपरि लेपः	२९६
व्रणे लेपः, गंडमालादौ लेपः	२८२	विषोपरि लेपः,सर्पविषगदे लेपः,	२९७
सिध्मरोगे लेपः	२८४	रुधिरस्रावादौ कालनिश्चयः	२९८
तारुण्यपीडिकादौ लेपः	२८५	रक्तस्रावे शृंग्यादीनामियत्ता	,,
नासारुधिरे लेपः	,,	रक्तस्रावे योग्यरोगी	,,
नेत्ररोगे लेपः	२८६	रक्तस्रावे अयोग्याः	२९९
केशकल्पेलेपः	,,	रक्तस्रावे वर्ज्यानि	,,
केशवर्धनम्, रोमशातनम्,	२८८		

Aho ! Shrutgyanam

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
जलूकादिदंशस्रावे उपचारः	३००	शुण्ठीयोगः, त्रिफलायोगः,	३२१
नस्यविधिः	,,	दशामृतहरीतकी	३२२
नासिकया जलपानम्	३०२	असगंधयोगः शुंठीयोगश्च	,,
धयुरोगेषु विरेचनाविधिः	३०३	चोबचीनी	३२३
विरेचनायोग्याः	३०५	सिद्धहरिद्रा (जमाईहलदी)	,,
वमनम्	३०६	सिद्धजीरकः (जमायाजीरा)	,,
स्वेदः	३०७	घृतपानम्	३२४
अथ बन्धनम्	३०९	निम्बपानविधिः	,,
बाष्पविधिः	३१०	खण्डपानम्	,,
उद्धूलनम् (उबटना)	,,	सामान्यकादचिकित्सा	३२५
मस्तकटोपबंधनम्, नेत्रपिंडी,	३११	अथ दंभ, विषचिकित्सा,	३२६
गण्डषः	३१२	स्त्रीणां चिकित्सा	३२७
अपराजिताधूपः	३१३	पुत्रोत्पत्तियोगः	३२८
रक्तसेवनम्, योग्या अयोग्याश्च	३१४	गर्भनिवारणम्	३२९
कठरोहः	३१५	गर्भपातनम्	३३०
अमृताहिमः (अटपहरी गिलोय)	३१६	**कर्मविपाकप्रकरणम् ।**	३३१
मधूरकज्वरलक्षणम्	३१७	रोगोंके नाम	३३२
मधूरकज्वररसम्	,,	कर्म फलम्	३३३
मधूरकमन्त्रम्	३१८	कुम्भदानविधिः	३३४
केचित्साधारणयोगाः	,,	धेनुदानविधिः	,,
वर्द्धमानपिप्पली	३१९	ज्योतिषद्वारा वंध्याका फल	३३८
द्राक्षाहरीतकी	,,	स्वर्णधेनुदानविधि	,,
हरीतकीयोगाः	,,	सर्वरोगशांति	३३९
कुटकीप्रयोगः, अजमोदयोगः	३२०	अथ प्रशस्तिश्लोकाः	,,

इति योगचिंतामणिविषयानुक्रमणिका ॥

Aho ! Shrutgyanam

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीधन्वन्तरये नमः ॥

योगचिन्तामणिः ।

भाषाटीकासहितः ।

पाकाधिकारः-प्रथमोऽध्यायः १.

यत्र वित्रासमायान्ति तेजांसि च तमांसि च ।
महीयस्तदहं वन्दे चिदानन्दमयं महः ॥ १ ॥

श्रीकृष्णं प्रणिपत्य सद्गुणनिधिं धन्वन्तरिं शारदां
श्रीमन्माथुरवंशजं स्वजनकं श्रीकृष्णलालं गुरुम् ।
अल्पज्ञानवतां करोमि सुखदां सद्योगचिन्तामणे-
र्मंजूषां व्रजभाषयाऽर्थबहुलां श्रीदत्तरामाभिधः ॥

अर्थः-यत्र कहिये जहाँ तेज और तम (अंधकार) नाशको प्राप्त होय ऐसे महान् तेजःपुंज चिदानंदको हम वंदना करते हैं ॥ १ ॥

जगत्त्रितयलोकानां पापरोगापनुत्तये ।
यद्वाक्य भेसजं भाति श्रीजिनः स श्रियेऽस्तु वः ॥ २ ॥

जिसका वचन त्रिलोकीके पापरूप रोगोंको औषधि स्वरूप है ऐसे श्रीजिन (तीर्थंकर) तुमको लक्ष्मीके देनेवाले हों ॥ २ ॥

सिद्धौषधानि पथ्यानि रागद्वेषरुजां जये ।
जयन्ति यद्वचांस्यत्र तिर्थकृत्सोऽस्तु वः श्रियै ॥ ३ ॥

जिनका वचन रागद्वेषरूप रोगोंको नाश करनेके लिये सिद्ध

Aho ! Shrutgyanam

औषध और पथ्यरूप हैं ऐसे श्रीतीर्थंकर तुमको लक्ष्मीके देने-वाले हों ॥ ३ ॥

श्रीसर्वज्ञं प्रणम्यादौ मानकीर्तिं गुरुं ततः ।
योगचिन्तामणिं वक्ष्ये बालानां बोधहेतवे ॥ ४ ॥

श्री सर्वज्ञ मानकीर्ति गुरुको प्रथम प्रणाम करि बालकोंके बोधार्थ योगचिन्तामणि ग्रंथको कहते हैं ॥ ४ ॥

प्राप्ताः प्रसिद्धिं सर्वत्र सुखबोधाश्च ते यतः ।
अतः पुरातनैरेव पाठैः संगृह्यते मया ॥ ५ ॥

सर्वत्र प्राप्त तथा प्रसिद्ध और सुखपूर्वक जाने जायँ इसी कारण हम प्राचीन पाठका संग्रह करते हैं ॥ ५ ॥

नूतनपाठे विहिते नादरमिह पण्डिता यतः कुर्युः ।
तस्मादार्षवचोभिर्निबध्यते न त्वसामर्थ्यात् ॥ ६ ॥

नवीन पाठको विद्वान्लोग सत्कार नहीं करेंगे इसी कारण मैं प्राचीन सुश्रुत वाग्भटादि आचार्योंके वाक्योंका संग्रह करता हूं, कुछ नवीन ग्रन्थ रचनेकी असामर्थ्यसे नहीं करता ॥ ६ ॥

पाकचूर्णगुटीक्वाथघृततैलाः समिश्रकाः ।
अध्यायाः सप्त वक्ष्यन्ते ग्रन्थेऽस्मिन्सारसंग्रहे ॥ ७ ॥

इस ग्रन्थमें पाकाध्याय, चूर्णाध्याय, गुटिकाध्याय, क्वाथाध्याय, घृताध्याय, तैलाध्याय, और मिश्रकाध्याय ऐसे सात अध्याय कहेंगे ॥ ७ ॥

यद्यपि योगचिन्तमणिके कर्ताने नाड़ी आदि परीक्षा पीछे लिखी है परंतु हमारी समझमें प्रथम लिखना ठीक है क्योंकि प्रथम रोग निश्चय करना सब आधुनिक और प्राचीन आचार्योंके मतसे ठीक है, इसी कारण हम अष्टविधि लिखते हैं तहाँ प्रथम वैद्यके कर्तव्य और नाडीपरीक्षा लिखते हैं—

Aho ! Shrutgyanam

वैद्यके लक्षण और कर्तव्य ।

नाड्या मूत्रस्य जिह्वाया लक्षणं यो न विन्दते ।
मारयत्याशु वै जन्तून्स वैद्यो न यशो लभेत् ॥ १ ॥

नाडी, मूत्र और जिह्वाकी जो परीक्षा नहीं जाने वह वैद्य मनुष्योंको तत्काल नाश करै है, उसको यशकी प्राप्ति नहीं होती है ॥ १ ॥

स्थिरचित्तः प्रसन्नात्मा मनसा च विशारदः ।
स्पृशेदङ्गुलिभिर्नाडीं जनीयाद्दक्षिणे करे ॥ २ ॥

एकाग्र चित्त कर प्रसन्नात्मा मनसे चतुर ऐसा वैद्य तीन अंगुलियोंसे दहिने हाथकी नाडी देखे ॥ २ ॥

त्यक्तमूत्रपुरीषस्य सुखासीनस्य रोगिणः ।
अन्तर्जानुकरस्यापि सम्यङ्नाडीं परीक्षयेत् ॥ ३ ॥

जो रोगी मल मूत्रका त्याग कर चुका होय, सुखपूर्वक बैठा होय और दोनों जानुओंके बीच जिसने अपना हाथ रक्खा होय उसकी नाडीकी भले प्रकार परीक्षा करे ॥ ३ ॥

नाडी परीक्षा ।

स्त्रीणां भिषग्वामहस्ते पुरुषाणां तु दक्षिणे ।
शास्त्रेण संप्रदायेन तथा स्वानुभवेन च ॥
परीक्षेद्रत्नवच्चासावभ्यासादेव जायते ॥ ४ ॥

स्त्रियोंके बायें हाथकी और पुरुषोंके दहिने हाथकी नाडी वैद्य शास्त्रकी संप्रदायसे और अपने अनुभवसे परीक्षा करै. जैसे जौहरी अपनी बुद्धिसे रत्नोंकी परीक्षा करता है ॥ ४ ॥

वारत्रयं परीक्षेत धृत्वा धृत्वा विमुच्य च ।
विमृश्य बहुधा बुद्ध्या रोगव्यक्तिं विनिर्दिशेत् ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

तीन बार नाडीपर हाथको रख रख कर छोड़ छोड़ दे जब अच्छी तरह रोग समझमें आजावे तब उसको कहे ॥ ५ ॥

वातं पित्तं कफं द्वंद्वं त्रिदोषं सन्निपातकम् ।
साध्यासाध्यविवेकं च सर्वान्नाडी प्रकाशयेत् ॥ ६ ॥

वात, पित्त, कफ, द्वंद्वज, त्रिदोष, सन्निपात, साध्य और असाध्य सबको नाडी प्रकाश करती है ॥ ६ ॥

करस्याङ्गुष्ठमूले या धमनी जीवसाक्षिणी ।
तच्चेष्टया सुखं दुःखं ज्ञेयं कायस्य पण्डितैः ॥ ७ ॥

हाथके अँगूठेके नीचे धमनी नाडी जीवकी साक्षी देनेवाली है, उसी धमनी नाडीकी चेष्टासे पण्डित देहके दुःख और सुखको जाने ॥ ७ ॥

धत्ते नाडी मरुत्कोपाज्जलौकासर्पयोर्गतिम् ।
कुलिङ्गकाकमण्डूकगतिं पित्तस्य कोपतः ॥
हंसपारावतगतिं धत्ते श्लेष्मप्रकोपतः ॥ ८ ॥

वातके कोपसे नाडी जोंक और सर्पकी गति धारण करती है, पित्तके कोपसे कुलिंग, कौआ और मेंडककी गतिसे चलती है, कफके कोपसे नाड़ी हंस, कबूतरकी गतिसे चलती है ॥ ८ ॥

लावतित्तिरवर्तीनां गमनं सन्निपाततः ।
कदाचिन्मन्दगमना कदाचिद्वेगवाहिनी ॥
द्विदोषकोपतो ज्ञेया हन्ति च स्थानविच्युता ॥ ९ ॥
स्थित्वा स्थित्वा चलति या सा स्मृता प्राणनासिनी ।
अतिक्षीणा च शीता च जीवितं हन्त्यसंशयम् ॥ १० ॥

सन्निपातके कोपसे नाडी लवा, तीतर और बटेरकीसी चाल चलती है, कभी मन्द चले कभी तेज चले ऐसे नाडी द्विदोषके कोपकी

Aho ! Shrutgyanam

जाननी । जो नाडी अपने स्थानको छोडदेवे उसे प्राणनाशिनी जाननी और जो नाडी ठहर २ के चले उसेभी प्राणघातिनी जाननी चाहिये। जो नाडी अत्यन्त क्षीण शीतल होय उसेभी निश्चय नाश करनेवाली जाननी ॥ ९-१० ॥

ज्वरकोपेन धमनी सोष्णा वेगवती भवेत् ।
कामात्क्रोधाद्वेगवहा क्षीणा चिन्ताभयप्लुता ॥ ११ ॥
मन्दाग्नेः क्षीणधातोश्च नाडी मन्दतरा भवेत् ।
असृक्पूर्णा भवेत्सोष्णा गुर्वी सामा गरीयसी ॥ १२ ॥
लघ्वी वहति दीप्ताग्नेस्तथा वेगवती मता ।
सुखिनः सा स्थिरा ज्ञेया तथाबलवती मता ॥
चपला क्षुधितस्यापि तृप्तस्य वहति स्थिरा ॥ १३ ॥

ज्वरके कोपसे नाडी गरम और वेगवती होती है, काम और क्रोधके वेगसेभी नाडी जल्दी चलती है, चिन्तावान् और भयभीत मनुष्यकी नाडी क्षीण होती है तथा मन्दाग्नि और क्षीणधातुवाले मनुष्यकी नाडी मन्दतर चलती है, रुधिरके कोपकी गरम और भारी होती है, आमकी नाडी भारी होती है, दीप्त अग्निवालेकी नाडी हलकी और वेगवती होती है, सुखी मनुष्यकी नाडी स्थिर और बलवती होती है, भूखे मनुष्यकी नाडी चपल होती है और तृप्तकी नाडी स्थिर होती है ॥ ११-१३ ॥

अङ्गुष्ठमूलसंस्था दोषविशेषेण वहति या नाडी ।
बहुधा सा सर्वाङ्गापूर्वाचार्यैः समाख्याता ॥ १४ ॥
वाताद्वक्रगता नाडी चपला पित्तवाहिनी ।
स्थिरा श्लेष्मवती प्रोक्ता सर्वलिंगेषु सर्वगा ॥ १५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

स्निग्धा रसवती प्रोक्ता रक्ते मूर्च्छाभिघातिनी ।
भाविरोगावबोधाय स्वस्थनाडीपरीक्षणम् ॥ १६ ॥
आदौ च वहते पित्तं मध्ये श्लेष्मा प्रकीर्तितः ।
अन्ते प्रभञ्जनः प्रोक्तस्त्रिधा नाडीपरीक्षणम् ॥ १७ ॥
यथा वीणागता तन्त्रीः सर्वान्रागान्प्रकाशयेत् ।
तथा हस्तगता नाडी विभक्ताऽऽमयसंचयम् ॥ १८ ॥

अंगूठेके निकट जो दोषविशेष करके नाडी चले है वह सर्व अंगव्यापिनी है, ऐसा पूर्वाचार्योंने कहा है, वातके कोपसे नाडी टेढ़ी गतिसे गमन करती है, पित्तके कोपसे चपल गतिसे चलती है और कफके कोपसे स्थिर अर्थात् मन्द गमन करती है और सब दोषोंके कोपसे नाडी सर्वचिह्नयुक्त चलती है. रसवती नाडी चिकनी होती है, रुधिरकी नाडी मूर्छित चलती है, होनहार रोगके जाननेके निमित्त स्वस्थ मनुष्यकी नाडी परीक्षा करनी चाहिये, प्रथम पित्तकी नाडी, मध्यमें कफकी और अन्तमें वातकी नाडी चलती है, जैसे वीणाके तार सम्पूर्णरागोंको अलग अलग प्रकाश करते हैं इसी प्रकार हाथकी नाडी सकल रोगोंकी सूचना करती है ॥ ११-१८ ॥

इति नाडीपरीक्षा ।

मूत्रपरीक्षा ।

रात्रेश्चतुर्थयामस्य घटिकानां चतुष्टये । समु-
त्थाप्य परीक्षेत मूत्रं वैद्यस्तु रोगिणः ॥ १ ॥
पूर्वधारां परित्यज्य गृहीत्वा काचभाजने । धार-
येत्कांस्यपात्रे वा कृत्वा मूत्रं पटावृतम् ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

ततः सूर्योदये जाते प्रकाशे मूत्रभाजनम् । धृत्वा
मूत्रं समालोक्य कुर्यात्तस्य परीक्षणम् ॥ ३ ॥
वाते तोयसमं मूत्रं रूक्षं बहुतं भवेत् । रक्तवर्णं
भवेत्पित्ते पीतं वा स्वल्पमेव च ॥ ४ ॥ कफे
श्वेतं घनं स्निग्धं मूत्रं संजायते ध्रुवम् । द्विदोषं
द्वन्द्वचिह्नं स्यात्सर्वलिंगं त्रिदोषजे ॥ ५ ॥

रात्रिके चतुर्थ प्रहरकी जब चार घड़ी बाकी रहें उस समय रोगीको उठाकर वैद्य मूत्रकी परीक्षा करे । रोगीके मूत्रकी प्रथम धारको त्यागकर बाकीको कांचकी शीशी वा कांसेके पात्रमें लेकर वस्त्रमे ढकदेवे, जब सूर्योदय हो तब उस पात्रसे वस्त्रको हटाकर उजेलेमें रखकर अच्छी तरह मूत्रकी परीक्षा करे. वातके कोपमे मूत्र स्वच्छ जलके समान होता है और रूखा तथा बहुत होय, पित्तके कोपसे लाल वा पीला और थोड़ा होता है, कफके कोपसे रोगीका मूत्र सफेद गाढा चिकना ऐसा होता है और द्विदोषके कोपसे दो दो दोषोंके लक्षण और त्रिदोषके कोपसे सर्व लक्षण युक्त होता है ॥ १ ॥ ५ ॥

प्रातःकाले गृहीतं यन्मूत्रं घर्मे निधापयेत् । तैल-
बिन्दुं क्षिपेत्तत्र निश्चलं वैद्यसत्तमः यदा प्रका-
शमाप्नोति तैलं क्षेमं तदादिशेत् ॥ ६ ॥ बिन्दु-
रूपं स्थितं तैलमसाध्यमपि रोगिणः निमज्जति
यदामूत्रे भ्रमन्वा नैव शाम्यति । तदारिष्टं विजा-
नीयाद्रोगिणां नात्र संशयः ॥ ७ प्रभाते रोगिणां
मूत्रं गृहीत्वा शुद्धभाजने । तृणेनादाय तैलस्य
बिन्दुं क्षिप्त्वा विचारयेत् ॥ ८ ॥ यदा विकाश-

Aho ! Shrutgyanam

प्राप्नोति तदा साध्यं वदेत्सुधीः । बिन्दुरूपेण
मध्यस्थमसाध्यं तु तलस्थितम् ॥ ९ ॥

प्रातःकालमें जो रोगीका मूत्र लिया उसे धूपमें रखकर उसमें वैद्य तेलकी बूंद डाले । यदि तेलकी बूंद प्रकाशित रहे तो रोगीका कल्याण जाने और वह बूंद तेलकी बिन्दुरूपही रहे तो असाध्य जानना अथवा वह तेलकी बूंद मूत्रमें बैठ जाय अथवा चक्कर खाया करे तो उस मनुष्यकी देहको अरिष्ट (रोग) जानना, प्रातःकाल स्वच्छ पात्रमें रोगीका मूत्र लेकर उसमें तृणसे तेलकी बून्द डालकर विचार करे । यदि वह बून्द प्रकाशित रहे तो उस रोगीको साध्य कहना और वह तेलकी बूँद मूत्रमें नीचे बैठ जाय तो असाध्य जानना॥६–९॥

बिन्दुर्भ्रमति सर्वत्र मध्ये व छिद्रसंयुतः ।
खड्ग दण्डधनुस्तुल्यस्तदा रोगी विनश्यति ॥ १० ॥
तडागहंसपद्मेभच्छत्रचामरतोरणैः ।
तुल्यस्तदा चिरायुः स्याद्बुद्बुदं देवकोपतः ॥ ११ ॥
पूर्वपश्चिमवायव्यनैर्ऋतोत्तरतः शुभः ।
आग्नेयदक्षिणेशाने विस्तृतो न शुभप्रदः ॥ १२ ॥

तेलकी बूंद मूत्रमें चक्कर खाय अथवा उसके बीचमें छिद्र होजाय तथा खड्ग (तलवार) दण्ड और धनुषके आकार होजाय तो रोगीकी मृत्यु होय. तालाव, हंस, कमल, हाथी, छत्र, चामर, तोरण इनके आकार तेलकी बूंद हो जाय तो चिरायु (दीर्घायु) कहनी । उस मूत्र मेंबबूला उठे तो रोगीको देवदोष जानना और वह तेलकी बूँद, पूर्व, पश्चिम, वायव्य, नैर्ऋत्य और उत्तर इन दिशाओंमें फैले तो शुभ है और अग्निकोण, दक्षिण, ईशाणकोण इन दिशाओंमें फैले तो अशुभ है. यह परीक्षा समान भूमिमें करनी चाहिये ॥ १०–१२ ॥

Aho ! Shrutgyanam

स्निग्धं सुरूक्षकं श्यामं मूत्रं वातविकारजम् ।
पीतबुद्बुदसंयुक्तं विकारः स्यात्तु पित्तजः ॥ १३ ॥
मूत्रं श्लेष्मणि जायेत समं पल्वलवारिणा ।
सिद्धार्थतैलसदृशं मूत्रं वै पित्तमारुतैः ॥ १४ ॥
कृष्णं सबुद्बुदं मूत्रं सन्निपातविकारजम् ।
पानीयेन समं मूत्रं परिपाकहितं भवेत् ॥ १५ ॥
श्वेतधारा महाधारा पीतधारास्तथा ज्वराः ।
रक्तधारा महारोगी कृष्णा च मरणान्तिका ॥ १६ ॥
अजामूत्रमिवाजीर्णे ज्वरे कुंकुमपिञ्जरम् ।
समधातोः पुनःकूपजलतुल्यं प्रजायते ॥ १७ ॥

वातके विकारसे मूत्र चिकना, रूखा, काला होता है. पीला बबूले के समान पित्तके विकारसे होता है और कफके विकारसे मूत्र तलैयाके जलके समान होता है और वातपित्तके विकारसे मूत्र सरसोंके तेलके सदृश होता है, सन्निपातके विकारसे काला और बबुलेदार होता है परिपाकसमय मूत्र स्वच्छ जलके समान होता है सफेद धारा, महाधारा, पीलीधारा ये ज्वरवालेकी होती है. महारोगीकी लाल-धारा होती है और आसन्नमृत्युवाले रोगीके मूत्रकी धारा काली होती है. अजीर्ण वाले रोगीके मत्रमें बकरीके मूत्रके समान गंध आती है, ज्वरवालेका मूत्र केशरके समान पीला होता है, समान धातु वालेका मत्र कुआँके जल समान होता है ॥ १३-१७ ॥

इति मूत्रपरीक्षा ॥

Aho ! Shrutgyanam

नेत्रपरीक्षा।

रौद्रे रूक्षे च धूम्राक्षे नयने स्तब्धचञ्चले।
तथाऽभ्यन्तरकृष्णाभे भवतो वातरोगिणः ॥ १ ॥
पित्तरोगे तु पीते वा नीले वा रक्तवर्णके।
संतप्ते भवतो दीपं सहेते नावलोकितुम् ॥ २ ॥
ज्योतिर्हीने च शुक्लाभे जलपूर्णे सगौरवे।
मन्दावलोकने नेत्रे भवतः कफकोपतः ॥ ३ ॥
तन्द्रामोहाकुले श्यामे निर्भुग्ने रूक्षरौद्रके।
रक्तवर्णे च भवतो नेत्रे दोषत्रयोदये ॥ ४ ॥

जिस रोगीके नेत्र भयानक रूखे धूसरे टेढ़े और चंचल होंय और भीतरके काले होंय उसको वातका रोग जानना. जिसके पीले, नीले और लाल नेत्र होंय तथा गरम और जो मनुष्य दीपकको न देख सके उसके पित्तका रोग जानना ज्योतिरहित सफेद सजल और भारी होंय, मन्द देख सके उसके कफ विकार जानना. तन्द्रा मोहसे व्याकुल काले फटेसे रूखे भयानक लालवर्ण ऐसे नेत्र सन्निपात रोगवालेके होते हैं ॥ १–४ ॥

दोषत्रये भवेच्चिह्नंनेत्रयोस्तु त्रिदोषजम्। दोषद्वयप्रकोपे तु भवेद्दोषद्वयोदितम् ॥ ५ ॥ दोषत्रयभवे नेत्रे स्वाधीने न च रोगिणः। उन्मीलिते च भवतःक्षणादेव निमीलति ॥ ६ ॥ सततोन्मीलिते नेत्रे यद्वा नित्यनिमीलिते। विलुप्तकृष्णतारे च भ्रमद्भ्रूमोग्रतारके ॥ ७ ॥ बहुवर्णे च भवतो विकृतानेकचेष्टने। नेत्रे मृत्युं कथयतो रोगिणो नात्र

Aho ! Shrutgyanam

संशयः ॥ ८ ॥ सौम्यदृष्टी प्रसन्नाभे प्रकृतिस्थे मनोरमे । नेत्रे कथयतः शीघ्रं रोगशान्ति तु रोगिणः ॥ ९ ॥

त्रिदोषरोगमें तीनों दोषोंके चिह्न नेत्रोंमें होते हैं. दोषके कुपित होनेसे दो दोषोंके चिह्न होते हैं, और जो त्रिदोषके रोगसे व्याकुल होय उसके नेत्र स्वाधीन नहीं रहते, कभी नेत्रोंको खोले और कभी मूंदे अथवा निरन्तर मूंदेही रक्खे अथवा निरन्तर खुलेही रक्खे, जिसकी काली पुतली लुप्त होजाय अथवा पुतली भ्रमण करे, धुआंसा दिखलाई दे तथा जिसके विकृत तारे हो जायँ, अनेक प्रकारके वर्ण विकृत अनेक चेष्टा करे ऐसे नेत्र रोगीकी आसन्न मृत्यु कहते हैं और जिसकी प्रसन्न दृष्टि होय तथा नेत्र अपनी प्रकृतिमें स्थिर होंय ऐसे नेत्ररोगीके रोगकी शीघ्र शान्ति कहते हैं ॥ ५-९ ॥

इति नेत्रपरीक्षा ।

मुखपरीक्षा ।

वातकोपे मुखं रूक्षं स्तब्धं वक्रं गतप्रभम् ।
पित्तकोपे भवेद्रक्तं पीतं वा परितप्तकम् ॥ १ ॥
कफकोपे गुरु स्निग्धं भवेच्छूनमिवाननम् ।
त्रिलक्षणं त्रिदोषे स्याद्विचिह्नं च द्विदोषके ॥ २ ॥

वातके कोपसे मुख सूखा स्तब्ध और टेढा होता है, पित्तके कोपसे रोगीका मुख लाल पीला और तप्त होता है कफके कोपसे मुख भारी चिकना सूजन युक्त होता है और त्रिदोषके कोपसे तीनों दोषके लक्षण होते हैं और द्विदोषके कोपसे दोनों दोषके लक्षण होते हैं ॥ १ ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

जिह्वापरीक्षा ।

वातकोपे प्रसुप्ता च स्फुटिता मधुरा भवेत् ।
स्तब्धा वर्णेन हरिता जिह्वा लालां प्रमुञ्चति ॥१॥
पित्तकोपे तु रक्ताभा तिक्ता दुग्धे च जायते ।
जिह्वा दाहान्विता बिंबाकंटकैरिव सर्वतः ॥ २ ॥
कफोदये तु भवेज्जिह्वा स्थूला गुर्वी विलेपनी ।
सुस्थूलकंटकोपेता क्षारा बहुकफावहा ॥ ३ ॥
दोषद्वये द्विदोषोक्ता लवणा रसना भवेत् ।
सर्वजिह्वा त्रिदोषे स्याद् विकृतौ च कुलक्षणे ॥ ४

वातके कोपसे जीभ शून्य फटीसी और मीठी होती है तथा स्तब्ध और हरितवर्ण तथा लार गिरे, पित्तके कोपसे जिह्वा लाल और दूध पीनेसे कड़वी होय, दाहयुक्त कंदूरी फलकासा वर्ण और कांटोंसे आच्छादित होती है, कफके कोपसे मोटी, भारी, कफसे लिहसी, मोटे कांटेयुक्त, खारी और बहुत कफ गेरनेवाली ऐसी जीभ होती है, दो दोषके कोपसे दो दोषोंके लक्षण होते हैं और नोनकासा स्वाद होता है और त्रिदोषके कोपसे तीनों दोषोंके लक्षणयुक्त और खोटे लक्षणयुक्त होती है ॥ १–४ ॥

मलपरीक्षा ।

त्रुटितं फेनिलं रूक्षं धूम्रलं वातकोपतः ।
वातश्लेष्मविकारे च जायते कपिशं मलम् ॥ १ ॥
बुद्धं सुत्रुटितं पीतं श्यामं पित्तानिलाद्भवेत् ।
पीतं श्यामं श्लेष्मपित्तादीषदार्द्रं च पिच्छलम् ॥ २ ॥
श्यामं त्रुटितपीताभं बद्धश्वेतं त्रिदोषतः ।

Aho ! Shrutgyanam

दुर्गन्धः शिथिलश्चैव विष्ठोत्सर्गो यदा भवेत् ।
तदाजीर्णमलं वैद्यैर्दोषज्ञैः परिभाष्यते ॥ ३ ॥

वातके कोपसे मल टूटा हुआ, झाग मिला, रूखा, धूम्रवर्ण और वात कफकी विकृतिसे पीला और लाल मिला (नारंगी) होता है, वात पित्तके योगसे मल बद्ध कभी टूटा पीला काला ऐसा होता है और कफपित्तके कोपसे पीला, काला और किंचित् आर्द्र तथा चीकट ऐसा होता है, त्रिदोष (सन्निपात) के कोपसे काला, पीला, टूटा, सफेद और बद्ध ऐसा मल उतरे, अजीर्णवालेके मल दुर्गंधियुक्त शिथिल होता है ॥ १--३ ॥

कपिलं ग्रंथियुक्तं च यदि वर्चोऽवलोक्यते ।
प्रक्षीणमलदोषेण दूषितः परकथ्यते ॥ ४ ॥
सितं महत्पूतिगन्धं मलं ज्ञेयं जलोदरे ।
श्यामं क्षये त्वामवाते पीतं सकटिवेदनम् ॥ ५ ॥
अतिकृष्णं चातिशुभ्रमतिपीतं तथाऽरुणम् ।
मरणाय मलं किन्तु भृशोष्णं मृत्यवे ध्रुवम् ॥ ६ ॥

वातादि दोष क्षीण होनेसे मल कपिल और गाढ़ा होता है । सफेद और अत्यन्त सडी गंधयुक्त मल जलोदर (जलंधर) वालेका होता है । क्षयीवालेका मल काला होता है और आमवात रोगवालेकी कमरमें पीडा सहित पीला होता है । अतिकाला, अत्यन्त सफेद अत्यन्त पीला और अतिलाल तथा अत्यन्त गरम मल समीपमृत्यु-वाले रोगीका होता है ४॥ -६ ॥

अत्यग्नौ पीडितं शुष्कं मन्दाग्नौ तु द्रवीकृतम् ।
दुर्गन्धं चन्द्रिकायुक्तमसाध्यं मललक्षणम् ॥ ७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

तीक्ष्ण अग्निवालेका मल सूखा होता है, मन्दाग्निवालेका मल पतला होता है, और दुर्गंधि चंद्रिकायुक्त मल असाध्य रोगीका होता है ॥ ७ ॥

शब्दपरीक्षा।

गुरुः स्वरो भवेच्छ्लेष्मी स्फुटवक्ता च पित्तलः।
उभाभ्यां रहितो वातः स्वरतश्चैव लक्षयेत् ॥ १ ॥

कफवाले रोगीका स्वर भारी होय, पित्तवाला स्पष्ट बोले और बादीसे दोनों लक्षणरहित बोले अर्थात् घरघर शब्द बोले ॥ १ ॥

स्पर्शपरीक्षा।

पित्तरोगी भवेदुष्णो वातरोगी च शीतलः।
पिच्छिलः श्लेष्मरोगी स्यात्त्रिलिंगात्सन्निपातवान् ॥
आर्द्रकः स भवेच्छ्लेष्मा स्पर्शतश्चैव लक्षयेत् ॥ १ ॥

पित्तके रोगीका उष्णस्पर्श, वातरोगीका शीतल, कफरोगीका चिकना, अथवा पानीसे भीगासा और सन्निपातसे सर्वलक्षण युक्त होता है ॥ १ ॥

आयुर्विचार।

भिषगादौ परीक्षेत रुग्णस्यायुः प्रयत्नतः।
यत आयुषि विस्तीर्णे चिकित्सा सफला भवेत् ॥ १ ॥

वैद्यको उचित है कि, प्रथम रोगीकी आयुका विचार करे। क्योंकि पूर्णायु होनेसे चिकित्सा सफल होती है ॥ १ ॥

आयुर्लक्षण।

सौम्या दृष्टिर्भवेद्यस्य श्रोत्रवक्त्रं तथैव च।
स्वादुगन्धं विजानाति स साध्यो नात्र संशयः ॥ १ ॥
पाणी पादौ च यस्योष्णौ दाहः स्वल्पतरो भवेत्।

Aho ! Shrutgyanam

जिह्वाऽतिकोमला यस्य स रोगी न विनश्यति ॥ २ ॥
स्वेदहीनो ज्वरो यस्य श्वासो नासिकया सरेत् ।
कण्ठश्च कफहीनः स्यात्स रोगी जीवति ध्रुवम् ॥ ३ ॥

जो रोगीकी दृष्टि, कान, मुख ये सौम्य होंय और प्रसन्न दीखे तथा स्वाद और गन्धको जाने उस रोगीको साध्य जानना, इस विषयमें संशय नहीं और जिस रोगीके हाथ, पैर गर्म होय शरीरमें मन्द दाह होय और जीभ अत्यन्त कोमल होय ऐसे रोगीका नाश नहीं होय, जिसके पसीना रहित ज्वर होय और श्वास नाककी राह निकले तथा कफहीन कंठ होय ऐसा रोगी नष्ट नहीं होय ॥ १–३ ॥

कालज्ञान ।

अक्षैर्लक्षितलक्षणेन पयसा पूर्णेन्दुना भानुना
पूर्वादक्षिणपश्चिमोत्तरदिशां षट्त्रिद्विमासैककम् ।
छिद्रं पश्यति चेत्तदा दशदिनं धूम्राकृतिं पश्चिमे ।
ज्वालां पश्यति सद्य एव मरणं कालोचितं ज्ञानिनाम् ॥ १ ॥

जो रोगी पानीमें सूर्य अथवा चन्द्रमा इनके प्रतिबिंबमें पूर्व दक्षिण पश्चिम और उत्तरमें छिद्र देखे तो क्रमसे छः तीन, दो और एक इतने महीने जीवे और सूर्य चन्द्रमाका धुएँकासा वर्ण दीखे तो दश दिन. उस प्रतिबिंबमें दक्षिणकी ओर ज्वाला देखे तो तत्काल मृत्यु होय, यह कालज्ञान ज्ञानियोंने कहा है ॥ १ ॥

अरुन्धतीं ध्रुवं चैव विष्णोस्त्रीणि पदानि च ।
आयुर्हीना न पश्यन्ति चतुर्थं मातृमण्डलम् ॥ २ ॥

अरुंधती, ध्रुव, विष्णुके त्रिपद (श्रवण नक्षत्र) इनको और चतुर्थ मातृमण्डल (कृत्तिकाके तारे) को भी आयुवाला नहीं देखे ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अरुन्धती भवज्जिह्वा ध्रुवो नासाग्रमेव च ।
विष्णुस्तु भ्रूद्वयोर्मध्ये भ्रूद्वयं मातृमण्डलम् ॥ ३ ॥
नासाग्रं भ्रूयुगं जिह्वां मुखं चैव न पश्यति ।
कर्णघोषं न जानाति स गच्छेद्यममंदिरम् ॥ ४ ॥

अरुंधती नाम जीभका है, नासिकाके अग्रभागका नाम ध्रुव है दोनों भ्रुकुटियोंके बीचका नाम विष्णु है और दोनों भौंहेका नाम मातृमंडल है अर्थात् गतायु मनुष्य इनको नहीं देखते, नाकका अग्रभाग-दोनों भौंहे, जीभ, मुख इनको जो न देखे तथा अपने कानोंका शब्द न सुने सो यमराजके घरको जाय ॥ ३ ॥ ४ ॥

अकस्माद्धि भवेत्स्थूलो ह्यकस्माच्च कृशो भवेत् ।
अकस्मादन्यथाभावे षण्मासैश्च विनश्यति ॥ ५ ॥
रसनायाः कृष्णभावो मुखं कुंकुमसन्निभम् ।
जिह्वा स्पर्शं न जानाति दुर्लभं तस्य जीवतम् ॥ ६ ॥

जो मनुष्य अकस्मात् (विना कारणही) मोटा होजाय और अकस्मात् पतला होजाय तथा अकस्मात् उलटे भावको प्राप्त होजाय वह रोगी छः महीनेमें मरे, जिसकी जीभ काली होजाय, मुख केशरके समान पीला होजाय और जीभ स्पर्शको जाने नहीं उस रोगीका जीना दुर्लभ है ॥ ५--६ ॥

देशज्ञान ।

देशोऽल्पवारिद्रुनगो जाङ्गलः स्वल्परोगदः ।
अनूपो विपरीतोऽस्मात्समः साधारणः स्मृतः ॥ १ ॥

जिस देशमें अल्प जल, अल्प वृक्ष, अल्प पर्वत होंय उसको जांगल देश कहते हैं, जैसे मारवाडदेश है । ऐसे देशोंमें कम रोग होते हैं और जिस देशमें बहुत जल, बहुत वृक्ष, बहुत पर्वत होंय उसको अनूप देश

Aho ! Shrutgyanam

कहते हैं, जैसे पूर्वके देश। इन देशोंमें रोग बहुत होते हैं और जिसमें दोनों देशोंके लक्षण मिलें उसको साधारण देश कहते हैं जैसे मध्य देशादि ॥ १ ॥

औषधोंके (मागध) मानकी परिभाषा ।

न मानेन विना युक्तिर्द्रव्याणां ज्ञायते क्वचित् ।
अतः प्रयोगकार्यार्थं मानमत्रोच्यते मया ॥ १ ॥
त्रसरेणुर्बुधैः प्रोक्तस्त्रिंशद्भिः परमाणुभिः । त्रसरेणुस्तु पर्याय नाम्ना वंशी निगद्यते॥२॥ जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः । तस्य त्रिंशत्तमो भागः परमाणुः स उच्यते ॥ ३ ॥ षड्वंशीभिर्मरीचिः स्यात्ताभिः षड्भिस्तु राजिका । तिसृभी राजिकाभिश्च सर्षपः प्रोच्यते बुधैः ॥ ४ ॥ यवोऽष्टसर्षपैः प्रोक्तो गुंजा स्यात्तच्चतुष्टयम् । षड्भिस्तु रक्तिकाभिः स्यान्माषको हेमधान्यकौ ॥ ५ ॥

विना मान (तोल) के द्रव्य (औषधी) की युक्ति नहीं जानी जाती इसीसे प्रयोगके कार्यके साधनार्थ मान (तोल) को कहता हूं–तीस परमाणुका एक त्रसरेणु, इसको वंशीभी कहते हैं. जालांतरगत सूर्यकी किरणमें जो छोटे २ रजके कण उडते हैं उनके हरएकके तीसवें हिस्सेको परमाणु कहते हैं। छः वंशीकी एक मरीची, छः

Aho ! Shrutgyanam

मरीचीकी एक राई, तीन राईका एक सरसों, आठ सरसोंका एक यव और चार यवोंकी एक गुंजा (रत्ती) कहते हैं । छः रत्तीका एक मासा, इसको हेम और धान्यकभी कहते हैं ॥ १--५ ॥

माषैश्चतुर्भिः शाणः स्याद्धरणः स निगद्यते ।
टंकः स एव कथितस्तद्द्वयं कोल उच्यते ॥ ६ ॥
क्षुद्रभो वटकश्चैव द्रंक्षणः स निगद्यते ।
कोलद्वयं च कर्षः स्यात्सा प्रोक्ता पाणिका बुधैः ॥७॥
अक्षः पिचुः पाणितलं किंचित्पाणिश्च तिन्दुकम् ।
बिडालपदकं चैव तथा षोडशिका मता ॥ ८ ॥
करमध्यं हंसपदं सुवर्णं कवलग्रहम् ।
उदुम्बरं च पर्यायैः कर्ष एवनिगद्यते ॥ ९ ॥

चार मासेका एक शाण उसको धरण तथा टंक भी कहते हैं. दो शाणका एक कोल उसको क्षुद्रभ वटक द्रंक्षण कहते हैं. दो कोलका एक कर्ष कहाता है, उसको पाणिका अक्ष, पिचु, पाणितल, किंचित्पाणि, तिन्दुक, बिडालपदक, षोडशिका, करमध्य, हंसपद, सुवर्ण कवलग्रह और उदुम्बर कहते हैं अर्थात् ये भी कर्षके नाम हैं ॥६-९॥

स्यात्कर्षाभ्यामर्धपलं शुक्तिरष्टमिका तथा ।
शुक्तिभ्यां च पलंज्ञेयं मुष्टिराम्रं चतुर्थिका ॥ १० ॥
प्रकुञ्चः षोडशी बिल्वं पलमेवात्र कीर्त्यते ।
पलाभ्यां प्रसृतिर्ज्ञेया प्रसृतश्च निगद्यते ॥ ११ ॥
प्रसृतिभ्यामंजलिः स्यात्कुडवोऽर्धशरावकः ।

Aho ! Shrutgyanam

अष्टमानं च संज्ञेयं कुडवाभ्यां च मानिका ॥
शरावोऽष्टपलं तद्वज्ज्ञेयमत्र विचक्षणैः ॥ १२ ॥

दो कर्षका एक अर्धपल होता है, जिसको शुक्ति तथा अष्टमिका भी कहते हैं, दो अर्धपलका एक पल होता है, जिसको मुष्टि, आम्र, चतुर्थिका, प्रकुंच, षोडशी और बिल्व भी कहते हैं. दो पलकी एक प्रसृति होती है, जिसको कुडव, अर्धशराव और अष्टमान कहते हैं. दो कुडवकी एक मानिका, जिसको शराव और अष्टपल भी कहते हैं ॥ १०–१२ ॥

शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थश्चतुःप्रस्थस्तथाऽऽढकम् ।
भाजनं कंसपात्रं च चतुःषष्टिपलं च तत् ॥ १३ ॥
चतुर्भिराढकैर्द्रोणः कलशो नल्वणोन्मनो ।
उन्मानश्च घटो राशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञकाः ॥ १४ ॥
द्रोणाभ्यां शूर्पकुम्भौ च चतुःषष्टिशरावकः ।
शूर्पाभ्यां च भवेद्द्रोणी वाहो गोणी च सा स्मृता॥ १५॥

दो शरावका एक प्रस्थ, चार प्रस्थका एक आढक, जिसको भाजन और कंसपात्र भी कहते हैं. इस आढकके चौसठ पल होते हैं. चार आढकका एक द्रोण जिसको प्रसृत भी कहते हैं दो प्रसृतिकी एक अंजली, जिसको कलश, नल्वण, उन्मन, उन्मान, घट और राशि भी कहते हैं. दो द्रोणका एक शूर्प और कुम्भ होता है तथा उस शूर्पके चौंसठ शराव होते हैं दो शूर्पकी एक द्रोणी जिसको वाह गोणी भी कहते हैं ॥ १३-१५ ॥

द्रोणीचतुष्टयं खारी कथिता सूक्ष्मबुद्धिभिः।
चतुःसहस्रपलिका षण्णवत्यधिका च सा ॥ १६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पलिकानां द्विसहस्रं भार एकः प्रकीर्तितः ।
तुला पलशतं ज्ञेया सर्वत्रैवेष निश्चयः ॥ १७ ॥
माषटंकाक्षबिल्वानि कुडवः प्रस्थमाढकम् ।
राशिर्गोणीखारिकेति यथोत्तरचतुर्गुणाः ॥ १८ ॥

चार द्रोणीकी एक खारी उस खारीके चार हजार छियानवें पल होते हैं, दो हजार पलका एक भार होता है तथा सौ पलकी एक तुला होती है, ऐसे सर्वत्र निश्चय जानना ॥ १६-१८ ॥

स्थितिर्नास्त्येव मात्रायाः कालमग्निं वयो बलम् ।
प्रकृतिं दोषदेशौ च दृष्ट्वा मात्रां प्रकल्पयेत् ॥ १९ ॥
यतो मन्दाग्नयो ह्रस्वा हीनसत्त्वा नराः कलौ ।
अतस्तु मात्रा तद्योग्या प्रोच्यते शास्त्रसंमता ॥ २० ॥
यवो द्वादशभिर्गौरसर्षपैः प्रोच्यते बुधैः ।
यवद्वयेन गुञ्जा स्यात्त्रिगुञ्जो बल्लमुच्यते ॥ २१ ॥

मात्राकी स्थिति नहीं है अर्थात् जो प्रयोगमें मात्रा लिखी है उतनीही देनी चाहिये यह नियम नहीं हैं । वैद्य काल, अग्नि, अवस्था, बल, प्रकृति, दोष और देश इनको देखकर अपनी बुद्धिसे मात्राकी कल्पना करे, क्योंकि इस कलियुगमें मन्दाग्नि, छोटे और हीनपराक्रम मनुष्य हैं इसी कारण उनके निमित्त शास्त्रसंमत मात्रा कहता हूं-बारह सफेद सरसोंका एक यव होता है दो यवकी एक गुंजा (रत्ती) होती है । तीन गुंजाका एक बल्ल होता है ॥ १९-२१ ॥

माषो गुञ्जाभिरष्टाभिस्सप्तभिर्वा भवेत्क्वचित् ।
स्याच्चतुर्माषकैः शाणः स निष्कष्टंक एव च ॥२२॥

Aho ! Shrutgyanam

गद्याणो माषकैः षड्भिः कर्षःस्याद्दशमाषकः ।
चतुःकर्षैः पलं प्रोक्तं दशशाणमितं बुधैः ।
चतुःपलैश्च कुडवः प्रस्थाद्याः पूर्ववन्मताः ॥ २३ ॥

आठ गुंजाका एक मासा होता है; कहीं सात गुंजाकाभी मासा होता है. चार मासेका एक शाण होता है, उसको निष्क टंक भी कहते हैं. तीन टंकका एक तोला होता है, छः मासेका एक गद्याणक होता है. दश मासेका एक कर्ष होता है, चार कर्षका एक पल होता है वा एक पलका दश शाण होते हैं । चार पलका एक कुडव होता है और प्रस्थादिकोंका मान पूर्वोक्त मागध परिभाषाके मानसे जानलेना (पांच पल और साढे सात मासेकी एक छटांक), तीन प्रस्थ और साढे बाईस मासेका पौन पाव होता है ॥ २२--२३ ॥

अथ शारीरक ।

कलाः सप्ताशयाः सप्त धातवः सप्त तन्मलाः ।
सप्तोपधातवः सप्त त्वचःसप्तप्रकीर्तिताः ॥ १ ॥
त्रयो दोषा नवशतं स्नायूनां सन्धयस्तथा ।
दशाधिकं च द्विशतमस्थ्नां च द्विशतं मतम् ॥ २ ॥
सप्तोत्तरं मर्मशतं शिराः सप्तशतं तथा ।
चतुर्विंशतिराख्याताधमन्यो रसवाहिकाः ॥ ३ ॥
मांसपेश्यः समाख्याता नृणां पञ्चशतं बुधैः ।
स्त्रीणां च विंशत्यधिका कण्डराश्चैव षोडश ॥ ४ ॥
नृदेहे दश रंध्राणि नारीदेहे त्रयोदश ।
एतत्समासतः प्रोक्तं विस्तरे[illegible]धुनोच्यते ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

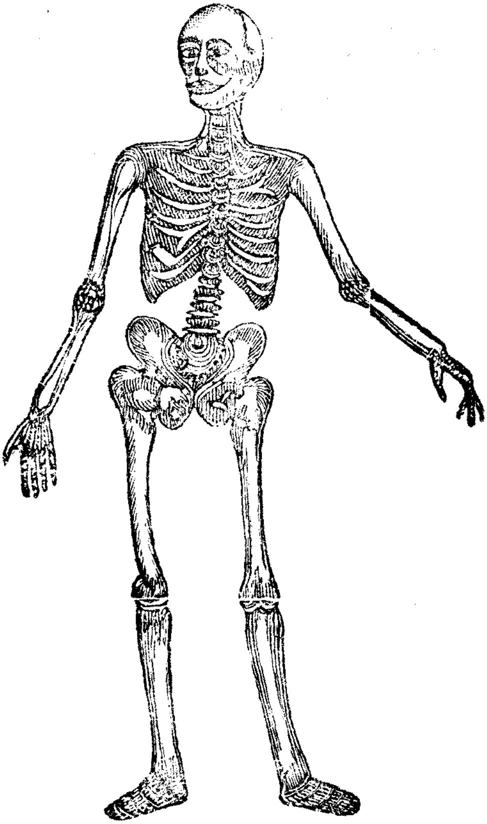

सात कला, सात आशय, सात धातु, सात ही धातुओंके मल, सात उपधातु, सात त्वचा, तीन दोष, नौ सौ नाडी, दो सौ दश नाडियोंकी सन्धि, दो सौ हड्डी, एक सौ सात मर्मस्थान, सात सौ नसें, चौवीस रसकी बहनेवाली धमनीनाडी, पांच सौ मांस पेशी हैं. स्त्रियोंके वीस अधिक हैं सोलह कंड़रा, पुरुषके देहमें दश छिद्र हैं. स्त्रीके देहमें तेरह छिद्र हैं यह संक्षेपसे शारीरक कहा है। अब विस्तारसे कहता हूं ॥ १--५ ॥

मांसासृङ्मेदसां तिस्रो यकृत्प्लीह्नोश्चतुर्थिका ।
पञ्चमीच तथाऽन्त्राणां षष्ठी चाग्निधरा स्मृता ॥
रेतोधारा सप्तमी स्यादिति सप्त कला मताः॥ ६ ॥

१ मांस, २ रुधिर, ३ मेद, ४ प्लीह, ५ यकृत-आंतोंकी पांचवीं, ६ अग्निधरा और वीर्यके धारण करनेवाली सातवीं कला है. ये सात कला हैं ॥ ६ ॥

श्लेष्माशयः स्यादुरसि तस्मादामाशयस्त्वधः ॥ ७ ॥
ऊर्ध्वमग्न्याशयो नाभेर्वामभागे व्यवस्थितः ।

Aho ! Shrutgyanam

तस्योपरि तिलं ज्ञेयं तदधः पवनाशयः ॥ ८ ॥
मलाशयस्त्वधस्तस्माद्वस्तिमूत्राशयस्त्वधः ।
जीवरक्ताशयमुरो ज्ञेयाः सप्ताशयास्त्वमी ॥ ९ ॥
पुरुषेभ्योऽधिकाश्चान्ये नारीणामाशयास्त्रयः ।
धरा गर्भाशयः प्रोक्तःस्तनौ स्तन्याशयौ मतौ॥१०॥

उरमें कफाशय है, उसके नीचे आमाशय है, उसके ऊपर नाभिके वामभागमें अग्न्याशय है, उसके ऊपर तिल है, यह प्यासका स्थान है । उसके नीचे पवनाशय है, पवनाशयके नीचे मलाशय है, मला' शयके नीचे मूत्राशय है, उरमें जीवरक्ताशय है । ये सात आशय हैं । पुरुषोंसे स्त्रियोंके तीन आशय अधिक हैं एक गर्भाशय और दो स्तनाशय ॥ ७-१० ॥

रसासृङ्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः ।
जायन्तेऽन्योन्यतः सर्वे पाचिताः पित्ततेजसा ॥११॥

रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि (हड्डी), मज्जा और शुक्र ये सात धातु पित्तके तेजसे पाचन होकर अन्योन्य प्रकट होते हैं ॥ ११ ॥

जिह्वानेत्रकपोलानां जलं पित्तं च रञ्जकम् ।
कर्णविड्रसनादन्तकक्षमेढ्रादिजं मलम् ॥ १२ ॥
नखनेत्रमलं वक्त्रे स्निग्धत्वं पिडिकास्तथा ।
जायन्ते सप्त धातूनां मलान्येतान्यनुक्रमात् ॥१३॥

जीभ, नेत्र और कपोल इनमें जो जल है वह रस धातुका मल है, रंजकपित्त रुधिरका मल है, कानका मैल मांसका मल है । जीभ, दांत, बगल और लिंग इनमें जो मल होता है वह मेदका मल है । नख, केश, रोम ये हड्डीके मल हैं नेत्रमें जो कीचड आती है और

Aho ! Shrutgyanam

मुखकी चिकनाई यह मज्जा धातुका मल है. मुखक मुहांसे शुक्रका मल है ॥ १२ ॥ १३ ॥

स्तन्यं रजश्च नारीणां काले भवति गच्छति ।
शुद्धमांसभवः स्नेहो वसा सा परिकीर्तिता ॥ १४ ॥
स्वेदो दन्तास्तथा केशास्तथैवौजश्च सप्तमम् ।
ओजः सर्वशरीरस्थंस्निग्धं शीतं स्थिरं सितम् ॥ १५ ॥
सोमात्मकं शरीरस्थं बलपुष्टिकरं मतम् ।
इति धातुमला ज्ञेया एते सप्तोपधातवः ॥ १६ ॥

रसकी उपधातुसे स्त्रियोंको दूध होता है, रुधिरकी उपधातु रज, यह स्त्रियोंके समय पाकर होता है, नष्ट भी होजाता है । चरबी मांसकी उपधातु है जिसको वसा कहते हैं, स्वेद मेदाकी उपधातु है, दांत अस्थिकी उपधातु है, केश मज्जाधातुकी उपधातु है, और रज शुक्रधातुकी उपधातु है, ओज सर्व देहमें रहता है, चिकना शीतल स्थिर और सफेद है । यह ओज सोमात्मक शरीरमें स्थित होकर देहमें बल और पुष्टता करता है । ये सात धातुओंसे सात धातु पैदा होती हैं ॥ १५ ॥ १६ ॥

ज्ञेयाऽवभासिनी पूर्वं सिध्मस्थानं च सा मता ।
द्वितीया लोहिता ज्ञेया तिलकालकजन्मभूः ॥ १७ ॥
श्वेता तृतीया संख्याता स्थानं चर्मदलस्य च ।
ताम्रा चतुर्थी विज्ञेया किलासश्चात्र भूमिका ॥ १८ ॥
पञ्चमी वेदनी ख्याता सर्वकुष्ठोद्भवस्ततः ।
विख्याता लोहिता षष्ठी ग्रंथिगण्डापचीस्थितिः ॥ १९ ॥
स्थूला त्वक्सप्तमी ख्याता विद्रध्यादेः स्थितिस्तु सा ।
इति सप्त त्वचः प्रोक्ताः स्थूला व्रीहिद्विमात्रया ॥ २० ॥

Aho ! Shrutgyanam

प्रथम त्वचा अवभासिनी है सो सिध्मकुष्ठकी भूमि है, दूसरी त्वचा लोहिता है सो तिलकालककी जन्मभूमि है, तीसरी त्वचा श्वेता है जो चर्मदल कुष्ठकी जगह है, चतुर्थ ताम्रा सो किलासकुष्ठकी ठौर है, पांचवीं वेदनी है सो सम्पूर्ण कुष्ठोंकी जगह है, छठवीका भी नाम लोहिता है सो गांठ, गण्डमाला, अपची आदि रोगोंकी जगह है, सातवीं त्वचाका नाम स्थूल है सो विद्रधि आदि रोगोंकी जन्मभूमि हैं, ये सात त्वचा कहीं हैं, इन सातोंका मुटान दो यवकी बराबर है ॥ १७ ॥ २० ॥ इति शारीरक ॥

अथ पाकविधि ।

चिकित्सायां द्वयं सारं पाकविद्या रसायनम् ।
पाकावलेहभेदः स्यात्स मृदुः सघनः परः ॥ १ ॥

चिकित्सामें दो वस्तु सार हैं—एक पाकविद्या, दूसरी रसायनविद्या। इनमें नरम और कठिनके भेदसे पाक दो प्रकारका है अर्थात् जिसकी चासनी कुछ पतली होय उसको अवलेह कहते हैं और जिसकी चासनी कड़ी करके जमाया जावे उसको पाक कहते हैं ॥ १ ॥

तत्रादौ शिक्षा ।

काष्ठौषध्यः पृथक्पेष्याः सुगन्धादिपृथग्विधाः ।
सम्पेष्य वस्त्रसंपूतमुभयं स्थापयेद्भिषक् ॥ २ ॥
द्राक्षाश्रीफलबादामप्रभृतिः स्याद्यदाऽत्र तु ।
तन्न पेष्यं भिषग्वर्यैः किन्तु भूरिविखण्डयेत् ॥ ३ ॥
खमतण्डुलचारस्य बीजानि तु यथा स्थितिः ।
पाकद्राक्षादिचारस्य मज्जा तन्मात्रयाऽधिकम् ॥ ४ ॥
पाकनुसारतो ग्राह्यं भक्षणे तत्सुखावहम् ।

पाककर्ता वैद्यको उचित है कि काष्ठादि औषधियोंको न्यारी पीसे और सुगन्धादि जैसे लौंग इलायची जावित्री आदिको न्यारी पीसे।

Aho ! Shrutgyanam

पीछे इनका कपडछान करके न्यारी न्यारी रक्खे और दाख, गिरीका गोला, बदाम इत्यादिक वस्तुओंको पीसे नहीं किन्तु बहुत छोटे २ टुकडे करडाले खसखस, चिरौंजी इत्यादिको ज्योंकी त्यों रहनेदे न पीसे न कतरे, ये चीजें पाकके अंदाजसे डालनी चाहिये तो खानेमें पाक श्रेष्ठ बने ॥ २ ॥ ४ ॥

पाके जाते क्षिपेत्तत्र काष्ठौषधिभवं रजः ॥ ५ ॥
दर्व्या विघट्टयेत्सम्यक् क्वचिदुष्णे सुगन्धि च ।
मुहुर्विघट्टयन्पश्चाद्द्राक्षादीन् प्रक्षिपेन्मुहुः ॥ ६ ॥
काश्मीरं घृतसंपिष्टं किञ्चिद् घृष्टं विमिश्रयेत् ।
अहिफेनं क्षिपेत्क्षीरे संपिष्टं पाककर्मणि ॥ ७ ॥
देया शक्राशना भृष्टा चूर्णिता मात्रयाऽथवा ।
पुनःसंघट्टयेत्सर्वमेकीभावं यथा व्रजेत् ॥ ८ ॥
ज्वालाग्निं वर्जयेद्वैद्यः प्रक्षेपसमये ध्रुवम् ।
अन्यथा हीनवीर्याणि भेषजानि प्रतापतः ॥ ९ ॥

जब पाककी चासनी तैयार होजाय उस समय पूर्वोक्त पीसी हुई काष्ठौषधि डालकर करछीसे चलाता जाय, जब सब काष्ठादिक औषधि मिलजायँ और चासनी कम गर्म रहे तब सब सुगंधादि वस्तुओंको डाले फिर चलावे, तदनन्तर दाख गिरी आदि मेवा डाले पीछे केशरको घृतमें पीस उसमें मिलादेवे । कदाचित् पाकमें अफीम डालनी होवे तो दूधमें पीसकर डाले और भाग डालना होवे तो भूनकर और उसका चूर्ण कर डाले, पीछे इनको करछीसे चलावे जिससे सब मिलजावें और यह बातभी वैद्यको याद रहे कि, जिस समय औषधि डाले उस समय अग्निको न देय क्योंकि औषधि डालनेके समय अग्नि देनेसे औषधि हीनवीर्य होजाती है ॥ ५ ॥ ९ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अनुक्तमपि पाकादौ धात्वादि प्रक्षिपेत्सुधीः ।
चन्दनाभ्यादि तद्वच्च यथाविभवमर्पयेत् ॥ १० ॥
नाभ्याऽञ्चिते तु संस्थाप्य संपुटे तन्महौषधम् ।
यदि स्याद्राजहृग्योग्यमिति वैद्यवरा विदुः ॥ ११ ॥

पाकमें नहीं भी कहे धात्वादि चन्द्रोदय, वङ्ग, अभ्रक आदि अपने अन्दाजसे जरूर डाले, भीमसेनी कपूर और कस्तूरी आदिशब्दसे अम्बर, सोने, चांदीके वर्क आदिभी डालने चाहिये। तदनन्तर उसको किसी पात्रमें निकाललेवे, कतली जमानी होवे तो किसी थालीमें उतारकर जमावे उनमें सोने या चांदीके कोइतासे तबक लगाकर कतली काटकर रखलेवे तो पाक राजालोगोंके खाने योग्य बने और अवलेह बनानी होय तो चासनी कुछ पतली रख और लड्डू बनाने होवें तो कतलीके समान चासनी बनावे परन्तु उसको कडाहीमेंही कौंचेसे चलाकर गाढी करलेवे ॥ १० ॥ ११ ॥

सुगन्धितैलाचितभाजने वै स्थाप्योऽवलेहः किल राजयोग्यः । वर्षासु वैद्याः प्रवदन्ति पाकलेहादिकं नो बहु तत्प्रकुर्यात् ॥ १२ ॥ मितं कृतं द्वित्रिदिनान्तरालं स्थाप्यं सुघर्मे ह्यवलेहकादि । वर्षाऋतौ यत्नविवर्जितं तद्भवेत्तु जुष्टं किल जन्तुकीटैः ॥ १३ ॥

सुगन्धवाले और चिकने पात्रमें अवलेहको रखना चाहिये । वर्षा ऋतुमें पाकका बनाना श्रेष्ठ है और ऋतुमें अवलेह, कदाचित् वर्षा ऋतुमें अवलेह बनानी होय तो थोडी बनावे बहुत न बनावे और उसको बनाकर दो तीन दिन धूपमें रखकर पीछे उसके मुखको यत्न-पूर्वक बाँधे कि, जिसमें कोई जीव नजा सके और धूल आदि न पडे,

Aho ! Shrutgyanam

इस प्रकार बांधकर अच्छे हवादार मकानमें रखदेवे क्योंकि, वर्षाऋतुमें विना यत्नके रखनेसे जीव आदि पडजाते हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥

पाके ग्राह्या सिता श्वेता विमला गुणकारिणी ।
समलां शोधयेद्यत्नाद्यावन्मलविनिर्गमः ॥ १४ ॥
समलां च सितां प्राप्य कटाहे विरचेत्सुधीः ।
प्रक्षिपेत्सर्वतस्तत्र गोदुग्धं सजलं मुहुः ॥ १५ ॥
वस्त्रपूतकयोगेन तदूर्ध्वस्थं मलं हरेत् ।
एवं पुनः पुनः कुर्याद्यावन्मलविनिर्गमः ।
पश्चात्पाकत्वमानीय प्रक्षिपेदौषधानि तु ॥ १६ ॥
इति प्रोक्तंमया किञ्चित्पाकशासनमुत्तमम् ।
अन्यत्सर्वं भिषग्वर्य्यैर्लोकतो ज्ञेयमेवतत् ॥ १७॥

पाक बनानेको सफेद और उत्तम खांड (चीनी) लेनी चाहिये। यदि उसमें मैल होय तो उसका शोधन इस प्रकार करे--मैलवाली खांडको कडाहीमें चढाकर अंदाजसे उसमें जल डालकर औटावे, जब कुछ औट चुके तब पानी मिला दूध उसमें चारों तर्फ डाले, जब मैल चासनीके ऊपर आजाय तब एक पात्रपर दो लकडी रखकर उसमें छोटीसी डलिया रखकर उसमें बारीक कपडा बिछाकर पूर्वोक्त कडाही-मेंसे उस रसको निकालकर डलियामें डाले तो वह रस उस डलिया-मेंसे टपक टपक कर नीचेके पात्रमें गिरे, उसको हलवाई बक्खर कहते हैं, उस खांडका मैल उस डलियामें रहजाता है, पीछे उस बक्खरकी चासनी करे, उसमें पीसी हुई औषधी डाले, यह मैंने कुछ पाक बनानेकी विधि कही है और विशेष विधि लोकसे अर्थात् पाक-कर्ता हलवाई आदिसे जाननी चाहिये ॥ १४--१७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

बृहत्पूगीपाक ।

पूगं दक्षिणदेशजं दशपलोन्मानं भृशं कर्त्तयेत्
तत्क्षिप्तं जलयोगतो मृदुतरं सङ्कुट्य चूर्णीकृतम् ।
तच्चूर्णं पटशोधितं वसुगुणे गोशुद्धदुग्धे पचेद्
द्रव्याज्याञ्जलसंयुतेऽतिनिबिडैर्दद्यात्तुलार्द्धं सिताम् ॥ १ ॥

दक्षिणी सुपारी दशपल (१६० टंक) लेवे, उनको कतरकर जलमें भिगोकर कूटडाले पीछे सुखाकर उस चूर्णको कपडछान करे । तदनन्तर सुपारीके चूर्णसे अठगुने दूधमें उस चूर्णको डालकर खोवा करे पीछे उस खोवाको उत्तम घृतमें भूनकर रक्खे पीछे मिश्री ८०८ टंक लेय ॥ १ ॥

पक्कं तज्ज्वलनात्क्षितिं प्रतिनयेत्तस्मिन्पुनः प्रक्षिपेद्द्यात्तत्तदुदाहरामि बहुलाद्दृष्ट्वा वरात्संहितात् ।
एला नागबला बला सचपला जातीफलालिङ्गिता
जातीपत्रकमत्र पत्रकयुतं तच्च त्वचा संयुतम् ॥ २ ॥
विश्वा वीरणवारिवारिदवरा वांशी वरी वानरी
द्राक्षा सक्षुरगोक्षुराऽथ महती खर्जूरिका क्षीरिका ।
धान्याकं सकसेरुकं समधुकं शृङ्गाटकं जीरकं
पृथ्वीकाथ यवानिका वरटिका मांसी मिसिर्मेथिका ॥ ३ ॥ कन्देष्वत्र विदारिकाथ मुशली
गन्धर्वगन्धा तथा कर्चूरं करिकेशरं समरिचं
चारस्य बीजानि च । बीजं शाल्मलिसंभवं करिकणाबीजं च राजीवजं श्वेतं चन्दनमत्र रक्तमपि
च श्रीसंज्ञपुष्पैः समम् ॥ ४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

मिश्रीकी चासनी करै जब पाकके योग्य चासनी हो जाय तब इतनी औषधी और डालै, सो मैं लिखता हूं--इलायची, नागबला (गुलसकरी), बला (बरिआरी), पीपल, जायफल, शिवलिंगी, जावित्री, पत्रज, दालचीनी, सोंठ, उशीर, सुगन्धवाला, नागरमोथा, हरड, बहेडा, आंवला, वंशलोचन, शतावर, कौंचके बीज, तालमखाने, दाख, गोखरू, महती (उत्तत्ती), खजूर इति पूर्वदेश प्रसिद्ध छुहारे, खिरनी, धनियां, कसेरू, महुवा, सिंघाडे, जीरा, मगरेल, अजमायन, बरउ,जटामांसी. सौंफ, मेथी. विदारीकन्द, मूसली, असगन्ध, कचूर, नागकेशर, काली मिरच, चिरौंजी, सेमरकेबीज, गजपीपल, कमलगट्टा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, धायके फूल ये सब बराबर लेवे ॥ २--४ ॥

सर्वं चेति पृथक्पृथक्पलमितं संचूर्ण्य तत्र क्षिपे-
त्सूतं वङ्गभुजङ्गलोपगगनं संमारिता स्वेच्छया।
कस्तूरीघनसारचूर्णमपि च प्राप्तं यथा प्रक्षिपेत्प-
श्चादस्य तु मोदकान्विरचयेद्बिल्वप्रमाणांस्तथा
॥ ५ ॥ तान्भुक्त्वा च सदा यथानलबलं भुञ्जी
नाम्लं रसं पूर्वस्मिन्नशिते गते परिणते प्राग्भोज-
नाद्भक्षयेत् । नित्यं श्रीरतिवल्लभाख्यकमिमं यः
पूगपाकंभजेत्स स्याद्वीयविवृद्धवृद्धमदनो वाजीव
शक्तो रतौ ॥६॥ दीप्ताग्निर्बलवान् वलीविरहितो
हृष्टः सुपुष्टः सदा वृद्धो योऽपि युवेव सोऽपि
रुचिरःपुर्णेन्दुवत्सुंदरः ॥ ७ ॥

ये सब औषधि न्यारी न्यारी एक एक पल ले सबको कूट पीस पूर्वोक्त चासनीमें गेरे,तदनंतर चन्द्रोदय,वंग नागेश्वर, लोह, अभ्रक ये भी अनुमान

Aho ! Shrutgyanam

मुवाफिक वैद्य डाले और कस्तूरी, कपूर, अंबर आदिभी अनुमान मुवाफिक डालकर इसके लड्डू बेलकी बराबर बनावे ये लड्डू मनुष्यकी अग्निका बलाबल देखकर भोजनके पहले देवे और खटाई और बादीका परहेज रक्खे तो "रतिवल्लभपूगीफलपाक" नामसे विख्यात यह पाक वीर्यको बढावे. कामदेवको प्रबल करे, स्त्रियोंसे भोग करनेमें घोडेके समान पराक्रम करे, अग्निको प्रबल करे, बली हृष्ट पुष्ट होय, यदि वृद्ध मनुष्य भी खाय उसमें तरुण पुरुषकासा पराक्रम होय, चन्द्रमाके सदृश सुन्दर होय ॥ ६-७ ॥

कामेश्वर मोदक ।

एतस्मिन्नतिवल्लभे यदि पुनः सम्यक्खुरासानिका
धत्तूरस्य च बीजमर्ककरभः पाथोधिशोषस्तथा ।
सन्माजूफलकं तथा खसफलं त्वक्चापि निक्षिप्यते
चूर्णार्द्धा विजयातथा स हि भवेत्कामेश्वरो मोदकः ॥१॥

इसी रतिवल्लभ पूगीपाकमें खुरासानी, अजमायन, धत्तूरेके बीज, अकर करा, समुद्रशोष, माजूफल, खसका फल, तज ये डाले और सब चूर्णसे आधी भांग डाले तो यह कामेश्वर मोदक बने ॥ १ ॥

छोटा सुपारीपाक ।

हेमाम्भोधरचन्दनं त्रिकटुकं जातीप्रियालं कुहू-
मज्जा त्रित्रिसुगन्धजीरयुगलं शृंगाटकं वंशजम् ।
जातीकोशलवंगधान्यकयुतं प्रत्येककर्षद्वयं हैयंगोः
कुडवः सितार्द्धतुलना धात्री वरा व्यञ्जली ॥ पूग
स्याष्टपलान्युलूखलवरे संकुट्य चूर्णीकृतं क्षीर
स्याढकसंयुतं कृतमिदं मन्दाग्निना तं पचेत् ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

नागरमोथा, चंदन, सोंठ, मिरच, पीपल, जावित्री, चिरौंजी, बेरकी मींगी, तज, इलायची, तालीसपत्र, काला जीरा, सफेद जीरा, सिंघाडेकी गिरी, वंशलोचन, जायफल, लौंग धनियां कपूर, दालचीनी ये सब वस्तु बराबर प्रत्येक आठ आठ टंक लेनी, सबको कूट पीस कपडछान कर रख छोडे। पीछे दक्षिणकी चिकनी सुपारी १२८ टंक, गौका नवीन घृत ६४ टंक, सफेद मिश्री ८०८ टंक लेवे। पीछे सुपारियोंको खरलमें डाल कूटकर कपड़छान कर १२४ टंक दूधमें डालकर खोवा करे पीछे उस खोवाको घृत मिलाकर भूने, पीछे पूर्वोक्त सुपारीपाककी विधिसे इस पाकको बनाय लेवे ॥ १ ॥

खादेत्प्रातरिदं ज्वरामयहरं दाहं च पित्तं जये-
न्नासाऽस्याऽक्षिगुदप्रवाहरुधिरं यद्रोमकूपच्युतम्
॥ २ ॥ यक्ष्मा क्षीणबलं क्षताग्निविलयं छर्दिप्रमेहा-
र्शसां रेतोवृद्धिकरं रसायनवरं गर्भप्रदं योषिताम् ।
मूत्राघातविनाशनं बलकरं वृद्धाङ्गपुष्टिप्रदं पूगी-
पाकमिदं प्रशस्तदिवसे कार्यं च ग्राह्यं बुधैः ॥ ३ ॥

इस सुपारीपाकको प्रातःकाल सेवन करनेसे इतने रोग नष्ट होवें- ज्वर, दाह, पित्तके रोग, नेत्ररोग, मुखरोग, नासिकारोग, गुदाकेरोग, रुधिरका गुदाद्वारा गिरना, रोमकूपोंसे रुधिरका निकलना, क्षयसे क्षीणता, उरःक्षत, मंदाग्नि, वमन, प्रमेह, बवासीर। और यह रसायन वीर्यको वढावे स्त्रियोंको गर्भकर्ता है, मूत्राघातको नाश करे, बल करे। वृद्ध देहकी पुष्ट करे, इस सुपारी पाकको वैद्य शुभ दिनमें बनावे और शुभ दिनमेंही खानेको देवे ॥ २ ॥ ३ ॥

विजयापाक।

विजयाया रसं शुद्धं तुलामात्रं प्रदापयेत् ।
क्षीरं गव्यं तुलार्द्धं तु शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

घनीभूतं तदुत्तार्य खण्डायाः पलविंशतिः ।
चातुर्जातं लवङ्गं च व्योषमाकल्लकं तथा ॥ २ ॥
जातीफलं जातिपत्री ह्यश्वगन्धा पुनर्नवा ।
नागार्जुनीस्वगुप्तानां सबलानां पलार्द्धकम् ।
सर्वं संचूर्ण्य संमिश्र्य पलार्द्धगुटिका भवेत् ॥ ३ ॥

भांगका रस १६-१६ टंक ले और दूध तथा घृत ८०८ टंक लेना चाहिये, इन सबको मिलाकर धीरे धीरे मन्दाग्निसे पाचन करै- जब गाढा होजाय तब चूल्हेसे उतार लेय पीछे मिश्री बीस पलकी चासनी कर उसमें पूर्वोक्त भांगके रसका खोवा डाले और य औषधी और डाले-चातुर्जात, लौंग, सोंठ, मिरच, पीपल, अकरकरा, जायफल, जावित्री, असगंध, सोंठ, दुद्धी, कौंचके बीज, बाला (वरिआरा) ये सब औषधि आठ आठ टंक लेय कूट पीस कपडछान कर मिलाय लड्डू बना लेवे ॥ १-३ ॥

प्रातः प्रातः प्रभुक्ता हि धातुपुष्टिबलप्रदा ।
प्रमेहव्याधिशमनी सर्वातीसारनाशिनी ॥ ४ ॥
श्वासं कासं तथा षाण्ढ्यं स्त्रीणां दुष्प्रदरं तथा ।
नाशयत्येव वृष्याऽऽशु वीर्यस्तंभविधायिनी ॥ ५ ॥

प्रातःकाल इस विजयापकको सेवन करे तो धातुपुष्टि होय, बल करे, प्रमेह जाय, सब प्रकारके अतीसार, श्वास, खांसी, नपुंसकता, स्त्रियोंके प्रदरादिरोगोंको नाश करे और वीर्यका स्तंभन करता है ॥ ४ ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

कामेश्वरपाक (दूसरा विजयापाक)।

सम्यङ्मारितमभ्रकं कटुफलं कुष्ठाऽश्वगन्धाबला
मेथी मोचरसं विदारिमुशली गोक्षीरकं क्षीरकम्।
रम्भाकन्दशतावरी अजमुद्रा माषा तुलाधान्यकं
ज्येष्ठी नागबला कचूरमदनो जातीफलं केशरम्॥१॥
भार्ङ्गी कर्कटशृंगशृंगत्रिकुटा जीरद्वयं चित्रकं
चातुर्जातपुनर्नवा गजकणाद्राक्षासिणावासिकः।
बीजं मर्कटशाल्मली फलत्रिकं चूर्णं समं कल्पयेत्तु-
र्यांशं विजया सिता द्विगुणितामध्वाज्यपिण्डीकृता॥२
कर्षार्द्धं गुटिकावलेहमथवा कृत्वा सदा सेवये-
द्देयं क्षीरसिता च वीर्यकरणं स्तम्भोऽप्यलं कामिनाम्।
रामावश्यकरं सुखातिसुखदं सङ्केऽङ्गनादीत्रकं
क्षीणे पुष्टिकरं क्षये क्षयकरं हन्याच्च सर्वामयान्॥३॥
कासश्वासमहातिसारशमनं श्लेष्माणमुग्रं जये-
न्नित्यानन्दकरं विशेषकविताबाचां विलासप्रदम्।
धत्ते सर्वगुणान्किमत्र बहुना पीयूषमेतत्पर-
मभ्यासेन निहन्ति मृत्युपलितं कामेश्वरो वत्सरात्॥४॥

सुंदर फूंकी अभ्रक, कायफल, कूठ, असगन्ध, खरेटी, मेथी, मोचरस, विदारीकन्द, मूसली, गोखरू, क्षीरकन्द, केलाकंद, शतावर, अजमोद, उड़द, काले तिल, धानियां, मुलहठी, गंगेरनकी छाल, कपूर, कस्तूरी, जायफल, केशर, भारंगी, काकडासिंगी, भांगरा, त्रिकुटा, दोनों जीरे, चित्रक, चातुर्जात, सांठकी जड, गजपीपल, दाख, सनके

Aho ! Shrutgyanam

बीज, अडूसा, सेमलके बीज, कौंचके बीज, त्रिफला ये औषधि बराबर लेकर इन सबकी चौथाई भांग ले और सब औषधियोंसे दूनी मिश्री डाले पीछे शहद और घी डालकर दो दो टंकके अनुमान लड्डू बनालेवे अथवा अवलेह बनाकर नित्य सेवन करे और इसके ऊपर दूध पीवे तो वीर्यस्तंभन होवे, स्त्रियोंको वश करे, अत्यन्त सुख दे, स्त्री द्रवें, क्षीण मनुष्योंको पुष्टि करे, क्षयको दूर करे, सब रोगोंको नष्ट करे, खांसी, श्वास, घोर अतीसार, घोर कफके रोग इनका नाश करे, सदैव आनन्द कर्ता, कविता करनेकी शक्तिको बढावे, सर्वगुण धारणकर्ता होवे. बहुत कहनेमें क्या है. यह अमृतके तुल्य है. इसको एक वर्ष सेवन करनेसे मृत्यु और पलितरोगादिक सब नष्ट होवें ॥ १-४ ॥

स्त्रीयोग्य सौभाग्यशुंठी ।

प्रस्थत्रयं शुद्धमहौषधस्य विपाचयेद्गव्यघृते समे च। चतुर्गुणः क्षीरसमं च खण्डं सुशुद्धताम्रायसजे कटाहे ॥ १ ॥ प्रत्येकजातीफलत्रैफलेन जातीद्वयं धान्यशताह्वयेन । एलोपकुल्याघनवालकानां द्राक्षा विदारी घनसारकं च ॥ २ ॥ खर्जूरिकाश्चैव पलार्द्धमात्रं पलाष्टकं शीर्षफलं विदध्यात् । पादांशमेवाश्मजिदायसं च द्विपादयुक्तं मिसिचारुबीजम् ॥ ३ ॥ त्रिवृत्पलाष्टौ शुभमेकपिंडीगन्धाढ्यमाधुर्यविमिश्रिता च ॥ ४ ॥

वाडकी सोंठ पांच सेरको पांच सेर गौके घीमें भूने पीछे उस सोंठको बीस सेर गौके दूधमें खोवा करे तदनंतर बीस सेर

Aho ! Shrutgyanam

मिश्रीकी चासनी करे उसमें उस खोवेको डाले और ये औषधी और डाले । सो लिखताहूं—जायफल, हरडा, बहेडा, आंवला, दोनों जीर, धनियां, सौंफ, पीपल, इलायची, पीपल, नागरमोथा, नेत्रवाला, दाख, विदारीकंद, भीमसेनी कपूर, छुहारे ये सब औषधि आठ आठ टंक लेनी चाहिये, नारियलकी गिरी १२८ टंक लेनी, शिलाजीत ३२ टंक, चिरौंजी ६४ टंक, निसोथ १२८ टंक इन सबको कूट पीस उसी पाककी चासनीमें मिलावे तथा उसमें सुगंधवाली वस्तु और मिलाकर अनुमान मुवाफिक गोली बनालेवे ॥ १-४ ॥

सौभाग्यशुण्ठी ।

शम्भोरुमाप्रीतिकरा च शुण्ठी ब्रह्मास्यतोऽश्रूयत नारदेन । शंभोः कृता वक्षसि कालिकायाः स्थिरं बलं कान्तिदृढं करोति ॥ १ ॥ सौभाग्यमेधास्मृतिमिष्टवाक्यं सौभाग्यसौन्दर्यमृदुं च गात्रम् । काठिन्ययोनिस्तनबिम्बदेशमशीतिवातान्कफरोगविंशतिम् ॥ २ ॥ चत्वारिंशत्पित्तभवाश्च ये च अष्टौ ज्वरानेकविमिश्ररोगाः। अष्टादशमूत्रगताश्च रोगा नासाक्षिकर्णं मुखशीर्षकेतु ॥ ३ ॥ एतन्मात्रानुसारेणार्द्धमात्रया चतुर्थांशेन कार्यम् ॥

शिव पार्वतीके प्रीतिकर्ता यह सुहागसोंठ नारदने ब्रह्माके मुखसे सुनी । श्रीमहादेवजीने बनाकर पार्वतीको सुनाई यह स्थिर बल कांति और दृढताको करती है सुन्दरता बुद्धि स्मरण तथा मिष्टवाक्यको करती है सुभग और नरम देहको करै, योनि और स्तन इनको कठोर करे, अस्सी प्रकारकी वादी और अठारह प्रकारके मूत्ररोग,बीस

Aho ! Shrutgyanam

प्रकारके कफरोग चालीस प्रकारके पित्तके रोग, अठारह प्रकारके ज्वर और अनेक मिश्रित रोग, श्वास रोग, खाँसी रोग, क्षीणता आदि और नाक, नेत्र, कान, मुख, शीसके रोग ये सब इसके खानेसे दूर होवें, इसी मात्राके अनुसार इसमेंसे वैद्य आधी और चौथाई भी बनालेवे ॥ १-३ ॥

आम्रपाक ।

पक्कचूतरसो द्रोणः पादःस्याच्छुद्धगन्धकः ।
घृतमर्द्धं ततो योज्यं चतुर्थांशांशनागरम् ॥ १ ॥
तदर्द्धं मरिचं देयं तदर्द्धं पिप्पली मता ।
तोयं खण्डसमं देयं सर्वमेकत्र कारयेत ॥ २ ॥
पाचयेन्मृन्मये भाण्डे काष्ठदर्व्या प्रचालयेत् ।
चूर्णान्येषां ततो दद्यान्मात्रापलचतुष्टयम् ॥ ३ ॥
ग्रन्थिकं मुस्तकं चव्यं धान्याकं जीरकद्वयम् ।
शुंठीभकेशरं त्वक् च तालीसं तु पृथक् पृथक् ॥ ४ ॥
सिद्धशीते च मधुनः प्रस्थं तत्सर्वमेकतः ।
सन्नीयकर्तिकां कृत्वा शुभे भाण्डे निधापयेत् ॥ ५ ॥

उत्तम पके और मीठे आमका रस १ द्रोण (१६३८४ टंक) लेवे और रसकी चौथाई खांड लेवे और खांडसे आधा गौका घृत लेवे, घृतसे चौथाई सोंठ लेवे और सोंठसे आधी मिर्च और मिर्चसे आधी पीपल लेनी चाहिये, इसमें जल खांडके समान डाले इन सबको एकत्र करके स्वच्छ मिट्टीके पात्रमें पाक करे, लकडीकी करछीसे चलाता जाय, पीछे इसमें इतनी औषधियोंका चूर्ण चार चार पल डाले। सो लिखते हैं-पीपलामूल, नागरमोथा, चव्य, धनियां दोनों

Aho ! Shrutgyanam

जीरे, सोंठ, नागकेशर, दालचीनी, तालीसपत्र इन सबको अलग २ पीसकर उस पाकमें डालनी चाहिये। जब पाक बनचुके तब उसको उतारकर कुछ शीतल कर उसमें शहद एक प्रस्थ (१०२४ टंक) डाल सबको मिलाकर पाक जमा दे, शीतल होनेपर कतली कतरकर उत्तम पात्रमें रखदे ॥ १-५ ॥

भोजनादौ ततः खादेत्पलमात्रप्रमाणतः ।
हन्त्यरोचकमत्युग्रं कासं श्वासं तथा क्षयम् ॥ ६ ॥
पीनसं च प्रतिश्यायं प्लीहानं यकृदामयम् ।
अम्लपित्तास्रपित्तं च तालुनाशं स्वरामयम् ॥ ७ ॥
सर्वदुर्नामरोगं च पाण्डुरोगं च कामलाम् ।
हृद्रोगं च शिरःशूलमानाहमतिदारुणम् ॥ ८ ॥
कण्ड्वार्तिं शीतपित्तं च प्रणाशयति वेगतः ।
संसेव्यं भेषजं ह्येतद्वृद्धोऽपि तरुणायते ।
धीरः सर्वगुणोपेतश्शतायुष्यमनामयम् ॥ ९ ॥
मृतगर्भा च या नारी या च गर्भोपघातिनी ।
सापि सूते सुतं तद्वन्नारायणपरायणम् ॥ १० ॥
वन्ध्याऽपि लभते गर्भं वृद्धाऽपि तरुणी भवेत् ।
तुरङ्ग इव संहृष्टो मत्तवारणविक्रमः ॥ ११ ॥
गच्छेत् कंदर्पदर्पाढ्यो रागवेगाकुलःपुमान् ।
स्त्रियाःशतं सहस्रं वा नयेत्ताश्च सुमं पुमान् ॥ १२ ॥

Aho ! Shrutgyanam

सदा भेषजसंसेवी भवेन्मारुतविक्रमः ।
खण्डाम्रकमिति प्रोक्तं भार्गवाय स्वयंभुवा ॥ १३ ॥
वृष्यं च मेध्यमायुष्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
ग्रहयक्षपिशाचघ्नमपस्मारघ्नमुत्तमम् ॥ १४ ॥
बल्यं रसायनं श्रेष्ठं श्रीखण्डाम्रकसंज्ञकम् ॥ १५ ॥

इस आम्रपाकको एक पलके प्रमाण प्रातःकाल भोजनके पूर्व खानेसे अतिप्रबल अरुचि, खांसी, श्वास, क्षयी, पीनस, सरेकमा, तापतिल्ली यकृत्के रोग, अम्लपित्त, रुधिरपित्त, तालुनाश, स्वरभंग खोटे नामवाले (अर्श) रोग, पांडुरोग, कामला, हृद्रोग, , शिरका दर्द आनाह, खुजली, शीतपित्त इतने रोगोंका नाश करे, इसके खानेसे वृद्ध मनुष्य तरुणसा होजाय, और सर्वगुणयुत सौ वर्षकी आयुवाला निरोगी होय जिसके मरा हुआ बालक होय और जिसका गर्भ गिरजाता होय, ऐसी स्त्रीभी नारायणपरायण पुत्रको प्रकट करे, बंध्याकेभी गर्भप्राप्ति होय, वृद्धा स्त्री तरुणताको प्राप्त होवे, घोडा और मस्त हाथीकासा पराक्रम होय. कामदेवके वेगसे व्याप्त मनुष्य हजार स्त्रियोंसे गमन करे, इस पाकका नित्य सेवन करे तो पुरुष पवनके समान पराक्रमी होय, यह आम्रपाक भार्गवऋषिसे ब्रह्मदेवने कहा है, यह वृष्य है, पवित्र, आयुष्यकर्ता, सर्वपापनाशक और ग्रह भूत पिशाच, मृगीरोग इन सबका नाश करे, इस बलकर्ता रसायनको श्रीखंडाम्र कहते हैं ॥ ९-१५ ॥

बृहन्मुसलीपाक ।

मुसलीकन्दचूर्णं तु क्षीरेऽष्टगुणिते पचेत् ।
प्रस्थं तत्र दातव्यं चूर्णमेषां पृथक्पलम् ॥ १ ॥
व्योषं त्रिजातहबुषा शताह्वाशतमूलिका ।

Aho ! Shrutgyanam

अजाजी दीप्यकश्चैव चित्रको गजपिप्पली ॥ २ ॥
यवानी ग्रंथिकं धात्री शुंठी गोक्षुरधान्यकम् ।
अश्वगन्धाऽभया मेघः सिंधुशोषो लवंगकम् ॥ ३ ॥
जातीफलं जातिपत्रीनागकेशरकेक्षुरः ।
बला चातिबला नागबला मर्कटबीजकम् ॥ ४ ॥
यष्टी शाल्मलिनिर्यासः शृङ्गाटांबुजबीजकम् ।
त्वक्क्षीरिका बालकश्च कंकोलः कल्हकं हिमम् ॥५॥
लुञ्चितानां तिलानां तु प्रस्थार्द्धमिह योजयेत् ।
भस्मसूतपलार्द्धं तु पलमभ्रकलोहयोः ॥ ६ ॥
सर्वस्माद्विगुणं खण्डं पाकं कृत्वा प्रयोजयेत् ।
भैषज्यानां गणं सर्वं वटीः कुर्याद्विचक्षणः ॥ ७ ॥

सफेद मुसलीका चूर्ण १ प्रस्थ आठगुण दूधमें औटावे पीछे य औषधी जुदी २ एक एक पल लेवे-सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिजात (इलायची, दालचीनी, पत्रज), हाऊबेर सौंफ, शतावर, जीरा, अजमोद, चित्रक, गजपीपल, अजमायन, पीपलामूल, आंवले, कचूर, गोखरू, धनियां, असगन्ध, हरड, नागरमोथा, समुद्रशोष, लौंग, जायफल, जावित्री, नागकेशर, तालमखाने, बला (खरेटी), अतिबला, नागबला, (गंगेरन), कौंचके बीज, मुलहटी, सेमलका गोंद, सिंघाडे, कमलगट्टा, वंशलोचन, सुगंधवाला, कंकोल, अकरकरा, कपूर और धुलेहुए तिल आधा प्रस्थ (५१२ टंक), चन्द्रोदय दो कर्ष और अभ्रकसार एक पल इन सब औषधियोंसे दुगुनी खांड लेकर पूर्वोक्तरीतिसे इस पाकको बनाना चाहिये, इसमें य सब औषधी मिलाकर गुटिका बनावे ॥ १-७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अर्द्धमुष्टिमितास्तास्तु शुभेऽहनि विचक्षणः ।
इष्टदेवं समभ्यर्च्य खादेदेकामहर्निशम् ॥ ८ ॥
ततः किंचित्पयः पेयं खादेद्वटकमुत्तमम् ।
मंदाग्निगुल्ममेहार्शःश्वासकासव्रणक्षयान् ॥ ९ ॥
कामलां पाण्डुरोगं च शुक्रक्षैण्यं च हृक्क्षयम् ।
वातरोगं पित्तरोगं कफरोगं तथैव च ॥ १० ॥
षाण्ढयं च प्रदरं स्त्रीणां शुक्रदोषमुरःक्षतम् ।
रजोदोषं मूत्रकृच्छ्रं मूत्राघातं तथाऽश्मरीम् ॥ ११ ॥
मेहदोषं तथाऽऽनाहं कार्श्यं दौर्बल्यमुल्बणम् ।
वातरक्तं च हन्त्येष मुसलीकन्दलेहकः ॥ १२ ॥
अग्निकृत्कान्तिकृत्तेजोवृद्धिकृत्कामवृद्धिकृत ।
अश्विभ्यां निर्मितोयोगो वलीपलितनाशनः ॥ १३ ॥
क्षीणशुक्रान्नरान् दृष्ट्वा नारीश्चक्षीणवीर्यकाः ।
तालमूल्यवलेहोऽयं निर्मितो धरणीतले ॥ १४ ॥
नास्त्यनेनसमो योगो विशेषाच्छुक्रवृद्धये ॥ १५ ॥

इनमेंसे अर्द्धमुष्टीके अनुमान शुभ दिनमें अपने इष्टदेवका पूजन कर एक गुटिका खाय तो इतने रोग नष्ट होवें-मन्दाग्नि, गोला, प्रमेह, बवासीर, श्वास, खाँसी, व्रण, क्षय, कामला, पांडुरोग वीर्यकी क्षीणता, मन्दहष्टि, वात पित्त कफ इनका रोग, नपुंसकता, स्त्रियोंके प्रदरादिक, वीर्यके दोष, उरःक्षत, रजो दोष, मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात, पथरी, मेहदोष, अफारा, कृशता, निर्बलता, वातरक्त । यह मुशली अवलेह

Aho ! Shrutgyanam

अग्निको प्रबल करे, कान्ति करे, तेजको तथा कामदेवको बढावे, यह योग अश्विनीकुमारने वलीपलितनाशनार्थ कहाहै, क्षीणवीर्यवाले पुरुषको और क्षीण वीर्यवाली स्त्रियोंको देखकर यह तालमूली (मशली) अवलेहको पृथ्वीमें निर्माण किया, इसके समान वीर्यको बढानेवाला योग पृथ्वीमें दूसरा नहीं है ॥ ८-१९ ॥

मुसल्याश्च पलान्यष्टौ तुलाक्षीरे विपाचयेत् ।
सर्पिर्द्विकुडवं देयं सिताकर्षशतं तथा ॥ १ ॥ गूदं
पलचतुष्कं च मज्जा त्रीणि पलत्रयम् । जातीफलं
लवंगं च कुंकुमं चैव तुंबरम् ॥ २ ॥ मांसीमर्कट-
बीजानि चातुर्जातकटुत्रयम् । जातीपत्रकरंभा च
प्रत्येकं पिचुमात्रकम् । द्विकर्षं मोदकं कुर्यादेकैकं
भक्षयेन्नरः ॥ ३ ॥

मुशली ८ पल (१२८ टंक), दूध दश सेरमें औटावे, पीछे इसमें उत्तम घृत २० टंक भर डालकर भूने, पीछे सफेद चीनी ४०० टंक और बबूलका गोंद ४६ टंक और गरी बादाम, चिरौंजी ये तीनों १६ तोले, जायफल, लौंग, केशर, चव्य, तुम्बरू, छड, कौंचके बीज, दालचिनी, छोटी इलायची, नागकेशर पत्रज, सोंठ, मिरच, पीपल, जाविंत्री, केलीका कन्द ये प्रत्येक औषधि चार चार टंक लेनी । पूर्वोक्त प्रकारसे पाक बनाकर इसमें ८ टंकके अनुमान लड्डू बनावे नित्य एक लड्डू खाय तो इतने रोग जायँ ॥ १ ॥ २ ॥

धातुक्षीणं मदक्षीणं क्षीणवीर्यं तथाऽनलम् ॥ ४ ॥
कास श्वासारुचिं पाण्डुं दौर्बल्यं विषमज्वरम् ।
षण्ढो रमयते नारीशतं वा नात्र संशयः ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

शुष्कगात्रं भवेत्पुष्टं मनोज्ञं कान्तिवर्द्धनम् ।
वातव्याधिषु सर्वेषु हितोऽयं नैव संशयः ॥ ६ ॥
प्रमेहशुष्कगात्रत्ववलीपलितनाशनम् । मुसल्या-
दिरयं पाको वन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥ ७ ॥

धातुक्षीण, बलक्षीण, वीर्यक्षीण, मन्दाग्नि, खांसी, श्वास, अरुचि, पाण्डु, दुर्बलता, विषमज्वर और नपुंसकता ये जांय शुष्क देह मोटा होय, कांतिको बढावे और सुन्दरता दे सब वातव्याधियोंमें यह हित है । प्रमेह, लटा हुआ देह, गुलझट, सफेद बाल इन सबको यह मुशलीपाक नष्ट करे, इसके खानेसे वंध्यास्त्री पुत्रवती होती है ॥ ४-७ ॥

नारियलपाक ।

कनको मुसलीकन्दो यमकोऽहिखरस्तथा । उटि-
ङ्गणं कौञ्चबीजं चूर्णयित्वा पृथक्पृथक् ॥ १ ॥
कार्पासमज्जा दुग्धेन क्षीरे वै सप्त भावनाः । सूर्या-
तपे शुष्कचूर्णं नालिकेरं तु पूरयेत् ॥ २ ॥ द्वात्रिं-
शद्गुणदुग्धेन विपाच्य मृदुवह्निना । चूर्णयित्वा
घृते पाच्यं भेषजैः सह चूर्णितैः ॥ ३ ॥ चतुर्जातं
लवङ्गं च जातीपत्रं फलं तथा । पलार्द्धं खंडकुडवं
गृहीत्वाऽनु पिबेत्पयः ॥ ४ ॥ वातरोगप्रमेहांश्च
बलहानिं क्षयं तथा । वृद्धो युवायते कामी नालि-
केरस्य पाकतः ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

धतूरेके बीज, सफेद मुसली, खुरासानी अजमायन, आहिखराके बीज, उटंगनके बीज, कौंचके बीज इन सबको बराबर लेवे और पृथक् २ कूट पीसकर चूर्ण करे, कपासके बीजोंको पीसे दूधकी सात भावना देवे, पीछ उसको धूपमें सुखाकर नारियलके गोलेमें भर देवे, तदनन्तर गोलेको बत्तीस गुणे दूधमें मन्दाग्निसे पचावे जब दूधका खोवा होजाय तब उसको घीमें भूनकर सब औषधि मिलावे । फिर ये औषधी और डाले--इलायची, नागकेशर, पत्रज, लौंग, जावित्री, जायफल, ये सब औषधी आठ आठ टंक लवे और ६४ टंक खांड लेय, सबको मिलाकर पाक बनावे, इस नारियल पाकके खानेके पीछे दूध पीवे तो वातके विकार, प्रमेह, बलहानि, क्षय य सब नष्ट होंय. वृद्ध मनुष्य भी तरुण होजाता है ॥ १ ॥ ९ ॥

गोखरूपाक १-- २ ।

प्रस्थं गोक्षुरसूक्ष्मचूर्णमुदितं दुग्धाढके पाचितं जावित्री च लवङ्गलोध्रमरिचैः कर्पूरकं शाल्मली । अब्दं शोषसुवर्णबीजरजनीधात्रीकणाकेशरं चातुर्जातमथाहिफेनक-मलं कच्छूकुबेराख्यकम् ॥ १ ॥ तत्तुल्या च सिता तदर्धविजया प्रस्थद्वयं गोघृतं प्रोक्तं वैद्यवरेण निर्मितमिदं मन्दाग्निना पाचयेत् । प्रातःसेव्यमिदं सुमानमशितं व्याधेश्च विध्वंसनमंशांशैर्विहितं प्रमेहशमनं सङ्केऽङ्गनाद्रावकम् । क्षीणे पुष्टिकरं क्षये क्षयहरं वाजीकरं कामिनामेतद्गर्जितमानिनीमृगरिपुर्वातार्तिजित्त्वौषधम् ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

१--गोखरू २५६ टंकका चूर्ण कर १०२४ टंक दूधमें औटावे, जावित्री, लौंग, लोध, मिरच, भीमसेनी कपूर, नागरमोथा, समुद्रशोष, धतूरेके बीज, हलदी, आंवले, पीपल, केशर, नागकेशर, इलायची, पत्रज, अफीम, कौंचके बीज, अजमायन इन सब औषधियोंको एक एक टंक लेकर इन सब औषधियोंके बराबर मिश्री लेवे, और सब औषधियोंसे आधी भांग लेवे, गौके ५१२ टंक घृतमें सब औषध युक्त खोआको भूनकर खांडकी चासनी कर पूर्वोक्त रीतिसे पाक बनावे । इसको प्रातःकाल सेवन करे तो बवासीर, प्रमेह, क्षीणता ये संपूर्ण रोग नष्ट होवें, स्त्रीके संग करनेसे स्त्री द्रवे, क्षयका नाश करे, कामियोंको वाजीकरणता करता है, यह गोखरूपाक मानिनी स्त्रियोंके मानरूप मृगको जीतनेमें सिंहरूप है, यह वातके जीतनेवाली औषधि है ॥ १--२ ॥

गोकण्टकं सदलमूलफलं गृहीत्वा सङ्कुट्टितं
पलशतं क्वथितं च तोये । पादावशेषसलिले च
पलानि दत्वा पञ्चाशतं परिपचेदथ शर्करायाः ॥ १ ॥
तस्मिन्घनत्वमुपगच्छति चूर्णितानि दद्यात्पलद्वय
मितानि सुभेषजानि । शुण्ठीकणामरिचनागदल-
त्वगेलासज्जातिकोषककुभत्रपुषीफलानि ॥ २ ॥
वंशीपलाष्टकमिहप्रणिधाय नित्यं लेह्यं सुसिद्ध-
ममृतं पलसंमितं तत् । हन्त्याशुमूत्रपरिदाहवि-
बन्धशुक्रकृच्छ्राश्मरीरुधिरमेहमधुप्रमेहान् ॥ ३ ॥

२--पत्ता और जडसहित गोखरू लेकर सौ पल जलमें औटावे, जब चौथाई जल बाकी रहे तब पचास पल मिश्री डालकर पचावे, जब पककर गाढी होजाय तब इन औषधियोंका चूर्ण डाले -सोंठ, पीपल,

Aho ! Shrutgyanam

मिरच, नागकेशर, तज. इलायची, जायफल, अकरकरा, ककडीके बीज, वंशलोचन ये सब औषधि ३२ टंक लेवे, सबोंको मिलाकर पाककी विधिसे पाक बनावे यह अमृतके समान है, इसका नित्य सेवन करे तो मूत्रका दाह, मूत्रका रुकजाना, वीर्यके विकार, मूत्रकृच्छ्र, रुधिरका निकलना, प्रमेह और मधुमेहादिकोंका नाश करता है ॥ १-३ ॥

कौंचपाक ।

पचेद्द्विप्रस्थं कपिकच्छुबीजमुष्णोदके यामचतुष्टयं तु । तान्घर्षयेद्वस्त्रदृढे सुगाढं यावद्भवेन्निर्मलनिस्तुषं च ॥ १ ॥ छायाविशुष्कं च तदेव चूर्णं क्षीरं क्षिपेद्द्रोणसपादशेषम् । दद्याद घृतं प्रस्थयुगं च तस्मिन्विपाचयेन्मन्दहुताशनेन ॥ २ ॥ आकल्लकं नागरदेवपुष्पं गोक्षीरकं कुंकुमहंसपाकम् । सारंकुबेरं घनतुर्यजातं चीणीकबाबाबलबीजयुक्तम् ॥ ३ ॥ वंशोद्भवा वंगमृताभ्रकं च द्राक्षा सिता सर्वसमा प्रदेया । पलार्द्धमानं तु सदैवखादेदम्लं तदन्तः परिवर्जनीयम् ॥ ४ ॥ ये क्षीणशुक्राःप्रबलप्रमेहास्तेषामिदं वीर्यविवर्द्धनं च । पुष्टिं बलं बुद्धिबलं च वृद्धं निहन्ति सर्वानपि वातरोगान् ॥५॥

दो प्रस्थ (५१२ टक) कौंचके बीजोंको चार प्रहर गरम पानीमें औटावे पीछे उनको मोटे वस्त्रमें खूब रगडे जबतक निस्तुष और स्वच्छ न होंय, पीछे उनको छायामें सुखाकर चूर्ण करे, उस

Aho ! Shrutgyanam

चूर्णको सवा द्रोण दूधमें और उसमें चार प्रस्थ घृत डाले और मन्द२ अग्निसे पचावे । पीछे अकरकरा सोंठ, लौंग, गोखरू, केशर, हींगछ, सार, अजमायन, मोथा, तज, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर, कबाबचीनी, बलबीज, वंशलोचन, वंग, मराअभ्रक, दाख ये सब औषधि बराबर लेवे और इन सब औषधियोंके बराबर सफेद खांड लेवे पीछे पाक बनाकर ८ टंकके अनुमान नित्य खाय और खट्टे और वादीसे परहेज करे तो वीर्यकी क्षीणता तथा प्रबल प्रमेहवाले मनुष्यके वीर्यकी वृद्धि करे और सब वातके रोग नष्ट होवें ॥ १-५ ॥

पीपलपाक १--२ ।

पिप्पलीप्रस्थमादाय क्षीरं चैव चतुर्गुणम् ।
अर्द्धाढकं घृतं गव्यं सिता चैव तथाऽऽढकम् ॥ १ ॥
पचेन्मंदाग्निना सम्यग् यथाभागं भवेत्ततः ।
शीतीभूते क्षिपेत्तत्र चातुर्जातं पलं पलम् ॥ २ ॥
षोडशपलप्रमाणं खादिरं गुन्दमेव च ।
पाचितं गव्यहव्येन निक्षिपेत्तस्य मध्यतः ॥ ३ ॥
योजयेन्मात्रया युक्त्याऽशेषधात्वग्निकृन्नृणाम् ।
बल्यं वृष्यं तथा हृद्यं धातुपुष्टिकरं नृणाम् ॥ ४ ॥
जीर्णज्वरक्षयश्वासप्लीहपापरुजापहम् ।
पिप्पलीनामपाकोऽयं सर्वरोगहरः परः ॥ ५ ॥

१-पीपल २५६ टंक लेकर चौगुणे दूधमें औटावे और इसमें गौका दूध ५१२ टंक डाले जब खोवा होजाय तब १०२४ टंक मिश्रीकी चासनी कर उसमें खोवाको डालकर पाक बनालेवे, जब कुछ शीतल होजाय इलायची, पत्रज, नागकेशर, तज एक एक पल

Aho ! Shrutgyanam

डाले और खैरका गोंद १६ पल, गौके घीमें भूनकर डाले इस प्रकार पाक बनाकर बल अबल देखकर इसकी मात्रा खानेको देवे तो सब धातु और जठराग्निको बढावे, बल करे वृष्य है, हृदयको हित है, अजीर्णज्वर, क्षय, श्वास, तापतिल्ली, पांडुरोग इन सबको यह पीपलपाक नष्ट करता है ॥ १-९ ॥

अर्द्धद्रोणे शुभे दुग्धे कणाप्रस्थार्द्धमेव च ।
दर्वीसंघट्टसान्द्रे तु खण्डप्रस्थद्वयान्विते ॥ १ ॥
वानरी मुशलीकन्दं चातुर्जातकरोचना ।
करभोदेवकुसुमं मस्तकी करहाटकम् ॥ २ ॥
ग्रन्थिकं नागरं धान्यं सटी खदिरसारकम् ।
लोहं प्रत्येककर्षैकमितानेतान्विचूर्णयेत् ॥ ३ ॥
घनसारार्द्धकर्षेण शीतले क्षौद्रकौडवम् ।
क्षिपेत्कणावलेहोऽयं प्रमेहाबलताक्षयान् ॥ ४ ॥
कासं श्वासं ज्वरं हिक्कां छर्दिं मूर्च्छां भ्रमं जयेत् ॥५॥

२-पीपल १२८ टंक लेकर गौके ८१९२ टंक दूधमें औटावे जब गाढा होजाय तब मिश्री ५१२ टंक लेकर चासनी कर पूर्वोक्त पीपल संयुक्त खोवाको डाले और इन औषधियोंको और डाले-कौंचके बीज, मूसली, नागकेशर, तज, छोटी इलायची, पत्रज, वंशलोचन, कशेरु, लौंग, मस्तंगी, अकरकरा, पीपलामूल, सोंठ, धनियां, कचर, खैरसाल, इन सब औषधियोंको सोलह २ मासे डाले, भीमसेनी कपूर आठ मासे डालकर अवलेह बनालेवे, जब शीतल हो तब उत्तम शहद ६४ टंक डाले तो यह पीपलावलेह बनकर तैयार होवे । यह प्रमेह, निर्बलता, क्षय, खांसी, श्वास, हिचकी, वमन, मूर्च्छा और भ्रम इन सब रोगोंको दूर करे ॥ १-५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पेठापाक १--४ ।

खण्डान्कूष्माण्डकानामथ पचनविधिच्छिन्नशुष्काज्यपक्कांस्तस्मिन्खण्डे विपक्के समरिचमगधाशुठयजाजीत्रिगन्धी । लेह्योऽयं बालवृद्धानिलरुधिरकृशस्त्रीप्रसक्तिक्षतानां तृष्णाकासार्शपित्ताश्वसनगुदरुजाच्छर्दितानां च शस्तम् ॥ १ ॥

१--पका पेठा सेरभर लेकर उसको छील कतरकर चनेके पानीमें धोवे, पीछे स्वच्छ जलमें धोकर तदनन्तर उसको गोंदकर गौके नवीन घृतमे परिपक्क करे जब पकजाय तब मिश्रीकी चासनी कर अवलेह बनावे । और इसमें इन औषधियोंको डाले--कालीमिरच, पीपल, सोंठ, जीरा, तज, पत्रज, इलायची । यह कुष्मांडावलेह बालक और वृद्ध मनुष्योंके रोगको दूर करे, वादी और रुधिरके विकार, कृशता स्त्रियोंके सेवनसे जो क्षीण होगया हो उनकी क्षीणता, प्यास, खांसी, बवासीर, पित्तके रोग, श्वास, गुदाके रोग और छर्दिरोग इनको नाश करे ॥ १ ॥

छालिं निष्कृष्य कूमाण्डखण्डानि परिकल्पयेत् । कांजिकेन च धौतानि पुनरेव जलेन च ॥ १ ॥ पश्चात्क्षीरस्य प्रस्थेन कल्पयेत्पुनरेव च । घृतेन पुनरेतानि पाचयेत्सुविधानतः ॥ २ ॥ यदा मधुनिभानि स्युस्तदा शर्करया युतम् । निधाय तत्र चेमानि भेषजानि प्रकल्पयेत् ॥ ३ ॥ पिप्पलीशृङ्गवेराभ्यां द्वे पले मरिचानि च । जीरके द्वे तथा

Aho ! Shrutgyanam

धात्रीत्वगेलापत्रकं तथा ॥ ४ शृंगाटकं कशेरुं च ग्रंथिकं चैव चित्रकम् । प्रियालुतालमूलीं च लवङ्गं तुंदमेव च ॥५ ॥ पलार्द्धेन विगृह्णीयाच्चूर्णं तत्र विनिक्षिपेत् । दर्व्या विघट्टयेत्पश्चाल्लेहीभूतं यदाभवेत् । घृतेनापि विलिप्याच्च ज्ञात्वा तत्र बलाबलम् ॥ ६ ॥

२–पके पेठेके टुकडे कर उसका छिलका और बीज दूर कर काँजीके चूनेके पानीसे धोकर पीछे शुद्ध पानीसे धोवे, तदनन्तर उन टुकडोंको गोदकर पांच सेर दूधमें औटावे जब खोवा होजाय तब आठ पल नवीन घृतमें उस खोवाको भूने जब भूनकर शहदके वर्ण-सदृश होजाय तब १०० पल मिश्रीकी चासनी कर उसमें उस खोवाको डाले और ये औषधी डाले—पीपर, अदरख, मिरच, टंक ३२, सफेद जीरा, काला जीरा, आँवले, तज, छोटी इलायची, पत्रज, सिंघाडे, कसेरू, पीपलामूल, चित्रक ८ टंक, प्रियंगुफूल टंक ८, मूसली टंक ८, लौंग टंक ८, खैरका गोंद टंक ८, लेवे और जिनकी तोल नहीं कही उनको सोलह सोलह टंक लेवे सबको कूट पीस-कर उसमें डाल देवे और कडछीसे चला देवे, जब अवलेह तैयार हो जावे तब बलाबल देखकर इसकी मात्रा देवें और इसके ऊपर घी पीवे ॥ १–६ ॥

रक्तपित्तं ज्वरं कासं कामलां तमकं भ्रमम् ॥ ७ ॥ छर्दितृष्णाज्वरश्वासपाण्डुरोगक्षतक्षयम् । अपस्मारं शिरोर्त्तिं च योनिशूलं च दारुणम् ॥ ८ ॥ योनि-रक्तप्रवाहं च ज्वरं मन्दाग्नितां हरेत् । वृद्धो युवायते

Aho ! Shrutgyanam

कामी वन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥ ९ ॥ अवीर्यो वीर्यमाप्नोति भवेत्स्त्रीणां प्रियो नरः । एष कूष्माण्डको लेहः सर्वरोगनिवारणः ॥ १० ॥

रक्तपित्त, ज्वर, खांसी, कामला, तमकश्वास, भ्रम, छर्दि, प्यास, श्वास, पांडुरोग, क्षतक्षय, मृगी, शिरका दर्द, योनिशूल, योनिसे रुधिरका गिरना, ज्वरसे प्रगट मन्दाग्नि इनको नाश करे, वृद्ध पुरुष तरुण और कामी होय, वन्ध्या पुत्रवती होय, वीर्यहीन वीर्यवाला होय, इसको खानेवाला पुरुष स्त्रियोंको प्रिय होय । यह कूष्मांडावलेह सर्वरोगनाशक है ॥ ७-१० ॥

कूष्माण्डकान्पलशतं सुच्छिन्नं निष्कुलीकृतम् ।
पचेत्ततो घृते प्रस्थे पात्रे ताम्रमये दृढे ।
यदा मधुनिभः पाकस्तदा खण्डं च निक्षिपेत् ॥ १ ॥

३-पके पेठेका गूदा शुद्ध कर १०० पल लेकर २५६ टंक घृतमें डालकर तांबेके पात्रमें भूने, जब शहदकासा वर्ण हो जाय, तब उसमें मिश्रीकी चासनी मिलाकर पाक बनावे और पूर्वोक्त औषधि भी डाले ॥ १ ॥

निष्कुलीकृतकूष्माण्डखण्डान्पलशतं पचेत् ।
निक्षिप्य द्वितुलानीरमर्द्धशिष्टं च गृह्यते ॥ १ ॥
तानि कूष्माण्डखण्डानि पीडयेद्दृढवाससा। आतपे
शोषयेत्किंचिच्छूलाग्रैर्बहुशो विधेत् ॥ २ ॥
क्षिप्त्वा ताम्रकटाहे च दद्यादष्टपलं घृतम् । तेन

Aho ! Shrutgyanam

किंचिद्वर्जयित्वा पूर्वोक्तं तज्जलं क्षिपेत्। खण्डं पलशतं दत्त्वा सर्वमेकत्र पाचयेत् ॥ ३ ॥

४-पके पेठेको छील उसके बीज निकालकर शुद्ध कर १०० पल लेवे उसको दो तुला जलमें चढाकर औटावे, जब आधा जल रहे तब उतारकर मोटे कपडेमें रखकर निचोडडाले पीछे धूपमें सुखाकर तदनन्तर कांटेसे उन टुकडोंको गोंद डाले पीछे तांबेकी कडाहीमें चढाकर उसमें १२८ टंक घी डालकर भूने, जब कुछ भूनजाय तब पूर्वोक्त जलको डाले और १०० पल मिश्री डाल सबको एकत्र कर पाक बना लेवे और इसमें पूर्वोक्त औषधियां भी डाले ॥ १-३ ॥

असगन्धपाक।

पूर्वं कृत्वाऽश्वगन्धायाश्चूर्णं दशपलानि च। तदर्द्धं नागरं चूर्णं तस्यार्द्धा पिप्पली शुभा ॥ १ ॥ मरिचानां पलं चैकं सूक्ष्मं चूर्णं तु कारयेत्। त्वगेलां पत्रपुष्पं च एकैकं तु पलं पलम् ॥ २ ॥ तुलार्द्धं माहिषं दुग्धं दुग्धस्यार्द्धं च माक्षिकम्। माक्षिकार्द्धं घृतं गव्यं खण्डाद्दशपलानि च ॥ ३ ॥ पयःखण्डाज्यमाक्षीकं चत्वार्येकत्र कारयेत्। कटाहे मृन्मये क्षिप्त्वा पाचयेन्मृदुवह्निना ॥ ४ ॥ कृशानुं ज्वालयेत्तावद्यावदुत्कलितं भवेत्। अश्वगन्धाधिकं चूर्णं किंचिद्दुग्धेन घोलयेत् ॥ ५ ॥ पूर्वं

Aho ! Shrutgyanam

क्वथितदुग्धेन क्षिप्त्वा चूर्णं पचेद्भिषक् । दर्वीप्रलेपेसंजाते चतुर्जातं विमुञ्चयेत् ॥ ६ ॥ यज्जातं तण्डुलाकारं तावन्निष्पाकमाचरेत् । पयोयुक्तं घृतं दृष्ट्वा तावदुत्तारयेत्ततः ॥ ७ ॥

प्रथम १० पल असगन्ध लेकर उसका चूर्ण करे और असगन्धसे आधी सोंठका चूर्ण करे और सोंठसे आधी पीपलोंका चूर्ण ले और एक पल काली मिरचका चूर्ण लेवे तज, छोटी इलायची, पत्रज, लौंग ये औषधि एक एक पल लेवे,भैंसका दूध पांचसेर, दूधसे आधा सहद और शहदसे आधा गौका घृत, १० पल मिश्री, पीछे दूध मिश्री घृत शहद चारोंको मिलाकर मिट्टीके बरतनमें डाल मन्द मन्द अग्निसे पाचन करे और जबतक उफान न आवे तबतक अग्नि देवे और जब उफान आजावे तब पूर्वोक्त असगन्ध सोंठ आदिके चूर्णको थोडे दूधमें घोलकर पूर्वोक्त दूधमें मिलादेवे. उसको फिर पचावे । जब दूध करछीसे लगने लगे तब चातुर्जात (इलायची आदि) को डाले, जब चावल समान भिन्न भिन्न होजाय तबतक पक्व करे, जब घृत और दूध दोनों मिलजायँ तब उतारकर इन औषधियोंको और डाले ॥ १–७ ॥

ग्रन्थिकं जीरकं छिन्नां लवङ्गं तगरं तथा । जातीफलमुशीरं च वालकं मलयोद्भवम् ॥ ८ ॥ श्रीफलाम्भोरुहं धान्यं धातकीं वंशरोचनाम् । धात्रीखदिरसारं च घनसारं तथैव च ॥ ९ ॥ पुनर्नवाऽजगन्धे च हुताशनशतावरी । मात्रा गद्याणका चैव द्रव्याणामेकविंशतिः ॥ १० ॥ सूक्ष्मचूर्णं पुरा कृत्वा योगे ह्यस्मिन्विनिक्षिपेत् ।

Aho ! Shrutgyanam

पश्चात्सुशीतलं कृत्वा स्निग्धभाण्डे निधापयेत् ॥ ११ ॥ पलार्द्धमपि भुञ्जीत यथेच्छाहारभोजनम् । कासं श्वासं तथा हन्यादजीर्णं वातशोणितम् ॥ १२ ॥ प्लीहामयं च मन्दं च आमवातं च दुर्जयम् । शोफं शूलं च वातार्द्धं पाण्डुरोगं च कामलाम् ॥ १३ ॥ ग्रहणीं गुल्मरोगं च अन्यान् वातकफोद्भवान् । एते विकारा विलयं यान्ति सूर्योदये तमः ॥ १४ ॥ एकमासप्रयोगेण वृद्धः संजायते युवा । मन्दाग्नीनां हितं बल्यं बालानां चाङ्गवर्द्धनम् ॥ १५ ॥ स्त्रीणां च कुरुते पुष्टिं प्रसवे स्तन्यवर्द्धनम् । यावत्स्तनं भवेत्स्तोकं तावद् दुग्धयुतं भवेत् ॥ १६ ॥ क्षीणानां चाल्पवीर्याणां हितं कामाग्निदीपनम् । सर्वव्याधिहरं श्रेष्ठं योगं सर्वोत्तमं विदुः ॥ १७ ॥

पीपलामूल, जीरा, गिलोय, लौंग, तगर, जायफल, खस, नेत्रबाला, चंदन, नारियलकी गिरी, नागरमोथा, धनिया, धायके फूल, वंशलोचन, आंवले, खैरसार, कपूर, सांठकी जड, अजमोदा, चित्रक, शतावर इन इक्कीस औषधियोंको छः छः मासे ले चूर्ण कर उसमें मिलाकर शीतल करे । पीछे उसको चीनी आदि चिकने बरतनमें भरकर रखदेवे. इसमेंसे आधे पलके अनुमान भक्षण कर और यथेच्छ भोजन करे. यह इतने रोगोंको नष्ट करता है-खांसी, श्वास,

Aho ! Shrutgyanam

अजीर्ण वातरक्त, तापतिल्ली, आमवात, सूजन, शूल, वादी, बवासीर, पाण्डुरोग, कामला, संग्रहणी, गोला और जो वातकफसे प्रगट रोग हैं वे सब नष्ट होते हैं जैसे सूर्योदयसे अंधकार नष्ट होता है। एक महीना खानेसे वृद्ध मनुष्य भी तरुणताको प्राप्त होता है, मंदाग्निवालेको परम हित है, बलकर्ता, बालकके अंगको पुष्ट करता है, स्त्रियोंके प्रसवमें दूध और देहको पुष्ट करै. जबतक स्तन छोटे होवें तबतक दूधसे परिपूर्ण रहें. क्षीण और अल्पवीर्यवाले पुरुषको हित है. कामदेव और अग्निका दीपन करता है, सकल व्याधियोंका हर्ता सर्वोत्तम योग है ॥ ८-१७ ॥

अफीमपाक ।

आकल्लकं केशरदेवपुष्पं जातीफलं भृङ्गसहं सपाकम् । एतानि कुर्वीत सहानि विद्वान्मूलार्द्धं भागं क्षिपनागफेनम् ॥ १॥ क्षीरेण फेनं परिपच्य बद्धा मूलात्सितां षड्गुणमानयोग्याम् । विमर्द्य कुर्याद्गुटिकां निशायां मुखे कृता कामयते शतानि ॥ २ ॥ आसेवनं यः प्रकरोति नित्यं दृढो-न्नताङ्गः स च मानवः स्यात् । स मत्तमातंगबली सकामी व्रजन्ति रोगाः क्षयजाश्च सर्वे ॥ ३ ॥

अकरकरा, केशर, लौंग जायफल, भाँग, शिंगरफ सबसे आधी अफीम प्रथम अफीमको इस प्रकार शुद्ध करे--प्रथम दोलायंत्र बनाकर इस हांडीमें शेरभर दूध भरे पीछे अफीमको किसी वस्त्रमें बांध उस हांडीमें अधर लटका देवे, नीचे अग्नि बाले जब दूध गाढा होजावे तब उस पोटलीको निकाल लेवे. पीछे उसे उस पाकमें मिलावे. इस

Aho ! Shrutgyanam

दोला यन्त्र ।

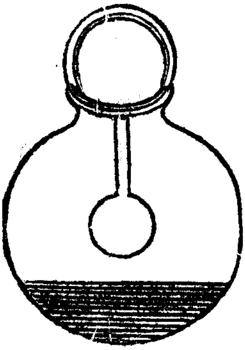

पाकमें सब औषधियोंसे छः गुनी मिश्री मिलाकर सबका मर्दन कर चार २ मासेकी गोलियां बनावे । रात्रिके समय इस गोलीको मुखमें राखे तो सौ सौ स्त्रियोंसे सम्भोग करनेकी सामर्थ्य होय. दृढदेह हाथीकासा बल, महाकामी हो और सम्पूर्ण क्षीणता आदि रोग नष्ट होवें ॥ १--३ ॥

अगस्त्यहरीतकी ।

द्विपञ्चमूलेभकणात्मगुप्ता भार्ङ्गी सटी पुष्करमूल विश्वा । पाठाऽमृताग्रंथिकशंखपुष्पीरास्नाग्न्यपामार्गबलायवासान् ॥ १ ॥ द्विपालकान्जस्य यवाढकं च हरीतकीनां च शतं गुरूणाम् । द्रोणे जलस्याढकसंयुते वा क्वाथे कृते पूतचतुर्थभागे ॥२॥ पचेत्तुलां शुद्धगुडस्य दत्त्वा पृथक्सतैलं कुडवं घृतं च । चूर्णं तु तावन्मगधोद्भवाया देयं च तस्मिन्मधुशीतसिद्धम् ॥ ३ ॥ रसायनं कल्कमथो विलिह्याद्द्वे च मयी नित्यमथाशु हन्यात् । तद्राजयक्ष्मग्रहणीप्रदोषं शोफाग्निमांद्यं स्वरभेदकंच॥४॥ पाण्डूवामयश्वासशिराविकारान हृद्रोगहिक्काविषमज्वरांश्च । मेधाबलोत्साहगतिप्रदो वै हरीतकीपाकपतिर्वरिष्ठः ॥ ५ ॥

दशमूल, गजपीपल, कौंचके बीज, भारंगी, कचूर, पुहकरमूल, सोंठ, पाढ, गिलोय, पीपलामल, शंखपुष्पी (शंखाहूली), रासना,

Aho ! Shrutgyanam

चित्रक, ओंगा, गंभेरन, जवासा इन सब औषधियोंको दो दो पल लेवे. बडी हरड १००, पानी ३६० पल अर्थात् २७ सेर ९ पैसे १ टंक लेवे पीछे उन हरडोंको उस पानीमें औटावे जब जलका चतुर्थांश रहे तब उतार लेवे. पीछे १० सेर गुड २० पल पानीमें औटावे ४ पल तेल ४ पल घृत ४ पल पीपलका चूर्ण पीछे पूर्वोक्त गुडमें हरड डाले और तैलादिक मिलावे, जब शीतल होजाय तब ४ पल शहद डाल. इलायची, नागकेशर, पत्रज और तज ये चारों औषधि एक एक पल डाले. यह उत्तम रसायन है. इनमेंसे दो हरड कल्कसमेत नित्य प्रातःकाल खाय तो राजयक्ष्मा, संग्रहणी, सूजन, मन्दाग्नि स्वरभेद, पांडरोग, श्वास, मस्तकरोग, हृदयरोग, हिचकी, विषमज्वर इनको नाश करे. बुद्धि बल उत्साह इनको बढावे, चलनेकी शक्तिको देवे, इस श्रेष्ठ हरडपाकको अगस्त्यऋषिने निर्माण किया है ॥ १-९ ॥

मधुपक्कहरीतकी ।

सुपक्कपथ्यापलपञ्चकं च मूत्रे गवां प्रस्थमिते विपाच्यम् । प्रस्थे पुनः काञ्जिकदुग्धतक्रे पक्त्वा ततो निष्कुलिका विधेया ॥ १ ॥ व्योषं यवानी कुटजस्य बीजं मुस्ताजलं दाडिम-मम्लवेतसम् । सधातकीपुष्पमजाजियुग्मं कणा जटा मोचरसं सबिल्वम् ॥ २ ॥ सौवर्चलं सैन्धव-मश्मवल्कं जम्ब्वाम्रमज्जाऽतिविषा च पाठा । लवं-गजातीफलतुर्यजातान्येतानि तुल्यानि विचूर्ण-

Aho ! Shrutgyanam

तानि ॥ ३ ॥ कपित्थमाण्डूरमयोदशांशा समस्त-
चूर्णार्द्धमिता सिता च । एतैश्च पथ्या परिपूर-
र्णीया सूत्रेण युक्ता परिवेष्टनीया ॥ ४ ॥ स्थाल्यां
ततस्तक्रमधो निधाय तृणानि मुक्त्वोपरि तां
विमुच्य । मन्दाग्निना याममथो विपाच्य विहाय
सीतां मधुनिक्षिपेच्च ॥ ५ ॥ सा सेव्यमाना ग्रह-
णीप्रमेहश्वासापहा अग्निकरा सवृष्या । पाण्डवा-
मवातापहरी च पुष्टिप्रदायिका मध्वभया
प्रदिष्टा ॥ ६ ॥

पकी बडी हरड ५ पल लेवे, उनको प्रस्थभरम गौके मूत्रमें औटावे तदनन्तर कांजी दूध और छाछ इनको एक एक प्रस्थ लेकर इनमें पृथक् २ औटावे जब औट जावे तब उतारकर उनकी गुटली निकालडाले । पीछे सोंठ, मिरच, पीपल, अजवायन, इन्द्रयव, नागरमोथा, हाऊबेर, आनारदाना, अमलबेंत, धावडाके फूल, जीरा सुफेद, जीरा काला, पीपल, जटामांसी मोचरस बेलगिरी, काला नोन, सेंधानोन, पाषाणभेद, आमकी गुठली, जामुनकी गुटली, अतीस, पाढ, लौंग, जायफल, इलायची, नागकेशर, तज, पत्रज इन सबको बराबर लेवे कैथ, मंडूर दशांश लेवे, सब चूर्णसे आधी मिश्री लेवे इन सबको कूट पीस चूर्ण कर उन हरडोंमें भरे पीछे उन हरडोंको डोरेसे बांध देवे. पीछे मिट्टीके पात्रमें छाछ भरकर हरडोंको बांधकर उसमें लटका देवे पीछे मन्दाग्निसे उनको पचावे जब पकजावे तब उतारकर शीतलकर शहदमें डुबोदेवे. इनके खानेसे संग्रहणी, श्वास, खांसी, प्रमेह दूर होवे और जठराग्निको बढावे, वृष्य, है,

Aho ! Shrutgyanam

पांडुरोग आमवात नष्ट होवे पुष्टिकर्त्ता यह मधुपक्वहरीतकी है इसी प्रकार आंवलेका पाक बनाना ॥ १–६ ॥

आमलापाक (च्यवनप्राश)

शृङ्गीतामलकीफलत्रिकबलाच्छिन्नाविदारीसटी-
जीवंतीदशमूलचन्दनघनैर्नीलोत्पलैलावृषैः। मृद्वी-
काष्टकवर्गपौष्करयुतैः सार्द्धं पृथक्पालकैरंबुद्रोण-
शतानि पंचविपचेद्धात्रीफलानामतः॥ १ ॥ उद्धृ-
त्यामलकानि तैलघृतयोः षड्भिः पलैः संमिता
भृष्टान्यर्द्धतुलां निधाय विधिवन्मत्स्यण्डिकायां
पचेत् । शीते षण्मधुनापलानि कुडवा वंश्यश्च-
तुर्जातकं मुष्टिर्मागधिकापलद्वयमितः प्राश्यः
स्मृतश्च्यावनः॥ २ ॥ रक्तपित्ते क्षये क्षीणे कासे
कुष्ठे भ्रमे तृषि । आमलक्यादिकः पाको वली-
पलितनाशनः ॥ ३ ॥

काकडासिंगी, तालीसपत्र, त्रिफला, खरैंटी, गिलोय, विदारीकन्द, कचूर, जीवंती (डोडी), दशमूल, चन्दन, भीमसेनी कपूर, कमलगट्टा, इलायची, अडूसा, दाख, अष्टवर्ग, पुहकरमूल ये सब औषधि दो दो पल लेकर, पानी एक द्रोण (४०९६ टंक) में आमलोंको औटावे पीछे निकालकर तेल और घृत दोनो छः पल लेकर इनमें आंवलोंको जुदे २ भूने पीछे ५ सेर मिश्रीकी चासनी कर उसमें आंवलोंको पाग लेवे जब शीतल होजावें तब छः पल शहद डाल और वंशलोचन, चातुर्जात, पीपल ये दो पल डाले यह च्यवनप्राशाव-

Aho ! Shrutgyanam

लेह है । इसके खानेसे रक्तपित्त, क्षयसे जो क्षीण होगया हो, खांसी, कुष्ठ, भ्रम, प्यास इन सब रोगोंको यह आमलापाक नाश करे तथा मुलझटका पडना और सफेद बाल होनेको नाश करे ॥ १-३ ॥

अडूसापाक १--२ ।

वासाक्षुद्राग्निपथ्यामलकफलयुतं पञ्चमूलद्वयं च झिंझिण्याः क्काथमेनं वसुगुणपयसा पाचितं तुर्य-भागः । ग्राह्यस्तस्मिन्गुडमिति ततो निक्षिपेत्पा-चयेच्च निक्षेप्या व्योषयुक्ता बलमुशलियुता जातकं साथरी च ॥ १ ॥ शृंगाटकं बिल्वगिरं हरिद्रां खैरीरगुंदं च शतावरीं च । जातीफलं माजुफलं कबाबी आकल्लिकं मालविकाजगंधाम् ॥ २ ॥ सजातिपत्री फटिका प्रियंगु गुन्दीफलं क्षौद्रयुतं घृतं च । चूर्णं क्षिपेदिक्षुरसे सुपक्के लेहो भवे-द्वासकसंज्ञकोऽयम् ॥ ३ ॥ कासश्वासहरः सदा बलकरः कामाग्निसन्दीपनो लेहोऽयं सरुजाम-भीष्टफलदः प्रोक्तः स वासाह्वयः ॥ ४ ॥

१- अडूसा, कटेरी, चित्रक, हरड, आंवला ये औषधि दो दो पल लेवे, दशमूल, झिंझणी (डिडून) का काढा इन सब औषधियोंको आठ गुने पानीमें औटावे जब चौथाई बाकी रहे तब उतारकर गुड मिलावे और उसमें पूर्वोक्त औषाधियोंको मिलाकर परिपक्व करे । पीछे इन औषधि-

Aho ! Shrutgyanam

योंको डाले-सोंठ, मिरच, पीपल, खरैंटी, मुसली, चातुर्जात, अजवायन, सिंघाडा, बेलगिरी, हलदी, खैरका गोंद, शतावर, जायफल, माजूफल, कबाबचीनी, अकरकरा, मालवनी, बावची, असगंध, जावित्री, फिटकरी, प्रियंगु, चिरौंजी, गोंदीके फल, शहद, घृत इन सब औषधियोंको मिलावे तो यह वासावलेह बनकर तैयार हो । यह खांसी श्वासको हरे, बल करे, कामाग्निको बढावे, संपूर्ण रोगोंको यह वासावलेह दूर करता है ॥ १-४ ॥

तुलामादाय वासायाः पचेदष्टगुणे जले । तेन पादावशेषेण पाचयेदार्द्रकं भिषक् ॥ १ ॥ हरीतकीनां चूर्णस्य सिता शुद्धा तथाशतम् । शीतीभूते क्षिपेत्तत्र क्षौद्रस्याष्टौ पलानि च ॥ २ ॥ वंशीत्वगायाश्चत्वारि पिप्पल्यष्टपलं तथा । चातुर्जातपलं चैव लेहोऽयं संप्रणाशयेत् । रक्तपित्तं क्षयं चैवश्वासमग्नेश्च मन्दताम् ॥ ३ ॥

२-अडूसा एक तुला लेवे, उसको अठगुने पानीमें औटावे जब चतुर्थांश जल शेष रहे तब उसमें ११४ टंक हरड औटावे । पीछे १०० पल मिश्री मिलाकर अवलेह बनावे जब शीतल होजाय तब ८ पल शहद डाले और ८ पल वंशलोचन, ८ पल पीपल, १ पल चातुर्जात डाले यह अवलेह रक्तपित्त, क्षय, श्वास और मन्दाग्निका नाश करे ॥ १-३ ॥

वासकस्य रसप्रस्थं प्रस्थार्द्धं मधुशर्करे । पिप्पल्या द्विपलं साज्यं सम्यग्लेहं विपाचयेत् ॥ १ ॥ श्रेष्ठो बलावलेहोऽयं राजयक्ष्मनिषूदनः । कासश्वासहरः प्रोक्त उरःक्षतहरस्तथा ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

२-अडूसेका रस एक प्रस्थ लेवे और आधा प्रस्थ शहद और मिश्री लेवे, दो पल पीपल, दो पल घृत लेकर अवलेह बनावे । यह वासावलेह राजयक्ष्माका नाश करे । खांसी श्वास और उरःक्षतको दूर करे ॥ १-२ ॥

भारंगीपाक ।

शतभागं तु भार्ङ्ग्याश्च दशमूलं ततः परम् ।
शतं हरीतकीनां च पचेत्तोये चतुर्गुणे ॥ १ ॥
पादशेषे ततस्तस्मिन्नन्यवस्त्रेण गालयेत् । आ-
लोड्य च तुलां पूतगुडस्य च क्षिपेत्ततः ॥ २ ॥
पुनः पचेत मन्दाग्नौ यावल्लेह्यत्वमाप्नुयात् ।
शीते च मधुनश्चात्र षट् पलानि प्रदापयेत् ॥ ३ ॥
त्रिकुटं त्रिसुगन्धं च पलैकानि पृथक्पृथक् । कर्ष-
द्वयंयवक्षारं संचूर्ण्य प्रक्षिपेत्ततः ॥ ४ ॥ भक्षये-
दभयामेकां लेह्यस्यार्द्धपलं लिहेत् । श्वासं सुदा-
रुणं हन्ति कासं पञ्चविधं तथा ॥ ५ ॥

भारंगी १०० टंक लेवे. १०० टंक दशमूल, १०० टंक हरड इन सबको चौगुगे जलमें डालकर औटावे जब चतुर्थांश जल शेष रहे तब उतारकर वस्त्रसे छानकर उसमें १६०० टंक गुड डालकर मन्दाग्निसे औटावे जब अवलेह होजाय तब शीतल कर ९७ टंक शहद डाले और त्रिकुटा, त्रिसुगंध (तज, पत्रज, इलायची ये सब औषधि जुदी जुदी कूट पीसकर डाले ८ टंक जवाखार डाले इनमेंसे एक हरड नित्य प्रातःकाल खावें और अवलेह टंक ८ पीवे तो घोर श्वास और पांच प्रकारकी खांसीका नाश करे ॥ १-५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

कटेरी पाक ।

समूलपत्रान्वितकण्टकार्यास्तुलां जले द्रोणपरि-
प्लुतां च । रीतकीनां च शतं निदध्याद्दत्त्वाऽत्र
पक्त्वा चरणावशेषम् ॥ १ ॥ गुडस्य दत्त्वा शत-
मेतदग्नौ सुपक्वमुत्तार्य ततः सुशीते । कटुत्रिकं
च त्रिफलाप्रमाणं पलानि षट्पुष्परसानि तत्र॥२॥
तुगाक्षीरी च गायत्री भार्ङ्गी कर्कटशृङ्गिका । कट्-
फलं पुष्करं वासा क्षिपेदर्द्धपलोन्मितान् ॥ ३ ॥
क्षिपेच्चतुर्जातफलं यथाग्नि प्रयुज्यमानो विधिना-
ऽत्रलेहः । वातात्मकं पित्तकफोद्भवं च द्विदोषजं
कासमपि त्रयं च ॥ ४ ॥ क्षतोद्भवं च क्षयजं च
हन्यात् सपीनसं श्वासमुरःक्षतं च । यक्ष्मागमेका
दशमुग्ररूपं भृगूपदिष्टं हि रसायनं च ॥ ५ ॥

कटेरीका पञ्चांग १०० पल ४०९६ टंक पानीमें हरड १०० डाल-कर औटावे, जब चतुर्थांश जल शेष रहे तब उतारलेवे, उस जलको छानकार १०० पल गुड डालकर औटावे, पीछे उतार शीतल कर ३ पल त्रिकुटा ६ पल शहद डाले और वंशलोचन, खैरसार, काकडासिंगी, कायफल, पुहकरमूल, अडूसा ये औषधि आठ आठ टंक डाले और १ पल चातुर्जात डालकर अवलेह बनावे । इसमेंसे मनुष्यकी अग्नि देखकर खानेको देवे तो वात, पित्त, कफ, द्विदोष, त्रिदोष इनके विकारसे उत्पन्न खांसी, उरःक्षतकी खांसी, क्षय, पीनस, श्वास, उरःक्षत और ग्यारह प्रकारकी यक्ष्माको दूर करे. यह अवलेह भृगुऋषिने कहा है ॥ १-५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

भिलावा पाक ।

भल्लातकानां पवनोद्धुतानां वृन्ताच्च्युतानां च
तथाऽऽढकं स्यात् । तच्चेष्टकाचूर्णचयं विघृष्य
प्रक्षाल्य तोये विसृजेत् प्रवाते ॥ १ ॥ शुष्कं
पुनस्तद्द्विदलीकृतं च ततः पचेदप्सु चतुर्गुणासु ।
तत्पादशेषं परिपूतशीतं क्षीरे पचेत्तच्च पुनस्त-
थैव ॥ २ ॥ घृतांशयुक्तेन घनं यथा स्यात्सितो-
पलैःषोडशभिः पलैश्च । विमृश्य संस्थाप्य दिनानि
सप्त ततः प्रयुज्याग्निबलेन मात्राम् ॥ ३ ॥ जये-
द्विकारानखिलांश्च कुष्ठान् दृष्टिं च दीप्तिं च बलं
करोति । शतायुषं चैव नरं विधत्तेराजा ह्ययं सर्व-
रसायनानाम् ॥ ४ ॥

पवनसे टूटकर गिरे भिलावे एक आढक (४०९६ टंक) ले मोटे कपडेमें बांधकर पृथ्वीमें पछाडे, पीछे ईंटके कुकुआसे मसल पानीसे धोकर शुद्ध करे और हवामें रख देवे, जब सूखजायँ तब दो दो टुकडे कर चौगुने जलमें औटावे, जब चतुर्थांश जल शेष रहे तब वस्त्रमें छानलेवे, पीछे चौगुना दूध डालकर फिर औटावे, जब चतुर्थांश दूध शेष रहे. तब निकालकर घृतमें पकावे, पीछे १६ पल मिश्रीकी चासनीमें पाक बनालेवे । इसको चीनी वा काचके पात्रमें सात दिन रखकर पीछे बराबर देखकर खानेको देवे तो सम्पूर्ण कुष्ठके विकारोंका नाश करे, दृष्टिको बढावे, बल करे, सौ वर्षकी आयु होय, यह सब रसायनोंका राजा है. अथवा खांडकी चासनी करके इला

Aho ! Shrutgyanam

यची, कपूर, लौंग, तज, पत्रज, नागकेशर, जावित्री, जायफल इन सब औषधियोंका ३२ टंक चूर्ण डाले, पीछे अवलेह बनाकर घृतके चिकने बरतनमें रखदे और धानमें आठ दिन गाडकर खावे, इसपर तेल लगाना, खारा खट्टा खाना वर्जित है ॥ १-४ ॥

सूरणपाक ।

त्रिवृत्तेजोवती दन्ती श्वदंष्ट्रा चित्रकं सटी । गवाक्षी विश्वमुस्ता च विडङ्गा च हरीतकी ॥ १ ॥ पलोन्मितानि चैतानि पलान्यष्टौ च रुक्षराः । तावत्फलं वृद्धदारु सूरणस्य तु षोडश ॥ २ ॥ जलद्रोणद्वये क्वाथ्यं चतुर्भागावशेषितम् । पूर्वं तु तं रसं भूयः क्वाथेभ्यस्त्रिगुणो गुडः ॥ ३ ॥ लेहं पचेत्तु तं ताव द्यावद्दर्वीप्रलेपनम् । अवतार्य ततः पश्चाच्चूर्णानीमानि दापयेत् ॥ ४ ॥ त्रिवृत्तेजोवती कन्दचित्रकान्द्विपलांशकान् । एलात्वङ्मरिचं चापि नागाह्वं चापि षट्पलम् ॥ ५ ॥ द्वात्रिंशत्पलकं चैव चूर्णं दत्त्वा निधापयेत् । ततो मात्रां प्रयुञ्जीत जीर्णे क्षीणे रसायने ॥ ६ ॥ पञ्च गुल्मान् प्रमेहांश्च पाण्डुरोगं हलीमकम् । जयेदर्शांसि सर्वाणि तथा सर्वोदराणि च ॥ ७ ॥ रसायनवरश्चैव मेधाजननकारकः । गुडः श्रीबाहुशालोऽयं दुर्नामारिः प्रकीर्तितः ॥ ८ ॥

Aho ! Shrutgyanam

निसोथ, मालकांगनी, इँतून, गोखरू. चित्रक, कचूर, इन्द्रायण, सोंठ, नागरमोथा, वायविडंग, हरड इन औषधियोंको सोलह सोलह टंक लेवे. पानी ८१९२ टंक लेवे, भिलावे ८ पल, विधायरा ८ पल, जमीकन्द १६ पल इन सबको पूर्वोक्त जलमें डालकर औटावे. जब चौथाई शेष रहे तब उतारकर क्वाथसे तिगुना गुड डालकर औटावे और कडछीसे चलाता जाय, आगे कहे प्रकारसे अवलेह बनालेवे। जब कडछीमें लिपटने लगे, तब उतारकर ये चूर्ण और डाले–निसोथ, मालकांगनी, सूरण (जमीकंद), चित्रक इनको बत्तीस बत्तीस पल लेवे । इलायची छोटी, तज, मिरच, नागकेशर ये औषधि और छः छः पल लेवे, इन सबको उस अवलेहमें डालकर रक्खे, पीछे इसकी मात्रा देवे अजीर्णतामें और क्षीणतामें यह रसायन है. पांच प्रकारके गुल्म, प्रमेहमात्र, पांडुरोग, हलीमक सर्व प्रकारकी बवासीर तथा सर्व प्रकारके उदररोगपर यह उत्तम रसायन है । तीव्र बुद्धि करे, यह बाहुशाल गुड दुर्नाम (बवासीर) का शत्रु है शास्त्रान्तरमें इसको बाहुशालगुड कहते हैं ॥ १-८ ॥

आर्द्रकपाक ।

चूर्णितं चार्द्रकप्रस्थं गुडप्रस्थेन पाचयेत् ।
सर्पिषः कुडवं दत्त्वा चूर्णं तं वेदमापचेत् ॥ १ ॥
चातुर्जातफलं व्योषं त्रिफला तुर्यभागकाः ।
लवंगमभया भार्ङ्गी वृषं भूनिंबपौष्करम् ॥ २ ॥
देवदार्वश्वगंधा च जातीपत्रफलागुरु ।
गायत्रीसारमृद्वी च द्विगुणं च रसं क्षिपेत् ॥ ३ ॥
कासं श्वासं क्षयं शोषं पण्ढैकादशरूपिणम् ।
श्लेष्मप्रकोपमामं च मंदाग्निमुदरग्रहम् ॥ ४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

हृद्रोगं रक्तदोषं च हन्ति वर्णाग्निवृद्धिकृत् ।
बलपुष्टिप्रदो वृष्य आर्द्रको लेह उच्यते ॥ ९ ॥

अदरखको छील टुकडे कर उनको घीमें डालकर लोहे या मिट्टीकेपात्रमें भूने, पीछे जितना अदरख लेवे उतना गुड लेकर उसमें उस अदरखको डालकर औटावे, कडछीसे चलाता जाय, जब अच्छे प्रकार परिपक्क होजाय तब इतनी औषधि और मिलावे -सोंठ, जीरा, मिरच, नागकेशर, जावित्री, इलायची, तज, पत्रज, पीपल धनियां, काला जीरा, पीपलामूल, वायविडंग ये औषधि शीतल होनेपर मिलाकर रख छोड़े, आठ टंक नित्य शीतकालमें खाय तौ श्वास, खांसी, बहरापन, स्वरभंग, अरुचि, हृद्रोग, संग्रहणी, गोला, शूल, सूजन इतने रोग नष्ट होवें ॥ १-९ ॥

लहसनपाक ।

तदुग्रगन्धमादाय रात्रौ तक्रे विनिक्षिपेत् ।
प्रातर्निस्सार्य तत्पिष्ट्वा ततो दुग्धे विपाचयेत् ॥ १ ॥
निस्तुषं लशुनं प्रस्थं क्षीरप्रस्थचतुष्टये ।
विपाच्य सांद्रीभूतेऽस्मिन्सर्पिषः कुडवं क्षिपेत् ॥ २ ॥
रास्ना वरी वृषा च्छिन्ना सटी विश्वा सुरद्रुमम् ।
वृद्धदारुकदीप्याग्निसुताह्वा सपुनर्नवा ॥ ३ ॥
फलत्रयं पिप्पली च कृमिघ्नः कर्षसंमितः ।
विचूर्ण्य शीते मधुनः कुडवं तत्र योजयेत् ॥ ४ ॥
शीतया भक्षयेन्मात्रां मांद्यवाते हनुग्रहे ।
आक्षेपकादिभग्नेषु कक्षोरुस्तम्भहृद्ग्रहे ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

सर्वाङ्गसन्धिभग्ने च वातजाशीतिरोगिणे ।
पथ्यो लशुनपाकोऽयं वर्णायुः- पुष्टिकारकः ॥ ६ ॥

लहसनकी दुर्गंधि दूर करनेके निमित्त रात्रिको छाछमें भिगोदे, प्रातःकाल छाछमेंसे निकालकर छिलका दूर कर पीसे फिर चौगुने दूधमें औटावे, जब खोवा होजाय तब घी ६४ टंक डाले । रास्ना, शतावर, अडूसा, गिलोय, कचूर, सोंठ, देवदारु, विधायरा, अजमायन, चित्रक, सांठकी जड, त्रिफला, पीपल, वायविडंग ये औषधि चार टंक लेवे, सबका चूर्ण कर पूर्वोक्त खोवामें मिलावे. सबकी बराबर मिश्री ले चासनी कर अवलेह बनावे, जब शीतल होजाय तब ६४ टंक शहद उसमें डाले तो यह लहसुनपाक बनकर तैयार होवे । यह पाक मन्दवात, हनुग्रह, आक्षेपकादि भग्नरोग, कमर ऊरु जकडना, हृदयका जकडना, सर्वांगमें स्थित वात, संधियोंमें स्थित वात और अस्सी प्रकारके वातरोगको नष्ट करे, यह लहसनपाक पथ्यरूप है. वर्ण, आयु और पुष्टिका कर्ता है. अथवा घी तेल मिलाकर ले, सो ग्रन्थान्तरोंमें लिखा भी है. लहसनका तेल और घृत मिलाकर प्रातःकाल सूर्योदयके समय खानेसे विषमज्वर और वातके विकारको नष्ट करे, बुढापेको दूर करे, इसके खानेसे मनुष्य कामदेवसे भी अत्यन्त सुन्दर होवे ॥ १-६ ॥

स्त्री योग्य कसेलापाक ।

कसेलं कुडवं चैव घृतं देयं च तत्समम् ।
गोक्षीरमाढकं देयं पचेत्सम्यग्भिषग्वरः ॥ १ ॥
उत्तार्य च क्षिपेत्तत्र गुन्द्रकोलं पलद्वयम् ।
खण्डप्रस्थद्वयं चैव पाकिं कृत्वा क्षिपेत्पुनः ॥ २ ॥
व्योषं पाषाणभेदं च लोहं जाती शतावरी ।

Aho ! Shrutgyanam

मंजिष्ठा धातकी माजू बिल्वमोचरसं तथा ॥ ३ ॥
एतेषां शुक्तिमात्रं च चतुःकर्षं च मोदकम् ।
स्त्रीप्रदरं निहन्त्याशु योनिदोषं च शाम्यति ॥ ४ ॥

कसेला ६४ टंकको घृत ६४ टंकमें पकावे पीछे गौका दूध १०२४ टंक डालकर उत्तम वैद्य भली भाँतिसे खोवा करे. पीछे इसको उतारकर बबूलका गोंद ३२ टंक लेवे उसमें घी डालकर तल लेवे, ५१२ टंक खांडकी चासनी कर उसमें पूर्वोक्त गोंद और खोवा डालकर इन औषधियोंको और मिलावे--सोंठ, मिरच, पीपल, पाषाणभेद, लोध, जावित्री, शतावर, मँजीठ, धायके फूल, माजूफल, बेलगिरी, मोचरस ये सब औषधि दो दो कर्ष लेवे. सबको मिलाकर चार कर्षके अनुमान लड्डू बनावे, इसके खानेसे स्त्रियोंका प्रदर और योनिके दोष दूर होवें ॥ १-४ ॥

अण्डीपाक ।

निस्तुषं बीजमैरण्डं पयस्यष्टगुणे पचेत् ।
तस्मिन्पयसि शोषं च तं बीजं परिपेषयेत् ॥ १ ॥
पश्चाद् घृतेन संयुक्तं सम्पचेन्मृदुवह्निना ।
कटुत्रिकं लवङ्गं च एला त्वक्पत्रकेशरम् ॥ २ ॥
अश्वगन्धाशिफा रास्ना षड्गन्धा रेणुका वरी ।
लोहं पुनर्नवा श्यामा उशीरं जातिपत्रकम् ॥ ३ ॥
जातीफलमभ्रकं च सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ।
शीतीभूतेऽवलेहोऽयं तस्मिन्खण्डं समोदयम् ॥ ४ ॥
वातारिपाकनामाऽयं प्रातरुत्थाय भक्षितः ।
अशीतिवातरोगांश्च चत्वारिंशच्च पैत्तिकान् ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

उदराणि तथा चाष्टौ शोफरोगान्निहन्ति च ।
विंशतिं मेहजान् रोगान्षष्टिं नाडीव्रणानि च ॥ ६ ॥
हन्त्यष्टादश कुष्ठानिक्षयरोगांश्च सप्त च ।
पंचैव पाण्डुरोगाणि पंच श्वासान्प्रणाशयेत् ॥ ७ ॥
चतुरो ग्रहणीरोगान्हृद्रोगं च गलग्रहम् ॥
अनेकवातरोगाणि तानि सर्वाणि वारयेत् ॥ ८ ॥
शुक्तापाकेति विख्यातः सर्वरोगनिवारणे ॥ ९ ॥

नागपुरीययतिगणश्रीहर्षकीर्तिसंकलिते ।
वैद्यकसारोद्धारे प्रथमः पाकाधिकारोऽयम् ॥ १ ॥

अरण्डीक छिलके दूर कर आठगुने दूधमें औटावे, जब दूध सूख जाय तब पीसकर घृत मिलाय पचावे. त्रिकुटा, लौंग, इलायची, पत्रज, तज, केशर, असगन्ध, सोवाके बीज, पीपलामूल, रेणुका, शतावर, सार, सांठकी जड, दारुहलदी, उशीर, जावित्री, जायफल, अभ्रक ये औषधि सब बराबर लेवे, सबका चूर्ण कर पीछे अवलेह करे जब शीतल होजाय तब सब औषधियोंकी बराबर खाण्ड डाले। यह वातारिनाम पाक है। इसको प्रातःकाल भक्षण करे तो अस्सी प्रकारके बातरोग, चालीस प्रकारके पित्तरोग, आठ प्रकारके उदरविकार, सूजन, बीस प्रकारक प्रमेह, साठ प्रकारके नाडीव्रण, अठारह प्रकारके कुष्ठ, सात प्रकारकी क्षय, पांच प्रकारके पाण्डुरोग, पांच प्रकारके श्वास, चार प्रकारकी संग्रहणी, हृदयरोग, गलग्रह, अनेक वादीके रोग इन सबको नष्ट करता है। यह शुक्तापाकनामसे विख्यात है, इसी प्रकार और भी, पाक वैद्य अपनी बुद्धिसे बना लेवे ॥ १-९ ॥

इति श्रीमाथुर दत्तरामचौबेकृत माथुरीमञ्जूषा भाषाटीकायां
पाकाधिकारः प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ चूर्णाधिकारः-द्वितीयोऽध्यायः २.

कुंकुमादिचूर्ण ।

कुंकुमं मन्दनी मुस्ता चातुर्जातफलत्रिकम् ।
आकल्लमभ्रकं धान्यं दाडिमं मरिचं कणा ॥ १ ॥
यवानी तंतडीकं च हिंगुलं घनसारकम् ।
तुम्बरं तगरं तोयलवंगं जातिपत्रिका ॥ २ ॥
समंगा पुष्करं श्यामा पद्मबीजं तुगा सटी ।
तालीसं चित्रकं मांसी जातीफलमुशीरकम् ॥ ३ ॥
बला नागबला मांसी कुष्ठग्रंथिकमाषिकाः ।
यावंत्येतानि सर्वाणि तावन्मोचरसं ददेत् ॥ ४ ॥
सर्वतुल्या सिता योज्या कर्षमात्रं तु भक्षयेत ।
प्रभाते च निशादौ च भोजनान्ते विशेषतः ॥ ५ ॥
संध्याकाले तथा भोज्यं वाजीकरणमुत्तमम् ।
अजीर्णं जरयत्याशु नष्टाग्नेश्चाग्निदीपनम् ॥ ६ ॥
अशीतिवातजान् रोगांश्चतुर्विंशतिपैत्तिकान् ।
विंशतिश्लेष्मजांश्चैव हृल्लासं छर्द्यरोचकम् ॥ ७ ॥
पञ्चैव ग्रहणीदोषानतिसारं विशेषतः ।
क्षयमेकादशं श्वासं कासं पञ्चविधं तथा ॥ ८ ॥
उदरव्याधिनाशं च मूत्रकृच्छ्रं गलग्रहम् ।
पुत्रं जनयते वंध्या सेव्यमाने तथौषधे ॥ ९ ॥

Aho ! Shrutgyanam

सन्निपातातुरं चैव विस्फोटकभगन्दरम्।
नेत्ररोगं शिरोरोगं कर्णमन्याहनुग्रहम् ॥ १० ॥
हृद्रोगं कण्ठरोगं च जानुजंघागतं तथा।
सर्वरोगविनाशाय चरकेण प्रभाषितम् ॥ ११ ॥

केशर, कस्तूरी, चातुर्जात, त्रिफला, अकरकरा, अभ्रक, धनियाँ, अनारदाना, मिरच, पीपल, अजमायन, तंतडीक, हिंगुल, कपूर, तुंबरू, तगर, नेत्रवाला, लौंग, जावित्री, मँजीठ अथवा लजालू, पोहकरमूल, प्रियंगु, कमलगट्टा, वंशलोचन, कचूर, तालीसपत्र, चित्रक, छड, जायफल, खस, खरेटी, गंगेरनकी छाल, सोनामक्खी, कूठ, पीपलामूल, उडद ये सब औषधि बराबर लेवे तथा सबकी बराबर मोचरस और सबकी बराबर मिश्री मिलावे, इस चूर्णको प्रातःकाल, सायंकाल और भोजनके अन्तमें वा रात्रिमें खाय तौ वाजीकरण करता है. अजीर्णको तत्काल नष्ट करे. मन्दाग्निको प्रबल करे, अस्सी प्रकारके वातरोग, चालीस प्रकारके पित्तरोग, बीस प्रकारके कफरोग, सूखी रद्द, वमन, अरुचि. पांचप्रकारकी संग्रहणी, अतीसार, ग्यारह क्षयरोग, श्वास, पांचप्रकारकी खांसी, उदररोग, मूत्रकृच्छ्र और गलग्रह इन सबका नाश करे। इस चूर्णके खानेसे वंध्याके पुत्र होय, सन्निपात, विस्फोटक, भगंदर, नेत्ररोग, शिरके रोग, कर्णरोग, मन्यानाडीका जकडना, हनुग्रह, हृदयरोग, कंठरोग और जानुके रोग इन रोगोंसे आदि ले सर्वरोग नष्ट करनेके निमित्त चरकऋषिने कहा है ॥१-११॥

लवङ्गादि चूर्ण।

लवंगक कोलमुशीरचदनं नतांसनीलोत्पलकृष्ण-
जीरकम्। एलासकृष्णागरनागकेशरं कणं सवि-
श्वानलदं सहांबुना ॥ १ ॥ कर्पूरजातीफलवंश-
लोचना सितार्द्धमात्रासमसूक्ष्मचूर्णितम्। सरोचनं

Aho ! Shrutgyanam

तर्पणमग्निदीपनं बलप्रदं वृष्यतमं त्रिदोषनुत् ॥ २ ॥ अर्शोविबन्धं तमकं गलग्रहं सकासहिक्कारुचियक्ष्मपीनसम् । ग्रहण्यतीसारमथासृजःक्षयं प्रमेहगुल्माश्च निहंति सत्वरम् ॥ ३ ॥

लौंग, कंकोल, खस, सफेद चन्दन, तगर, नीलकमल, कालाजीरा, छोटी इलायची, काला अगर, नागकेशर, पीपल, सोंठ, छड, नेत्रवाला, कपूर, जायफल, वंशलोचन ये सब औषधि बराबर लेवे, सबकी बराबर मिश्री मिलावे । यह चूर्ण रुधिरकर्त्ता, इंद्रियोंकी पुष्टि करे, अग्निको दीप्त करे, बल करे, वृष्य है, त्रिदोषको हरे । बवासीर, अफारा, तमकश्वास, गलग्रह, खांसी, हिचकी, अरुचि, यक्ष्मा, पीनस, संग्रहणी, अतीसार, रुधिरके विकार, क्षय, प्रमेह और गोला इन सबको शीघ्र नाश करता है ॥ १-३ ॥

बृहल्लवङ्गादिचूर्ण ।

लवङ्गमेला तजपत्रजोत्पलं ह्युशीरमांसी तगरं सवालकम् । कङ्कोलकृष्णागरुनागकेशरं जातीफलं चन्दनजातिपत्रिका ॥ १ ॥ द्व्यजाजिका त्र्यूषणपुष्करं सटी फलत्रिकं कुष्ठविडंगचित्रकम् । तालीसपत्रं सुरदारु धान्यकं यवानि मिष्टाखदिराम्लवेतसम् ॥ २ ॥ तुगाऽजमोदा घनसारमभ्रकं शृङ्गी वृषाग्रंथिकमग्निमंथकम् । प्रियंगुमुस्तातिविषा शतावरी सत्त्वं गुडूच्यास्त्रिवृतादुरालभा ॥ ३ ॥ समानि सर्वैश्च समा सिता भवेद्बृहल्लव-

Aho ! Shrutgyanam

ङ्गादिरयं निगद्यते । सायं प्रगे खादति कर्षसंमितं
भवन्ति देहे बलवीर्यपुष्टयः ॥ ४ ॥
निहतं दीपयत्यग्निं तनुवर्णकरं परम् ।
वातघ्नं नेत्रहृदयकण्ठजिह्वाविशोधनम् ॥ ५ ॥
प्रमेहकासारुचियक्ष्मपीनसक्षयास्रदाहग्रहणीत्रिदो-
षनुत् । हिक्कातिसारप्रदरं गलग्रहं निहन्ति
पाण्डुं स्वरभंगमश्मरीम् ॥ ६ ॥

लौंग, इलायची, तज, पत्रज, कमलगट्टाकी मिंगी, खस, छड, तगर, नेत्रवाला, कंकोल, काली अगर, नागकेशर, जायफल, सफेद चन्दन, जावित्री, दोनों जीरे, सोंठ, मिरच, पीपल, पोहकरमूल, कपूर, हरड, बहेडा, आंवला, कूठ, बायविडंग, चित्रक, तालीसपत्र, देवदारु, धनियां, अजमायन, मुलहठी खैरसार, अम्लवेत, वंशलोचन, अजमोद, भीमसेनीकपूर, अभ्रक, काकडासिंगी, अडूसा, पीपलामूल, अरनी, फूलप्रियंगु, मोथा, अतीस, शतावरी, गिलोयका सत्त्व, निसोथ, जवासा इन सब औषधियोंको बराबर लेकर सबकी बराबर मिश्री मिलावे। यह 'बृहल्लवङ्गादि चूर्ण' है इसको सायंकाल और प्रातःकालके समय चार टंकके अनुमान नित्य खाय तो देहमें बल और वीर्यकी पुष्टता होवे । प्रमेह, खांसी, अरुचि, राजयक्ष्मा, पीनस, क्षय. रुधिर-जन्यदाह, संग्रहणी, त्रिदोष, हिचकी, अतीसार, प्रदर, गलग्रह, पांडु-रोग, स्वरभंग और पथरी दूर होवे, अग्निको दीपन करे, देहका वर्ण उत्तम करे । वातके रोग, नेत्रके रोग, हृदय और कंठके रोग नष्ट होवें, जिह्वाको शुद्ध करे ॥ १-६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पिपल्यादिचूर्ण ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ।
मरिचेन समायुक्तं बुधैः षट्कटु कथ्यते ॥ १ ॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिरच इनको पंडित षट्कटु कहते हैं ॥ १ ॥

शुंट्यादिचूर्ण ।

सविश्वसौवर्चलपुष्कराह्वयं सहिङ्गुमुष्णोदकपीत-
मेतत् । हृत्कोष्ठपृष्ठान्तचरं क्षणांतः शूलं जय-
त्याशु मरुत्कफोत्थम् ॥ १ ॥

सोंठ, कालानोन, पोहकरमूल, हींग इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीनेसे हृदय, कोठा, पीठ, पेट आदिका शूल तथा वादी और कफका शूल तत्क्षण नष्ट होता है ॥ १ ॥

त्रिकुटादि चूर्ण ।

त्रिकुटं ग्रन्थिकं ब्राह्मी रेणुकाकल्लपुष्करम् । लवं-
गमश्वगंधा च किरातं हपुषा मटी ॥ १ ॥ रास्ना
श्वेता वचाभृङ्गं सर्वमेकत्र चूर्णयेत् । सन्निपाते
महावाते चूर्णमेतत् सदा हितम् ॥ २ ॥

सोंठ, मिरच, पीपल, पीपलामूल, ब्राह्मी, रेणुका, अकरकरा, पोहकरमूल, लौंग, असगंध, चिरायता, हाऊबेर, कचूर, रास्ना, सफेद बच, भांगरा सब बराबर लेकर चूर्ण करे। यह चूर्ण सन्निपात और घोर वातव्याधि दूर करनेको अत्यन्त हित है ॥ १ ॥ २ ॥

एलादि चूर्ण १-४ ॥

सूक्ष्मैला केसरं भृङ्गं पत्रं तालीसकं तुगा। मृद्वी-
का दाडिमं धान्यं जीरके द्वे द्विकर्षिका ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरम् । मरिचं दीप्यकं चैव वृक्षाम्लं चाम्लवेतसम् ॥ २ ॥ अजमोदाऽजगन्धा च कपिकच्छेति कर्षिका । अत्यन्तसुविशुद्धायाः शर्करायाश्चतुःपलम् ॥ ३ ॥ चूर्णं सदा हितं पुंसां परमं रुचिवर्द्धनम् । प्लीहकासामयार्शांसि श्वासं शूलं च सज्वरम् ॥ ४ ॥ निहन्ति दीपयत्यग्निं बलवर्णकरं परम् । वातघ्नं लोचनं हृद्यं कण्ठजिह्वाविशोधनम् ॥ ५ ॥

१-छोटी इलायची, केशर, भांगरा, तालीसपत्र, वंशलोचन, दाख, अनारदाना, धनियां, दोनों जीरे ये आठ आठ टंक लेवे. पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिरच, अजमायन, तंतडीक, अमलवेत, अजमोद, असगंध, कौंचके बीज इन औषधियोंको चार चार टंक लेवे, मिश्री ४ पल डाले । यह चर्ण रुचिकर है, तापतिल्ली, खाँसी, बवासीर, श्वास, शूल, और ज्वर इनको नाश करे, अग्निको बढावे, वर्ण उत्तम करे, वादी, नेत्ररोग, हृदय, और कंठके रोगको नष्ट करे ॥ १-५ ॥

त्रुटिलवङ्गविडंगकटुत्रिकं घनशिवाशिवपत्रजकं समम् । त्रिगुणिता त्रिवृता च सिता समा अदन आम पतिष्यति कामतः ॥ १ ॥

२-छोटी इलायची, लौंग, वायविडंग, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, आंवले, हरड, तमालपत्र इन सब औषधियोंको बराबर लेय और सब औषधियोंसे त्रिगुण निसोथ डाले और सबके समान मिश्री मिलावे । इस चर्णको खानेसे आम झडकर गिरपडे ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

एलाकुङ्कुमचोचजातिपलयुक्श्रीपुष्पजातीफलं
मस्तक्या करहाटनागरयुतं फेनाहिकृष्णान्वितम् ।
एतेषां समशालशीतलरजः स्याद्र्द्धकस्तूरिका
दद्यात्क्षौद्रयुतं दिनांतसमये यामद्वयं स्तम्भकृत् ॥ १ ॥

३-- इलायची, केशर, तज, जावित्री, तमालपत्र, लौंग, जायफल, मस्तंगी, अकरकरा, सोंठ, अफीम, पीपल इन सबको बराबर लेवे और इन सबकी बराबर मिश्री और औषधियोंसे आधी कस्तूरी लेवे, सबको मिलाय रात्रिके समय इस चूर्णको शहद मिलाकर लेवे तो दो प्रकाहरका स्तंभन होवे ॥ १ ॥

शिलाजतुक्षौद्रविडङ्गसर्पिलोहाभयापारदताप्य-
भाष्यम् । आपूर्यते दुर्बलदेहधातुःस्त्रियं
निशायां च यथा शशांकः ॥ २ ॥

शिलाजीत, शहद, वायाविडंग, घृत, सार, हरड, रससिंदूर, सोना-मक्खी इन सबका चूर्ण पन्द्रह दिन सेवन करनेसे दुर्बल देहकी सब धातुपुष्टि करे, चन्द्रमाके समान प्रकाशमान करे ॥ २ ॥

सत्त्वं गुडूच्या गगनं सलोहमेला सिता मागधि-
कासमेतम् । एतत्समस्तं मधुनाऽवलीढं रामा-
शतं सेवयतीह षण्ढः ॥ ३ ॥

गिलोयका सत्त्व, अभ्रकसार, छोटी इलायची, मिश्री, पीपल इन सबका चूर्ण शहदके साथ मिलाकर खानेसे नपुंसकभी सौ स्त्रियोंसे सम्भोग करे ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

गोक्षुरकः क्षुरकः शतमूली वानरिनागबलाऽतिबला च । चूर्णमिदं पयसा निशि पेयं यस्य गृहे प्रमदाशतमस्ति ॥ ४ ॥

गोखरू, तालमखाने, शतावरी, कौंचके बीज, गंगेरनकी छाल, खरेटी इन सबका चूर्ण रात्रिको दूधके संग उस मनुष्यको पीना चाहिये जिसके घरमें १०० स्त्री होवें ॥ ४ ॥

प्रमेहमें एलादिचूर्ण ४ ।

एलाश्मभेदकशिलाजतुपिप्पलीनां चूर्णानि तण्डुलजलैर्लुलितानि पीत्वा । यद्वा गुडेन सहितान्यवलिह्य मासमासन्नमृत्युरपि जीवति मूत्रकृच्छ्री ॥ १ ॥

४-छोटी इलायची. पाषाणभेद, शिलाजीत, पीपल इनका चूर्ण सांठी चांवलोंके पानीके साथ महीनेभर पीवे अथवा गुड डालकर अवलेह सेवन करे तो निकट मृत्युवाला भी मूत्रकृच्छ्री जीवे ॥ १ ॥

चातुर्जातकचूर्ण ।

चातुर्जाततुगाद्विजीरकधनातालीससाराधसा वृक्षाम्लं कपिकच्छुषट्ककटुत्रयाम्लद्विदीप्या च षट् । चूर्णस्तुल्यसितो बलाग्निरुचिकृत्तत्प्लीहमूलानिलश्वासार्शःकसनव्यथाज्वरवमीहृत्कण्ठजिह्वार्तिजित् १

चातुर्जात, वंशलोचन, दोनों जीरे, धनियां, तालीसपत्र, अनारदाना इनको दश दश कर्ष लेवे । तंतडीक, कैथ, षटकटु (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिरच) अमलवेत, अजमोद, अजमायन इनको छः कर्ष लेवे और सबकी बराबर मिश्री मिलावे ।

Aho ! Shrutgyanam

यह चूर्ण बल, अग्नि, रुचि इनको बढावे, तापतिल्ली, वादीके रोग, श्वास, बवासीर, खांसी, ज्वर, वमन और हृदय कंठ जीभ इन सबके रोगोंको, नाश करता है ॥ १ ॥

त्रिजातादिचूर्ण ।

त्रिजातविश्वा त्रिफला विडंगं द्राक्षा निशायुग्म-मरिष्टपत्रम् । कृष्णा गुडूची मसिमेषशृंगी पुरातनाः षष्टिकतण्डुलाश्च ॥ १ ॥ एतानि चूर्णानि समानि कृत्वा सिता प्रदेया तदनन्तरं समा । दिनोदये चूर्णमिदं हि खादन्कुर्यान्नरः शीतरसोपहारम् ॥२॥ दद्रूणि रक्तं कुपितं च पित्तं कुष्टाम्लपित्तं सविचर्चिपामा । विस्फोटका मण्डलकाः प्रदोषा ह्यनेकदोषाः प्रशमं प्रयान्ति ॥ ३ ॥

त्रिजातक (तज, तमालपत्र, इलायची), सोंठ, त्रिफला, वायविडंग, दाख, हलदी, दारुहलदी, नीमके पत्ते, पीपल, गिलोय, सोयाके बीज, मेढासिंगी, पुराने सांठी चावल ये सब बराबर लेकर इन सबके समान मिश्री मिलावे और प्रातःकाल खाय, शीतल आहार करे तो दाद, रुधिरविकार, पित्तके विकार, कोढ, अम्लपित्त, खाज, खसर, विस्फोटक, चकत्ता और अनेक दोष नष्ट होवें ॥ १-३ ॥

त्रिफलादिचूर्ण ।

त्रिफलां त्रापुषं बीजं सैन्धवं च शिलाजतु ।
बद्धमूत्रे हितं चूर्णं नात्र कार्या विचारणा ॥ १ ॥

त्रिफला, ककडीके बीज, सैंधानोन और शिलाजीत इनका चूर्ण बद्धमूत्रवाले रोगीको हित है ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

तालीसादिचूर्ण १-२ ।

तालीसोपणचव्यनागलवणैस्तुल्यांशकैर्द्विस्थितं
कृष्णाग्रं थिकतन्तडीकहुतभुक्त्वग्जीरकौ तूर्यकौ ।
विश्वैलाबदराम्लवेतसघनैर्धान्याजमोदान्वितास्तिस्रो
दाडिमसारपादसहितः श्रेष्ठः सिता खाण्डवः ॥ १ ॥
कण्ठास्योदरहृद्विकारशमनं कामाग्निसन्दीपनो
गुल्माध्मानविषूचिकागुदरुजः श्वासं कृमीञ्छर्दि-
काम् । कासारुच्यतिसारगूढमरुतां हृद्रोगिणां
कीर्तितश्चूर्णोऽयं भिषजामतीव दयितः ख्यातो
महाखाण्डवः ॥ २

१--तालीसपत्र, कालीमिरच, चव्य, नागकेशरर, सैंधानोन ये औषधि प्रत्येक चार चार टंक लेवे. पीपल, पीपलामूल, तंतडीक (दासरा), चित्रक, दोनों जीरे, तज, तमालपत्र, इन औषधियोंको आठ आठ टंक लेवे. सोंठ, इलायची, बेरकी मींगी, अम्लवेत, नागरमोथा, धनियां अजमोद इन औषधियोंको बारह बारह टंक लेवे, इन सबका चतुर्थांश अनारदाना लेवे और सबके समान मिश्री मिलावे, अथवा सफेद चीनी मिलाकर नित्य खाय तो कंठ, मुख, उदर, हृदय इनके विकारोंको नष्ट करे, कामाग्निको बढावे, गोला, अफरा, हैजा, बवासीर, श्वास, कृमि, छर्दि खांसी, अरुचि, अतिसार, गूढवातव्याधि और हृदयरोगोंको हित है, वैद्योंको अत्यन्त प्यारा यह चूर्ण महाखाण्डव नामसे विख्यात है ॥ १-२ ॥

तुल्यं तालीसचव्योषणलवणगजद्विःकणा ग्रंथ्य-
जाजी वृक्षाम्लाऽग्नित्वचं त्रिर्घनबदरघनैलाजमो-

Aho ! Shrutgyanam

दाम्लविश्वम् । सार्द्धं श्वेतोह्नि सारेऽतिसृतिकृमि-
वमौ खाण्डवारुच्यजीर्णे गुल्माध्मानानलास्योदर-
गलगुदमृद्धृद्रुदश्वासकासे ॥ १ ॥

२-तालीसपत्र, चव्य, कालीमिरच, नागकेशर, गजपीपल, पीपलामूल, पीपल, जीरा, तंतडीक, चित्रककी छाल, तज, नागरमोथा, भिंगी, धनियां, इलायची, अजमोद, अमलवेत, सोंठ, अनारदाना इन सब औषधियोंको बराबर लेकर इनसे आधी मिश्री मिलावे, मिश्रीको छोडकर सब औषधियोंका आधा सार मिलावे । इसके खानेसे अतीसार, कृमिरोग, वमन, अरुचि, अजीर्ण, गोला, उदरविकार, मन्दाग्नि, मुखरोग, कंठरोग, गुदारोग, मिट्टी खानेका रोग, श्वास, खांसी इन सब रोगोंको यह खांडवचूर्ण दूर करता है ॥ १ ॥

तालीसग्रंथिधान्यैर्भवरबिधकणाकृष्णजीरच्छ-
दाम्लं सामुद्रं विश्वजीरोषणमथ रुचकं त्वक्त्रुटी-
दाडिमैस्तैः । विंशत्यष्टत्रिपञ्चैकचतुरवयवैर्भास्क-
रोन्मन्थवाम्लैर्गुल्मे सार्शोर्तिकासग्रहणिजठरहृत्त्व-
ग्गदश्लेष्मवाते ॥ १ ॥

३-तालीसपत्र, पीपलामूल, धनियां, बिडनोन, पीपल, कालाजीरा, अमलवेत, समुद्रनोन, सोंठ, सफेदजीरा, पत्रज, कालानोन, तज, छोटी इलायची, अनारदाना, इनको क्रमसे बीस, आठ, तीन, पांच, एक और चार भाग लेवे, इसमें नींबूके रसकी भावना देवे, यह भास्करचूर्ण गोला, बवासीर, खांसी, संग्रहणी, उदररोग, त्वग्रोग, कफवातके रोग इन सबको नष्ट करे ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

गगनाश्रयचूर्ण ।

त्रिकटु त्रिसुगन्धं च लवंगं जातिकाफलम् । तुगा-
क्षीरी सटी शृंगी वाजिगन्धा च दाडिमी ॥ १ ॥
एतानि समाभागानि सर्वतुल्यमयोरजः । आय-
सेन समं देयं गगनं च सुशोधितम् ॥ २ ॥ याव-
न्त्येतानि चूर्णानि तावद्द्यात्सितोपलाम् । कर्ष-
प्रमाणं दातव्यं खादयेच्च यथाबलम् ॥३॥अग्नि-
संजननं हृद्यं प्रमेहं हन्ति दारुणम् । अश्मरीं मूत्र-
कृच्छ्रं च धातुस्थं विषमज्वरम् ॥ ४ ॥ नाशयेच्च
त्रिदोषं च राजयक्ष्मज्वरापहम् । पीनसश्वासका-
सघ्नं रुच्यं कासहरं परम् ॥ ५ ॥

सोंठ, मिरच, पीपल, तज, पत्रज, इलायची, लौंग, जायफल, तवाखीर, कचूर, काकडासिंगी, असगंध, अनारदाना ये सब बराबर लेवे और सबके समान सार लेवे. और सारकी बराबर शुद्ध अभ्रक लेव और सबकी बराबर मिश्री मिलावे. बलाबल देखकर इसकी मात्रा चार टंक देवे तो अग्निको दीप्त करे, हृदयके रोग, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, धातुओंमें स्थित विषमज्वर, त्रिदोष, राजयक्ष्मा, ज्वर, पीनस, श्वास, खांसी इनका नाश करे ॥ १–५ ॥

सितोपलादिचूर्ण ।

सितोपला षोडश स्यादष्टौ स्याद्वंशलोचना ।
पिप्पलीस्यात् चतुःकर्षा एला च द्वयकार्षिका
॥ १ ॥ एककर्षा च त्वक्कार्या चूर्णयेत्सर्वमेकतः ।
सितोपलादिकं चूर्णं मधुसर्पियुतं लिहेत् ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

कासश्वासक्षयहरं हस्तपादांगदाहजित् । मन्दाग्नि-
शुष्कजिह्वां च पार्श्वशूलमरोचकम् । ज्वरमूर्ध्व-
गतं रक्तं पित्तमाशु व्यपोहति ॥ ३ ॥

मिश्री १६ कर्ष, वंशलोचन ८ कर्ष, पीपल ४ कर्ष, छोटी इलायची २ कर्ष, तज १ कर्ष इन सबका चूर्ण कर शहदमें मिलाकर खावे तो खांसी, श्वास, क्षय और हाथ पैरोंके दाहको दूर करे, मन्दाग्नि, जीभका सूखना, पसवाडेका शूल, अरुचि, ज्वर, ऊर्ध्वगत रुधिरके विकार तथा पित्तके रोगोंको यह सितोपलादि चूर्ण दूर करता है ॥ १–३ ॥

श्रीखण्डादिचूर्ण ।

श्रीखण्डं मरिचं लवंगफलजं द्राक्षा तजं पत्रजं
रक्तं चन्दनवालकं मधुनिशा शुण्ठीकणाग्र-
न्थिकाः । धान्या जीरककेशरं जलफलं खर्जूर-
सम्यक्त्वचश्चूर्णं भेषजमिश्रितं सममितं मात्रा
बिडालं पदम् ॥ १ ॥ श्वासं शोषयुतं क्षयज्वरहरं
पित्तप्रमेहापहं रक्तस्तापजडं प्रकाशमरुचिं व्याधिं
भगेन्द्रापहम् । क्षीणे देहपतत्रययुताबलं सर्वा-
तिसारापहं सर्वव्याधिविनाशनं निगदितं श्रीखण्ड-
चूर्णाभिधम् ॥ २ ॥

चन्दन, मिरच, लौंग, जायफल, दाख, तज, पत्रज, लालचन्दन, नेत्रवाला, मुलहठी, हलदी, सोंठ, पीपल, पीपलामूल, धनियां, जीरा, केशर, पवहडी, छुहारा इन सबको समान भाग लेवे, सबकी बराबर मिश्री मिलादेवे और चार टंकके अंदाज नित्य खाय तो शोषयुक्त श्वास, क्षय, ज्वर, पित्त, प्रमेह, रुधिरविकार, ताप, जडता, बहुत

Aho ! Shrutgyanam

दिनकी व्याधि, भगन्दर इनका नाश करे, क्षीण देहको पुष्ट करे अतिसारका नाश करे, सर्वव्याधियोंका नाश करे इसको वैद्य श्रीखंड-चूर्ण कहते हैं ॥ १ ॥ २ ॥

शंखादिचूर्ण ।

शंखचूर्णं सलवणं सहिंगु व्योषसंयुतम् ।
उष्णोदकेन सम्पीतं हन्ति शूलं त्रिदोषजम् ॥ १ ॥

शंखका चरा, सेंधानोंन, हींग, सोंठ, मिरच, पीपल इनका चूर्ण बनाकर गरम जलके साथ लेनेसे त्रिदोषका भी नाश होवे ॥ १ ॥

कायफलादिचूर्ण ।

कट्फलं पुष्करं भार्ङ्गी शृङ्गी च मधुना सह ।
श्वासकासज्वरहरं कट्फलादिकफान्तकृत् ॥ १ ॥

कायफल, पोहकरमूल, भारंगी, काकडासिंगी इनका चूर्ण शहदके साथ खानेसे खांसी, श्वास और ज्वरको दूर करे, यह कट्-फलादिचूर्ण कफनाशक है ॥ १ ॥

षड्योगचूर्ण ।

तवराजकणा द्राक्षा खर्जूरं मधुरं त्रुटिः ।
लवंगं पत्रकं चैव नागकेशरनामतः ॥ १ ॥

मिश्री, पीपल, दाख, छुहारे, मुलहठी, इलायची, लौंग, पत्रज और नागकेशर इनके चूर्णको षड्योग चूर्ण कहते हैं ॥ १ ॥

मिश्रादिचूर्ण ।

चित्रकेन्द्रयवा पाठा कटुकाऽतिविषाऽभया ।
महाव्याधिप्रशमनो योगः षट्चरणः स्मृतः ॥ १ ॥
मधुना भक्षितं हन्ति चूर्णमेकं हि निश्चितम् ।
भ्रमं दाहं शीतपीडां क्षयरोगं न संशयः ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

चित्रक, इंद्रयव, पाढ, कुटकी, अतीस, हरड यह महाव्याधि-शमनकर्ता षट्चरणयोग कहाता है। इस चूर्णको शहदके साथ खानेसे भ्रम, दाह, शीतकी पीडा और क्षयरोगका नाश करे ॥ १ ॥ २ ॥

कीलकादिचूर्ण ।

गृहधूमो यवक्षारं पाठाव्योषरसाञ्जनम् । तेजोह्वा
त्रिफला लोध्रं चित्रकं चेति चूर्णितम् ॥ १ ॥
सक्षौद्रं धारयेदेतद्गलरोगविनाशनम् । चूर्णं तु
भक्षयेद्धीमान्दन्तास्यस्य च रोगजित् ॥ २ ॥

घरका धूआं, जवाखार, पाढ, सोंठ, मिरच, पीपल, रसौंत, तज, दालचीनी, त्रिफला, लोध, चित्रक इनका चूर्ण शहदसंयुक्त खानेसे गलेके रोग नष्ट होवें और दांतोंके तथा मुखके रोगोंका नाश होवे ॥ १ ॥ २ ॥

पञ्चनिम्बचूर्ण ।

मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वङ् निम्बस्य समाहरेत् ।
सूक्ष्मचूर्णमिदं कुर्यात्पलैः पंचदशोन्मितैः ॥ १ ॥
लोहभस्महरीतक्यौ चक्रमर्दकचित्रकौ ।
भल्लातकं विडंगानिशर्कराऽऽमलकं निशा ॥ २ ॥
पिप्पली मरिचं शुण्ठी बाकुचीकृतमालकैः ।
गोक्षुरं च पदोन्मानमेकैकं कारयेद् बुधः ॥ ३ ॥
सर्वमेकीकृतं चूर्णं भृङ्गराजेन भावयेत् ।
अष्टभागावशिष्टेन खदिरावरवारिणा ॥ ४ ॥
भावयित्वा सुशुष्कं च कर्षमात्रं त[illegible] पिवेत् ।
खदिरसारतोयेन सर्पिषा पयसाऽथवा ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

मासेन सर्वकुष्ठानि विनिर्यान्ति रसायनम्।
पञ्चनिम्बमिदं चूर्णं सर्वरोगप्रणाशनम् ॥ ६ ॥

निंबकी जड पत्ता फल फूल, और, छाल लेकर चूर्ण करे. लोहेकी भस्म १५ पल, हरड, पवांडके बीज, चित्रक, भिलावे, वायविडंग, मिश्री, आंवले, हलदी, पीपल, मिरच, सोंठ, बावची, अमलतासका गूदा गोखरू ये सब औषधि जुदी २ एक एक पल लेवे. सब चूर्णको एकत्र कर भांगरेके रसकी २१ भावना देवे. पीछे सुखाकर एक कर्ष नित्य खैरसारके जल अथवा घृतके साथ वा दूधके साथ पीवे तो एक महीनेमें सकल कुष्ठोंको दूर करे। यह पञ्चनिम्बचर्ण सकलरोगनाशक है ॥ १–६ ॥

सुदर्शनचूर्ण।

त्रिफला रजनीयुग्मं कण्टकारीयुगं सटी।
चित्रकं ग्रन्थिकं मूर्वा गुडूची धान्ययासके ॥ १ ॥
कटुका पर्पटी मुस्ता त्रायमाणं च बालकम्।
निम्बं पुष्करमूलं च मधुयष्टी च वासकम् ॥ २ ॥
यवानीन्द्रयवा भार्ङ्गी शिग्रुबीजं सुराष्ट्रकम्।
वचा त्वक्पद्मकोशीरं चन्दनातिविषा बला ॥ ३ ॥
शालपर्णी पृष्ठिपर्णी विडङ्गं तगरं तथा।
चित्रको देवदारुश्च चव्यं पत्रं पटोलकम् ॥ ४ ॥
जीवकर्षभकौ चैव लवंगं वंशलोचनम्।
पुण्डरीकं च काकोलीपत्रकं जातिपत्रकम् ॥ ५ ॥
तालीसपत्रं च तथा समभागानि चूर्णयेत्।
सर्वचूर्णस्य चोर्द्धांशं किराततं प्रक्षिपेत सुधीः ॥ ६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

एतत्सुदर्शनं नाम चूर्णं दोषज्वरापहम् ।
ज्वरांश्च निखिलान्हन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥ ७ ॥
सन्निपातोद्भवांश्चापि मानसानपि नाशयेत् ।
शीतज्वरैकाहिकादीन्मोहं तन्द्रां भ्रमं तृषाम् ॥ ८ ॥
श्वासं कासं च पाण्डुंच हृद्रोगं हन्ति कामलाम् ।
त्रिकपृष्ठकटीजानुपार्श्वशूलनिवारणः ॥ ९ ॥
शीताम्बुना पिबेद्धीमान्सर्वज्वरनिवृत्तये ।
यथा सुदर्शनं चक्रं दानवानां विनाशकम् ॥ १० ॥
तथाज्वराणां सर्वेषामिदं चूर्णं प्रशस्यते ।
नानादेशोद्भवांश्चैव नीरदोषान् व्यपोहति ॥ ११ ॥

त्रिफला, हलदी, दारुहलदी, छोटी बडी दोनों कटेरी, कचूर, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपलामूल, मूर्वा, गिलोय, धनिया, अडूसा, कुटकी, पित्तपापडा, मोथा, त्रायमाण, नेत्रवाला, नीमकी छाल, पोहकरमूल, मुलहटी, जवासा, अजमायन, इन्द्रयव, भारंगी, सहँजनेके बीज, फिटकरी, वच, तज, पद्माख, खस, चन्दन, अतीस, खरेटी, सरिवन, पिठवन, वायविडंग, तगर, चित्रक, देवदारु, चव्य, पटोलपत्र जीवक, ऋषभक, लौंग, वंशलोचन, कमलगट्टा, कंकोल, तमालपत्र, जावित्री, तालीसपत्र, ये सब औषधि बराबर भाग ले चूर्ण करे और चूर्णसे आधा चिरायता मिलावे. यह सुदर्शनचूर्ण त्रिदोषज्वर तथा सम्पूर्ण ज्वरोंको नाश करे वात पित्त कफोंके ज्वर, द्वन्द्वज, आगन्तुक, धातुमें स्थित, विषमज्वर, सन्निपातज ज्वर, मानस (जो मनसे सम्बन्ध रखता हो), शीतज्वर, इकतरा, मोह, तन्द्रा, भ्रम, प्यास, श्वास, खांसी, पाण्डुरोग, हृद्रोग, कामला, त्रिकपीडा, पीठ, कमर, घोंटू, पसवाडा, इनका दुखना ये सब नष्ट होवे. जैसे

Aho ! Shrutgyanam

सुदर्शनचक्र दैत्योंका नाश करता है तैसेही यह सुदर्शनचूर्ण सब ज्वरोंको नाश करता है और अनेक देशोंके जलविकारको नाश करता है ॥ १-११ ॥

षोडशांग चूर्ण।

किरातं तिक्तकं तिक्ता गुडूची चाभया घना।
धन्वयासकत्रायंती क्षुद्रा शृङ्गी महौषधम् ॥ १ ॥
पर्पटं च प्रियंगुं च पटोलं मागधी सटी।
षोडशांगमिति प्रोक्त ज्वरशूलविनाशनम् ॥ २ ॥

चिरायता, नींबकी छाल, कुटकी, गिलोय, हरड, मोथा, जवासा, त्रायमाण, कटेरी, काकडासिंगी, सोंठ, पित्तपापडा, फूलप्रियंगु, पटोलपत्र, पीपल, कचर इनका चूर्ण षोडशांगनामसे विख्यात है यह ज्वर शूलका नाशक है १ ॥ २ ॥

अरिष्टादिचूर्ण।

निम्बच्छदो दशपलंत्र्यूषणं च पलत्रयम् ।
त्रिपलंत्रिफला चैव त्रिफलं लवणत्रयम् ॥ १ ॥
द्वौ क्षारौ द्विपलंचैव यवानी पलपंचकम् ।
सर्वमेकीकृतं चूर्ण प्रत्यूषे भक्षयेन्नरः ॥ २ ॥
ऐकाहिकं द्व्याहिकं च त्र्याहिकं च तथाज्वरम् ।
चातुर्थिकं महाघोरं नाशयेत्संततज्वरम् ॥ ३ ॥

नींबकी छाल १० पल, त्रिकुटा ३ पल, त्रिफला ३ पल, सेंधानोन, बिडनोन, संचरनोन तीनों एक एक पल, सज्जीखार, जवाखार दो दो पल, अजमायन ५ पल सबको एकत्र चूर्ण कर खाय तो इकतरा द्व्याहिक तिजारी, चौथिया और सन्ततज्वर ये सब नष्ट होवें ॥ १-३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

शृंग्यादिचूर्ण ।

शृंगीकटुत्रिकफलत्रयकण्टकारी भार्ङ्गी सपुष्करजटा लवणानि पञ्च। चूर्णं पिबेदशिशिरेण जलेन हिक्काश्वासोर्ध्ववातकसनारुचिपीनसेषु ॥ १ ॥

काकडासिंगी, सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, कटेरी, भारंगी, पुहकरमूल, सैंधानोन, संचरनोन, बिडनोन, समुद्रनोन, कचियानोन इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीनेसे हिचकी, ऊर्ध्वश्वास, वात कफके रोग, अरुचि और पीनस ये सब नष्ट होवें ॥ १ ॥

लवणभास्करचूर्ण ।

पिप्पली पिप्पलीमूलं धान्यकं कृष्णजीरकम् ।
सैन्धवं च विडङ्गं च पत्रं तालीसकेशरम् ॥१॥
एषां द्विपलिकान् भागान्पञ्च सौवर्चलस्य च ।
मरिचं शुण्ठ्यजाजी स्यादेकैकं च पलं पलम् ॥ २ ॥ त्वगेला चार्द्धभागेन सामुद्रं च पलाष्टकम् । चतुःपलं दाडिमं च द्विपलं चाम्लवेतसम् ॥ ३ ॥ एतच्चूर्णीकृतं सूक्ष्मं लवणं भास्कराभिधम् । गवां तक्रं सुरा सुक्तदधि कांजिकयोजितम् ॥ ४ ॥ वातश्लेष्मं वातगुल्मं वातशूलं च नाशयेत्। मन्दाग्निं ग्रहणीमर्शो हृद्रोगं प्लीहमेवच॥५॥

पीपल, पीपलामूल, धनियां कालाजीरा, सैंधानोन, वाय विडंग, तालीसपत्र, नागकेशर इन औषधियोंको दो दो पल लेवे. संचरनोन, मिरच, सोंठ, जीरा इनको एक एक पल लेवे. तज, इलायची इनको ८ टंक लेवे. समुद्रनोन ८ पल, अनारदाना ४ पल,

Aho ! Shrutgyanam

अमलवेत २ पल ले सबको मिलाकर खूब बारीक पीसे । यह लवणभास्कर चूर्ण भास्करवैद्यका बनाया हुआ है, सुगन्धयुक्त और अमृतके तुल्य है इसको छांछ, कांजी, दारु, दही इनके साथ खानेसे वात कफके विकार, वायगोला, मन्दाग्नि, संग्रहणी, बवासीर, हृद्रोग, प्लीहके रोग ये सब नष्ट होते हैं ॥ १-९ ॥

वज्रक्षारचूर्ण ।

सामुद्रं सैन्धवं काचं यवक्षारं सुवर्चलम् । टंकणं स्वर्जिकाक्षारं तुल्यं चूर्णं प्रकल्पयेत् ॥ १ ॥ अर्कक्षीरैः स्नुहीक्षीरैर्भावयेदातपे त्र्यहम् । अर्कपत्रे लिपेत्तं तु रुद्ध्वा चांधपुटे पचेत् ॥ २ ॥ सकलं चूर्णयित्वाऽथ त्र्यूषणं त्रिफलारजः । जीरकं रजनी वह्निर्निम्बकस्य रसं समम ॥ ३ ॥ एकीकृत्य प्रयोगेण सूक्ष्मं चूर्णं तुकारयेत् । वज्रक्षारमिदं चूर्णं स्वयं प्रोक्तं पिनाकिना ॥ ४ ॥ सर्वोदरेषु गुल्मेषु शोफे शूलेषु योजयेत् । अग्निमांद्यमजीर्णेषु भक्ष्यं निष्कद्वयं द्वयम् ॥ ५ ॥ अर्कपत्रं सलवणं पुटे दग्धं सुचूर्णितम् । निहन्ति मधुना पीतं प्लीहानं शूलदारुणम् ॥ ६ ॥

समुद्रनोन, सैंधानोन, कचियानोन, जवाखार, संचरनोन, सुहागा, सज्जी इन सबको बराबर ले चूर्णकर आकके रसकी और थूहरके दूधकी तीन तीन भावना देवे, पीछे इस चूर्णको आकके पत्तोंसे लपेटकर अंधमूषापुटमें रखकर फूंक देवे । जब सबकी भस्म होजाय तब इसमें इतनी औषध और मिलावे-सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, जीरा, हलदी, चित्रक, इनका चूर्णकर औषधियोंके समान नींबूके रसकी भावना

Aho ! Shrutgyanam

देवे, यह वज्रक्षार श्रीमहादेवजीने कहा है, इसको सब उदरके रोग, गोला, सूजन, शूल इनमें देना चाहिये, मन्दाग्नि और अजीर्णमें दो टंकके अनुमान खावे ॥ १–६ ॥

अर्कपत्रं सलवणं पुटदग्धं सुचूर्णिम् ।
निहन्ति मधुना लीढंप्लीहानं च सुदारुणम् ॥ १ ॥

आकके पत्तोंमें नोन मिलाकर भस्म करे, उस भस्मको शहदके साथ चाटनेसे महाभयानक प्लीहारोग नष्ट होवे ॥ १ ॥

विडलवणादिचूर्ण ।

विडरुचकयवानी जीरके द्वे च पथ्या त्रिकटुकहुतभुग्भ्यां वेतसाम्लाजमोदाः । समविहितरजोभिर्धान्यकं तिन्तडीकं जरयति नगकूटं का कथा भोजनस्य ॥ १ ॥

बिडनोन, अजमायन, दोनों जीरे, हरड, सोंठ, मिरच, पीपल, चित्रक, अमलवेत, अजमोद, धनियां, तिंतडीक इन सबको समान लेवे । यह चूर्ण पत्थरको जीर्ण करदेवे, भोजनकी तो क्या बडी बात है ? ॥ १ ॥

सामुद्रिकचूर्ण ।

सामुद्रसौवर्चलसैन्धवानां क्षारो यवानामजमोदभागम् । हरीतकी पिप्पलिशृंगवेरं हिंगुर्विडंगानि समं च दद्यात् ॥ १ ॥ एतानि चूर्णानि घृतप्लुतानि भुञ्जीत पिण्डान्प्रथमं च पञ्च । अजीर्णवातं गुदगुल्मवातं वातप्रमेहं विषमं च वातम् ॥२॥ विषूचिकां कामलपाण्डुरोगान्कासं च श्वासं हरते प्रवृद्धम् ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

समुद्रनोन, संचरनोन, सैंधानोन, जवाखार, हरड, अजमोद, सोंठ, हींग, वायविडंग इन सबको समान ले इनका चूर्णकर घृत मिलाय भोजनके प्रथम पांच ग्रास लेवे तो अजीर्ण, वादी, गुदाके रोग, वायगोला, वातप्रमेह, विषमवात, हैजा, कामला, पांडुरोग, खांसी और श्वास इन सबका नाश करे ॥ १-३ ॥

हिंग्वष्टकचूर्ण ।

त्रिकटुकमजमोदासैन्धवं जीरके द्वे समचरणधृता-
नामष्टमो हिङ्गुभागः । प्रथमकवलभुक्तं सर्पिषा
चूर्णमेतज्जनयति जठराग्निं वातगुल्मं निहन्ति ॥ १ ॥

सोंठ, मिरच, पीपल, अजमोद, सैंधानोन, सफेदजीरा, कालाजीरा इन सबको बराबर लेकर अष्टमांश, हींग घीमें भूनकर डाले पीछे इस चूर्णको भोजनके प्रथम पांच ग्रासोंमें खाय तो जठराग्निको प्रबल करे और वायगोलाको नष्ट करे ॥ १ ॥

हिंगुपंचक चूर्ण ।

विश्वौषधेन रुचकेन सदाडिमेन स्यादम्लवेतसयुतं
कृतहिंगुभागम् । तद्धिंगुपञ्चकमिदं जठरामयघ्नं
भेडाभिधानमुनिना गदितं मुनीनाम् ॥ १ ॥

सोंठ, संचरनोन, अनारदाना, अमलवेत ये बराबर लेवे, इनमें एक हिस्सा हिंगु मिलावे । यह हिंगुपञ्चक उदरके रोगोंको दूर करे, यह भेडनाम मुनिने कहा है ॥ १ ॥

हिंगुत्रयोविंशति चूर्ण ।

हिंग्वग्निचव्यलवणत्रयवेतमाम्लक्षारद्वयं त्रिकटु-
दाडिमतिंतडीकम् । सग्रंथिकाग्निकसटी हपुषा-
ऽजगंधा पाठाऽभया सुसितजीरकपुष्कराह्वा ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

सोग्रं सधान्यकमिति प्रविधाय चूर्णं भूयः प्लुतं
हि फलपूरफलद्रवेण । उष्णोदकेन परिपीतमिदं
निहन्ति शूलानि गुल्मगुदजान् ग्रहणीरुजश्च ॥ २ ॥

हींग, चीता, सैंधानोन, चव्य, संचरनोन, बिड़नोन, अमलवेत, सज्जीखार, जवाखार, सोंठ, मिरच, पीपल, अनारदाना, तंतडीक, पीपलामूल, अरणा, कचर, हाऊबेर, असगंध, पाढ, हरड, सफेदजीरा, पोहकरमूल, वच, धनियां ये सब बराबर लेवे, सबका चूर्ण कर बिजोरे नींबूकी भावना देवे. पीछे इसको गरम जलके साथ खाय तो वायगोला, शूल, गुदाके रोग और संग्रहणी इन सबको नाश करे ॥ १ ॥ २ ॥

तुम्बरादिचूर्ण ।

तुम्बराणि त्रिलवणं यवानी पुष्कराह्वयम् ।
यवक्षाराभया हिङ्गुविडंगानि समानि च ॥ १ ॥
त्रिवृत्त्रिभागविजया सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।
पिबेदुष्णेन तोयेन यवक्काथेन वा पिबेत् ।
जयेत्सर्वाणि शूलानि गुल्माध्मानोदराणि च ॥ २ ॥

तुंबरु, सैंधानोन, संचरनोन बिडनोन, अजमायन, पोहकरमूल, जवाखार, हरड, हींग, वायविडंग ये समान भाग लेवे, इन सबका तीसरा भाग निसोथ लेवे, सबको पीसकर महीन कर लेवे । गरम जलके साथ पीवे अथवा जवके काढेके साथ पीवे तो सब प्रकारके शूल, गोला, अफरा और उदररोगोंको जीते ॥ १ ॥ २ ॥

अजमोदादिचूर्ण ।

अजमोदा विडङ्गं च सैंधवं देवदारु च ।
चित्रकं पिप्पलीमूलं शतपुष्पा च पिप्पली ।

Aho ! Shrutgyanam

मरिचं चेति कर्षांशं प्रत्येकं कारयेद् बुधः ।
कर्षास्तु पञ्च पथ्याया दश स्युर्वृद्धदारुकाः ॥ २ ॥
नागराच्च दशैव स्युः सर्वानेकत्र चूर्णयेत ।
पिबेत्कोष्णजलेनैतच्चूर्णं शोफविनाशनम् ॥ ३ ॥
आमवातरुजं हन्ति सन्धिपीडां च गृध्रसीम् ।
कटिपृष्ठगुदस्थां च जंघयोश्च रुजं जयेत् ॥ ४ ॥
तूनीप्रतूनीवातांश्च कफवातामयाञ्जयेत् ।
समेन वा गुडेनास्य वटिकाः कारयेद् बुधः ॥ ५ ॥

अजमोदा, वायविडंग, सैंधानोन, देवदारु, चित्रक, पीपलामूल, सौंफ, पीपल, मिरच, इन सबको एक एक कर्ष लेवे और हरड पांच कर्ष लेवे, विधायरा दश कर्ष लेवे, सोंठ दश कर्ष लेवे, सबको एकत्र कर चूर्ण करे और गरम जलके साथ लेवे तो सूजनका नाश करे, आमवात, संधियोंकी पीडा, गृध्रसी रोग तथा कमर, पीठ, गुदा, जंघा इनकी पीडाका नाश करे. तूनी, प्रतूनी, विश्वाची और कफके रोगोंको दूर करे. अथवा इसमें बराबर गुड मिलाकर गोली बना लेवे ॥ १-५॥

उदरविकारमें विजयचूर्ण ।

श्रीदीपोग्राग्निहिंगुद्विविषिमिशिवृकीचव्यतिक्तापटूनि ग्रन्थिक्षारेन्द्रजत्रित्रिकमिति विजयः सोष्णकैरण्डतैलम् । हन्त्यर्शःकासगुल्मग्रहणिकृमिरुजापाण्डुरुग्भूतशूलं श्वासं प्लीहं प्रमेहं ज्वरमरुचिमुदावर्तघर्मामवातान् ॥ १ ॥

अजमोद, वच, चीता, हींग, अतीस, सोया, पाढ, चव्य, कुटकी, पांचों नोंन, पीपलामूल, जवाखार, इन्द्रयव, सोंठ, मिरच, पीपल,

Aho ! Shrutgyanam

त्रिसुगंध इन सबको बराबर २ लेवे, गरम जलसे अंडीका तेल मिला-कर देवे तो यह विजयचूर्ण बवासीर, खांसी, गोला, संग्रहणी, कृमिरोग, पांडुरोग, भयानक शूल, श्वास, तापतिल्ली, प्रमेह, ज्वर, अरुचि, उदावर्त्त, अफरा और आमवात इन सब रोगोंका नाश करे ॥ १ ॥

नारायणचूर्ण ।

द्वौ क्षारौ लवणानि पंच हपुषा धान्याजगन्धा सटी व्योषाजाज्युपकुञ्चिका कृमिजितः कंकुष्ठकुष्ठा-ग्रयः । उग्रा गंधककारवी मिसियुतं योज्यं फलानां त्रयं मूलं पुष्करजं यवान् परिभवेदेतानि तुल्या-न्यथ ॥ १ ॥ त्रिवृद्विशाले द्विगुणाथ दन्तिनी त्रिसंगुणा स्वादथ तिक्तका भवेत् । चतुर्गुणा चूर्ण-मुदाहृतं जनैरिदं हि नारायणमौषधं बुधैः ॥ २ ॥ उष्णोदकेन यवकोलकुलत्थतोयैस्तक्रेण मद्यदधि-मस्तुसुरासवैर्वा । नारायणं प्रपिबतः सकलोदराणि नश्यन्ति विष्णुमिव दैत्यगणा द्विषन्तः ॥ ३ ॥

सज्जीखार, जवाखार, पांचों नोन, हाऊबेर, धनिया, अजमोद, कचूर, सोंठ, मिरच, पीपल, काला जीरा सफेद जीरा, वायविडंग, कंकोल, कूठ, चित्रक, वच, पीपलामूल, सोवाके बीज, त्रिफला, पोहकरमूल, अजमायन इन सब औषधियोंको बराबर लेकर निसोथ, इन्द्रायनकी जड हरएक दूनी लेवे, दंती तिगुनी लेवे, कुटकी चौगुनी लेय सबका चूर्ण कर गरम जलसे अथवा यवके काढेके साथ तथा कुलथीके काढेके साथ अथवा छांछके साथ वा मदिराके साथ वा दहीसे वा दहीके जलसे वा सुरामांसीके आसवसे इस नारायणचूर्णको पीवे

Aho ! Shrutgyanam

तो सम्पूर्ण उदरके विकार ऐसे नष्ट होवें जैसे विष्णुभगवान्‌के सुदर्शन-चक्रसे दैत्योंका नाश हुआ ॥ १-३ ॥

त्रिलवणादिचूर्ण ।

त्रिलवणहपुषाजमोदोग्रगन्धा वचा हिंगु पाठोपकुंचिका सटी जीरका धानिकस्तुंबरी सापि काकावरातुंबरूसर्जिका यावशूकाजटा पुष्करं दाडिमं तिन्तडीकं विडंबानि भार्ङ्गी वरी वेतसाम्लो मरीचं गजकणाऽभया पंचकोलानि कुभाविशाला यवानी सुराह्वा च तत्सर्वमेकत्र चूर्णीकृतं बीजपूरार्द्रकरसेनासकृद्भावितं यः पिबेत्प्रातरुत्थाय चाहारकालेऽथवा मासमात्रं हिताशी नरः प्लुतमशिशिरेण वारिणा जीर्णमद्येन तक्रेण कोलांभसा मस्तुना वा पिबेत् सर्पिषा कोष्णदुग्धेन तत्क्षारनष्टोरनिष्टस्ततः श्वेतवादाडिमं वारसेनात्मवानेभिरेवौषधैः सारितं व्याधिहृद्धृदयगुदकटियकृत्प्लीहगुल्माश्रितं तस्य शूलप्रणाशस्तथा गुल्मविष्टंभदुर्नामहृद्रोगकृच्छ्रोदराध्मानहृल्लासयक्ष्मारुचिश्वासकासान्प्रपचयत्यसकौभवेत्पाचकः प्राश्यमानानि पाषाणचूर्णान्यपि ॥

तीनों नोन, हाऊबेर, अजमोद, असगंध, वच, हींग, पाढ, काला जीरा, कचूर, अजवायन, धनियां, हिंगुपत्री, सोवा, तुंवरू, सज्जी, जवासा, पोहकरमूल, अनारदाना, तिंतडीक, वायविडंग, भारंगी, शतावर, अमलवेत, काली

Aho ! Shrutgyanam

मिरच, गजपीपल, हरड, पंचमूल, (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ,) बेरकी मिंगी, दांतण, इन्द्रायणकी जड, देवदारु य सब औषधि कूट पीस कपडछानकर बिजोरेके रसकी और अदरखके रसकी अनेक भावना देकर रख छोडे । इसमेंसे एक महीना पर्यंत प्रातःकाल नित्य खाय अथवा भोजनके समय खाय और पथ्यसे रहे इसको गरम वा शीतल जलके साथ वा पुराने मद्यके साथ या छाछ वा बेरके पानीसे वा दहीके जलसे, घृत वा गरम दूधके साथ पीवे अथवा चनाखार आदिके साथ सेवन करे वा अनारके रसके साथ सेवन करे तो इतने रोगोंका नाश-करे-हृदय, गुदा, कमर, यकृत् प्लीहा, गोला इनके आश्रित व्याधि, शूल, व्रणरोग, बवासीर, गोला, अफरा, हृदयरोग, उदररोग, और सूखी रहको नाश करे ॥

क्षारामृत ।

क्षारं किंशुकमुष्ककार्जुनधवापामार्गरम्भातिला-
जीवन्तीकनकाह्वया मरजनी कूष्माण्डवल्ली
तथा। वासासूरणकत्रिवृद्दहनकैः प्रज्वाल्य भस्मी-
कृतं तोयेन प्रतिशोध्य निःसृतमयःपानं विधेयं
सकृत् ॥ १ ॥ शूलानाहविबन्धगुल्मकफजान्रो-
गाञ्जयेत्कामलां वायुं विद्रधिशूलपाण्डुग्रहणीशो-
फार्शसं पीनसम् । मन्दाग्निं जठरस्य पीनसगुरु-
प्लीहातिमेदादिकान् पाषाणा उदरे भवन्ति बहुधा
भस्मीभवन्ति क्षणात् ॥ २ ॥

ढाकका खार, मुष्क वृक्ष (वनपलाश) नामसे प्रसिद्ध है, अर्जुन (कोह) इति भाषा), ओंगा, केला, तिल, जीवन्ती (डोडी)

Aho ! Shrutgyanam

धतूरा, हलदी, पेठा, अडूसा, जिमींकंद और निसोथ इन सबकी राखको पानीमें भिगोकर अग्नि पर रख खारकी क्रियासे खार निकाल लेवे आर खारोंको जलमें मिलाकर पीनेसे शूल, पेटका अफरा, बन्धकुष्ठ, गोला, कफके रोग, कमलवायु, विद्रधि हृदयका शूल, पांडु, संग्रहणी, सूजन, बवासीर, पीनस, मन्दाग्नि, पेटके रोग, प्रमेह, पथरी इत्यादि रोगोंका नाश करता है ॥ १ ॥ २ ॥

अमलवेतसचूर्ण ।

कत्यम्लवेतसफलानि विदारितानि सिंध्वादिपंचलवणेन सुपूरितानि । हिंग्वादिजेन पटुभास्करजेन चाथ तालीसपुष्पजनितेन विभाव्य युक्त्या ॥ १ ॥ संशोष्य तीव्रकिरणै रवितप्ततापैः सिद्धानि तत्सकलमेव सुभक्षितं च । गुल्मेऽरुचौ यकृति दुष्पवनाग्निमांद्ये प्लीहामयेषु जठरेषु गुदोद्भवेषु ॥२॥

कितनेक फल अमलवेतके लेकर चीर २ कर उनके भीतर पांचोंनिमक अथवा लवणभास्कर चूर्ण भरदेवे, वा हिंग्वष्टक भरदेवे वा तालीसादि भरदे, फिर उन फलोंको धूपमें सुखावे जब सूखजायँ तब उसमेंसे एक टंक खाय तौ गुल्म, अरुचि. प्लीहा, दुष्टवात, मन्दाग्नि, तापतिल्ली और उदर तथा गुदाके सम्पूर्ण रोगोंका नाश करता है॥१-२॥

अतीसारे—लघुगंगाधरचूर्ण ।

अजमोदा मोचरसं सशृंगवेरं च धातकीकुसुमम् । गोमथिततक्रपीतं गङ्गामपि वेगवाहिनीं रुन्ध्यात् ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अजमोद, मोचरस, सोंठ और धायके फूलके चूर्णको गायके मट्ठेके साथ पीवे तो गंगाके समान वेगवाला अतीसार भी नाश होय ॥ १ ॥

अतीसारे-वृद्धगंगाधरचूर्ण ।

अरलुकघनशुण्ठी धातकी बिल्वलोध्रं कुटजपल-समेतं मोचनिर्यासयुक्तम् । अतिविषजलपाठा साहकारं च बीजं मसृणमविमिश्रं तण्डुलाम्बुप्र-पीतम् ॥ १ ॥ कफोद्भवं मारुतपित्तसंभवं जये-दतीसारपुराणमामजम् । प्रसिद्धगंगाधरनामचूर्णं तथा हि रोगे ग्रहणीगदे च ॥ २ ॥

अरलूकी छाल, मोथा, सोंठ, धायके फूल, बेलगिरी, लोध, कुडाकी छाल, इंद्रयव, मोचरस, अतीस, सुगंधवाला, पाठा, आमकी गुठली इनको शहदमें मिलाकर सांठी चावलोंके साथ खाय तो कफ, वात पित्तसे जो बहुत दिनका अतीसार, आमसंग्रहणी आदि रोगोंको जीते । यह चूर्ण वृद्धगंगाधर नामसे प्रसिद्ध है ॥ १ ॥ २ ॥

कपित्थाष्टकचूर्ण ।

अष्टौ भागाः कपित्थस्य षड्भागा शर्करा मता ।
दाडिमं तिन्तडीकं चश्रीफलं धातकी तथा ॥ १ ॥
अजमोदा च पिप्पल्याः प्रत्येकं स्युस्त्रिभागकम् ।
मरिचं जीरकं धान्यं ग्रन्थिकं बालकं तथा ॥ २ ॥
सौवर्चलं यवानी च चातुर्जातं सचित्रकम् ।
नागरं चैकभागाः स्युः प्रत्येकं सूक्ष्मचूर्णिताः ॥ ३ ॥
कपित्थाष्टकसंज्ञं स्याच्चूर्णमेतज्जलामयान् ।
निहन्ति ग्रहणीरोगानतीसारं व्यपोहति ॥ ४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

आठ भाग कैथ और छः भाग मिश्री, अनारदाना, तन्तडीक, बेलगिरी, धायके फूल, अजमोद, पीपल ये प्रत्येक तीन तीन भाग लेवे, सुगंधवाला, कालानोन, अजमायन, चातुर्जात, चीता, सोंठ इन सब औषधियोंको दो दो भाग ल सूक्ष्म चूर्ण कर मिश्री मिलावे । यह चूर्ण दुष्ट जलके रोग, संग्रहणी और अतीसारको दूर करता है ॥ १-४ ॥

यवान्यादिचूर्ण ।

यवानीपिप्पलीमूलचातुर्जातकनागरैः ।
मरिचेन्द्रयवाजाजीधान्यसौवर्चलैः समैः ॥ १ ॥
वृक्षाम्लधातकीकृष्णाबिल्वदाडिमदीपकैः ।
त्रिगुणैः षड्गुणैः सिद्धैः कपित्थोऽष्टगुणः स्मृतः ॥२॥
चूर्णमतीसारग्रहीक्षयगुल्मगलामयान् ।
कासश्वासाग्निमन्दार्शः पीनसारोचकाञ्जयेत् ॥ ३ ॥

अजमायन, पीपलामूल, चातुर्जात, सोंठ, मिरच, इन्द्रजव, जीरा, धनिया कालानोन य सब समान लेवे । अमलवेत, धायके फूल, पीपल, बेल, अनारदाना, अजमोद ये सब हरएक तिगुनी लय और मिश्री छः गुनी लेवे, कैथके आठ भाग लेवे । यह चूर्ण अतीसार, ग्रहणी, क्षय, गुल्म, गोलेके रोग, खांसी, श्वास, मन्दाग्नि, अर्श, पीनस, अरुचि आदिको दूर करता है ॥ १-३ ॥

दाडिमाष्टकचूर्ण ।

दाडिमस्य पलान्यष्टौ शर्करायाः पलाष्टकम् ।
पिप्पली पिप्पलीमूलं यवानी मरिचं तथा ॥ १ ॥
धान्यकं जीरकं शुण्ठी प्रत्येकं पलसम्मितम् ।
कर्षमात्रा तुगाक्षीरी त्वक्पत्रैलाश्च केशरम् ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

प्रत्येकं कोलमात्रं स्यात्तच्चूर्णं दाडिमाष्टकम् ।
अतीसारं क्षयं गुल्मं ग्रहणीं च गलग्रहम् ।
मन्दाग्निं पीनसं कासं चूर्णमेतद्व्यपोहति ॥ ३ ॥

अनारदाना ८ पल, मिश्री ८ पल, पीपल, पीपलामूल, अजमायन, मिरच, धनियां, जीरा, सोंठ, ये सब एक एक पल लेवे, वंशलोचन ४ टंक, तज, तेजपात, दालचीनी, इलायची, नागकेशर इन औषधियोंको दो दो टंक लेवे, यह दाडिमाष्टक चूर्ण अतीसार, क्षयी, गोला, संग्रहणी, गलरोग, मन्दाग्नि, पीनस, खांसी आदि रोगोंका नाश करे ॥ १-३ ॥

उदरकृमिरोगमें वचादिचूर्ण ।

वचाऽजमोदा कृमिहृत्पलाशबीजं सटी रामठकं त्रिवृच्च । जलेन तप्तेन तु पेष्यपेयं पतन्ति शीघ्रं कृमयः समूलाः ॥ १ ॥

वच, अजमोद, वायविडंग, ढाकके बीज, सोंठ, कचूर, हींग, निसोथ इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीवे तो सब कृमि गिरपडें ॥ १ ॥

कपिल्लकं विडङ्गानि क्षारं सैन्धवमेव च ।
पिष्ट्वा तक्रेण पातव्यं नित्यं कृमिविनाशनम् ॥ १ ॥

कबीला, वायविडंग, जवाखार, सैंधानोन इनको पीसकर मठेके संग पीवे तो कृमि नाश होवें ॥ १ ॥

कोलमज्जा कणा वह्निपक्षभस्म सशर्करम् ।
मधुना लेहयेच्छर्दिहिक्काकोपस्य शांतये ॥ १ ॥

बेरकी मिंगी, पीपल, चीता, मोरपंखकी राख, मिश्री शहदके साथ लेवे तो छर्दि, हिचकी ये सब दूर होवें ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

लाजाकपित्थमधुमागधिकोषणानां क्षुद्राभयात्रि-
कटुधान्यकजीरकाणाम् । पथ्यामृतामरिचमाक्षि
कपिप्पलीनां लेहास्त्रयःसकलवम्यरुचिप्रशान्त्यै ॥२॥

पहिला—धानकी खील, कैथ, मुलहठी, पीपल, मिरच, दूसरा कटेरी, हरड, त्रिकटु, धनियां जीरा इनका अवलेह और तीसरा—हरड़, गिलोय, मिरच, शहद, पीपल इनका अवलेह सब अरुचि और छर्दिका नाश करता है ॥ २ ॥

कोलामलकमज्जानौ मक्षिकाविट् सिता मधु ।
सकृष्णातण्डुलो लेहः श्रेष्ठश्छर्दिनिवारणः ॥ ३ ॥

बेरकी मिंगी, आंवलेकी मिंगी, मक्खीकी बीट, मिश्री, शहद, पीपल इनको सांठी चावलोंके पानीके साथ लेवे तो सब प्रकारकी छर्दि जाय ॥ ३ ॥

दन्तपीडामें जातीपत्रादिचूर्ण ।

जातीपत्रपुनर्नवागजकणाकोरण्टकुष्ठावचा-
शुण्ठी दिव्यशतावरी समघृतं चूर्णं मुखे धार्यते ।
वातघ्नं कफनाशनं कृमिहरं दुर्गंधिनिर्णाशनं
वक्रस्यापि समस्तदोषहननं दन्तश्च वज्रायते ॥ १ ॥

जावित्री, सांठकी जड, गजपीपल, कोरटंक वृक्षके फूल, कूठ, वच, सोंठ लौंग, शतावर इन सबको बराबर लेवे और सबके समान घी लेकर मुखमें रखनेसे वायुविकार, कफ, कृमि तथा मुँहकी दुर्गंध जाय और दाँत वज्रके समान होजावें ॥ १ ॥

कुष्ठं दार्वी लोध्रमब्दं समङ्गा पाठा का तेजनी
पीतका च । एतच्चूर्णं घर्षणं तद्द्विजानां रक्तस्रावं

Aho ! Shrutgyanam

हन्ति कण्डूरुजं च ॥ २ ॥ फलान्यम्लानि शी-
ताम्बु रूक्षान्नं दन्तधावनम् । तथाऽतिकठिनान्भ-
क्ष्यान्दन्तरोगीविवर्जयेत् ॥ ३ ॥

कूठ, दारुहलदी, लोध, मोथा, मँजीठ, पाढ, कुटकी, मूर्वा (एक लता होती है), हलदी इन सब औषधियोंका चूर्ण कर दातोंमें मले तो रुधिर गिरना, खुजली, दरद आदिको दूर करे और खट्टा फल तथा खटाई न खावे, ठंढा पानी न पीवे, रूखा अन्न दन्तधावन, अति- कठिन भोजन इन सबको दंतरोगी छोडदेवे ॥ २-३ ॥

दन्तमसी ।

कासीसं त्रिफला माजूफलं जुङ्गी हरीतकी । कर्पूरं
खदिरं ताप्यं लोहचूर्णं च विद्रुमम् ॥ १ ॥ दाडिमं
त्वक्च मंजिष्ठा लोध्रं तुत्थं सुराष्ट्रजा । मस्तंगी
विदलं पूगं सर्वं सूक्ष्मविचूर्णितम् । दन्तशूलहरं
चाम्लं दन्तकृष्णीकरं तथा ॥ २ ॥

कसीस, त्रिफला, माजूफल, जंगीहरड, कपूर, खैरसार, सोना मक्खी, लोहचूर्ण, मूंगा, अनारका छिलका, मँजीठ, लोध, नीलाथोथा, फिटकरी, मस्तंगी, विदल, सुपारी, इन सबको बराबर लेकर पीस ले । यह दाँतोंका दरद दूर करे तथा दाँतोंको स्याह करे, यह खट्टा है ॥ १ ॥ २ ॥

कायाकल्पमें भृंगराजचूर्ण ।

समूलं भृंगराजं चं छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
तत्समं त्रिफलाचूर्णं सर्वतुल्या सिता भवेत् ॥ १ ॥
पलैकं भक्षयेच्चैतदपमृत्युज्वरापहम् ॥ २ ॥

भांगरा पचांगको छायामें सुखावे उसकी बराबर त्रिफला और

Aho ! Shrutgyanam

सबके समान मिश्री डाले. इस चूर्णको एक पल लेवे तो अपमृत्यु और ज्वरका नाश करे ॥ १–२ ॥

सूक्ष्मीकृतं भृङ्गनृपस्य चूर्णैः कृष्णैस्तिलैरामलकैश्च सार्द्धम् । सितायुतं भक्षयतां नराणां न व्याधयो नैव जरा न मृत्युः ॥ ३ ॥

भांगरेके पचांगको महीन पीसकर काले तिल, आंवले बराबर लेवे और फिर इनके बराबर मिश्री डाले इस चूर्णको जो कोई खावे इसको व्याधि, बुढापा, पलित और अपमृत्यु न सतावे ॥ ३ ॥

आमलकादिचूर्ण ।

आमलं चित्रिकं पथ्या पिप्पली सैन्धवं तथा । भेदी रुचिकरः श्लेष्मजेता पाचनदीपनः ॥ १ ॥

आंवला, चीता, हरड, पीपल, सैंधानोन इनका चर्ण भेदी, रुचि कारक, तथा श्लेष्मविकारको दूर करे और अग्निको दीपन करता है ॥ १ ॥

स्तम्भनचूर्ण ।

अकारकरभः शुंठी कंकोलं कुङ्कुमंकणा । जातीफलं लवङ्गं च चन्दनं चेति कर्षकान् ॥ १ ॥ चूर्णानि मानतः कुर्यादहिफेनपलोन्मितान् । सर्वमेकीकृतं चूर्णमाषैकं मधुना लिहेत् ॥ २ ॥ शुक्रस्तम्भकरं चूर्णं पुंसामानन्दकारकम् । नारीणां प्रीतिजननं सेवेत निशि कामुकः ॥ ३ ॥

अकरकरा, सोंठ, कंकोल, मिरच, केशर, पीपल, जायफल, लौंग, चन्दन, इन सबको चार चार टंक लेवे, सबसे आधी अफीम १६ टंक सबका चूर्ण कर शहदके साथ एक मासा नित्य चाटे तो वीर्यको स्तंभन करे, पुरुषको अति आनन्द

Aho ! Shrutgyanam

करे, स्त्रियोंको परमप्रीति होवे, यह चूर्ण कामी पुरुषको रात्रिसमय खाना चाहिये ॥ १-३ ॥

बुद्धिवृद्धिके लिये सारस्वतादिचूर्ण ।

कुष्ठाश्वगन्धे लवणाजमोदे द्वे जीरके त्रीणि कटूनि पाठा । मांगल्यपुष्पा च समानचूर्णं कृत्वा च चूर्णेन वचोद्भवेन ॥ १ ॥ तुल्येन युक्तं बहुशो रसेन तद्भावितं ब्रह्मविनिर्मितायाः । सर्पिर्मधुभ्यां च ततोऽक्षमात्रं लिह्याद्दिनात्सप्तगुणांश्च सप्त ॥२॥ सारस्वतमिदं चूर्णं ब्रह्मणा निर्मितं स्वयम् । जगद्धिताय लोकानां दुर्मेधानामचेतसाम् ॥ ३ ॥

कूठ, असगंध, सेंधानोन, अजमोद, दोनों जीर, सोंठ और सबकी बराबर वच लेवे. मिरच, पीपल, पाढ, शंखाहूली इनकी समान मात्रा लेवे. इनको चूर्ण कर ब्राह्मीके रसकी भावना देवे, यह ब्रह्माने अपनी बुद्धिसे रचा है. घृत अथवा शहद ४ टंक ले, ४९ दिन खावे तो यह चूर्ण मूर्खकी बुद्धिको बढावे ॥ १-३ ॥

गुडूच्यपामार्गविडङ्गशङ्खिनी ब्राह्मी वचा शुण्ठिशतावरी च । घृतेन लीढा प्रकरोति मनवांस्त्रिभिर्दिनैर्ग्रन्थसहस्रधारिणः ॥ ४ ॥ ब्राह्मी मुण्डी पिप्पली नागराजं कुष्ठं सर्पिः श्वेतवर्णा वचा वा । मौढ्यार्त्तानामक्षमात्रं ददीत प्रज्ञा मेधा वर्द्धते मासयुग्मात् ॥५॥ ज्योतिष्मत्यास्तैलमेकं पिबेच्च गुञ्जावृद्ध्या कर्षमात्रंतु यावत् । सौरे पर्वण्यम्बुमध्ये प्रविष्टः प्रज्ञामूर्तिर्जायतेऽसौ कवीन्द्रः ॥ ६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

गिलोय, ओंगा, वायविडंग, शंखाहुली, ब्राह्मी, वच, सोंठ, शतावरी ये सब बराबर लेवे और चूर्ण कर घृतके संग अवलेह कर सेवन करे तो तीन दिनमें हजार श्लोककी धारणा होवे, मालकांगनीके तेलको सूर्यपर्वके समय जलमें पीवे तो पंडित होवे ॥ ४–६ ॥

त्रिकटुत्रिफलाधान्य यवानी शतमूलिका । वचा भार्ङ्गी तथा ब्राह्मीचूर्णं समधु लेहयेत ॥ ७ ॥
वाक्प्रदायि च बालानां वीणावाद्यसमस्वरम् । तैलं तीक्ष्णं रूक्षमम्लं वातलं च विवर्जयेत् ॥ ८ ॥
ज्योतिष्मत्यास्तैलमत्राभिमन्त्र्य वाग्वादिन्या मंत्र-बीजं त्रिकं तु । जिह्वायां वै लिख्यते यस्य जन्तोर्वै लेखन्या जायतेऽसौ कवीशः ॥ ९ ॥

नागपुरीययतिगणश्रीहर्षकीर्तिसंकलिते ।
वैद्यकसारोद्धारे चूर्णाधिकृतिर्द्वितीयेयम् ॥ २ ॥

सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, धनियां, अजमायन, शतावरी, वच, ब्राह्मी, भारंगी इन सबको बराबर लेवे और शहदके साथ सेवन करे तो बालकभी बोलनेमें चतुर होय, वीणाकासा शब्द बोले । इन चीजोंसे परहेज करे–तैल, चरपरा, रूखा, खट्टा, वातल । ब्राह्मी, गोरखमुंडी, पीपर, नागेश्वर, कूठ, मक्खन और सपेद वच ये औषध मूर्खोंको १ तोला देनेसे कवीन्द्र करता है अथवा मालकांगनीके तेलको सरस्वतीके मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर बालककी जीभपर सरस्वती बीजको लिखे तो कविराज होय ॥ ७-९ ॥

इति श्रीमाथुरदत्तराम चौबेकृतमाथुरीमञ्जूषाभाषा-
टीकायां चूर्णाधिकारो द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ गुटिकाधिकारः-तृतीयोऽध्यायः ३.

रुचिकर अमृतप्रभा नाम गुटिका १-२ ।

मरिचं पिप्पलीमूलं लवङ्गं च हरीतकी । यवानी तिन्तडीकं च दाडिमं लवणत्रयम् ॥ १ ॥ एतानि पलमात्राणि मागधी क्षारचित्रकम् । ब्यजाजी नागरं धान्यमेला धात्रीफलं समम् ॥ २ ॥ एतान्द्विपलिकान्भागान्भावयेद्बीजपूरकैः । भावनात्रितयं दत्त्वा गुटिकां कारयेद् बुधः ॥ ३ ॥ छायाशुष्कां प्रकुर्वीत ह्यजीर्णस्य प्रशान्तये । अग्निं च कुरुते घोरं गुटिका चामृतप्रभा ॥ ४ ॥

१-मिरच, पीपलामूल, लौंग, हरड, अजवायन, तंतडीक, अनारदाना, सेंधानोन, कालानोन, कचनोन ये सब औषधि एक एक पल लेवे. पीपल, जवाखार, चीता, दोनों जीरे, सोंठ, धानियां, इलायची, आंवला, ये सब औषधि एक एक पल लेवे फिर बिजौरेके रसमें घोटकर तीन पुट दे, गोली बनाकर छायामें सुखावे । यह अजीर्णको दूर करे, अग्निदीपन करे और ये गोली अमृतके तुल्य हैं ॥ १-४ ॥

आकल्लकं सैन्धववह्निशुण्ठीधात्र्यूषणं दिव्यसमा सपथ्या । रसेन भाव्यं फलपूरकेण मन्दानिलत्वे ह्यमृतप्रभेयम् ॥ ५ ॥ कासे गलामये श्वासे प्रतिश्याये च पीनसे । अपस्मारे तथोन्मादे सन्निपाते सदा हिता ॥ ६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

२-अकरकरा, सैंधानोन, चीता, सोंठ, आंवला, मिरच, लौंग और हरड इनको बिजौरेके रसकी भावना देकर गोली बनावे । मन्दाग्निवालेको यह अमृत समान है, इससे खांसी, गलरोग, श्वास, पीनस आदि रोग दूर होवें. अपस्मार, उन्माद, सन्निपातवालोंको भी हितकारी है ॥ ५ ॥ ६ ॥

वटप्ररोहादिगुटिका ।

वटप्ररोहं मधु कुष्ठमुत्पलं सलाजचूर्णैर्गुटिकां प्रकल्पयेत् । सशर्करा सा वदने च धारिता तृषां प्रवृद्धामपि हन्ति सत्वरम् ॥ १ ॥

वडकी जटा, शहद, कूठ, कमलगट्टा, धानकी खील इनकी गोली बनाकर मिश्रीके साथ मुँहमें राखे तो प्यास बंद होवे ॥ १ ॥

राजगुटिका १-२ ।

शुण्ठ्याः पलं पलार्द्धं च गन्धकं सैन्धवं तथा ।
निम्बूकरससंबद्धाहन्त्यजीर्णं विषूचिकाम् ॥ १ ॥

१-सोंठ एक पल, गन्धक, सैंधानोन आधा पल, इनको नीम्बूके रसमें मिलाय छोटे बेरके समान गोली बना लेवे तो अजीर्ण और विषूचिकाको दूर करे ॥ १ ॥

नागरं च चतुर्भागं तदर्द्धं सैन्धवं तथा । गन्धकं भागमेकं च काप्थ्या गन्धकं समम् ॥ २ ॥
निम्बूरसस्य सप्ताहं पुटं दद्याद्विशारदः ।
विषूचिकाजीर्णशूलं मन्दाग्निं वमनं हरेत् ॥ ३ ॥
एषा राजवटी नाम कोलमात्रं तु भयक्षेत ॥ ४ ॥

२-साठ ४ टंक, सैंधानोन २ टंक, हरड १ टंक, गन्धक १ टंक इनकी नीम्बूके रसमें छोटे बेरके समान गोली बनावे

Aho ! Shrutgyanam

और खाय तो विषूचिका, अजीर्ण, मन्दाग्नि और वमन इन सबका नाश करे ॥ २-४ ॥

उन्मीलनीगुटिका ।

उन्मीलनी बुद्धिबलेन्द्रियाणां निर्मूलनी वातकफार्दितानाम् । संशोधिनी मूत्रपुरीषयोश्च हरीतकी शुण्ठिगुडप्रयुक्ता ॥ १ ॥

हरड, सोंठसे गुडकी गोली बुद्धि बढावे, मनुष्यकी इद्रियोंको चैतन्य करे, वात कफादिक रोगोंको निर्मूल करे, मलमूत्रको शुद्ध करती है ॥ १ ॥

गुडचतुष्टयवटिका ।

आमेषु सगुडां शुण्ठीमजीर्णे गुडपिप्पलीम् ।
कृच्छ्रे जीरगुडं दद्यादर्शोघ्नं गुडदाडिमम् ॥ १ ॥

आमरोगमें सोंठ गुड, अजीर्णमें गुड पीपल, मूत्रकृच्छ्ररोगमें जीरा गुड और बवासीर रोगमें अनारदाना गुडसंयुक्त देना चाहिये ॥ १ ॥

गुडविश्वौषधं पथ्यामागधीदाडिमैः कृता ।
वटिर्हन्याद् भक्ष्यमाणा गुल्मार्शोवह्निजान् गदान् १॥

गुड, सोंठ, हरड. पीपल, अनारदाना इनकी गोलीको खावे तो गुल्म आदि रोगोंका नाश करे और अग्निको दीपन करता है ॥ १ ॥

सूरणादिवटिका ।

चूर्णीकृताः षोडश सूरणस्य भागास्तदर्द्धेन च चित्रकस्य । महौषधी द्वौ मरिचस्य चैको गुडेन दुर्नामजयाय पिंडी ॥ १ ॥ मरिचमहौषधिचित्रक

Aho ! Shrutgyanam

सूरणभागा यथोत्तरं द्विगुणाः । सर्वसमो गुडभागो वटिका दुर्नामनाशाय॥२॥वृद्धदारुकभल्लातशुण्ठी चूर्णेन योजितः । मोदकः सगुडो हन्यात्षड्विधा-र्शस्कृतां रुजम् ॥ ३ ॥

जिमीकन्दका चूर्ण १६ पल, चित्रक ८ पल, सोंठ २ पल, मिरच १ पल इनकी गोली गुडमें बनावे तो अर्शको दूर करे मिरच चार टंक, सोंठ ८ टंक, चीता १६ टंक, जिमींकंद ३२ टंक, गुड सबके बराबर लेवे और गोली बनाकर खाय तो अर्शरोगको दूर करे । विधायरा, शुद्ध भिलावा और सोंठ इनका चूर्ण गुड मिलाय गोली बनाकर खावे तो छः प्रकारके अर्शरोगोंका नाश करे ॥ १-३ ॥

सनागरापुष्करवृद्धदारुकं गुडेन यो मोदकमत्त्यु-दारकम् । अशेषदुर्नामकरोगदारकं करोति वृद्धं सहसैव दारकम् ॥ ४ ॥

सोंठ, पुहकरमूल, विधायरा इनकी भले प्रकार गुडमें गोली बनाकर खावे तो सम्पूर्ण प्रकारके अर्शोंका नाश करे और बल बुद्धिको बढावे ॥ ४ ॥

कांकायनीगुटिका ।

पथ्या पञ्चपलान्येकमजाजिमरिचस्य च । पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरैः ॥ १ ॥ पलाभि-वृद्धैः क्रमशो यवक्षारं पलद्वयम् । भल्लातकपला-न्यष्टौ सूरणो द्विगुणोमतः ॥ २ ॥ द्विगुणेन गुडेनैषा वटिका चाक्षसंमिता । एकैकां भक्षयेत्प्रातस्तक्र-मम्लं पिबेदनु ॥ ३ ॥ वह्निं संदीपयत्याशु ग्रहणी

Aho ! Shrutgyanam

पाण्डुरोगजित् । कांकायनेन शिष्येभ्यः शस्त्र-
क्षाराग्निभिर्विना ॥ ४ ॥ कथिता गुटिका चैषा
गुदजानां विनाशिका ॥ ५ ॥

हरड ५ पल, जीरा १ पल, मिरच १ पल, पीपल १ पल, पिपलामूल १ पल, चव्य ४ पल, चित्रक ५ पल, सोंठ ६ पल ये सब औषधि पलपल क्रमसे और जवाखार २ पल, शुद्ध भिलावा ८ पल, जिमींकंद सबसे दूना और गुड मिलाके छोटे बेरके समान गोली बनावे और प्रातःकाल छाछके साथ लेवे तो अग्निको दीप्त करे, संग्रहणी और पाण्डुरोगका नाश करे, यह कांकायनकविने अपने शिष्योंसे कहा है और संपूर्ण गुदाके रोगोंका नाशक है ॥ १ ॥ ५ ॥

अभयादिमोदक ।

अभया पिप्पलीमूलं मरिचं नागरं तथा । त्वक्पत्रं
पिप्पली मुस्तं विडङ्गामलकानि च ॥ १ ॥ कर्षं
प्रत्येकमेषां तु दंत्याः कर्षत्रयं तथा । षट्कर्षाश्च
सितायास्तु द्विपला त्रिवृता भवेत् ॥ २ ॥ सर्वं
संचूर्णितं कृत्वा मधुना मोदकः कृताः । खादेत्
प्रतिदिनं चैकं शीतं चानु पिबेज्जलम् ॥ ३ ॥
तावद्विरिच्यते जन्तुर्यावदुष्णं न सेवयेत् । पाण्डुरोगं
विषं कार्श्यं जंघायाश्च रुजस्तथा ॥ ४ ॥ शिरोर्ति
मूत्रकृच्छ्रं च दुर्नामकभगन्दरौ । अश्मरीमेहकुष्ठं
च दाहशोफोदराणि च ॥ ५ ॥

हरड, पीपलामूल, मिरच, सोंठ, तज, तेजपात, पीपल, मोथा, वायविडंग, आमला इन सबको चार चार टंक लेवे और दन्ती १२

Aho ! Shrutgyanam

टंक (दन्ती वह है जिसका फल जमालगोटा होता है), मिश्री २४ टंक, निसोथ ३२ टंक इनका चूर्ण कर शहदमें गोली बनावे और एक गोली नित्य ठंढे पानीके साथ खाय तो जबतक गरम जल न पीवे तबतक दस्त होय और पाण्डुरोग, विषरोग, कृशता और जंघाके सब रोग, मस्तकरोग, मूत्रकृच्छ्र, अर्श, भगंदर, पथरी, मेह, कोढ, दाह, सूजन, उदररोगादिकोंको दूर करता है ॥ १–९ ॥

अजमोदादिगुटिका या चूण १-२ ।

अजमोदा मरिचकणा विडंगसुरदारुचित्रकशताह्वा। सैंधवपिप्पलिमूलं भागौ नवकस्य पलिकः स्यात् ॥ १ ॥ शुण्ठी दशपलिका स्यात्पलानि तावंति वृद्धदारोश्च । दंत्याः पलानि पंच च सर्वाण्येकत्र कारयेच्चूर्णम् ॥ २ ॥ समगुडवटिका अदतश्चूर्णं वा कोष्णवारिणा पिबतः । नश्यंत्यनिलोद्भूताः सर्वे रोगास्तथा वाताः ॥ ३ ॥

१–अजमोद, मिरच, पीपल, वायविडंग, देवदारु, चित्रक, सोवा, सैंधानोन, पीपलामूल ये सब नौ पल और सोंठ १० पल, विदारी कन्द १० पल, दन्ती ५ पल, हरड५पल इन सब औषधियोंके बराबर गुड मिलावे अथवा चर्णकोही गरम जलके साथ पीवे तो संपूर्ण वातरोगोंका नाश करता है ॥ १–३ ॥

हिंगुभागो भवेदेको वचा च द्विगुणा भवेत् ।
त्रयो भागा विडंगानां सैन्धवं च चतुर्गुणम् ॥ १ ॥
अजाजी पंचभागा च षड्भागं नागरं तथा ।
मरिचं सप्तभागं च पिप्पल्यष्टगुणा भवेत् ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

कुष्ठस्य नव भागाः स्युर्दशभागा हरीतकी।
एकादश चित्रकस्य अजमोदा च द्वादश ॥ ३ ॥
गुडश्च सर्वद्विगुणो गुटिकां कारयेद्दृढाम्।
हन्यादनेकवातांश्च हर्षं चैव चतुर्दश ॥ ४ ॥
अष्टादशैव गुल्मानि प्रमेहान्विंशतिं तथा।
हृद्रोगकुष्ठशूलानि वातगुल्मं गलग्रहम् ॥ ५ ॥
श्वासं च ग्रहणीं पाण्डुमग्निमांद्यारुची तथा।
धन्वंतरिकृतो योगो निजपुत्रस्य हेतवे ॥ ६ ॥

२-हिंग १ भाग, वच २ भाग, सैंधानोन ४ भाग, जीरा ५ भाग, सोंठ ६ भाग, मिरच ७ भाग, पीपल ८ भाग, कूठ ९ भाग, हरड १० भाग, चीता ११ भाग, अजमोद १२ भाग, इन सबसे दूने गुडमें गोली ७ टंक प्रमाणकी बनावे। यह अनेक वायुरोग, १४ प्रकारका हर्ष, १८ प्रकारका गुल्म, २० प्रकारका प्रमेह, हृदय-रोग, कुष्ठ, शूल, वायगोला, गलग्रह, श्वास, संग्रहणी, पांडुरोग, अग्निमांद्य और अरुचि इन रोगोंको दूर करे। यह योग धन्वंतरिने अपने पुत्रके लिये कहा है ॥ १-६ ॥

उदरविकारमें एलादिवटिका।

एलीयकं कणा पथ्या शुण्ठी चित्रकटंकणम्।
राजिका सर्जिका सौरो विडंगाजाजिसैन्धवम् ॥
गुडेन गुटिका कार्या यकृत्प्लीहविनाशिनी ॥ १ ॥

इलायची पीपल, हरड, सोंठ, चित्रक, सुहागा, राई, सज्जी, शोरा, वायविडंग, जीरा, सेंधानोन इनको बराबर लेवे और गुडके साथ गोली बनावे तो यकृत प्लीहादि रोगोंको दूर करे ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पाण्डुरोगमें नवरसादिगुटिका ।

चित्रकं त्रिफला मुस्तं विडंगं त्र्यूषणानि च ।
समभागानि कार्याणि सर्वतुल्यमयोरजः ॥ १ ॥
मधुसर्पिर्युतं लेह्यं गुडेन गुटिकाथवा ।
गोमूत्रमथवा तक्रमनुपाने प्रशस्यते ॥ २ ॥
पाण्डुरोगं जयेदुग्रं हृद्रोगं च भगन्दरम् ।
शोफकुष्ठोदरार्शांसि मन्दाग्निमरुचिं कृमीन् ॥ ३ ॥

चित्रक, त्रिफला, मोथा, वायविडंग, सोंठ, मिरच, पीपल सब बराबर और सबके बराबर लोहसार शहद और घास खाय अथवा गुडमें गोली बनावे और गोमूत्र वा छाछके संग लेवे तो पांडुरोग, हृदयरोग, भगंदर, सूजन, कोढ, उदररोग, अर्श, मंदाग्नि, अरुचि, क्रिमि आदि रोगोंको नाश करे ॥ १-३ ॥

वृद्धिनवरसगुटिका ।

विडङ्गं त्रिफला व्योषं चातुर्जातकचित्रकम् ।
स्वर्णमाक्षी तवाक्षीरं जीमूतं वंशलोचनम् ॥ १ ॥
क्वाथसंपक्वलोहं च शर्करापि समन्विता ।
गुटिकां मधुसंयुक्तां प्रातरेकां तु भक्षयेत् ॥ २ ॥
प्रमेहशोफारुचिमामवातं सकामलं पाण्डुगदं सकुष्ठम् । श्वासं च कासं च निहन्ति गुल्मं दुर्नामकं नाशयते च सद्यः ॥ ३ ॥

वायविडंग, त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल, तज, तेजपात, इलायची, नागकेशर, चीता, सोनामक्खी, तवाखीर, मोथा, वंशलोचन, सार, मंडूर ये सब बराबर, मिश्री सबके बराबर

Aho ! Shrutgyanam

लेकर शहदमें गोली बनावे और प्रातःकाल खावे तो प्रमेह, शूल, अरुचि, आमवात, पीलिया, पांडुरोग, कोढ, श्वास, खांसी, गोला और अर्श आदिको नाश करे ॥ १–३ ॥

प्रमेहमें चन्द्रकलागुटिका ।

एला सुकर्पूरसुधासधात्री जातीफलं गोक्षुरशा-
ल्मली च । सूतेन्द्रवंगायसभस्म सर्वमेतत्समानं
परिमर्दयेच्च ॥ १ ॥ गुडूचिका शाल्मलिका कषा-
यपिष्टं समाना मधुना ततश्च । बद्धा गुटी चन्द्र-
कलेति संज्ञा मेहेषु सर्वेषु नियोजनीया ॥ २ ॥

इलायची, कपूर, मिश्री, आंवला, जायफल, गोखरू, सेमलका गोंद, पारा, इंद्रयव, बंगसार इसकी समान मात्रा लेकर एक प्रहर मर्दन करे फिर गिलोय और सेमलके गोंदके काढेमें घोटे और शहदमें गोली बनावे. यह चन्द्रकला गुटिका संपूर्ण प्रमेहोंको दूर करती है ॥ १ ॥ २ ॥

पीनसादिमें व्योषादिगुटी ।

व्योषाम्लवेतसं चव्यं तालीसं चित्रकं तथा ।
जीरकं तिन्तडीकं च प्रत्येकं कर्षभागकम् ॥ १ ॥
त्रिसुगंधं त्रिभागं स्याद्गुडः स्यात् कर्षविंशतिः ।
व्योषादिवटिका नाम पीनस श्वासकासजित् ॥२॥
रुचिस्वरकरी ख्याता प्रतिश्यायप्रणाशिनी ॥ ३ ॥

सोंठ, मिरच, पीपल, अमलवेत, चव्य, तालीस, चित्रक, जीरा, तंतडीक इन सबको एक एक कर्ष, त्रिसुगंध तीन भाग और गुड २० कर्ष लेवे, यह व्योषादिवटी है । इसके खानेसे पीनस, खांसी श्वास, अरुचि और स्वरभंग आदि रोग नाश होवें ॥ १–३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

मरिचादिगुटी ।

मरिचं कर्षमात्रं स्यात्पिप्पली कर्षसंमिता ।
अर्द्धकर्षं यवक्षारं कर्षयुग्मं च दाडिमम् ॥ १ ॥
एतच्चूर्णीकृतं युञ्ज्यादष्टकर्षगुडेन हि ।
शाणप्रमाणां गुटिकां कृत्वा वक्रे च धारयेत् ॥
अस्याः प्रभावात्सर्वेऽपिकासा यांत्येव संक्षयम् २॥

मिरच ४ टंक, पीपल ४ टंक, जवाखार २ टंक, अनारदाना ८ टंक इनको पीसकर ३२ टंक गुड मिलावे और टंक टंकके प्रमाण गोलियां बांधे और मुखमें रक्खे. इन गोलियोंके प्रभावसे पांच प्रकारकी खांसीका नाश होता है (इसको दाडिमादि गुटिका भी कहते हैं) ॥ १ ॥ २ ॥

खैरसारादिगुटिका ।

बिभीतकहरीतक्यौ धात्रीकटुफलानि च । शुंठी-
मरिचपिप्पल्य एला कर्कटशृंगिका ॥ १ ॥
कर्पूरं पिप्पलीमूलं लवङ्गं शुंठिसंयुतम् ।
एतानि समभागानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥ २ ॥
खदिरं च समं देयमार्द्रकद्रवभावना । भावयेत्कि-
क्रीकाथैर्वटिका कोलमात्रया ॥ ३ ॥ कासं कण्ठे
कफं हन्ति स्वरभङ्गं च दारुणम् । गृध्रसी च
निहंत्याशु क्षयरोगहरी परा ॥ ४ ॥

बहेडा, हरड, आंवला, कायफल, सोंठ, मिरच, पीपल इलायची, काकडासिंगी, कपूर, पीपलामूल, लौंग, कचूर ये औषधि बराबर ले महीन चूर्ण कर सबके बराबर खैरसार डाल फिर अदरखके रसकी भावना देवे, फिर छोटे बेरकी बराबर गोली

Aho ! Shrutgyanam

बनावे । यह गोली पांच प्रकारके कासरोग, कफ, दारुण स्वरभंग, गृध्रसी और क्षयरोगको नाश करती है ॥ १-४ ॥

वीजपूरादिवटिका ।

त्रिकटुविकटदंष्ट्रा हिंगुगुंजाररौद्रस्त्रिलवणनखमुग्रं जीरके द्वे चपेटः । प्रकटितकटुकाग्रप्रोल्लसत्केशरौघः कफमदगजहन्ता केशरी बीजपूरः ॥ १ ॥

सोंठ, मिरच, पीपल यही भई विकट डाढ, हींग मानो विकराल शब्द (गुंजार), सैंधानोन, कालानोन, बिडनोन, ये मानो उग्रनख, दोनों जीरे ये चपेट प्रकट जो अदरखकी कटुताई तिसकरके है प्रकाश जिसका ऐसा केसरी मानो कफ, मदयुक्त जो हस्ती इसको मारनेवाला यह बिजोरा है ॥ १ ॥

कासरोगमें बबूलगुटिका ।

रसभागो भवेदेको गन्धको द्विगुणो मतः ।
त्रिभागा पिप्पली ग्राह्या चतुर्भागा हरीतकी ॥ १ ॥
विभीतकं पञ्चभागमटरूषश्च षड्गुणः ।
भाङ्गी सप्तगुणा ग्राह्या सर्वचूर्णं प्रकल्पयेत् ॥ २ ॥
बबूलक्काथमादाय भावना एकविंशतिः ।
कार्या विभीतकमिता गुटिका मधुना सह ॥ ३ ॥
कासं पंचविधं हन्यादूर्ध्वश्वासं कफंजयेत् ॥ ४ ॥

पारा एक भाग, गंधक दो भाग, पीपल तीन भाग, हरड चार भाग, बहेडा पाँच भाग, अडूसा छः भाग, भारंगी सात भाग इन सबका चूर्ण कर फिर बबूलकी छालके काढेकी २१ भावना देवे और बहेडेके समान गोली बनावे, यह गोली पांच प्रकारका कास, ऊर्ध्वश्वास और कफको दूर करती है ॥ १-४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

आमलादिवटिका।

आमलं कमलं कुष्ठं लाजाश्च वटरोहकम्।
एतच्चूर्णस्य मधुना गुटिकां धारयेन्मुखे।
तृषां प्रवृद्धां हंत्येषा मुखशोषं च दारुणम्॥ १॥

आमला, कमलगट्टा, कूठ, धानकी खील, बडकी जटा इनका चूर्ण कर शहदमें गोली बनाकर मुखमें रक्खे तो बहुत प्यास और भयानक मुख सूखना दूर होवे॥ १॥

शंखवटी १–२।

चिंचाक्षारपलं पटुव्रजपलं निम्बूजले कल्कितं
तस्मिञ्छंखपलं प्रतप्तमसकृन्निर्वाप्य शीर्णावधि।
हिङ्गुव्योषपलं रसामृतपलं निक्षिप्य निःक्वासकान्।
हर्त्री शंखवटी क्षयग्रहणिरुग्घृद्याऽन्त्रशूलादिषु॥ १॥

इमलीका खार एक पल, पांचों नोन एक पल, नींबूका रस इनमें एक पल शंखको गरम करके जबतक उसके टुकडे न हों तबतक बुझावे, फिर हींग, सोंठ, मिरच, पीपल १ पल, शुद्ध पारा शुद्ध गंधक इनको डालकर गोली १ टंकके प्रमाण बनावे। यह गोली क्षयरोग, संग्रहणी, हृदय, पसलीके शूलादिकोंको दूर करती है॥ १॥

चिंचाक्षारं लवणमखिलं निम्बुतोयेन पिष्टं तप्तं
शंखं पुनरपि पुनर्निक्षिपेत्सप्तवारान्। तस्मि-
ञ्छंखो भवति शिथिलो मर्दयेत्तेन सार्द्धं व्योषं
हिंगुस्तदपि च पुनः पादमानेन दद्यात्॥ १॥
चातुर्थांशं विषरसबली योजयित्वाऽत्र कुर्यात्सम्य-
ग्बद्ध्वा भिषगथ गुटी बादरास्थिप्रमाणाम्। शूले

Aho ! Shrutgyanam

मंदाग्न्युपशमयने पंक्तिशूले कुशूले एकैकां
तामुदयसमये योजयेत्पुष्टिवृद्धौ ॥ २ ॥

२-इमलीका खार, पांचों नोंन, नींबूके रसमें घोटे, फिर शंखको तपाकर सात वार बुझाव जब शंख खिलजाय तब उसी नींबूके रसमें घोट लेवे. फिर सोंठ, मिरच, पीपल, हींग शंखसे चौथाई डाले, गन्धक, तेलिया, पारा चतुर्थांश इनकी कजली डाले, फिर बेरकी गुठलीके समान गोली बनावे । यह गोली शूल, मंदाग्नि, पसलीका दरद, कूखके शूलको दूर करे, एक गोली सूर्योदयके समय लेवे तो पुष्टि वृद्धि करे ॥ १-१ ॥

चतुरशीति (८४) वाते अमरसुन्दरीगुटिका ।

त्रिकटु त्रिफला चैव रेणुका ग्रन्थिकानलम् ।
मृतलोहं चतुर्जातं पारदं गंधकं विषम् ॥ १ ॥
विडंगाकल्लकं मुस्ता सर्वेभ्यो द्विगुणो गुडः ।
चणकप्रमाणगुटिका नाम्ना अमरसुंदरी ॥ २ ॥
अपस्मारे सन्निपाते कासे श्वासे गुदामये ।
अशीतिवातरोगेषु उन्मादेषु विशेषतः ॥ ३ ॥

त्रिकटु, त्रिफला, संभालूके बीज, पीपलामूल, चित्रक, मरा सार, चातुर्जात, पारा, गंधक, विष, विडंग, अकरकरा, मोथा इनकी सममात्रा और इनसे दूना गुड डालकर चनेके प्रमाण गोली बनावे, यह अमरसुन्दरी नाम गोली मिरगी, सन्निपात १३ श्वास, खांसी, गुदरोग, अर्श और ८० प्रकारके वातरोग और उन्मादको विशेषकर दूर करती है ॥ १--३ ॥

विजयादिगुटिका ।

पलत्रयं हरीतक्याश्चित्रकस्य पलत्रयम् ।
एलात्वक्पत्रमुस्तानां भागश्चार्द्धपलःस्मृतः ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

व्योषं च पिप्पलीमूलं विषं कर्षप्रमाणकम् ।
नागकेशरचूर्णं च कर्षं दद्याद्विचक्षणः ॥ २ ॥
रेणुकार्द्धपलं मात्रा तथा गन्धरसौ क्षिपेत् ।
एतान्संभृतसम्भारान्सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥ ३ ॥
गुडस्य च तुलां दद्यान्मर्दयेत्तद्विचक्षणः ।
एतेन गुटिकाः कार्याः षष्ट्याऽधिकशतत्रयम् ॥ ४ ॥
एकैकं भक्षयेत्प्रातः कृत्वाऽऽहारं यथासुखम् ।
मासेन पलितं हन्ति करोत्यग्निं द्वितीयके ॥ ५ ॥
शुक्रवृद्धिं तृतीये च बलवर्णप्रसाधिनी ।
हन्त्यष्टादश कुष्ठानि सप्त मेहान् महाक्षयान् ॥ ६ ॥
प्लीहानं श्वासकासौ च अण्डवृद्धिमरोचकम् ।
अशीतिवातजान्रोगान्मूत्रकृच्छ्रं गलग्रहम् ॥ ७ ॥
सर्वमूर्च्छां विषं हन्ति सर्वस्थावरजंगमम् ।
योनिदोषमपस्मारमुन्मादं विषमज्वरम् ॥ ८ ॥
बलेन गजतुल्यो वा वेगेन तुरगोपमः ।
मयूरस्तु भवेदग्नौ वाराहश्रोत्रमेव च ॥ ९ ॥
हयतुल्यो भवेत्स्त्रीषु गृध्रदृष्टिर्हि जायते ।
उपयोगात्परं जीवेन्नरो वर्षशतत्रयम् ॥ १० ॥
न चात्र परिहारोऽस्ति न च कामे न मैथुने ।
ग्राम्यधर्मोऽथ वाग्बाणो भोजने च यथेच्छया ॥ ११ ॥
न केवलं विष्णुपितामहाभ्यां मूर्द्धाभिषेकस्त्रिदि-
वेश्वरेण। अयं वरः सर्वरसायनानां योगेन इन्याद्-

Aho ! Shrutgyanam

चिरेण रोगान् ॥ १२ ॥ विजया नाम गुटिका विख्याता रुद्रभाषिता । भक्षयेद्यो नरो वर्षं तस्य सिद्धिर्न संशयः ॥ १३ ॥

हरड ३ पल, चित्रक ३ पल, इलायची ८ टंक, तज ८ टंक, तेजपात ८ टंक, मोथा ८ टंक, सोंठ, मिरच, पीपलामूल, तेलिया ४ टंक, नागकेशर ४ टंक, संभालूके बीज ८ टंक, गन्धक १ पल, पारा १ पल, पारे गन्धककी कजली कर लेवे और सबको महीन पीसकर और सब औषधियोंके बराबर गुड डालकर ३६० गोलियां बनावे, प्रातःकाल एक गोला नित्य खावे. भोजन इच्छा रुचिसे करे तो एक महीनेमें बुढापेको दूर करे, दो महीनेमें अग्निको प्रज्वलित करे, तीन महीनेमें वीर्यको बढावे, बल वर्णको बढावे, कोढ १८, प्रमेह २०, महाक्षय, प्लीहा, श्वास, खांसी, आतें बढनेको, अरुचि, वातजरोग ८० मूत्रकृच्छ्र, गलग्रह, सम्पूर्ण मूर्च्छा तथा स्थावर जंगम विष, योनिदोष, मिरगी, उन्माद, विषमज्वर आदिकोंका नाश करता है और हाथिकासा बल, घोडेकासा वेग, मारकीसी अग्नि, शूकरकासा श्रवण आर स्त्रीसंगमें घोडेके समान बहुत प्रबलता होय, नेत्रोंमें ज्योति गीधके तुल्य हो इस औषधिके समान दूसरी औषधि जगत्के विषे नहीं है, जिससे मनुष्य अपनी पूरी आयुष्य भोगे. इसमें मैथुन करना वर्जित नहीं है और ग्राम्यधम और भोजन यथेष्ट करना। यह ब्रह्मा और विष्णुने बनाया, राज्याभिषेक इन्द्रने करी यह श्रेष्ठ रसायन है. यह सब रोगोंका शीघ्रही नाश करती है, यह विजयानाम गोली प्रसिद्ध महादेवजीने कही है, जो मनुष्य इसे एक वर्ष सेवन करे उसको निस्संदेह सिद्धि प्राप्त होय ॥ १-१३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

क्षयरोगमें शिवागुटी।

शिलाजतुपलान्यष्टौ तावती सितशर्करा।
त्वक्क्षीरी पिप्पली धात्री कर्कटाक्षी पलोन्मिता॥ १॥
निर्दग्धफलमूलाभ्यां पलं युज्यात्त्रिगन्धकान्।
मधुत्रिपलसंयुक्ता विधेयाऽक्षसमा गुटी॥ २॥

शिलाजीत ८ पल, मिश्री ८ पल, वंशलोचन, पीपल, आंवला, काकडासिंगी यह एक एक पल लेनी, कटेरी पंचाङ्ग १६ टंक और त्रिफला इनको शहदमें मिलाकर बहेडेके प्रमाण प्रमाण गोली बनावे॥ १॥ २॥

शिवगुटिका।

द्राक्षाभीरुविदारिकाद्वयपृथक्पर्णीस्थिरापुष्करैः
पाठाकौटजकर्कटाक्षकटुकागस्त्याम्बुदालाम्बुजैः।
दन्तीचित्रकचव्यवारणकणावीरादिवर्गौषधीरब्द्रोणे
चरणस्थिते पलमितैरेभिः श्रितैर्भावयेत्॥ १॥
धात्रीमेषाविषाणिकात्रिकटुकैरेभिः पृथक् पंचभि-
र्द्रव्यैश्च द्विपलोन्मितरपि पलं चूर्णं विदारी भवेत्।
तालीस कुडवं चतुःपलमिह प्रक्षिप्यते सर्पिषा
तैलस्य द्विपलं पलाष्टकमसौ क्षौद्रं भिषग्योजयेत्
॥ २॥ तुल्यं पलैः षोडशभिः सितायास्त्व-
क्क्षीरिकापत्रककेशरस्य। बिल्वांशकैस्त्वक्त्रुटि
संप्रयुक्तैरित्यक्षमात्रागुटिकाः प्रकल्प्याः॥ ३॥
तासामेकतमां प्रयुज्य विधिवत्प्रातः पुमान्भोज-
नात्प्राग्वा मुद्गदलाम्बुजांगलरस शीतं शृतं वा

Aho ! Shrutgyanam

जलम् । माक्षीकं मदिरामगुर्वशनभुक्पीत्वा पयो
वा गवां प्राप्नोत्यंगमनंगवास्तुभवनं सम्पन्नमानंद-
कृत् ॥४॥ शोफं ग्रंथ्यवमंथवेपथुवमीं पांड्वामया
ञ्च्रलीपदं प्लीहार्शःप्रदर प्रमेहपिटिका मेहोऽश्मरी
शर्करा । हृद्रोगार्बुदवृद्धिविद्रधियकृद्योन्याजरी-
न्सानिलानूरुस्तंभभगन्दरं ज्वररुजस्तूनीप्रतूनी
तृषा ॥ ५ ॥ वातासृक्प्रबलं प्रवृद्धमुदरं कुष्ठं
किलासक्रिमीन्कासश्वासज्वरस्वरक्षयमसृक्पित्तं
सपानात्ययम् । उन्मादं मदमप्यपस्मृतिमतिस्थौ-
ल्यं कृशत्वं तनोरालस्यं च हलीमकं प्रशमये-
न्मूत्रस्य कृच्छ्राणि च ॥ ६ ॥ झटिति च युवा
सर्वैः श्वेतैरकाल जराकृतैः कृतमलिकुलाकारैरेभिः
शिरश्च शिरोरुहैः । बलिमदबलिव्यस्तातङ्कं
वपुश्च समुद्वहन्प्रभवति शतं स्त्रीणां गन्तुं
प्रभुर्जनवल्लभः ॥ ७ ॥ स्तिमितमतिरविज्ञानान्धः
सदस्यपटुः पुमान् सकृदपि यथा ज्ञानोपेतः
श्रुतिस्मृतिमान्भवेत् । व्रजति च यथा युक्तो योगी
शिवस्य समीपतां शिवगुटिकया कृत्स्नामेकां
करोति हि मानवः ॥ ८ ॥

दाख, शतावर, विदारीकंद, पृष्ठपर्णी, शालपर्णी, कटेरी, पुहकर-
मूल, पाढ, कुडाकी छाल, काकडासिंगी, बहेडा, कुटकी, रास्ना,
मोथा, कडवी, तूंबी, दांतौनी, चीता, चव्य, गजपीपल, अष्ट-

Aho ! Shrutgyanam

वर्ग (महामेदा १ मेदा २, जीवक ३, ऋषभ ४, सिद्ध ५, ऋद्ध ६, कंकोली ७, क्षीरकाकोली ८,) और ये न मिलें तो वरी, विदारी, असगंध लेवे, ये सब औषधि चार चार टंक लेवे और आंवला १६ टंक, मेढासिंगी १६ टंक, सोंठ, मिरच, पीपल, दो दो पल, विदारीकंद १६ टंक, तालीसपत्र ६४ टंक, घृत, तेल ३२ टंक, शहद १६ पल, मिश्री १५६ टंक, वंशलोचन, तेजपात, नागकेशर, बेलगिरी, तज, इलायची संयुक्त एक टंकके प्रमाण गोलियां बनावे प्रातःकाल सदा विधिसे सेवन करे, भोजन पहिले लेवे, मूंगका पानी, मांसरस, ठंढा पानी अथवा गरम पानी, शहद मदिरासे इसके ऊपर गरिष्ठ भोजन पहिले लेवे और गौके दूधके साथ लेवे तो रूप बढे और सदा आनंदकारी है और सूजन, गांठ, कंपवायु, पांडुरोग, वमन, कृमि, श्लीपद, प्लीहा, अर्श, प्रमेह, पथरी, शर्करा प्रमेह, हृदयरोग, अर्बुद, वृद्धि, यकृत्, योनिदोष, वायुरोग, ऊरुस्तंभ, भगंदर, खांसी, श्वास, ज्वर, स्वरभंग, क्षयी, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, तूनी, प्रतूनी, प्यास, वातरक्त, पेट बढनेके रोग, कोढ, कृमि, पानात्ययरोग, और समस्त देहके रोग, उन्माद, अतिशूल, अतिदुर्बलता, आलस्य. हलीमक, सर्व मूत्रकृच्छ्र बुढापेसे जो बाल सफेद, होजायँ इन रोगोंको दूर करे मस्त हाथीके समान बल होवे। बलयुक्त मस्तशरीर होजाय और १०० स्त्रियोंसे भोग करनेका सामर्थ्य होवे, लोकमें प्यारा होवे, अज्ञानको दूर करे और महापंडित पुरुष सदा ज्ञानवान् स्मृति भूले नहीं। जो मनुष्य इस औषधिका सेवन करेंगे वह महादेवके समान योगीन्द्र होजावेंगे। यह शिवनाम गोली महादेवजीने कही है ॥ १-८ ॥

ज्वरघ्नी गुटी।

रसं विषं टंकणगंधकं च सत्र्यूषणं भृङ्गरसेन

Aho ! Shrutgyanam

भाव्यम् । गुटी प्रदेया समशर्करांशैः सद्योज्वरं नाशयति क्षणेन ॥ १ ॥

पारा, मीठा तेलिया, सुहागा, गंधक, सोंठ, मिरच, पीपल इनकी सममात्रा ले, चूर्ण कर भांगके रसमें गोली बनावे और मिश्रीके साथ खावे तो ज्वर दूर होवे ॥ १ ॥

विरेचननाम गुटिका ।

अष्टौ विषतुषदंतिबीजकलिकाभागत्रयं नागराद् द्वौगन्धान्मरिचानि टंकणरसा एकैकभागाःक्रमात् । गुंजामानवटी विरेचनकरी देया सुशीतांबुना गुल्मप्लीहमहोदरार्तिशमनी नाराचनामा रसः ॥ १ ॥

जमालगोटेका छिलका दूर कर दूधमें पकावे फिर जीभ, रहित कर ८ टंक, सोंठ ३ टंक, शुद्ध गंधक २ टंक, मिरच, सुहागा फूला एक टंक, पारा १ टंक क्रमसे लेकर चिरमिटीके प्रमाण गोली बनावे और ठंढे पानीके साथ लेवे तो प्लीहा और सब उदररोगोंको शांति करे । यह नाराच नामक रस है ॥ १ ॥

विश्वौषधं टंकणगन्धकं च सपारदं चेति समांशयुक्तम् । नृपालचूर्णं त्रिगुणं च दद्याद्गुडेन बद्धा गुटिका प्रसिद्धा ॥ २ ॥ विरेचनी मूत्रविकारनाशिनी लघ्वी हिता दीपनपाचनी च । संशोधनी शीतजलेन सत्यं संस्तम्भनी चोष्णजलेन सत्यम् ॥ ३ ॥

सोंठ, सुहागा फूला, पारा, शुद्ध गंधक यह सममात्रा, जमालगोटा तिगुना इनकी गुडके साथ गुटिका बनावे. यह विरेचनकारी, मुत्रविकारको दूर करे, लघुकारी, हितकारी, अग्निदीपन, पाचन,

Aho ! Shrutgyanam

कोठेको शुद्ध करे और ठंढे जलसे विरेचन होवे, गरम जलसे विरेचन बंद होते हैं. विरेचन नाम दस्तोंका है ॥ २ ॥ ३ ॥

टंकणमयूरतुत्थं स्नुहीक्षीर अजैपालमेरण्डम् ।
नाभिप्रलेपदत्तं नरपतियोग्यं विरेचनं कुरुते ॥४॥
मध्यमस्त्रिवृतस्तिक्ता राजवृक्षो विरेचनम् ।
क्रूरास्नुकपयसाहेमक्षीरदंतीफलादिभिः ॥ ५ ॥
एरंडतैलं दुग्धं गोस्तथा तुंबी हरीतकी। वज्री
क्षीरगुटी चाथ पिप्पली तेन भाविता ॥ ६ ॥
महिषावल्खिा चैव कंपिल्लं तक्रमेव च। उष्ट्रीदुग्धं
तथा पेयं घोडाचोली गुटी तथा ॥ ७ ॥

सुहागा, नीलाथोथा, सेहुंडका दूध, शुद्ध जमालगोटा, अरंडीके बीज इनको पीसकर नाभीपर लेप करे, यह राज योग्य विरेचन है. एलुआ, निसोथ, कुटकी, अमलतास यह मध्यम जुलाब है। आकका दूध, थूहरका दूध, शुद्ध जमालगोटा यह क्रूर जुलाब है। अरंडीके तेल वा गायके दूधमें गोली बनावे अथवा पीपलोंको थूहरके दूधमें भावना देवे, साँठी चांवलोंमें कवीला मट्ठा सङ्ग पीवे अथवा ऊंटनीके दूधमें घोडाचोलीरस सेवन करे ॥ ४-७ ॥

विषूचिकाहरगुटिका ।

पलत्रिकं व्योषकरञ्जबीजं रसं तथा दाडिममातुलुङ्गयोः। निशायुगं पिष्य कृता च वर्तिस्तदञ्जनं हन्ति विषूचिकां च ॥ १ ॥

त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल, करंजुएके बीज, हलदी, दारुहलदी, पीसकर बिजौरेके रसमें अथवा अनारके रसमें

Aho ! Shrutgyanam

चनेके बराबर गोलियां बनावे फिर उस गोलीसे अञ्जन करे तो विषूचिकारोग तथा मूर्च्छा जाय ॥ १ ॥

विषूचिकामें अञ्जनगुटिका ।

व्योषं करंजस्य फलं हरिद्रे मूलं समावाप्य च मातुलुङ्गा। छायाविशुष्का गुटिका विधेया हन्याद्विषूचीं नयनांजयेन ॥ १ ॥

सोंठ, मिरच, पीपल, करंजबीज, हलदी पीसकर बिजौरेके रसमें गोली बनावे और छायामें सुखाकर अञ्जन करे तो विषूचिकारोग नाश होवे ॥ १ ॥

मातुलुङ्गजटा व्योषनिशाबीजं करञ्जकम् ।
काञ्जिकेनाञ्जनं हन्याद्विषूचीमतिदारुणाम् ॥ २ ॥

बिजौरेकी जड, सोंठ, मिरच, पीपल, हलदी, कंजाके बीज इनकी कांजीके पानीमें गोली बनावे और अञ्जन करे तो दारुण विषूचिका दूर होवे ॥ २ ॥

प्रचेतागुटिका ।

त्र्यूषणं त्रिफला हिङ्गु सैन्धवं कटुका वचा ।
नक्तमालस्य बीजानि तथा गौराश्च सर्षपाः ॥ १ ॥
मेषमूत्रेण पिष्टानि च्छायाशुष्कं विधापयेत ।
भूतोन्मादेष्वचैतन्येऽञ्जनमैकाहिकादिषु ॥ २ ॥

सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, हींग, सैंधानोन, कुटकी, बच, कंजाकी मिंगी, सफेद सरसों इनकी मेंढेके मूत्रमें गोली बनावे और छायामें सुखावे और नेत्रमें, आंजे तो यह अञ्जन भूतादिकोंको तथा ऐकाहिक ज्वरादि अचेतनता और उन्मादको दूर करे ॥ १-२ ॥

Aho ! Shrutgyanam

राजिकां मरिचं कृष्णां सैन्धवं भूतनाशनम्।
नरमूत्रेण संपिष्य अञ्जनं ज्वरनाशनम्॥ ३॥

राई, मिरच, पीपल, सैंधानोन इनकी मनुष्यके मूत्रमें गोली बनावे और अंजन करे तो भूतादिकोंको दूर करे॥ ३॥

सर्षपादिगुटिका।

सिद्धार्थको वचा हिङ्गुकरञ्जो देवदारु च। मञ्जिष्ठा त्रिफला श्वेता कटुकीत्वक्कटुत्रिकम्॥ १॥ समांशानि प्रियंगुश्च शिरीषो रजनीद्वयम्। बस्तमूत्रेण पिष्टोऽयमङ्के देयस्तथाऽञ्जनम्॥ २॥ नस्यमालेपनं चैव स्नानमुद्वर्त्तनं तथा। अपस्मारे विषोन्मादे कृत्यालक्ष्मीज्वरापहम्॥ ३॥ भूतेभ्यश्च भयं नास्ति राजद्वारे च शस्यते॥ ४॥

सरसों, वच, हींग, कंजाके बीज, देवदारु, मंजीठ, त्रिफला, मालकांगनी, तज, सोंठ. मिरच, पीपल, समभाग प्रियंगु, सिरसके बीज, दोनों हलदी इनकी बकरेके मूत्रमें गोली बनावे और मर्दन करे तो सब रोग दूर होवें, अञ्जन करै तथा नस्य लेय, लेपन करे, उबटना करे तो मृगी, विष, उन्मादज्वरादि तथा भूतादिकोंको दूर करे। यह राजाके योग्य है॥ १-४॥

चिन्तामणिरसगुटिका।

द्वौ जाजी कणविश्वपञ्चलवणा मारीचगन्धाभ्रकं क्षारंत्रीणि रसेन्द्रमर्द्धममृतं तत्सर्वमेकीकृतम्।
क्षिप्त्वा चार्द्रकनागवल्लिसहितं पञ्चैव गुंजान्वितं सामे सज्वरसन्निपातकमहामेहाद्युदावर्त्तके॥ १॥

Aho ! Shrutgyanam

दोनों जीरे, पीपल, सोंठ, पाँचों नोन, मिरच, शुद्ध गन्धक, अभ्रक, सुहागा, सज्जी, जवाखार, पारा, आधी मात्रा तेलिया मीठा यह सब बराबर एकत्र कर अदरखके रसकी पांच भावना तथा पानक रसकी पांच भावना देवे, फिर गोल मिरचके बराबर गोली बना खावे तो आमविकार, ज्वरसहित सन्निपात, असाध्य प्रमेह और उदावर्त्तादि रोग दूर होयँ ॥ १ ॥

वडवानलरसगुटिका ।

सूतं भुजङ्गममृतं लवणं हरिद्रा व्योषं घनं जयजटावनि १ भू १ धरित्री। अष्टादश १८त्रि ३ नव ९ वह्नि ३ मितश्च भागः प्रोक्तो रसो रसगुणैर्वडवानलोयऽम् ॥ १ ॥ निम्बुकार्द्रककरीरपयोभिः शिग्रुकेसरिभुजङ्गलताभिः। साध्यमग्निसदनानिलशूलाध्मानहानि वडवानलचूर्णम् ॥ २ ॥

पारा १ टंक, शीशा १ टंक, गन्धक १ टंक, शीशा पारेको मिला एक करले, सैंधानोन १८, हलदी ३, सोंठ, मिरच, पीपल ९, चीता ३ भाग इन सबको नीम्बूके रसकी, अदरखके रसकी, करीरके रसकी, दूधकी, सैंजनेके रसकी, और नागकेशरकी सात सात भावना देवे, फिर गोली बनावे और खावे तो जड बुद्धिको, मन्दाग्निको, वायुशूलको, अफरेको दूर करे ॥ १ ॥ २ ॥

पंचाननरसगुटिका १-३ ।

सूतं गन्धकचित्रकं त्रिकटुकं मुस्तं विडङ्गं विषमेतेषां समतुल्यमार्कवरसं गुञ्जाप्रमाणा वटी । कुष्ठाष्टादशगुल्मरोगमुदरप्लीहप्रमेहादयो रोगनेकसुभूरिदर्पदलने ख्यातश्च पञ्चाननः ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

१—पारा, गंधक, चीता, सोंठ, मिरच, पीपल, मोथा, वायविडंग, तेलिया मीठा इन सबकी समान मात्रा लेवे भांगरेके रसमें गोली बनावे, गुञ्जाप्रमाण लेवे तो यह १८ प्रकारके कुष्ठ, गुल्म, उदररोग, प्लीहा और प्रमेहादि रोगोंको नाश करे ॥ १ ॥

शंभोः कण्ठनिवासनं च मरिचं गन्धं रसेन्द्रो रविः पक्षौ सागरलोचने शशिमुखं भागोऽर्कसंख्याकृतः । खल्वे तत्खलु मर्दितं रविजलैर्गुंजार्द्धमात्रं ददेत् सिद्धोऽयं ज्वरहस्तिदर्प्पदलने पञ्चाननोऽयं रसः ॥ २ ॥ पथ्यं च देयं दधिभक्तयुक्तं सिन्धूत्थयुक्तं सितया समेतम् । गन्धानुलेपं हिमतोयपानं दुग्धं च पेयं शुभदाडिमं च ॥ ३ ॥

२ तेलिया मीठा २ टंक, मिरची ४ टंक, गंधक २ टंक, पारा १ टंक आकका दूध १२ टंकमें खरल करे और आधी रत्ती प्रमाण गोलियां बनावे । यह गोली हस्तीरूप ज्वरको सिंहरूप है. पथ्य—दही, चावल खावे और सैंधानोन, मिश्रीसहित लेवे, सुगंधि द्रव्य अपने शरीरमें लगावे, ठंढा जलपान, दुग्धपान अनार खावे ॥ २ ॥ ३ ॥

सूतं गन्धकचित्रकं त्रिकटुकं मुस्ता विषं त्रैफलमेतैस्तुल्यकृतैर्गुडं द्विगुणितं गुञ्जप्रमाणा वटी । कुष्ठं गुल्ममतिस्रुतिक्रिमिरुजं शूलप्रमेहापहं वातानेककरीन्द्रदर्पदलने ख्यातश्च पञ्चाननः ॥ ४ ॥

३—पारा, गंधक, चीता, सोंठ, मिरच, पीपल, मोथा, तेलिया मीठा यह सब बराबर लेवे और गुड इससे दूना ले गोली गुंजा प्रमाण बनावे. कुष्ठ, गुल्म, अतीसार, कृमि, शूल, प्रमेह, वातादि

Aho ! Shrutgyanam

अनेक मदमस्त हस्ती समान रोगोंको यह पञ्चानन रस नाश करता है ॥ ४ ॥

ज्वरांकुशरसगुटिका ।

शुद्धं सूतं विषं गन्धं धूर्त्तबीजं त्रिभिः समम् ।
चतुर्णां द्विगुणं व्योषं चूर्णं गुंजाद्वयं मतम् ॥ १ ॥
जंबीरकस्य मज्जाया आर्द्रकस्य द्रवैर्युतम् ।
महाज्वरांकुशो नाम ह्यष्टज्वरनिवारकः ॥ २ ॥
ऐकाहिकं द्व्याहिकं च तार्तीयं च चतुर्थकम् ।
विषमं च त्रिदोषोत्थं हन्त्यवश्यं न सशयः ॥ ३ ॥

पारा शुद्ध, तेलिया मीठा, गंधक, धतूरेके बीज यह तीनों बराबर इनसे दूनी सोंठ, मिरच, पीपल लेय, जंभीरी अथवा अदरखके रसमें गोली दो गुञ्जाप्रमाण बनावे, यह महाज्वरांकुश नाम रसगुटिका है, अष्टज्वरोंको तथा ऐकाहिक, द्व्याहिक. तृतीयक, चतुर्थक, विषमज्वर, त्रिदोष इनको नाश करे ॥ १-३ ॥

घोडाचोली ।

विष रस गंधक अरु हरताल, त्रिकटु त्रिफला टंकणखार । अजयपाल भांगरा रस गोली, चौंसठ रोगगमावे घोडाचोली ॥ १ ॥ खण्डेन सह गृह्णी-यात्गुटिकानां चतुष्टयम् । उष्णं जलं चानु पेयं वारान्सप्त च पञ्च वा ॥२॥ सूक्ष्मं विरेचनं कुर्या-ज्जीर्णज्वरविनाशिनी । अजीर्णशूलग्रहणीगुल्म-वातामवातजित् ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पारा, गन्धक ले पारे गंधककी कजली करे, तेलिया मीठा, शुद्ध हरताल, सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला सुहागा इनको चूनेके पानीकी तीन पुट देवे फिर भांगरेके रसमें गोली बनावे, यह गोली चौंसठ रोगोंको दूर करे और खांडके साथ चार गोली लेवे, ऊपरसे गरम पानी पीवे तो सात बार या पांच वार विरेचन करे, जीर्णज्वर, अजीर्ण, संग्रहणी, गुल्म और आमवातको दूर करे ॥ १-३ ॥

प्रभावती गुटिका ।

द्वे हरिद्रे निंबपत्रपिप्पलीमरिचानि च । भद्रमुस्ता विडंगं च सप्तमं विश्वभेषजम् ॥ १ ॥ सैंधवं चित्रकं चैव बावची पित्तपर्पटम् । पाठाऽभया वचा कुष्ठमजामूत्रेण पेषयेत् ॥ २ ॥ साष्टशतं वाऽभिमंत्र्य जातीपुष्पाणि प्रक्षिपेत् । दीपोत्सव-दिने रात्रौ गुटीं कृत्वाभिमंत्रयेत् ॥ ३ ॥ सर्वेषु बालरोगेषु ज्वरएेकाहिकादिके । भूतप्रेतादिदोषेषु वश्ये नेत्रामयेषु च ॥ ४ ॥ अंजनं भक्षणं पुंड्रं यथायोगं प्रयोजयेत् । प्रभावती नाम गुटी सर्व-कार्यप्रसाधिनी ॥ ५ ॥

दोनों हलदी, नीमके पत्ते, पीपल, मिरच, नागरमोथा, वायविडंग, सोंठ, सैंधानोन, चीता, बावची, पित्तपापडा, पाठा, हरड, वच कूठ, उनको बकरीके मूत्रमें १०८ चमेलीके फूल डाल यह मंत्र पढे- " ॐ नमः पार्श्वनाथाय महासत्त्वाय ॐ अहिमहि चर २ चांडालिनि स्वाहा । " और दिवालीकी रातको गोली बनावे । यह गोली समस्त बालरोग, ऐकाहिकादि ज्वर और भूत, प्रेतादिक रोगोंको नाश

Aho ! Shrutgyanam

करे और अंजन करे तो नेत्ररोग नाश होवें, तोलके यथायोग्य भक्षण करे तो यह गोली समस्तकार्योंको सिद्ध करे ॥ १–५ ॥

अतीसारे अरलूगुटिका ।

अरलू बिल्वजम्ब्वाम्रं कपित्थं च रसाञ्जनम् ।
लाक्षा हरिद्रा ह्रीबेरं स्योनाकं कट्फलं तथा ॥ १॥
लोध्रं मोचरसं शृंगी धातकी च वटांकुरान् ।
पिष्ट्वा तण्डुलतोयेन गुटिकां चाक्षसंमिताम् ॥२॥
छायाशुष्कां पिबेत्क्षिप्रं ज्वरातीसारशान्तये ।
रक्तपित्तप्रशमनी ग्रहणीशूलनाशिनी ॥ ३ ॥

अरलूकी छाल, बेलगिरी, जामुनकी छाल, आमकी छाल, कैथ, रसोत, लाख, हलदी, हाऊबेर, नेत्रवाला, कायफल, लोध, मोचरस, सोंठ, धायके फूल, वटके अंकूर इन सबको चावलके पानीमें खरल कर बहेडेके समान गोली बनावे और छायामें सुखाकर सांठी चांवलोंके पानीके संग प्रभात समय खावे तो ज्वर, अतीसार, रक्तपित्त, संग्रहणी और शूलको दूर करै ॥ १–३ ॥

ग्रहणीकपाटगुटिका ।

चातुर्जातकचव्यजीरकयुगं व्योषारलू ग्रंथिकं
श्रीवृक्षातिविषाऽजमोदयुगलंचूतास्थिपाठांबुदम् ।
यष्टी चेन्द्रयवाम्लकास्थिकवचा लोध्रं समङ्गारजः
कुर्यान्मोचरसान्वितं समजयेद्वासावनोतद्गुणान्
॥ १ ॥ आबद्धा ग्रहणीकपाटवटिका अक्षप्रमाणा
भजेत्साध्मानग्रहणीविकाररुधिरातीसारविच्छित्तये २।

Aho ! Shrutgyanam

तज, तेजपात, इलायची, नागकेशर, चव्य दोनों जीरे, सोंठ, मिरच, पीपल, अरलूकी छाल, पीपलामूल, बेलगिरी, अतीस, अजमोद, अजमायन, आमकी गुठली, पाठा, मोथा, मुलहठी, इंद्रजव, इमलीके बीज, बच, लोध, मंजीठ इनका चूर्ण कर मोचरस समान मात्रा लेवे, इतनाही गुड डालकर बहेडेके समान गोलियाँ बनावे। यह संग्रहणी, रक्त अतीसारका नाश करे ॥ १ ॥ २ ॥

एलादिगुटिका ।

एलात्वक्पत्रकं द्राक्षा पिप्पल्यर्द्धपलं तथा ।
सित्तामधुकखर्जूरमृद्वीकाश्च पलोन्मिताः ॥ १ ॥
संचूर्ण्य मधुना कुर्याद्गुटिकां चाक्षसंमिताम् ।
कासं श्वासं ज्वरं हिक्कां छर्दिं मूर्च्छां मतिभ्रमम्
॥ २ ॥ रक्तष्ठीवं पार्श्वशूलं स्वरभेदं क्षतक्षयम् ।
गुटिका तर्पणी वृष्या रक्तपित्तं च नाशयेत् ॥३॥

इलायची ४ टंक, तज ४ टंक, तेजपात ४ टंक, दाख ४ टंक, पीपल ८ टंक, मिश्री, मुलहठी, छुहारे, मुनक्का १६ टंक इनको शहदमें बहेडेके समान गोलियां बनावे। यह गोली खांसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, छर्दि, मूर्च्छा, चित्तभ्रम, मुखका रक्तदोष, पसलीका दरद, स्वरभेद, क्षतक्षय, रुधिरविकार और पित्तादिकोंको दूर करे ॥ १-३ ॥

तालीसादिगुटिका ।

चव्याम्लवेतसकटुत्रिकतिन्तडीकं तालीसजीरक-
तुगादहनैः समांशैः । चूर्णं गुडप्रमृदितं त्रिसुगं-
धयुक्तं वैस्वर्यपीनसकफारुचिषु प्रशस्तम् ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

चव्य, अमलवेत, सोंठ, मिरच, पीपल, तंतडीक, तालीसपत्र. जीरा, वंशलोचन, इलायची, तज, पत्रज, चीता इनको बराबर लेवे और गुडके संग गोली बनावे यह गोली पीनस, कफ, अरुचि इनको दूर करती है ॥ १ ॥

कामदेवगुटिका ।

पलं गोक्षुरबीजानि द्विपलं कपिकच्छुजम् ।
पलं नागदला मूलं पलमेकं शतावरी ॥ १ ॥
विदारीकन्दचूर्णं तु पलद्वयमथाऽबला ।
द्विपलं त्रपुसीबीजं वाजिगंधा पलत्रयम् ॥ २ ॥
त्रिसुगंधकणा धात्री लवंगं नागकेशरम् ।
वंशी मांसी तालमूली गुडूची रक्तचन्दनम् ॥ ३ ॥
एतानि कर्षमात्राणि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।
बालशाल्मलिकाद्रावैर्भावयेच्चैकविंशतिः ॥ ४ ॥
कुशकाशद्रवैरेवं शर्करासमयोजितम् ।
नष्टशुक्ररुजं हन्ति मूत्रकृच्छ्राणि यानि च ॥ ५ ॥
शतंगच्छेत्तु नारीणां हयतुल्यसमो बले ।
कामदेवमिदं नाम धन्वन्तरिविनिर्मितम् ॥ ६ ॥

गोखरूके बीज १ पल, कौंचके बीज २ पल, गंगेरनकी छाल १ पल, शतावर १ पल, विदारीकन्दका चूर्ण २ पल, खरेटीकी जड २ पल, ककडीके बीज डेढ पल, असगंध डेढ पल, तज, पत्रज, छोटी इलायची, पीपल, आंवले, लौंग, नागकेशर, वंशलोचन, छड, काली मूसली, गिलोय, लाल चन्दन इन सब औषधियोंको एक एक कर्ष लेकर चूर्ण करे, इसमें कोमल सेमलके पत्तोंके रसकी इक्कीस भावना

Aho ! Shrutgyanam

तथा डाभ कांसके रसकी भी इक्कीस भावना देकर बराबर खांड मिलाकर अनुमान मुवाफिक खाय तो नष्ट शुक्रके रोगको तथा मूत्र कृच्छ्रको नाश करे और सौ स्त्रियोंसे भोग करै, घोडेके समान पराक्रम होवे । यह कामदेवगुटी श्रीधन्वन्तरि भगवान्‌ने बनायी है ॥ १–६ ॥

लघुकामेश्वरगुटिका ।

शतावरी गोक्षुरश्च कपिकच्छु उटंगणम् ।
गंगेरी कबिला मुस्ता मुशली खुरसाणकम् ॥ १ ॥
समुद्रशोषोहिपरा चविका शाल्मली सटी ।
मकुष्ठस्य जटामांसी वाजिगन्धा च रेणुका ॥ २ ॥
विदारी ग्रंथिकं गुंदं विडंगं जीरकं सणम् ।
मांसी सिताह्वा धान्याकं विजया तुर्यभागिका ॥ ३ ॥
जातिपत्रं जातिफलं चातुर्जातकटुत्रिकम् ।
कर्पूरं गगनं लोहं रससिंदूरकासिका ॥ ४ ॥
गुटिका द्विगुणखंडेन वृद्धकोलप्रमाणतः ।
वीर्यवृद्धिं बलं पुष्टिं कामदीप्तिं करोत्यलम् ॥ ५ ॥

शतावर, गोखरू, कौंचके बीज, उटंगन, गंगेरन, खरेटी, बाला, मोथा, मूसली, खुरासानी अजमायन, समुद्रशोष, समुद्रफेन, चव्य, सेमलका मूसला, मेदा, कचूर, जटामांसी, असगंध, संभालूके बीज जावित्री जायफल, तज, तेजपात, इलायची, सोंठ, मिरच, पीपल, कपूर, अभ्रक, सार, रससिंदूर, मिश्री, विदारीकंद, पीपलामूल, मस्तंगी, वायविडंग, जीरा, सनके बीज, छड, सौंफ, धनियां इनसे चौथाई भांग और दूनी खांड डालकर बडे बेरके समान गुटिका बना खावे तो वीर्यवृद्धि, बल, पुष्टि, कामदीपन पूर्ण करे ॥ १–५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

स्तम्भनगुटिका।

कंकोलं कुंकुमं फेनं मस्तंगी जातिपत्रिका।
जातीफलं च कर्पूरं करहाटमुटीङ्गणम् ॥ १ ॥
जलादिभिर्विनैवैतां गुटिकां वर्द्धयेद्बली।
दिनान्ते भक्षयेच्चैकां रेतस्तंभकरी मता ॥ २ ॥

कंकोल, केशर, अफीम, मस्तंगी, जावित्री, जायफल, कपूर, अकरकरा, उटंगन इनकी विना पानीसे गोली बनावे. संध्याको एक गोली लेवे तो स्तंभन करे, और वीर्यको पुष्ट करे ॥ १ ॥ २ ॥

नेत्राम्बुजवटी।

शंखनाभिकणातुत्थं बोलखर्परसंयुतम्।
निंबूकरसतोयेन ह्यंजनं नयनामृतम् ॥ १ ॥

शंखकी नाभि, पीपल, नीलाथोथा शुद्ध, बीजाबोल, शुद्ध खपरिया इनको नींबूके रसमें खरल कर अञ्जन करे, यह अञ्जन नयनामृत नामसे प्रसिद्ध है ॥ १ ॥

चन्द्रप्रभावर्त्तिः।

अशीतितिलपुष्पाणि षष्ठिभागाधिका कणा।
पञ्चाशज्जातिकलिका मरिचानथ षोडश ॥ १ ॥
भृङ्गराजरसेनेदं कांस्यपात्रेण मर्दयेत्।
एषा चन्द्रप्रभा वर्तिश्चक्षूरोगविनाशिनी ॥ २ ॥
तोयेन तिमिरं हन्ति मधुना हन्ति पुष्पकम्।
अजामूत्रेणरात्र्यन्धं गोमूत्रेण च चिर्पटम् ॥ ३ ॥

तिलके फूल ८०, पीपलके दाने ६०, जाईकी कली ५०, मिरच १६ इनको भांगरेके रसमें कांसेके पात्रमें खरल करे, यह चन्द्रप्रभा

Aho ! Shrutgyanam

वर्ती है. सो सम्पूर्ण नेत्ररोगोंको नाश करे, इसको पानीसे आंजे तो तिमिर जाय. शहदसे आंजे तो फूला जाय, बकरीके मूत्रसे आंजे तो रतौंधी जाय, गोमूत्रसे आंजे तो आंखोंका चिमचिमाहट जावे ॥ १-३ ॥

नेत्रस्रावगुटिका ।

धात्र्यक्षपथ्याबीजानि एकद्वित्रिगुणानि तु ।
पिष्ट्वा वर्तिं जलैः कुर्यादंजनं त्विह रेणुकम् ।
नेत्रस्रावं हरत्याशु वातरक्तकजं तथा ॥ १ ॥

त्रिफलेकी मिंगी क्रमसे १, २, ३ भाग इनको पीसकर पानीमें गोली बनावे. फिर अञ्जन करै तो आंखोंके पानी, वायु और रुधिर-पीडाको दूर करे ॥ १ ॥

रात्र्यन्धताया गुटिका ।

रसांजनं हरिद्रे द्वे मालती निम्बपल्लवाः ।
गोशकृद्रससंयुक्ता वर्तिर्नक्तांध्यनाशिनी ॥ १ ॥

रसोत, सुरमा, दोनों हलदी, मालतीके पत्ते, नीमके पत्ते इनकी गोबरके रसमें गोली बनावे और आंखमें आंजे तो रतौंधका नाश होवे ॥ १ ॥

सप्तामृतगुटी ।

त्रिफलालोहचूर्णं च माक्षिकं मधुयष्टिका ।
सायमाज्यान्वितं मार्षं सद्यस्तिमिरनाशनम् ॥ १ ॥

त्रिफला, सार, शहद और मुलहठीको सायंकालमें घीके संग खाय तो शीघ्रही तिमिररोगका नाश करे ॥ १ ॥

अतिनिद्रायां गुटिका ।

क्षौद्राश्वलालासंघृष्टैर्मरिचैर्नेत्रमञ्जयेत् ।
अतिनिद्रा शमं याति तमः सूर्योदये यथा ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

शहद और घोडेकी लारमें मिरच घिसकर लगावे तो अतिनिद्रा दूर होय, जैसे सूर्यके उदय होनेसे अन्धकार दूर होजाता है ॥ १ ॥

शिरीषबीजगोमूत्रकृष्णामरिचसैंधवम् ।
अञ्जनं स्यात्प्रबोधाय सरसोनशिलावरैः ॥ २ ॥
जयपालभवां मज्जां भावयेन्निम्बुकद्रवैः ।
एकविंशतिवेलं तु ततो वर्तिं प्रकल्पयेत्
मनुष्यलालया घृष्ट्वा ततो नेत्रे नियोजयेत् ।
सर्पदंष्ट्राविषं जित्वा संजीवयति मानवम् ॥ ३ ॥

सिरसके चीयां पीपल, मिरच, सैंधानोन इनका गोमूत्रसे अञ्जन करे तो तन्द्रा दूर होय । लहसन, मैनसिल, शुद्ध जमालगोटेकी मिंगी, नींबूके रसकी २१ भावना देय, गोली बनाय मनुष्यकी लारसे अञ्जन करे तो सर्पका विष उतर जाय ॥ २-३ ॥

काचं सफेनं कनकं सतुत्थं शंखं शिलारोचनमा-
क्षिकं च । पुंसः कपालं शिखिकुक्कुटांडमाजन्म-
जातं कुसुमं निहन्ति ॥ ४ ॥

कांच, समुद्रफेन, धतूरेका फल, शुद्ध नीलाथोथा, शंखका चूर्ण, मैनशिल, गोरोचन, सोनामक्खी, मनुष्यकी खोपडी, मोर तथा मुर्गेका अण्डा यह अञ्जन जन्मभरकी फूलीका नाश करता है ॥ ४ ॥

नयनामृताञ्जनम् ।

त्रिफलाभृङ्गमहौषधिमध्वाज्यच्छागपयसि गोमूत्रे ।
नागं नवतिनिषिक्तं करोति गरुडोपमं चक्षुः ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पारदं शीसकं तुल्यं तयोर्द्विगुणमञ्जनम् ।
ईषत्कर्पूरसंमिश्रमञ्जनं नयनामृतम् ॥ २ ॥

शीसेको त्रिफलामें ३० बार, भांगरेक रसमें १० बार, सोंठके काढेमें १० बार, शहदमें १० बार, घीमें १० बार, बकरीके दूधमें १० बार, गोमूत्रमें १० बार बुझावे । यह अञ्जन गरुडके समान नेत्रोंकी ज्योतिको करता है. पारा, शीशा बराबर इनसे दूना सुरमा और थोडासा कपूर मिलाकर अंजन करे तो नेत्रोंको यह अंजन अमृतके तुल्य है ॥ १--२ ॥

बावले कुत्तेके काटनेपर गोली ।

तुम्बीगिरं मालवकेक्षुहिङ्गुलं नेपालमध्यं मरिचानि टङ्कणम् । भागैः समानैर्गुटिका विधेया विषं शुनो हन्ति सुतप्तवारिणा ॥ १ ॥

कडवी तुंबीके बीज, मालती, गुड़ टंक १६, हिंगलू २ टंक जमालगोटेकी मिंगी, मिरच २ टंक, सुहागा २ टंक, गुडसे गोली बनाकर गरम जलसे लेवे तो कुत्तेका बिष दूर होवे ॥ १ ॥

गुडतैलार्कदुग्धैश्च लेपः श्वानविषं हरेत् ।
अपामार्गस्य मूलं तु कर्षकं मधुना लिहेत् ॥ २ ॥
श्वानदंष्ट्राविषं हन्ति लेपः कुक्कुटविष्ठया ।
उन्मत्तश्वानदष्ट्राणां कुमारीदलसैन्धवम् ।
सुखोष्णं यः पिबेत्पीडा त्रिदिनांते सुखावहा ॥ ३ ॥
आज्येन तण्डुलीमूलं तुलसीमूलिकापि वा ।
तण्डुलोदकपानेन गुटी श्वानविषापहा ॥ ४ ॥
तैलं तिलानां पललं गुडं च क्षीरं तथाऽर्कं सममेव

Aho ! Shrutgyanam

पीतम् । अलर्कसर्क्तं विषमाशु हन्ति सद्योभवं वायुरिवाभ्रवृन्दम् ॥ ५ ॥ छायाशुष्कार्कमूलं च मरीचं कर्ष भक्षयेत् । तद्वणं तत्क्षणादेव दहेल्लोहशलाकया ॥ ६ ॥ चोकमाज्यं मेघनादौ देयौ श्वानविषापहौ । अन्येषां सर्वकीटानां विषं हन्ति चराचरम् ॥ ७ ॥

गुड, तेल, आकका दूध लेपन करे तो श्वानका विष दूर होवे । ओंगाकी जड ४ टंक शहदमें चाटे तो कुत्तेका विष जाय । मुर्गेकी बीटका लेप करे तो कुत्तेका विष दूर होय । कुमारपाठा, सैंधानोन शहद गरम जलके साथ पीवे तो तीन दिनमें दर्द दूर होय अथवा घीसे चौलाईकी जडको पीवे या तुलसीकी जड घीसे पीवे वा तुलसीको चावलोंके पानीसे पीवे तो कुत्तेका विष दूर होवे । तेल, गुड, आकका दूध इनको पानाके संग पीनेस कुत्तेका विष एस दूर होवे जैसे बादलोंका समूह पवनसे । अथवा छायामें आककी जडको सुखा चार टंक मिरचोंके साथ खाय तो कुत्तेका विष शीघ्रही जाय । नीलाथोथा, घृत, चौलाईका रस इनको मिलाकर कुत्तेके काटेको देवे तो विष दूर होवे. अथवा लोहेकी कील गरम कर दाग देवे, इन दवाइयोंसे सब कीटादिकोंके विष दूर होते हैं ॥ २-७ ॥

कुष्ठविकारे त्रिफलादिगुटिका ।

त्रिफला षट्पला कार्या भल्लातानां चतुःपलम् ।
बाकुची पंचपलिका विडंगानां चतुःपलम् ॥ १ ॥
हतं लोहं त्रिवृच्चैव गुग्गुलुश्च शिलाजतु ।
एकैकं पलमात्रं स्यात्पलार्द्धं पौष्करं भवेत् ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

चित्रकस्य पलार्द्धं स्याद् द्विगुणं मरिचं भवेत् ।
नागरं पिप्पलीमूलं त्वगेला पत्रकुंकुमम् ॥ ३ ॥
शाणोन्मितं तदेकैकं चूर्णयेत् सर्वमेकतः ।
ततस्तत्प्रक्षिपेच्चूर्णं पक्वखण्डे च तत्समे ॥ ४ ॥
मोदकान्पलिकान्कृत्वा प्रयुंजीत यथोचितम् ।
हन्युः सर्वाणि कुष्ठानि त्रिदोषप्रभवामयान् ॥ ५ ॥
शिरोक्षिभ्रुगताग्रोगान्हन्यात् पृष्ठगदामपि ।
भगन्दरप्लीहगुल्मान् जिह्वातालुगलामयान् ॥ ६ ॥
प्राग्भोजनस्य देयं स्यादर्धकायस्थिते गदे ।
भेषजं भक्ष्यमध्ये च रोगे जठरसंस्थिते ।
भोजनस्योपरि ग्राह्यमूर्ध्वं जन्तुगदेषु च ॥ ७ ॥

त्रिफला ६ पल, भिलावा ४ पल, बावची ५ पल, वायविडंग ४ पल, सार १ पल, निसोथ १ पल, गूगल १ पल, शिलाजीत १ पल, पोहकरमूल १ पल, चीता आधा पल, मिरच १ पल, सोंठ, पीपल, मोथा, तज, तेजपात, इलायची, केशर, ये एक एक पल ले इन सबका चूर्ण कर और सबकी बराबर खांडकी चासनी कर १६ टंक प्रमाण लड्डू बना लेवे । इसके खानेसे कोढ, त्रिदोष, भगंदर, प्लीहा, गोला, जिह्वारोग, तालुरोग, गलरोग, आंखरोग, भौंहरोग, पीठरोग, कानरोगादिकोंका नाश करे, भोजनसे पहिले सेवन करे तो अर्द्धांगरोग जाय और मध्यमें खावे तो उदररोग जाय और पीछे खाय तो कमरके रोग दूर होवें ॥ १-७ ॥

भल्लातकांस्तिलैः सार्धमथवा शुण्ठितण्डुलैः ।
खण्डेन गुटिका कार्या कुष्ठरोगनिवृत्तये ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

भिलावोंको तिलोंके साथ अथवा सोंठ, चावलोंके साथ मिश्री मिलाकर आठ गुटिका कुष्ठरोगकी निवृत्तिके लिये बनावे ॥ १ ॥

सञ्जीवनी गुटिका ।

विडङ्गं नागरं कृष्णा पथ्याऽऽमलविभीतकौ ।
वचा गुडूची भल्लातं सद्विषं चात्र योजयेत् ॥ १ ॥
एतानि समभागानि गोमूत्रेण च पेषयेत् ।
गुंजाभा गुटिका कार्या दद्यादार्द्रकजै रसैः ॥ २ ॥
एकामजीर्णयुक्तस्या द्वे विषूच्यां च दापयेत् ।
तिस्रश्च सर्पदष्टस्य चतस्रः सन्निपातिनः ॥ ३ ॥
गुटिका जीवनी नाम संजीवयति मानवम् ॥ ४ ॥

नागपुरीययतिवरश्रीहर्षकीर्तिसंकलिते ।
वैद्यकसारोद्धारे गुटिकाध्यायस्तृतीयोऽयम् ॥ ३ ॥

वायविडंग, सोंठ, हरड, पीपल, आंवला, बहेडा, वच, गिलोय, शुद्ध भिलावा, शुद्ध तेलिया मीठा इनकी समान मात्रा लेवे, गोमूत्रमें खरल कर गुञ्जाप्रमाण गोलियां बनावे, अदरखके रससे देवे, अजीर्णवालेको एक गोली, हैजावालेको २ गोली, सर्प काटे हुएको ३ गोली, सन्निपातवालेको ४ गोली देवे तो वे रोग नाश होयँ ॥ १-४ ॥

इति श्री दत्तरामचौबेकृतयोगचिन्तामणिमाथुरीमञ्जूषा-भाषाटीकायां गुटिकाधिकारस्तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

क्वाथाधिकारः—चतुर्थोऽध्यायः ४.

तत्रादौ क्वाथभेदाः ।

रसः १ कल्को २ हिमः ३ क्वाथः ४ फांट ५ श्चैव स्मृतस्तथा । भेदाः पञ्च कषायाणां पूर्वं पूर्वं बलाधिकाः ॥ १ ॥ पानीयं षोडशगुणं क्षुण्णद्रव्यपले क्षिपेत् । मृत्पात्रे क्वाथयेद्ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् ॥ २ ॥ तज्जलं पाययेद्धीमान् कोष्णं मृद्वग्निसाधितम् । स्मृतः क्वाथः कषायश्च निर्यूहः स निगद्यते ॥ ३ ॥ क्वाथः सप्तविधः प्रोक्तः पाचनः शमनस्तथा । दीपनः क्लेदनो भेदी सन्तर्पणविमोहनौ ॥ ४ ॥ पाचनः पच्यते दोषान्दीपनो दीप्यतेऽनलम् । शोधनो मलशोधी स्याच्छमनः शमते गदान् ॥ ५ ॥ तर्पणस्तर्प्यते धीमान्भेदी चोत्क्लेदकारकः । विशोषी शोषमाधत्ते तस्मादुष्णं परिक्षिपेत् ॥ ६ ॥ क्लेदी विशोषी विज्ञाय वमनं कारयेत्ततः । क्वाथे कृते न लंघेत नान्यथाऽन्यत्र चालयेत् ॥ ७ ॥ पाचनोर्द्धविशेषः स्याच्छोधनो द्वादशांशकः । क्लेदनश्चतुरंशश्च शमनश्चाष्टशेषतः ॥ ८ ॥ दीपनीयो दशांशश्च तर्पणश्च दशांशकः । विशोषी षोडशांशश्च क्वाथभेदाः प्रकीर्तिताः ॥ ९ ॥

रस १, कल्क २, हिम, ३ क्वाथ ४, फांट ५, यह पांच भेद काढेके हैं, पूर्व २ में बल अधिक है. पानी १६ गुणा

Aho ! Shrutgyanam

औषधि १६ टंक गेरकर मिट्टीके बरतनमें काढा पकावे जब आठवां हिस्सा रहे तब उतार लेवे. उसका जल रोगीको पिलावे, मंदाग्निसे पकावे उसको क्वाथ, कषाय, निर्यूह कहते हैं. क्वाथ सात प्रकारका है– पाचन १, शमन २, क्लेदन ३, दीपन ४, भेदी ५ संतर्पण ६, विमोहन ७. पाचन जो है सो दोषोंको पचाता है. (पाचन उसे कहते हैं जो दो सेरका सेरभर रहजाय), दीपन उसे कहते हैं जो अग्निको दीप्त करे (दीपन १० कटोरीकी एक रहे), शोधन मल शुद्ध करे. (दो कटोरीकी एक रहे, उसे शोधन कहते हैं). शमन दोषोंको शांत करे, आठ कटोरीकी एक रहे) संतपर्णमें धातु बढे. (छः कटोरीकी एक रहे). क्लेदी उत्क्लेद करे. (चार कटोरीकी एक रहे) विशोषी शोष करता है (सोलह कटोरीकी एक रहे). इससे उष्ण जलकी परीक्षा कर लेवे। क्लेदी, विशोषी वमन करावे क्वाथ करके लांवे नहीं न चलायमान करे ॥ १-९ ॥

सर्ववायुविकारे रास्नादिक्वाथः ।

रास्ना गुडूची एरण्डं देवाह्वा चाभया सटी ।
बलोग्रगंधा पाठा च शतपुष्पा पुनर्नवा ॥ १ ॥
पंचमूली विषा मुंडी सर्षपश्च दुरालभा । यवानी
पुष्करं मूलमश्वगंधा प्रसारिणी ॥ २ ॥ गोक्षुरं
चांद्रहूपं च हपुषा वृद्धदारुकम् । शतावरी तथा
ब्राह्मी गुग्गुलुः क्षीरकंचुकी ॥ ३ ॥ समभागैरिमैः
सर्वैः कषायमुपकल्पयेत । वातरोगेषु सर्वेषु कंप
शोफे प्रतानके ॥ ४ ॥ मन्यास्तंभे तथा शोषे
पक्षाघाते सुदारुणे । आर्दिताक्षेपकुब्जे च हनुग्र-
हस्वरग्रहे ॥ ५ ॥ आढयवाते तथा मूके खंजे

Aho ! Shrutgyanam

चैवापबाहुके । गृध्रस्यां जानुभेदे च गुल्मशूले कटिग्रहे ॥ ६ ॥ सामे चैव निरामे च सप्तधातुगतानिले । आवृतेऽनावृते चैव वातरक्ते विशेषतः ॥७॥ एष द्वात्रिंशकः क्वाथः कृष्णात्रेयेण भाषितः । कृष्णचूर्णेन वा योगे राजगुग्गुलुनाथवा ॥ ८ ॥ अजमोदादिना वापि तैलेनैरण्डजेन वा ॥ ९ ॥

रास्ना, गिलोय, एरण्डकी जड, देवदारु, हरड, कचूर, खरेंटी, वच, पाढ, सौंफ, सोंठकी जड, पंचमूल, रसौत अण्डी, धमासा, अजमायन, पोहकरमूल, असगन्ध, प्रसारणी, (लताविशेष लज्जालूलता), गोखरू, अडूसा, हाऊबेर, विधायरा, शतावरी, ब्राह्मी, गूगलपंचांग, क्षीरकन्द इनकी बराबर मात्रा ले तीन पुडिया बनावे, अष्टावशेष क्वाथ, करे कुछ गूगल डाल देवे, फिर पीपलके चूर्णसे देवे अथवा योगराज गूगलसे अथवा एरण्डीके तेलसे अथवा अजमोदसे देय तो समस्त वायुरोग, कम्पवायु, प्रतानकवायु, जाबडेका स्तम्भ, मुखशोष, पक्षाघात, बडी पीडा, कुबडापन, हनुग्रह, स्वरभङ्ग और सम्पूर्ण वायुके विकारोंको दूर करे ॥ १–९ ॥

लघुरास्नादिक्वाथः ।

रास्नागुडूचीरातारिदेवदारुमहौषधैः ।
पिबेत्सर्वांगके वाते साममज्जास्थिसंधिगे ॥ १ ॥

रास्ना, गिलोय, एरंडका तेल, देवदारु, सोंठ, इनका अष्टावशेष क्वाथ कर पीवे तो सर्वांगवात दूर होय ॥ १ ॥

सन्निपातलक्षणम् ।

यदि कथमपि पुंसां जायते कर्णपीडा भ्रममदपरितापो मोहवैकल्यभावम् । विकलनयनहास्यो

Aho ! Shrutgyanam

गीतनृत्यप्रलापान्विदधति तमसाध्यं कम्पचित्तभ्रमाख्यम् ॥ १ ॥ उत्तिष्ठति बलात्कारं कृत्वा ब्रूते यदृच्छया । यामीति वदते नित्यं स त्याज्यो भिषगुत्तमैः ॥ २ ॥

जो कदाचित् पुरुषके कर्णपीडा होवे, तापकी पीडा, भ्रम, मद, परिताप, मोह, विकलता ऐसा रूप होय और आंखें फटीसी हो जाँय और हँसे, गावे, नाचे बके यह लक्षण होंय तो असाध्य और कोई चित्तभ्रमको असाध्य कहते हैं और बलात्कार करके उठे, जो मनमें आवै सो बोले और निरन्तर यही कहे ' जाताहूं ' तो उत्तम वैद्य उस रोगीको त्याग देवे ॥ १ ॥ २ ॥

सन्निपाते हरीतक्यादिक्वाथः ।

पथ्यापर्पटकटुकामृद्वीकादारुजलदभूनिम्बैः । ब्राह्मीपटोलसम्यक्क्वाथश्चित्तभ्रमं हन्ति ॥ १ ॥

हरड, पित्तपापडा, कुटकी, दाख, दारुहलदी, मोथा, चिरायता, ब्राह्मी, पटोलपत्र इनका क्वाथ चित्तभ्रम और सन्निपातको दूर करता है ॥ १ ॥

सन्निपाते तगरादिक्वाथः ।

तगरतुरगगन्धा पर्पटः शंखपुष्पी त्रिदशविटपतिक्ता भारती भूतकेशी । जलधरकृतमालश्वेतकी गोस्तनीनां सह हरति कषायःपक्षपानात्प्रलापम् ॥ १ ॥

तगर, असगन्ध, पित्तपापडा, शंखाहुली, देवदारु, ब्राह्मी, कटुक (कुटकी), छेड, अमलतास, मोथा, अमलतासका गूदा, सम्भालू, दाख इनका काढा १५ दिन पीवे तो असाध्य सन्निपातका नाश करता है ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

सन्निपाते दाहस्थानम् ।

कालीयके दगं दद्यादंसयोश्च प्रकोष्ठयोः ।
ब्रह्मस्थाने शंखयोश्च सन्निपातनिवृत्तये ॥ १ ॥

सन्निपातनिवृत्तिके निमित्त हाथोंके दोनों पहुँचोंमें अथवा बीच मस्तक और कनपटीमें अग्निसे दाग देय ॥ १ ॥

शंखयोश्च भ्रुवोर्मध्ये दशमद्वार एव च । ग्रीवायां दाहयेच्छीघ्रं प्रलापे सन्निपातके ॥ २ ॥ धनुर्वाते मृगीवाते ह्यन्तके चित्तविभ्रमे । अभिन्यासे च उन्मादे निश्चैतन्ये तथा वमौ ॥ ३ ॥ एतेषां चैव रोगाणां तप्तलोहशलाकया । भ्रुवौ शंखौ च पादौ च कृकाटीमूलरंध्रयोः ॥ ४ ॥ नेत्ररोगे ह्यपस्मारे भ्रुवौ शंखौ च दाहयेत् । कामले पाण्डुरोगे च कृकाटीमूलमादहेत् ॥ ५ ॥ पादरोगेषु सर्वेषु गुल्फोर्ध्वं चतुरंगुलम् । तिर्यग्दाहं प्रकुर्वीत दृष्ट्वा पादशिरो दहेत् ॥ ६ ॥ उदरं सर्वरोगेषु हृत्पीडापि प्रजायते । हृदये यदि पीडा स्याद्दाहयेद्धृदयोपरि। यत्र पीडाश्च जायन्ते तत्रतत्र च दाहयेत् ॥ ७ ॥

कनपटी, भौंह, दशमद्वार (ब्रह्मरंध्र), नाडमें दागे, प्रलापक सन्निपातमें और धनुर्वात, मृगी, अन्तक, चित्तभ्रम, अभिन्यास, उन्माद, बेहोश, वमन इन रोगोंमें लोहेकी शलाकासे भौंह, कनपटी, कण्ठ पैर और गुदामेंसे किसीमें दाग दे. नेत्ररोग, अपस्मार इनमें भौंह कनपटीमें दागे, कामलारोग, पांडुरोग इनमें कण्ठकी जडमें दाग दे, चरणरोग, गुल्मरोग इनमें चरणको ४ अंगुल ऊंचा दाग दे. उदरके रोगोंमें पेटपर दाग

Aho ! Shrutgyanam

दे । हृदपर्पीडामें हृदयपर दाग दे, जहां जहां पीडा होय, तहां तहां दागे ॥ २-७ ॥

सन्निपाते भाङ्गर्यादिक्काथः १

भार्ङ्गीभूनिम्बनिम्बैर्घनपटुकवचाव्योषवासाविशाला रास्नानंतापटोलीसुरतरुरजनीपाटालाटिंटुकीभिः। ब्राह्मीदार्वीगुडूचीत्रिवृतअतिविषापुष्करत्रायमाणा व्याघ्रीसिंहीकलिङ्गीत्रिफलसटियुतैःकल्पितस्तुल्यभागैः ॥ १ ॥ क्काथो द्वात्रिंशनामा त्रिकलितदशकान्सन्निपातान्निहंति शूलं श्वासं च हिक्कां कसनगुदरुजाध्मानविध्वंसकः स्यात् । मन्यास्तम्भांत्रवृद्धिं गदगलसुरतं सर्वसन्धिग्रहांश्च मातंगौघं निहन्यान्मृगरिपुरधिकं रोगजालं तथैव ॥ २ ॥

भारङ्गी, चिरायता, नीम्बकी छाल, मोथा, कुटकी, सोंठ, मिरच, पीपल, अडूसा, इन्द्रायन, रास्ना, जवासा, पटोलपत्र, देवदारु, हलदी, अरलू, जलशिरस, ब्राह्मी, दारुहलर्दी, गिलोय, निसोथ, अतीस, पोहकरमूल, त्रायमाण, कटेरी, इन्द्रजव, त्रिफला, कचूर इन सबको बराबर लेकर काढा करे, यह तेरह सन्निपातोंको दूर करे। शूल, श्वास, हिचकी, खांसी, गुदारोग, अफरा, आंतोंकी वृद्धि, गलरोग, अरुचि, सब संधियोंका गठ जाना इन रोगोंके जालका जैसे हाथियोंके समूहका सिंह नाश करे तैसे नाश करता है ॥ १ ॥ २ ॥

रुधिरविकारे मंजिष्ठादिक्काथः १-२ ।

मंजिष्ठापिचुमन्दचन्दनघनाछिन्नागवाक्षीवृषात्रायन्तीत्रिवृता शतद्रिरजनीभूनिम्बपाठाविषा। गायत्री-

Aho ! Shrutgyanam

त्रिफलापटोलकुटकी कीटद्विषापर्प्पटैरुग्रावल्गुज-
वासवत्सकयुतैः क्काथं विदध्याद्भिषक् ॥ १ ॥
कंडूमण्डलपुण्डरीककिटिभः पामाविचर्चिव्रणैः
सिध्मश्वित्रकिलासदद्रुरसकैर्व्याप्ताः प्रसुप्तास्त्वचः ।
किंचान्यत्क्रिमिभिर्विशीर्णगलितं घ्राणांघ्रिपायूद्भ-
वानेनं प्राप्य महाकषायमचिरात्पंचेषुतुल्या नराः॥२॥

१–मंजीठ, नीमकी छाल, रक्तचन्दन, मोथा, गिलोय, इन्द्रजव, अडूसा, त्रायमाण, निसोत, धमासा, दोनों हलदी, चिरायता, पाढ, अतीस, खैरसार, त्रिफला, पटोलपत्र, कुटकी, वायविडंग, पित्तपापडा, वंच, बावची, नेत्रबाला जवासा, कुडेकी छाल, बकायन इन सबको बराबर लेकर क्काथ कर पीनेसे खुजली, चकत्ता, फुनसी, फोडा, दाद, खाज ये समस्त विकार दूर होवें ॥ १ ॥ २ ॥

मंजिष्ठा कुटजामृताघनवचा शुण्ठी हरिद्राद्वयं
क्षुद्रारिष्टपटोलकुष्टकटुकीभार्ङ्गीविडङ्गान्वितम् ।
मूर्वादारुकलिङ्गभृङ्गमगधात्रायंतिपाठावरीगायत्री
त्रिफला किरातकमहानिम्बासनारग्वधम् ॥ १ ॥
श्यामावाल्गुजचन्दनं वरुणकं पूतीकशाखो-
टकं वासापर्पटसारिवाप्रतिविषानंताविशालाजलम् ।
मंजिष्ठादिमिमं कषायविधिना नित्यं पुमान्यःपिबे-
त्त्वग्दोषा ह्यचिरेण यांति विलयं कुष्ठानि चाष्टादश
॥ २ ॥ रक्तवातप्रसुप्तौ च विसर्पे विद्रधौ तथा ।
सर्वेषु वातरोगेषु मंजिष्ठादिः प्रशस्यते ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

२-मंजीठ, कुडेकी छाल, गिलोय, मोथा, वच, सोंठ, हलदी, कटेरी, नींबकी छाल, पटोलपत्र, कूठ, कुटकी, भारंगी, वायविडंग, चीता, मूर्वा देवदारु, इंद्रजव, भांगरा, पीपल, त्रायमाण, पाढ, शतावर, खैरसार, त्रिफला, चिरायता, बकायन, विजयसार, अमलतास, निसोथ, बावची, रक्तचन्दन, वरणाकी छाल, कंजुआ, सहोडाकी छाल, बांसा, पित्तपापडा, सारिवा, अतीस, जवासा, नेत्रवाला इनका काढा नित्य पीवे तो संपूर्ण त्वचाके दोष और १८ प्रकारके कोढ दूर होवें ॥१-३॥

मंजिष्ठादि चतुःषष्टिक्काथः ।

मंजिष्ठा त्रिफला प्रियंगुममृता ब्राह्मी वचा पौष्करं भृङ्गास्याात्रिकटुः किरातकविषानिर्गुण्डिकाऽऽरग्वधः । त्रायन्ती खदिरं कटुत्वचवृकी पीताद्वयं रोहिणीं तिक्ता पर्पटवासकेन्द्रफलिनीनंताविशालागदम् ॥ १ ॥ एरण्डं पिचुमंदचित्रकवरी भार्ङ्गी मलेन्द्रं सटी बिल्वं निम्बमजूलपाडलत्रिवृत्तेजस्विनीवालकम् । दंतीमूलपलाशचन्दनयुगं मुण्डीविडंगान्वितैरर्कैयोररणीकरंजधवयोः पर्णानि मूलानि च ॥ २ ॥ क्षुद्राद्वाद्वयदेवदारुजलदाः कह्लारकं कल्कजमेभिः सिद्ध असौ पटोलसहितैः क्काथश्चतुःषष्टिकः । अष्टांशेन विपाचयेच्च मति मानुत्कल्प्यमृद्धाजने पीतो हन्ति सपित्तरक्तमखिलं कुष्ठानि चाष्टादश ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

मंजीठ, हरड, बहेडा आँवला, फूलप्रियंगू, गिलोय, ब्राह्मी, वच, पोहकरमूल, भांगरा, सोंठ, मिरच, पीपल, चिरायता, अतीस, संभालू, अमलतास, त्रायमाण, खैरसाल, कुटकी, छाल, पाठा (नेपाली चिरायता), निसोत, कुटकी, दोनों हलदी, पित्तपापडा, अडूसा, इंद्रायण, जवासा, इन्द्रयव, कूठ, अंडकी जड, नींबकी छाल, चीता, शतावरी, भारंगी, चन्दन, कचूर धायके फूल, छड, पाढल, निसोथ, मालकांगनी, नेत्रवाला, दन्ती, (वृक्षविशेष) की जड, ढाकके बीज, चन्दन, मुंडी, वायविडंग, कायफल, अरनी, कंजुआ, धायके फूल, और मूल, दोनो कटेरी, देवदारु, मोथा, कमलगट्टा, पटोलपत्र, इनका क्वाथ करे, जव इसका आठवां हिस्सा रहजावे तब इसके पीनेसे वातरक्त और १८ प्रकारके कुष्ठ नाश होवें ॥ १-३ ॥

कुष्ठे खदिरादिक्वाथः ।

खदिरः कुण्डली वासा पटोलं च फलत्रिकम् ।
अरिष्टसमभगोऽयं क्वाथः कुष्ठविनाशनः ॥ १ ॥

खैरसार, गिलोय, अडूसा, पटोलपत्र, त्रिफला, नीमकी छाल इनकी बराबर मात्रा लेकर मिट्टीके बरतनमें काढा कर पीवे तो कुष्ठ दूर होवे ॥ १ ॥

सन्निपातज्वरे भूनिंबादिक्वाथः ।

भूनिम्बदारुदशमूलमहौषधाब्दतिक्तेन्द्रबीजघनके भकणाकषायः । तन्द्रा प्रलापकसनारुचिदाहमोह-श्वाशादियुक्तमखिलं ज्वरमाशु हंति ॥ १ ॥

चिरायता, देवदारु, दशमूल, सोंठ, जीरा कुटकी, इन्द्रजव, गजपीपल, इनको समान मात्रा लेकर क्वाथ पकावे फिर ठंडा कर पीवे तो निद्रा, प्रलाप खांसी, श्वास, अरुचि, दाह, मोह, मूर्च्छा, ज्वर ये संपूर्ण दूर होवें ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अष्टादशांगक्वाथः ।

किराततकटुकामुस्ताधान्येन्द्रयवनागरैः ।
दशमूलमहादारुगजपिप्पलिकायुतैः ॥ १ ॥
कृतः कषायः पार्श्वार्तिसन्निपातज्वरं जयेत ।
कासश्वासवमीहिक्कातन्द्राग्रहणिनाशनः ॥ २ ॥

चिरायता, कुटकी, मोथा, धनिया, इन्द्रजव, सोंठ, दशमूल, देवदारु, गजपीपल, इनका क्वाथ पीनेसे पसलियोंका दरद, सन्निपातज्वर, खांसी, श्वास, वमन, हिचकी और तन्द्रादिदोष दूर होते हैं ॥ १ ॥ २ ॥

विषमज्वरे दार्व्यादिक्वाथः ।

दार्वीदारुकलिंगलोहिकलताशम्याकपाठासटी-
शौण्डीवीरकिरातकुञ्जरकणात्रायंतिकापद्मकैः ।
चक्राधान्यकनागराब्दसरलाशीघ्रांबुसिंहीशिवा-
व्याघ्रीपर्पटदर्भमूलकटुकाऽनन्ताऽमृतापुष्करैः ॥
धातूत्थं विषमं त्रिदोषजनितं चैकाहिकं द्व्याहिकं
पित्तं हन्ति महाव्यथं बहुरुजं सद्यः प्रलापान्वितम् ॥ १ ॥

दारुहलदी, देवदारु, इन्द्रजव, मंजीठ, अमलतास, पाढ, कचूर, पीपल, खस, चिरायता, गजपीपल, त्रायमाण, पद्माख, काकडासिंगी, धनियां, सोंठ, मोथा, निसोथ, पियाबांसा, हरड, कटेरी, पित्तपापडा, कुटकी, जवासा, गिलोय, पोहकरमूल, इनका क्वाथ अष्टावशेष लेनेसे धातुगत ज्वर, ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्रिदोष, महाज्वर, पित्तज्वर, प्रलापादि दूर होवें ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

दशमूलक्वाथः ।

शालपर्णीपृष्टपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुरैः। बिल्वाग्निमंथ-स्योनाककाश्मरीपाटलायुतैः ॥ १ ॥ दशमूलमिति ख्यातं क्वथितं तज्जलं पिबेत् । पिप्पलीचूर्णसंयुक्तं वातश्लेष्महरं परम् ॥ २ सन्निपातज्वरं हन्ति सूतिकादोषनाशनः । हृत्कंठग्रहपार्श्वार्ति तन्द्राम-स्तकशूलहृत् ॥ ३ ॥

शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, दोनों कटेरी, गोखरू, बेलगिरी, अरणी, अरल्लु, खंभारी (वृक्षविशेष) पाढर यह दशमूल नामक काढा प्रसिद्ध है, इस क्वाथको पीपलके चूर्णके संग लेवे तो वात श्लेष्मको दूर करै । सन्निपात, प्रसूत, हृदयरोग, कंठग्रह, पसलीका दरद तंद्रा शिरदरद इनका नाश करे ॥ १–३ ॥

वातशोफे पुनर्नवादिक्वाथः १–२ ।

पुनर्नवानिंवपटोलशुंठीतिक्तामृतादार्व्यभयाक-षायः । सर्वांगशोफोदरपाण्डुरोगान्सम्यक्प्रयुक्तः सकलान्निहन्ति ॥ १ ॥

१–सांठीकी जड, नींबकी छाल, पटोलपत्र, सोंठ, कुटकी, गिलोय, दारु हलदी, हरड इनकी समान मात्रा लेकर

१–श्रीपर्णीनीज्वलनमंथवसंतदूतीटिंटूकबिल्वमिति तल्लघु पंचमूलम् । व्याघ्रीबृहत्यतिगुहाश्वगुहाश्वदंष्ट्रा ज्येष्ठं द्वयं च गदितं दशमूलमेतत् ॥

शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, अरणी, माधवीलता, बेल ये लघुपंचमूल हैं । दोनों कटेरी, गोखरू, कंभारी, पाढर ये बृहत् पंचमूल हैं, और छोटे मिलकर दशमूल कहाजाता है ॥ ऐसा भी पाठ है ॥

Aho ! Shrutgyanam

इनका काढा कर पीनेसे सर्वांग सूजन, उदररोग और पांडुरोग दूर होवें ॥ १ ॥

पुनर्नवाभयानिम्बदार्वीतिक्तापटोलकैः । गुडूचीनागरयुतैः क्वाथः सर्वाङ्गशोफहा ॥ १ ॥ गोमूत्रगुग्गुलयुत आमशोफोदरापहः ॥ २ ॥

२-सांठीकी जड, हरड, नींबकी छाल, दारुहलदी, कुटकी, पटोलपत्र, गिलोय, सोंठ, इनका काढाभी सर्वांगसूजनका नाश करता है और गोमूत्र तथा गूगलयुक्त लव तो आमवात, शोफ और उदरके रोगोंको दूर करता है ॥ १ ॥ २ ॥

कफरोगे कट्फलादिक्वाथः ।

कट्फलांबुदभार्ङ्गीभिर्धान्यरोहिषपर्पटैः । वचाहरीतकीशृंगीदेवदारुमहौषधः । क्वाथः कासं ज्वरं हन्ति श्वासश्लेष्मगलग्रहान् ॥ १ ॥

कायफल, मोथा, भारंगी, धनियां, रोहिषतृण, पित्तपापडा, वच, हरड, काकडासिंगी, देवदारु, सोंठ इन औषधियोंका काढा कर पीवे तो खांसी, ज्वर, श्वास, कफ, गलग्रह ये सम्पूर्ण रोग दूर हो जावें ॥ १ ॥

शृंग्यादिक्वाथः ।

शृंगी दारुनिशा सुराह्वमभया भार्ङ्गी च विश्वौषधं मुस्तापर्पटकट्फलं च सवचा कुस्तुंबुरुं कत्तृणम् । क्वाथं क्षौद्रयुतं पिबेच्च कफजे कासे क्षये पीनसे श्वासे वातयुते ज्वरे च वमने हिक्कासु पित्तामये ॥ १ ॥

काकडासिंगी, दारुहलदी, देवदारु, हरड, भारंगी, सोंठ, मोथा, पित्तपापडा, कायफल, वच, धनियां, रोहिषतृण इनका काढा शह-

Aho ! Shrutgyanam

दसंयुक्त पीनेसे कफ, श्वास, खांसी, क्षय, पीनस, वातज्वर, वमन, हिचकी और पित्तरोग सब नाश होवें ॥ १ ॥

कफविकारे गुडूच्यादिक्वाथः ।

धाराधाराधरवृषविषागौरवल्लीन्द्रवल्लीदार्वीकालीकरालीअरणिकरिकणाकट्फलारिष्टकुष्ठैः । पृथ्वीपृथ्वीकलिसुरतरूग्राकलिंगाकलिंगैः शिग्रुव्याघ्रीकटुतृणवधूरोहणीरोहिणीभिः । क्वाथश्चैषः कवचरचना पंचकोलानुकूलैस्तुल्यैरेभिः कफगदजये सिद्धिकं त्रिंशदार्यां ॥ १ ॥

गिलोय, नागरमोथा, अडूसा, अतीस, हलदी, इंद्रजव, दारुहलदी, अगर अरणी, गजपीपल, कायफल, नींबकी छाल, कूठ, जीरा, हींग, बहेडा, देवदारु, वच, इंद्रजव, कुडेकी छाल, सहँजना, कटेरी, कचूर गन्धेल (गन्धपलासी,) कुटकी, हरड इनमें पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ इनकी सममात्रा लेकर अष्टावशेष क्वाथ करके पीवे तो कफके रोग दूर होवें ॥ १ ॥

वातरोगे लशुनादिक्वाथः ।

रसोनं पिप्पलीमूलं कुचीलं विश्वभेषजम् ।
भार्ङ्गी पुष्करमूलं च किरातं कलिहारकम् ॥ १ ॥
समांशाष्टावशेषः स्यात्क्वाथो वातविनाशने ।
धनुषं मृगवातं च सन्निपातं निवारयेत् ॥ २ ॥
त्र्यूषणं चार्द्धकर्षं च प्रक्षिप्य योजयेद्भिषक् ।
अशीतिर्वातजान् रोगांस्तांश्च सर्वान् प्रणाशयेत् ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

लहसन, पीपलामूल, शुद्ध कुचला, सोंठ, भारंगी, पोहकरमूल, चिरायता, अकरकरा इन सबको बराबर लेकर अष्टावशेष काढा करके पीनेसे वायुरोग, धनुर्वायु, मृगी, सन्निपात आदि सम्पूर्ण दोषोंको दूर करें और ऊपरसे सोंठ, मिरच, पीपल टंक २ डालकर पीवे तो अस्सी प्रकारके वातजन्य रोगोंको नाश करता है ॥ १-३ ॥

शिरोव्यथायां श्रेष्ठादिक्वाथः ।

श्रेष्ठानिम्बपटोलमुस्तरजनीत्रायन्तिहेमामृताः
कृत्वा षड्गुणवारिणा विनिहितं षष्ठांशपीता निशि ।
भ्रूशंखाक्षिशिरोरुजां बहुविधां कर्णास्यनासागदं
नक्तान्ध्यं तिमिरं च काचपटलं दैत्यान्यथा केशवः॥ १

त्रिफला, नींबकी छाल, पटोल, मोथा, दोनों हलदी, त्रायमाण, चिरायता, गिलोय इनका काढा छः गुण पानीमें करे जब एक हिस्सा रहजाय तब पीवे तो भौंहका रोग, (शंख) कनपटीके रोग, आंखरोग, मस्तकरोग, रतौंधा, तिमिर, मोतियाबिन्दु काचबिन्दु ये सम्पूर्ण रोग नाश होवें ॥ १ ॥

पथ्यादिक्वाथः ।

पथ्याक्षधात्रीभूनिम्बैर्निशानिम्बामृतायुतैः ।
कृतः क्वाथः षडङ्गोऽयं सगुडः शीर्षशूलहा ॥ १ ॥
भ्रूकर्णशंखशूलानि तथाऽर्द्धशिरसो रुजम् ।
सूर्यावर्त्तं शंखकं च चक्षुःपीडां व्यपोहति ॥ २ ॥

हरड, बहेडा, आंवला, चिरायता, हलदी, नींबकी छाल, गिलोय इनको बराबर ले काढा करे षष्ठांश पानी रहे तब उतारलेवे, गुड

Aho ! Shrutgyanam

डालकर पीवे तो माथेका दरद, भौंह, कान, शिखा, आधासीसी, रतौंधा आदि पीडा नाश होवे ॥ १ ॥

ज्वरे उपद्रव दश भवन्ति । तन्नामानि ।

श्वासमूर्च्छारुचिच्छर्दितृषातीसारहृद्ग्रहाः ।
हिक्का कासोऽङ्गभंगश्च ज्वरस्योपद्रवा दश ॥ १ ॥

श्वास, मूर्च्छा, अरुचि, वमन, प्यास, अतीसार, हृदयग्रह, हिचकी, खांसी, अंगमर्दन ये ज्वरके दश उपद्रव हैं ॥ १ ॥

ज्वरे क्षुद्रादिक्वाथः ।

क्षुद्रामृतानागरपुष्कराह्वैः कृतः कषायः कफमारुतोत्तरे । सश्वासकासारुचिपार्श्वशूले ज्वरे त्रिदोषप्रभवे प्रशस्यते ॥ १ ॥

कटेरी और गिलोय, सोंठ, पोहकरमूल इन सबको एक एक टंक लेवे और काढा करके पीवे तो कफ, वायु, श्वास, खांसी, अरुचि, पसलियोंका दरद और त्रिदोष ज्वरादि नाश हो ॥ १ ॥

वृद्धक्षुद्रादिक्वाथः १-२ ।

क्षुद्रानिम्बपटोलचन्दनघनैस्तिक्तामृतापद्मकैर्वा-
सावेसणशुण्ठिपुष्करजटाभूनिम्बभार्ङ्ग्या सह ।
बीजं कुष्ठधमासकं कृमिहरं कासं वमिं कामलां
क्वाथश्चाष्टविधं ज्वरं कफमरुत्पित्तं सदाहं जयेत् ॥१॥

कटेरी, नींबकी छाल, पटोलपत्र, चन्दन, मोथा, गिलाय, पद्माख, धनियां, सोंठ, पोहकरमूल, चिरायता, भारंगी, इन्द्रजौ, कूठ, धमासा, इनका काढा कर पीनेसे कृमिरोग, खांसी, वमन, कामला, आठ प्रकारके ज्वर, कफ वातापित्त और दाहादि दूर होवें ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

क्षुद्राधान्यकशुण्ठीभिर्गुडूचीमुस्तपद्मकैः ।
रक्तचन्दनभूनिम्बपटोलवृषपुष्करैः ॥ २ ॥
कटुकेन्द्रयवारिष्टभार्ङ्गीपर्पटकैः समैः ।
क्वाथं प्रातर्निषेवेत सद्यः शीतज्वरच्छिदम् ॥ ३ ॥

२-कटेरी, धनियां, सोंठ, गिलोय, मोथा, पद्माख, रक्तचन्दन, चिरायता, पटोलपत्र, अडूसा, पोहकरमूल, कुटकी, इन्द्रजव, नींबकी छाल- भारंगी, पित्तपापडा यह सब बराबर ले काढा बनाकर पीवे तो शीतज्वरका नाश करे ॥ २ ॥ ३ ॥

शुण्ठ्यादिक्काथः ।

नागरं देवकाष्ठं च धान्यकं बृहतीद्वयम् ।
दद्यात्पाचनकं पूर्वं ज्वरिताय हितावहम् ॥ १ ॥

सोंठ, देवदारु, धनियां छोटी बडी दोनों कटेरी इन पांच औषधियोंका काढा पाचनके अर्थ तथा ज्वरनाशनार्थ ज्वरवालोको देवे ॥१॥

धान्यपंचकक्काथः १-२ ।

धान्यनागरमुस्तं च बालकं बिल्वमेव च ।
आमशूलविबंधघ्नं पाचनं वह्निदीपनम् ॥ १ ॥

१-धनियां, सोंठ, मोथा, नेत्रवाला, बेलगिरी इनका क्वाथ आमशूल तथा विबंधको दूर करे और अग्निको दीप्त करे ॥ १ ॥

धान्यनागरजः क्वाथः पाचनो दीपनस्तथा ।
एरण्डमूलयुक्तश्च जयेदामानिलव्यथाम् ॥ १ ॥

२-धनियां, सोंठ इनका काढा पाचन, दीपन करे और जो एरंडकी जड डाले तौ आमवातको दूर करे ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

आरग्वधादिपंचक्काथः ।

आरग्वधं ग्रंथिकतिक्तमुस्ताहरीतिकीभिः क्कथितः कषायः । सामे सशूले कफवातयुक्ते ज्वरे हितो दीपनपाचनश्च ॥ १ ॥

अमलतास, पीपलामूल, कुटकी, मोथा, हरड इनका काढा आमशूल, कफ वातज्वर इनमें हितकारी तथा दीपन पाचन है ॥ १ ॥

पंचभद्रक्काथः ।

पर्पटाब्दाऽमृताविश्वकैरातैः साधितं जलम् । पञ्चभद्रमिदं ज्ञेयं वातपित्तज्वरापहम् ॥ १ ॥

पित्तपापडा, मोथा, गिलोय, सोंठ, चिरायता इनका काढा वातपित्तज्वरका नाश करता है ॥ १ ॥

शट्यादिक्काथः ।

शटीपुष्करमूलं च भार्ङ्गी शृङ्गी दुरालभा । गुडूची नागरा पाठा किरातं कटुरोहिणी ॥ १ ॥ एष शट्यादिकः क्काथः सर्ववातज्वरापहः । कासादिशोफयुक्तेषु दद्यात्सोपद्रवेषु च ॥ २ ॥

कचूर, पोहकरमूल, भारंगी, काकडासिंगी, कटेरी, गिलोय, सोंठ, पाढ, चिरायता, कुटकी, यह शट्यादिक्काथ सम्पूर्ण वातज्वरोंका नाश करता है । खांसी सूजनभी होय तो यही काढा देवै तौ आराम होवे ॥ १ ॥ २ ॥

बृहच्छट्यादिक्काथः ।

शटी पटोलद्विनिशोग्रगन्धा वासा किरातं दशमूलधारा । सहाचरी भार्ङ्गिवरी सशृङ्गी राम्नेन्द्रबीजं

Aho ! Shrutgyanam

सुरदारु शिग्रुः ॥ १ ॥ दुरालभा धान्यकशुण्ठि-
पाठासुरेन्द्रकल्कं सहरीतकीभिः । त्रायंतकेन्द्रः
कटुकागदं च कषाय एषां विहितः सवायौ ॥ २ ॥
श्लेष्मज्वरे कासस्श्वासशूले वाताधिके रोगिणि
शीतके च । चिरज्वरे कासस्श्वासकेऽपि नूनं
हितोऽयं सततं शत्यादिः (?) ॥ ३ ॥

कचूर, पटोलपत्र, दोनों हलदी, वच, अडसा, चिरायता, दशमूल, गिलोय, भूगोनी, भारंगी, शतावरी, काकडासिंगी, रास्ना, इंद्रजौ, देवदारु, सहंजना, कटेरी, धानियां, सोंठ, पाढ कूडेकी छाल, हरड, त्रायमाण, इन्द्रायण, कुटकी, कूठ. इनका काढा ज्वर, श्लेष्मज्वर, खांसी, श्वास, शूल, वात, शीतांग, बहुत दिनोंका ज्वर, दृष्टिज्वर, मल, संग्रहणी आदिको दूर करे ॥ १-३ ॥

पटोलादिक्काथः ।

पटोलं च गुडूची च मुस्ता चैव धमासकम् ।
निम्बत्वक्पर्पटं तिक्ता भूनिंबत्रिफलावृषाः ॥ १ ॥
पटोलादिरयं क्वाथो वातज्वरहरः स्मृतः ॥ २ ॥

पटोलपत्र, गिलोय, मोथा, जवासा, नींबकी छाल, पित्तपापड़ा, चिरायता, त्रिफला, अडूसा यह पटोलादिकाथ वातज्वरका नाश करता है ॥ १ ॥ २ ॥

मुस्तादिक्काथः ।

मुस्ता पर्पटकं शुण्ठी गुडूची सदुरालभा ।
कफवातारुचिच्छर्दिदाहशोषज्वरापहः ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

माथा, पित्तपापडा, साठ, गिलोय, जवासा यह क्वाथ वादी, अरुचि, वमन, दाह, शोष, ज्वर, इन सब रोगोंका नाश करै ॥ १ ॥

वृद्धमुस्तादिक्काथः ।

मुस्ता गुडूची सह नागरेण वासाजलं पर्पटकं च पथ्या । क्षुद्रा च दुःस्पर्शयुतः कषायः पीतो हितो वातकफज्वरस्य ॥ १ ॥

माथा, गिलोय, सोंठ, अडूसा, नेत्रवाला, पित्तपापडा, हरड, कटेरी, जवासा यह काढा वातज्वर और कफज्वरका नाश करता है ॥ १ ॥

गुडूच्यादिक्काथः ।

गुडूचीनिम्बधान्याकं पद्मकं रक्तचन्दनम् ।
एष सर्वज्वरं हन्ति गुडूच्यादिस्तु दीपनः ॥ १ ॥

१-गिलोय, नींबकी छाल, धनियां, पद्माख, रक्तचन्दन इनका काढा सब ज्वरका नाश करता है ॥ १ ॥

गुडूचीधान्यमुस्ताभिश्चन्दनोशीरनागरैः ।
कृतं क्वाथं पिबेत्क्षौद्रसितायुक्तं ज्वरातुरः ॥ १ ॥

२-गिलोय, धनियां मोथा, खस और सोंठ, इनके काढेको मिश्री और शहदके साथ पीवे तो ज्वरकी शांति होवे ॥ १ ॥

वृद्धगुडूच्यादिक्काथः ।

गुडूचीधान्यकोशीरशुंठीवालकपर्पटैः ।
बिल्वप्रतिविषापाठारक्तचन्दनवत्सकैः ॥ १ ॥
किरातमुस्तेन्द्रयवैः क्वथितं शिशिरे जले ।
सक्षौद्रं रक्तपित्तघ्नं ज्वरातीसारनाशनम् ॥ २ ॥

गिलोय, धनियां, खस, सोंठ, हाऊबेर, पित्तपापडा, बेल-

Aho ! Shrutgyanam

गिरी अतीस, पाढ, रक्तचन्दन, कुडेकी छाल, चिरायता, मोथा, इन्द्रजौ इनका अष्टावशेष काढा ठंढा कर शहद्के संग लेवे तो रक्त, पित्तज्वर, अतीसार ये सब दूर होवें ॥ १–२ ॥

चन्दनादिक्वाथः ।

चन्दनं च सुगन्धं च बालकं पित्तपर्पटम् ।
मुस्ता शुंठी किरातं च उशीरं पित्तनाशनम् ॥ १ ॥

मलयागिरि चन्दन, सुगंधवाला, नेत्रवाला, पित्तपापडा, मोथा, सोंठ, चिरायता, खस इनका काढा पित्तज्वरका नाश करता है ॥ १ ॥

बृद्धचन्दनादिक्वाथः ।

मलयजपिचुविश्वाः श्रीफलं पद्मकं च जलरुहक-
टुमुस्तासारिवाहारहूरा। अतिविषयवयष्टीकल्कि-
तस्तुल्यभागैर्हरति गुरुविबाधां पित्तसन्तापमू-
र्च्छाम् ॥ १ ॥

मलयागिरि चन्दन, नींबकी छाल, सोंठ, बेलगिरी, पद्माख, कमल, कुटकी, मोथा, सारिवा (लताविशेष), मुनक्का, अतीस, इन्द्रजव, मुलहठी इनकी सम मात्रा लेकर काढा बनाकर लेवे तो पित्तकी मूर्च्छा दूर होवे ॥ १ ॥

त्रायमाणादिक्वाथः ।

त्रायंतीपर्प्पटोशीरतिक्ताभूनिम्बदुस्पृशा ।
कषायो मधुसंयुक्तः पित्तज्वरविनाशनः ॥ १ ॥

त्रायमाण, पित्तपापडा, खस, चिरायता, कुटकी, जवासा इनका काढा शहद्के साथ पीनेसे पित्तज्वरका नाश होय ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

वृद्धत्रायमाणादिक्काथः ।

त्रायंतीन्द्रयवावासाछिन्नातिक्तापटोलकैः ।
निम्बदुस्पर्शभूनिम्बशम्पाकपद्मपर्प्पटैः ॥ १ ॥
अष्टावशेषितः क्वाथः पित्तश्लेष्मज्वरापहः ॥ २ ॥

त्रायमाण, इन्द्रजौ, अडूसा, गिलोय, कुटकी, चिरायता, पटोलपत्र, नींबकी छाल, जवासा, अमलतास, पद्माख, पित्तपापडा इनका काढा करके पीवे तो पित्तश्लेष्मज्वरको दूर करता है ॥ १ ॥ २ ॥

द्राक्षादिक्काथः ।

द्राक्षाभयापर्प्पटकाब्दतिक्ताक्काथं स सम्यक्सफलं विदध्यात् । प्रलापमूर्च्छाभ्रमदाहशोफतृष्णान्विते पित्तभवज्वरेऽपि ॥ १ ॥

मुनक्का, हरड, पित्तपापडा, मोथा, कुटकी इनका काढा अमलतास संयुक्त देनेसे प्रलाप, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, सूजन, प्यास इन करके युक्त जो पित्तज्वर उसको नाश करे ॥ २ ॥

वासादिक्काथः १-२ ।

वासाद्राक्षाभयाक्वाथः पीतः सक्षौद्रशर्करः ।
निहन्ति रक्तपित्तार्तिं श्वासं कासं ज्वरं तथा ॥ १ ॥

१-अडूसा, मुनक्का, हरड इनका काढा शहद और मिश्री डालकर पीवे तो रक्तपित्त, श्वास, खांसी और ज्वर इनका नाश करे ॥ १ ॥

वासा क्षुद्राऽमृता मुस्ता शुण्ठी धात्री समाक्षिकः ।
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तो विषमज्वरनाशनः ॥ २ ॥

२-अडूसा, कटेरी, गिलोय, मोथा, सोंठ, आंवले, शहद इनको पीपलसंयुक्त काढा कर पीनेसे विषमज्वर जाय ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पटोलादिक्वाथः ।

पटोलत्रिफलानिम्बद्राक्षाशम्पाकवासकैः ।
क्वाथं सितामधुयुतं पिबेदैकाहिके ज्वरे ॥ १ ॥

पटोलपत्र, नींबकी छाल, मुनक्का, अमलतास, अडूसा, इनका मिश्री और शहदके साथ काढा पीवे तो ऐकाहिक ज्वर नाश होय ॥ १ ॥

तृतीयज्वरनाशाय तृष्णादाहनिवारणः ।
पीतो मरिचचूर्णेन तुलसीपत्रजो रसः ॥
द्रोणपुष्पीरसो वापि निहन्ति विषमज्वरान् ॥ १ ॥

मिरच चूर्णको तुलसीपत्ररस संयुक्त पीनेसे तृतीय ज्वर, प्यास तथा दाह दूर होवे और गोभीके फूलके रसके साथ पीनेसे विषमज्वरका नाश करे ॥ १ ॥

ज्वरातिसारे नागरादिक्वाथः ।

नागरातिविषामुस्ताभूनिम्बामृतवत्सकैः ।
सर्वज्वरहरः क्वाथः सर्वातीसारनाशनः ॥ १ ॥

सोंठ, अतीस, मोथा, चिरायता, गिलोय, कूडेकी छाल इनका सम्पूर्ण ज्वरों तथा अतीसारको नाश करता है ॥ १ ॥

अतीसारे वत्सकादिक्वाथः ।

सवत्सकः सातिविषः सबिल्वः सोदीच्यमुस्तश्च कृतः कषायः । सामे सशूले च सशोणिते च चिरप्रवृत्ते च हितोऽतिसारे ॥ १ ॥

कूडेकी छाल, अतीस, बेलगिरी, नेत्रवाला, मोथा इनका काढा कर पीवे तो । आमशूल, रक्तातिसार, बहुत दिनका अतीसार ये नाश होवें ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अतीसारे कुटजाष्टकक्काथः ।

कुटजातिविषापाठाधातकीलोध्रमुस्तकैः ।
ह्रीबेरदाडिमयुतैः कृतः क्वाथःसमाक्षिकः ॥ १ ॥
पेयो मोचरसेनैव कुटजाष्टकसंज्ञकः ।
अतिसाराञ्जयेद्दाहं रक्तशूलामदुस्तरान् ॥ २ ॥

कूडेकी छाल, अतीस, पाढ, धायके, फूल, लोध, मोथा, हाऊबेर अनारका बक्कल इनका काढा शहद डालकर मोचरस संयुक्त लेवे तौ अतीसार, दाह, रुधिरशूल, भयानक आमशूल ये सब दूर होवें ॥ १ ॥ ९ ॥

मोचरसादिक्काथः ।

मोचरसश्च मञ्जिष्ठा धातकी पद्मकेसरम् ।
पिष्टैरेतैर्यवागुः स्याद्रक्तातीसारनाशिनी ॥ १ ॥
धातकी विश्वपाषाणसालूरमजमोदकम् ।
मुस्ता मोचरसं तक्रं सर्वातीसारनाशनम् ॥ २ ॥

मोचरस, मंजीठ, धायके फूल, कमल इनका काढा कर लेय तौ रुधिरातिसारको दूर करे । धायके फूल, सोंठ, पाषाणभेद, बेलगिरी, अजमोद, मोथा, मोचरस इनको पेठेके साथ लेनेसे सब प्रकारका अतीसार नाश होवे ॥ १ ॥ २ ॥

दार्व्यादिक्काथः ।

दार्व्यंबुदातिक्तफलत्रिकं च क्षुद्रापटोलं रजनी सनिंबम् । क्वाथं विदध्याज्ज्वरसन्निपाते निश्चेतने पुंसि विबोधनार्थम् ॥ १ ॥

दारुहलदी, मोथा, कुटकी, त्रिफला, कटेरी, पटोलपत्र, हलदी, नींबकी छाल इनका काढा कर पीवे तौ सन्निपातजन्य ज्वरको नाश करे और अचेतको सचेत करे ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

हारिद्रादिज्वरे गुडूच्यादिक्वाथत्रयम् ।

हारिद्रके हरिद्राभो वर्णमूत्रादिरार्तिमान् ।
आदौ विरेचनं कृत्वा स्तम्भयेत्तदनन्तरम् ।
शृङ्गैर्यद्वा जलौकाभी रक्तस्रावं तु कारयेत् ॥
त्रायन्तीमुस्तमधुकाद्राक्षाभूनिम्बवासकैः ॥ १ ॥
गुडूचीपिप्पलीमूलनिम्बैः क्वाथं प्रकारयेत् ।
शीतं मधुयुतं दद्याद्धारिद्रज्वरनाशनम् ॥ २ ॥
कृते क्रियाविधानेऽपि संज्ञा यस्य न जायते ।
दहेत्तं पादयोर्नाले कृकाटीरंध्रमौलयोः ॥ ३ ॥
शंखयोश्च भ्रुवोर्मध्ये दशमद्वार एव च ।
ग्रीवायां दाहयेच्छीघ्रं प्रलापे सन्निपातके ॥ ४ ॥
वालं च पर्पटं मुस्ता गुडूची धान्यकं शिफा ।
आरग्वधं निंम्बछाली तिक्ताऽनंता हरीतकी ॥ ५ ॥
द्राक्षा च चन्दनं रक्तं पद्मकं च शतावरीम् ।
सममात्रं कृतः क्वाथो हरिद्रकहरो मतः ॥ ६ ॥
पुनर्नवा निम्बकिरातकं च पटोलिका चापि
सतिक्तक च । निशाऽमृता वा खदिरं कणा च
हारिद्रकं शाम्यति तत्क्षणाच्च ॥ ७ ॥

हारिद्रकज्वरमें हलदीके समान देहका वर्ण और मूत्र होय, पेटमें दरद होय, पहिले विरेचन देवे फिर थाम लेय, फिर सींगी वा जोंक लगवाय रुधिर कढवाय देवे फिर त्रायमाण, मोथा, मुलहठी, मुनक्का, चिरायता, अडसा, गिलोय, पीपलामूल, नीवकी छाल इनका काढा

Aho ! Shrutgyanam

ठंडाकर शहद डालकर पीवे तो हारिद्रकज्वर नाश होवे और इस उपायसे दूर न हो तो पैर, मस्तक, कपाल, भौंहके मध्य, दशमद्वार और ग्रीवा इन जगहपर दाग देवे. प्रलापक सन्निपातमें नेत्रवाला, पित्तपापडा, मोथा, गिलोय, धनियां, सौंफ, अमलतास, नीम्बकी छाल, कुटकी, जवासा, हरड, मुनक्का, रक्तचन्दन, पद्माख, शतावर इनकी सम मात्रा ले काढा कर पीवे तो हारिद्रक ज्वर नाश होय और सांठीकी जड, नीम्बकी छाल, चिरायता, हलदी, गिलोय, पीपल खैरसार इनके देनेसे शीघ्रही हारिद्रकरोग नाश होय ॥ १-७ ॥

कमलवाते रजन्यादिक्काथः।

हरिद्रामुस्तभूनिम्बत्रिफलारिष्टवासकम् । कंटकारीद्वयं भार्गी कटुकं नागरं कणा ॥ १ ॥ पटोलं पर्पटं शृङ्गी देवदारु सरोहिषम् । विधन्विकं बला बिल्वकुम्भकारी हरीतकी ॥ २ ॥ कट्फलं कुटजं श्यामा सर्वमेकैकभागकम् । रास्नाभागद्वयं चात्र दत्त्वा क्काथं च साधयेत् ॥ ३ ॥ व्योषचूर्णयुतः क्काथो ज्वरं हन्ति त्रिदोषजम् । त्रयोदशमहाघोरानंधकारान्यथा रविः ॥ ४ ॥ वमिः स्वेदः प्रलापश्च स्तैमित्यं शीतगात्रता । मोहतन्द्रातृषाश्वासकासदाहाग्निमांद्यहा ॥ ५ ॥ हृत्पार्श्वशूलविष्टंभकण्ठकूजनकं तथा । जिह्वास्फुटनकं कर्णशूलं चाशु विनाशयेत् ॥ ६ ॥ नातः परतरं किंचिदौषधं सन्निपातके । रजन्यादिगणो ह्येष धन्वतरिविनिर्मितः ॥ ७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

हलदी, मोथा, चिरायता, त्रिफला, नीम्बकी छाल, अडूसा, दोनों कटेरी, भारंगी, कुटकी, सोंठ, पटोलपत्र, पित्तपापडा, काकडासिंगी, देवदारु, रोहिषतृण, धन्वयास, नागबला, हरड, कायफल, कुम्भकारी (भाषामें पुरइन), कुडेकी छाल, पीपल, प्रियंगुके फूल यह सब बराबर लेय और रास्ना दो भाग ले काढा कर सोंठ, मिरच, पीपलसंयुक्त क्वाथ पीनेसे त्रिदोषज्वर और महाघोर १३ सन्निपात जैसे सूर्यके प्रकाशसे अन्धकार दूर होता है तैसे दूर होवें. और वमन, पसीना, प्रलाप, शीत, मोह, तन्द्रा प्यास, श्वास, दाह, मदाग्नि, हृदय और पसलीका दरद, विष्टंभ, कंठकूजन, जिह्वा फट जाना, कानका शूल इनका नाश करे, इससे परे कोई औषधि सन्निपातकी नहीं है. यह धन्वन्तरीने कही है ॥ १-७ ॥

कमलवाते फलत्रिकादिक्काथः।

फलत्रिकामृतातिक्तानिंबकैरातवासकाः। हरिद्रा पद्मकं मुस्ताऽपामार्गश्चन्दनं कणा ॥ १ ॥ पटोलं पर्पटं चैषां क्वाथः कमलवातहा। त्रिफलाया रसः क्षौद्रयुक्तो दार्वीरसोऽथवा ॥ २ ॥ निंबस्य वा गुडूच्या वा पीतो जयति कामलाम्। कटुका सैन्धवं चैव ह्यपामार्गस्य भस्म च। श्वेतजीरकसंयुक्तः कामलायाश्च नाशनः ॥ ३ ॥

त्रिफला, गिलोय, कुटकी, नींबकी छाल, चिरायता, अडूसा, दोनों हलदी, पदमाख, मोथा, ओंगा, चन्दन, पीपल, पटोलपत्र, पित्तपापडा इनका काढा कमलवातको दूर करता है. त्रिफला, हलदी नींब और गिलोयका रस पीनेसे कमलवात जाता है. कुटकी, सेंधानोन, ओंगाकी भस्म, सफेद जीरेके साथ पीनेसे कमलवात दूर होय ॥ १-३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

मूत्रकृच्छ्रे एलादिक्वाथः ।

एलामधुकगोकंटरेणुकैरंडवासकैः ।
कृष्णाश्मभेदसहितैः क्वाथ एष सुशोधितः ।
शिलाजतुयुतः पेयः शर्कराश्मरिकृच्छ्रहा ॥ १ ॥

इलायची, मुलहठी, गोखरु, संभालू, एरंड, अडूसा, पीपल, पाषाणभेद इनका काढा शुद्ध शिलाजीतसंयुक्त पीनेसे शर्करा, पथरी, मूत्रकृच्छ्र दूर होय ॥ १ ॥

हरीतकीगोक्षुरराजवृक्षपाषाणभिद्धन्वयवासकानाम् । क्वाथं पिबेन्माक्षिकसंप्रयुक्तं कृच्छ्रे सदाहे सरुजे विबन्धे ॥ २ ॥

हरड, गोखरू, अमलतास, पाषाणभेद, जवासा इनका काढा शहदके साथ पीनेसे मूत्रकृच्छ्र तथा दाहसंयुक्त और पीडायुक्त विबंध दूर होय ॥ २ ॥

रसांजनं तण्डुलकस्य मूलं क्षौद्रान्वितं तण्डुलतोयपीतम् असृग्दरं सर्वभवं निहन्ति श्वासं च भार्ङ्गी सह नागरेण ॥ ३ ॥

रसौंत, चौलाईकी जड, शहद, चांवलोंके पानीके साथ पीवे तो संपूर्ण प्रदर रोग दूर होवें और जो भारंगी सोंठ संयुक्त देवे तो श्वास दूर होय ॥ ३ ॥

फलत्रिकाब्ददार्वीणां विशालायाः शृतं पिबेत् ।
निशाकल्कयुतं सर्वप्रमेहविनिवृत्तये ॥ ४ ॥

त्रिफला, मोथा, दारुहलदी, इन्द्राणी इनका काढा हलदीसंयुक्त पीनेसे सब प्रकारका प्रमेह दूर होय ॥ ४ ॥

दार्वी रसांजनं मुस्तं भल्लातः श्रीफलं वृशम् ।

Aho ! Shrutgyanam

किरातश्च पिबेदेषां क्वाथं शीतं समाक्षिकम् ॥
जयेत्सशूलं प्रदरं पीतश्वेतासितारुणम् ॥ ५ ॥

दारुहलदी, रसौंत, मोथा, भिलावा, बेलगिरी, अडूसा, चिरायता इनका काढा शहदसंयुक्त ठंढा कर पीनेसे शूलसहित पीला, सफेद, काला और लाल प्रदर नाश होवे ॥ ५ ॥

पालाशरोहीतकमूलपाठाक्वाथं विदध्यात्प्रदरे सपाण्डौ । पीते शितेऽयं मधुसंप्रयुक्तः प्रसिद्धयोगः शतशोऽनुभूतः ॥ ६ ॥

ढाक, लालकरंजकी जड, पाठा इनका काढा मिश्री तथा शहद संयुक्त पीवे तो पीलिया संयुक्त प्रदररोग दूर होवे । यह क्वाथ सैकडों वार परीक्षा किया हुआ है ॥ ६ ॥

छर्दिरोगे क्वाथः ।

क्वाथो गुडूच्यः समधुः सुशीतः पीतः प्रशांति वमनस्य कुर्यात् । विण्मक्षिकाणां मधुनाऽवलीढा सचंदनं शर्करयाऽन्विता वा ॥ १ ॥ नीरेण सिंधूत्थरजोऽतिसूक्ष्मं नस्येन नूनं विनिहन्ति हिक्काम् । मयूरपिच्छस्य शिखास्य कृष्णा मध्वन्विता वा कटुका सधातुः ॥ २ ॥

गिलोयका काढा शहदके साथ ठंढा कर पीवे तो वमन दूर होय और मोरपंखकी चंद्रिकाको जलाकर शहदके साथ ठंढा कर पीवे तो वमन दूर होय और मक्खीकी विष्ठा शहदके संग चाटे तो वमन दूर होय और पानीसे सैंधानोन पीवे अथवा नाश देनेसे हिचकी दूर होवे और मोर पंखकी चंद्रिकाको जलाकर शहदके साथ चाटे तो वमन नाश होवे अथवा कुटकीके सेवनसे वमन नाश होवे ॥ १-२ ॥

Aho ! Shrutgyanam

बालरोगे क्वाथः।

बिल्वं च पुष्पाणि च धातकीनां जलं सलोध्रं गजपिप्पलीनाम्। क्वाथोऽवलीढो मधुना विमिश्रो बालेषु योग्यो ह्यति सारितेषु ॥ १ ॥

बेलगिरी, धायके फूल, नेत्रवाला, लोध, गजपीपल इनका काढा शहदसंयुक्त पीनेसे बालकोंका अतिसार दूर होवे ॥ १ ॥

कासरोगे क्वाथः।

पुष्करं कट्फलं भार्ङ्गीं विश्वपिप्पलिसाधितम्।
पिबेत्क्वाथं कफे चैतत्कासे श्वासे च हृद्ग्रहे ॥ १ ॥

पोहकरमूल, कायफल, भारंगी, सोंठ, पीपल इनका क्वाथ करके पीनेसे कफ, खाँसी, श्वास और उदररोग ये सब दूर होवें ॥ १ ॥

शरपुंखायाः कल्कः पीतस्तक्रेण नाशयत्यचिरात्। चिरतरकालसमुत्थं प्लीहानं दृढमागाढम् ॥ १ ॥
क्षुद्राकुलत्थवासाभिर्नागरेण च साधितः। क्राथः पुष्करचूर्णाढ्यः श्वासकासौ निवारयेत। पानादेव हि पंचानां हिक्कानां नाशनं क्षणात् ॥ २ ॥

शरफोंकेका काढा मट्ठेके साथ पीवे तो पुरानी प्लीहाभी दूर होजाय। कटेरी, कुलथी, अडूसा इनका काढा सोंठ संयुक्त कर पोहकरमूलका चूर्ण डालकर लेवे तो खांसी नाश होवे और पीते ही पांच प्रकारकी हिचकी दूर होय ॥ १-२ ॥

सर्ववायुविकारे शुण्ठ्यादिचतुःषष्टिक्वाथः।

शृङ्गीरामठरामसेनरजनीरुग्वेणिकारोहिणीरास्नैरं-

Aho ! Shrutgyanam

डरसोनदारुरजनीराजेन्द्रराजैः फलैः । त्रायंतीत्रिवृताहुताशननतानंतामृतासुव्रतादंतीतुंबरिचित्रतण्डुलत्रुटित्वक्तिक्तनक्तंचरैः ॥ १ ॥ वासावासवबीजवासववसुरावल्यावरीवल्गुजाब्राह्मीब्राह्मणयष्टिवारणकणाविश्वावयस्थाविषा । मूर्वामालवकासमूलमगधामुस्ताऽजमोदाद्वयं मिश्रा-आगरचन्दनेन्दुचविकास्फोटायुता कट्फलैः ॥ २ ॥ इत्येतद्दशमूलयुङ्निगदितः क्वाथश्चतुःषष्टिकः शृंग्यादिर्मथनादिसिंहविषजाशेषामयोन्मूलनः । पुंसामष्टविधज्वरार्तिशमने मन्दाग्निसंदीपने सर्वांगीणसमीरणद्विपघटाशार्दूलविक्रीडितः ॥ ३ ॥

काकडासिंगी, हींग, चिरायता, हलदी कूठ, संभालू, ब्राह्मी, रास्ना, एरण्ड, लहसन, दारुहलदी, अमलतास, पटोल, त्रायमाण, निसोत, चीता, तगर, जवासा, गिलोय, कचूर, दंती (लताविशेष), धनियां, वायविडंग, इलायची, तज, कुटकी, गूगल, अडूसा, इंद्रजौ, देवदारु, इंद्रायण, शतावर, असगंध, भारंगी, मुलहठी, गजपीपल, सोंठ, कंकोल, अतीस, मरोडफली, कालीनिसोत, पीपलामूल, हरड, अजमोद, अजमायन, सौंफ, अगर, कपूर, चव्य, अफीम, कायफल इनमें दशमूलका काढा मिलाकर पीनेसे आठ प्रकारके ज्वर, मन्दाग्नि, सर्वांग वातरोग दूर होते हैं, जैसे सिंहनादसे हाथी दौडते हैं, तैसे यह रोगरूप हाथियोंमें शार्दूल है यों इस काढेको जानना चाहिये ॥ १-३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

ज्वरे अष्टावशेषपानीयम् ।

अष्टमेनांशशेषेण चतुर्थेनार्द्धकेन वा । अथवा क्वाथनेनैव सिद्धमुष्णोदकं वदेत् ॥ १ ॥ श्लेष्मोष्णवातमेदोघ्नं बस्तिशोधनदीपनम् । कासश्वासज्वरं हन्तिपीतमुष्णोदकं निशि ॥ २ ॥ अर्द्धावर्त्तं चतुर्थांशमष्टभागावशेषितम् । अतीसारेषु पानीयमधिकादधिकं फलम् ॥ ३ ॥

जलका आठवां भाग चौथाई तथा आधा अथवा औटानेसेही इनको सिद्ध गरम पानी कहते हैं । यह पानी कफ, वात, पित्त, मेदका नाशक, बस्तिका शोधनेवाला, दीपन, खांसी, श्वास, ज्वरको दूर करता है, रातमें पीनेसे खांसी, श्वास, आदि रोग दूर हों । आधा, चौथाई, आठवाँ भाग जो पानी है सो अतीसारमें देवे तो अधिकाधिक फल है ॥ १-३ ॥

पंचकोलक्काथः ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ।
पंचकोलमिदं प्रोक्तं दीपनं रुचिकारकम् ॥ १ ॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ यह पंचकोलक्वाथ दीपन और रुचिकारी है ॥ १ ॥

दशांगक्वाथः ।

वासामृतापर्प्पटकनिंबभूनिंबमार्दवैः ।
त्रिफलाकुलत्थकैः क्काथः सक्षौद्रश्चाम्लपित्तहा ॥ १ ॥

अडूसा, गिलोय, पित्तपापडा, नींबकी छाल, चिरायता, दाख, त्रिफला, कुलथी इनका काढा शहदसंयुक्त पीनेसे अम्लपित्त दूर हो ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अम्लपित्तविकारे यवादिक्काथः ।

ऊर्ध्वगे चाम्लपित्ते तु वमनं कारयोद्भिषक् ।
अधोगते चाम्लपित्ते विरेचनं प्रदापयेत् ॥ १ ॥
निस्तुषयववृषधात्रीक्काथस्त्रिसुगंधमधुयुतः पीतः ।
अपनयति चाम्लपित्तं यदि भुंक्ते मुद्गयूषेण ॥ २ ॥

जो ऊर्ध्वगत अम्लपित्त होय तो वमन करावे और अधोगत होय तो दस्त करावे फिर कुटेहुए जौ, अडूसा, आंवला इनका काढा, तज, तेजपात, इलायची, शहद संयुक्त पीनेसे अम्लपित्त दूर होवे. पथ्य मूंगकी दाल खावे ॥ १ ॥ २ ॥

फलत्रिकं पटोलं च तिक्ता क्वाथः सितायुतः ।
पीतः क्लीतकमध्वक्तो ज्वरच्छर्द्यम्लपित्तजित् ॥ ३ ॥
सद्राक्षामभयां खादेत्सक्षौद्रां सगुडां च ताम् ।
अम्लपित्तं जयेज्जंतुः श्वासं कासं ज्वरं वमिम् ॥ ४ ॥

त्रिफला, पटोल, कुटकी इनका काढा मिश्रीसंयुक्त पीवे तथा मुलहठी शहदके संग पीवे तो ज्वर, वमन, अम्लपित संपूर्ण दूर होवे अथवा मुनक्का हरड खावे अथवा शहद, गुड खावे तो अम्लपित्त दूर होय और श्वास, खांसी, वमीका नाश करे ॥ ३-४ ॥

मद्यविकारे क्काथः ।

मन्थः खर्जूरमृद्वीकावृक्षाम्लाम्लकदाडिमैः ।
परूषकैरामलकैर्युक्तो मद्यविकारनुत् ॥ १ ॥

छुहारे, दाख, अमलवेत, अनारदाना, फालसे, आंवले इनका काढा मद्यविकारको नाश करता है ॥ १ ॥

द्राक्षाकपित्थफलदाडिमपानकं च
प्रायो हि विभ्रमहरं मधुशर्कराढ्यम् ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

छुहारे, मुनक्का, अम्लवेत, अनारदाना, फालसे, आंवले इनका काढा शहद मिश्रीके साथ लेवे तो भ्रमको दूर करे ॥ २ ॥

सौवर्चलमजाज्यश्च वृक्षाम्लं साम्लवेतसम् ।
त्वगेलामरिचार्द्धं च शर्कराभागयोजितम् ॥ ३ ॥
हितं लवणमष्टाङ्गं मदात्ययरुजापहम् ।
पूगीमदे जलं शीतं वस्त्रपूतं हितं भवेत् ॥ ४ ॥
शर्कराभक्षणे देया मस्तु वा शर्करान्वितम् ।
लवणस्य भक्षणाद्वा पूगीफलमदोव्रजेत् ॥ ५ ॥
कोद्रवाणां भवेन्मूर्च्छा देयं क्षीरं सुशीतलम् ।
सगुडः कूष्मांडरसो हंति कोद्रवजं मदम् ॥ ६ ॥
धत्तूरजमदे दुग्धं शर्करा दधि वाथवा ।
कार्पासमज्जापानाद्वा वृंताकफलभक्षणात् ।
अन्येषु च मदेष्वेवं विषेषु वमनं हितम् ॥ ७ ॥

नागपुरीययतिवरश्रीहर्षकीर्तिसंकलिते ।
वैद्यकसारोद्धारे तुर्यः क्वाथाधिकारोऽयम् ॥ ४ ॥

कालानोन, सफेदजीरा, अमलवेत, आंवला, तज, इलायची इनसे आधी मिश्री, आठवां भाग सैंधानोन इनका काढा मद्यविकारको दूर करता है, सुपारीके मदके ऊपर ठंढा पानी छानकर पीवे और मिश्री मुखमें राखे अथवा मट्ठा मिश्रीसंयुक्त पीवे वा सेंधानोंन डालकर पीवे तो सुपारीका मद दूर हो. गायका दूध कच्चा पीनेसे वा पेटेके रसको गुड डालकर पीनेसे कोदोंका मद दूर हो और दूध वा दहीमें मिश्री डालकर पीवे तो धतूरेका मद जाय. अथवा कपासकी मिंगी तथा बैंगनका फल खावे और संपूर्ण विषोंके लिये वमन करावे ॥ ३ ॥ ७ ॥

इति श्रीमाथुरदत्तरामचौबेकृतमाथुरीमञ्जूषाभाषाटीकायांक्वाथाधिकारश्चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ घृताधिकारः-पंचमोऽध्यायः ५.

तत्रादौ सर्वोन्मादेषु कल्याणघृतम् ।

विशाला त्रिफला कौंती देवदार्वेलवालुकम् ।
स्थिरानन्ते हरिद्रे द्वे सारिवे द्वे प्रियंगुका ॥ १ ॥
नीलोत्पलैला मंजिष्ठा दंतीदाडिमकेशरैः ।
तालीसपत्रं बृहती मालत्याः कुसुमं नवम् ॥ २ ॥
विडङ्गं पृष्ठपर्णी च कुष्ठचन्दनपद्मकम् । अष्ट-
विंशतिभिः कल्कैरेतैः कर्षसमन्वितैः ॥ ३ ॥
चतुर्गुणे जले पक्त्वा घृतं प्रस्थं प्रयोजयेत् ।
चतुर्गुणं गवां क्षीरं क्षिप्त्वा पश्चात्पचेत् पुनः ॥ ४ ॥
अपस्मारे ज्वरे कासे शोषे मंदानले क्षये ।
वातरक्ते प्रतिश्याये तृतीयकचतुर्थके ॥ ५ ॥
वंध्यानां पुत्रदं बल्यं विषमेहार्शसां हरम् ।
भूतोपहतचित्तानां गद्गदानामचेतसाम् ॥ ६ ॥
कल्याणकमिदं सर्पिः सर्वोन्मादहरं स्मृतम् ॥ ७ ॥

इंद्रायण ४ टंक, त्रिफला, ४ टंक, रेणुका रूखडी, देवदारु, एलुआ, नेत्रवाला, शालपर्णी, तगर, हलदी, सारिवा (सरयूनदीमें होती है), प्रियंगु, नीलोफर, इलायची, मंजीठ, जमालगोटेकी जड, अनारदाना, नागकेशर, तालीसपत्र, दोनों कटेरी, मालतीके फूल, वायविडंग, पृष्ठपर्णी, कूठ, चंदन, पदमाख इन अट्ठाईस औषधियोंको समान ४ टंक लेवे और चौगुने पानीमें काढा उबाले जब चौथाई रहजाय तब २५६ टंक घृत काढेमें डाले.

Aho ! Shrutgyanam

फिर चौगुना दूध डाले, फिर पकावे जब पकजाय तब पात्रमें रखछोडे, यह घी मृगी, ज्वर, खांसी, शोष, मंदाग्नि, क्षयरोग, वातरक्त, पीनस, तृतीयकज्वर, चातुर्थिकज्वर आदिको दूर करे, बांझ-के पुत्र होवे, बल करे, यह कल्याणघृत विषम प्रमेह, विषम अर्श, भूतोन्माद, चित्तभ्रम, तोतलाहट, अचेतन आदि संपूर्ण उन्मादोंका नाश करे ॥ १-७ ॥

महाकल्याणघृतम् ।

त्रिकटु त्रिफला मुस्ता विडंगैला निशाद्वयम् ।
द्वे शारिवे त्रिवृद्दंत्यनंतापद्माकवानरी ॥ १ ॥
मंजिष्ठा मधुकं कुष्ठं ब्राह्मी तालीसविल्वकम् ।
अष्टवर्गो जीवनीयो गणः स्याच्चंदनद्वयम् ॥ २ ॥
द्राक्षामधूकपुष्पाणि बला पर्णीचतुष्टयम् ।
देवदारु सटी पाठा रेणुका जीरकद्वयम् ॥ ३ ॥
अश्वगन्धाऽजमोदा च कटुदाडिमसारकम् ।
इन्द्रवारुणिका शंखपुष्पी च बृहतीद्वयम् ॥ ४ ॥
चातुर्जातशुभोशीरं शिरसं वालकं तथा ।
प्रियङ्गुमालतीजातीपुष्पं पुष्करमूलकम् ॥ ५ ॥
विदारी कदलीकन्दं मुशली हस्तिपर्णिका ।
त्रिविषं त्रपुषीबीजं कौंती माल्येलबालकम् ॥ ६ ॥
एतैरक्षसमैः कल्कैर्घृतप्रस्थं चतुर्गुणम् ।
क्षिरं च द्विगुणं नीरं तप्त्वा तन्द्राभयाग्निना ॥ ७ ॥
प्राप्ते च तत्तसंयुक्ते पचेत्खादेच्च नित्यशः ।
सर्पिरेतन्नरो नारी पीत्वा कर्षं वृषायते ॥ ८ ॥

Aho ! Shrutgyanam

या च वंध्या भवेन्नारी या च कन्याः प्रसूयते ।
या चैवास्थिरगर्भा स्याद्या वा जनयते मृतम् ॥९॥
अल्पायुषं वा जनयेद्या वा शूलान्विता पुनः ।
ईदृशी जनयेत्पुत्रं तस्या दोषान् व्ययोहति ॥ १० ॥
एतत्कल्याणकं नाम घृतं शम्भुप्रकीर्तितम् ।
जीवद्वत्सैकवर्णा या घृतं तस्यास्तु गृह्यते ॥ ११ ॥

सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, इलायची, दोनों हलदी, दोनों सारिवा, निसोथ, दंती (वृक्षविशेष), जवासा, हरड, बहेडा, आंवला, पद्माख, कौंचके बीज, मजीठ, कूठ, ब्राह्मी, तालीसपत्र, बेलगिरी, अष्टवर्ग (जीवक १, ऋषभक २, मेदा ३, महामेदा ४, काकोली ५, क्षीरकाकोकी ६, ऋद्धि ७, वृद्धि ८, जीवनीयगण (अष्टवर्ग, जीवंती, नागपर्णी, मुद्गपर्णी, मधुयष्टी) प्रसिद्ध है. दोनों चन्दन, मुनक्का, महुआके फूल, नागबला, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, देवदारु, कचूर, पाढ, दोनों रेणुका, गगनधूल, दोनों जीरे, असगन्ध, अजमोद, कुटकी, अनारका दाना, तुम्बीकी जड, इन्द्रायण, शंखाहुली, दोनों कटेरी, तज, तेजपात, इलायची, नागरमोथा, नागकेशर, वंशलोचन, खस, सिरस, नेत्रवाला, प्रियंगु, मालतीके फूल, जायफल, जावित्री, पोहकरमूल, विदारीकन्द, केलेका कंद, मूसली, हस्तिपर्णी, अतीस, ककडीके बीज, छड, एलुआ इन औषधियोंको चार चार टंक लेकर २५ टंक घृतमें डाले और घीसे चौगुना दूध डाले, दूधसे दूना पानी डालकर आरने उपलोंकी आगसे पकावे, जब पकजाय तब २ टंक पुरुष और ४ टंक स्त्री नित्य पीवे तो वंध्या पुत्रवती होय और जिसके कन्याही होवे और जो अस्थिर गर्भवाली होय जिसके मराहुआ बालक होय

Aho ! Shrutgyanam

अथवा थोडी उमर होय तो पूर्ण आयु होवे, जो शूलसे युक्त होय जिसको गर्भ न रहे वह पुत्र जने और सब दोषोंको दूर करता है। यह कल्याणघृत महादेवजीने कहा है, इसमें जिस गौका बछडा जीता होवे उस गौका घृत लेवे ॥ १-११ ॥

मतान्तर कल्याणघृत १–२ ।

सिद्धार्थस्त्रिकटुः क्षपायुगवचामंजिष्ठका रामठं
श्वेताहात्रिफलाकरंजकटुभिः श्यामाशिरीषामरैः ।
इत्यष्टादशभिः स्मृतं घृतमिदं गोमूत्रयुक्तं नृणा-
मुन्मादघ्नमपस्मृतिघ्नमगदः स्याद् बस्तमूत्रेण च॥१॥

१–सरसों, सोंठ, मिरच, पीपल, दोनों हलदी, वच, मजीठ, हींग, सफेद कटेरी, त्रिफला, करंजके बीज, मालकांगनी, निसोथ, सिरसके फूल, देवदारु, इन अठारह औषधियोंको घी और गोमूत्रमें औटावे और बकरेके मूत्रमें देवे तो उन्माद दूर होवे ॥ १ ॥

तालीसत्रिफलैलवालुफलिनीसौम्यापृथक्पर्णिनी-
दन्तीदाडिमदारुचन्दननिशादार्वीविशालोत्पलैः ।
जातीपुष्कररेणुपद्मकयुतैर्जंतुघ्नमंजिष्ठकारुक्सिही-
त्रुटिसारिवाद्वयनतैर्नागेन्द्रपुष्पान्वितैः ॥ १ ॥
अष्टाविंशतिभिश्चतुर्गुणजलं कल्याणमेभिः शृतं
हंत्येतच्च चतुर्थकज्वरमुरःकंपं सर्वध्यामयम् ।
सापस्मारगदोदरौ सपवनोन्मादौ सजीर्णज्वरौ
जायन्ते न पुनः कृतेन हविषा कल्याणकेनामुना ॥२॥

२–तालीसपत्र, त्रिफला, एलुआ, भोंफली, प्रियंगु, शाल-

Aho ! Shrutgyanam

पर्णी, पृष्ठपर्णी, दंती, अनारदाना, चंदन, दोनों हलदी, देवदारु, इंद्रायण, कमलगट्टा, जायफल, जावित्री, रेणुका, पदमाख, वायविडंग, मंजीठ, कटेरी, इलायची, दोनों सारिवा, जवासा, नागकेशर इन अट्ठाईस औषधियोंको चौगुने पानीमें औटावे जब चौथाई रहजाय तब घीमें पकावे । यह घृत तृतीयक चतुर्थक ज्वरको और हृदयकंपको दूर करे, बांझ स्त्रीके पुत्र होवे । मृगी, उदररोग, उन्माद, पुराणा ज्वर आदि दूर होवें, यह कल्याणघृत कल्याणऋषिने कहा है ॥ १–२ ॥

ब्राह्मयादिघृतम् ।

ब्राह्मीरसवचाकुष्ठशंखपुष्पीभिरेव च ।
पुराणं मद्यमुन्मादं भूतापस्मारनाशनम् ॥ १ ॥

ब्राह्मीरस, वच, कूठ, शंखाहुली इनको घीमें पकावे तो पुराना उन्माद जाय ॥ १ ॥

बुद्धिवर्धकमहापैशाचिघृतम् ।

जटिलां पूतनां केशीं वरटीं मर्कटीं वचाम् ।
त्रायमाणां जयां वीरां चोरकं कटुरोहिणीम् ॥ १ ॥
कायस्थां शूकरां छत्रां सातिच्छत्रां पलंकषाम् ।
महापुरुषदत्तां च वयस्थां नाकुलीद्वयम् ॥ २ ॥
कटुंभरां वृश्चिकालीं स्थिरां चाहृत्य तैर्घृतम् ।
सिद्धं चतुर्थकोन्मादं ग्रहापस्मारनाशनम् ॥ ३ ॥
महापैशाचिकं नाम घृतमेतद्यथाऽमृतम् ।
मेधाबुद्धिस्मृतिकरं बालानां चाङ्गवर्द्धनम् ॥ ४ ॥

बालछड, हरड, कौंचके बीज, वच त्रायमाण, अरणी, खसकी जड, गंटोल, कुटकी, काकोली, वाराहीकंद, वाराही, गंधतृण

Aho ! Shrutgyanam

गूगल, विष्णुक्रांता, गिलोय, जवासा, जवासी, आकाशबेल, शाल- पर्णी इनके काढेको चौथाई घृतमें पकावे, यह घृत बुद्धिको बढावे और चैतन्य करे तथा बालकके शरीरको पुष्ट करे ॥ १-४ ॥

सन्तानार्थं फलघृतम् १-२ ।

त्रिफला मधुकं कुष्ठं द्वे निशे कटुरोहिणी ।
विडङ्गं पिप्पली मुस्ता विशालाकट्फलं वचा॥ १॥
मेदे द्वे चैव काकोल्यौ सारिवे द्वे प्रियंगुका ।
शतपुष्पा हिंगु रास्ना चंदनं रक्तचंदनम् ॥ २ ॥
जातीपुष्पं तुगाक्षीरी कमलं शर्करा तथा ।
अजमोदा च दंती च कल्कैरेतैश्च कार्षिकैः ॥ ३ ॥
जीवद्वत्सैकवर्णाया घृतप्रस्थं च गोः क्षिपेत् ।
शतावरीरसं चापि घृताद्देयं चतुर्गुणम् ॥ ४ ॥
चतुर्गुणेन पयसा पचेदारण्यगोमयैः
सुतिथौ पुष्यनक्षत्रे मृद्भाण्डे ताम्रजेऽथवा ॥ ५ ॥
ततः पिबेच्छुभदिने नारी वा पुरुषोऽथवा ।
एतत्सर्पिर्नरः पीत्वा स्त्रीषु नित्यं वृषायते ॥ ६ ॥
पुत्रानुत्पादयेद्वीरान्वन्ध्याऽपि लभते सुतान् ।
अल्पायुषं या जनयेद्या च सूत्वा पुनः स्थिता ॥ ७ ॥
पुत्रं प्राप्नोति सा नारी बुद्धिमन्तं शतायुषम् ।
या च वंध्या भवेन्नारी या च कन्याः प्रसूयते ॥ ८ ॥
या चैवास्थिरगर्भा स्याद्या वा जनयते मृतम् ।
तादृशी जनयेत्पुत्रं वेदवेदांगपारगम् ॥ ९ ॥

Aho ! Shrutgyanam

रूपलावण्यसंपन्नं शतायुर्विगतज्वरम् ।
जीवद्वत्सैकवर्णाया घृतमत्र प्रशस्यते ॥ १० ॥
एतत्फलघृतं नाम भारद्वाजेन भाषितम् ।
अनुक्तं लक्ष्मणामूलं क्षिपत्यत्र चिकित्सकः ॥ ११ ॥

त्रिफला, मुलहठी, कूठ, दोनों हलदी, कुटकी, वायविडंग, पीपल, नागरमोथा, इंद्रायण, कायफल, वच, काकोली, क्षीरकाकोली, दोनों सारिवा, प्रियंगु, सौंफ, हींग, रास्ना, चंदन, रक्तचंदन जावित्री, वंशलोचन, कमलगट्टा, मिश्री, अजमोद, जमालगोटेकी जड इन सब औषधियोंको चार चार टंक लेकर काढा करे और बछडेवाली एकरंगी गायका २५६ टंक घी शतावरी ४ प्रस्थ, चौगुने घीमें औटावे फिर चौगुने दूधमें अरने उपलोंकी आग देकर अच्छी तिथि और शुभ नक्षत्रमें मिट्टी वा तांबेके पात्रमें औटावे, फिर अच्छा दिन देखकर स्त्री अथवा पुरुष पीवे, जो पुरुष सेवन करे तो स्त्रीको सदा सुख देवे और पुत्र वीर्यवंत होवे और वंध्या पुत्र जने और जिसका अल्पायु पुत्र होवे और गूंगा, वह स्त्री बुद्धिमान् और सौ वर्षकी आयुवाला पुत्र जने, जिस स्त्रीके कन्या होती होय वहभी पुत्र जने, जिसका गर्भपात होता होवे उसका गर्भ स्थिर होवे, जो मराहुआ पुत्र जनती हो वह बुद्धिमान् पुत्र जने । रूपवान्. निरोगी पुत्र होवे, परंतु एकवर्णी गौका घी लेवे, यह संतानके लिये घृत भारद्वाजऋषीने कहा है और अच्छे वैद्योंने कहा है कि, पीछे लक्ष्मणाजडी डालकर लेवे ॥ १–११ ॥

सहाचरे द्वे त्रिफला गुडूची सपुनर्नवा ।
शुकनासा हरिद्रे द्वे रास्ना मेदा शतावरी ॥ १ ॥
कल्कीकृत्य घृतप्रस्थं पचेत्क्षीरं चतुर्गुणम् ।

Aho ! Shrutgyanam

तत्सिद्धं या पिबेन्नारी योनिशूलं निवारयेत् ॥ २ ॥
पीडिता चलिता या च निःसृता विवृता च या ।
पित्तयोनिश्च विभ्रांता षण्ढयोनिश्च या स्मृता ॥ ३ ॥
प्रपद्यंते हिताः स्थानं गर्भं गृह्णंति चासकृत् ।
एतत्फलघृतं नाम योनिदोषहरं परम् ॥ ४ ॥

२–त्रिफला, अडूसा, पियावांसा, गिलोय, सांठकी जड, अरलूकी छाल, दोनों हलदी, रास्ना, शतावरी इनका काढा करै, जब सिद्ध होजाय तब एक प्रस्थ सेवन करे तो स्त्रीका योनिशूल जाय, पीडा वहना, विघृता, पित्तयोनी, डरावनी, षंढयोनी, जिसकी रग भीतर हो ये संपूर्ण योनिदोष दूर होवें ॥ १–४ ॥

उदररोगे बिंदुघृतम् ।

अर्कक्षीरपले द्वे च स्नुहीक्षीरपलानि षट् ।
पथ्या कंपिल्लकश्यामा शम्याकं गिरिकर्णिका ॥ १ ॥
नीलिनी त्रिवृता रत्नी शंखिनी चित्रकं तथा ।
वृद्धदारुदेवदाली दंतीबीजं च शातला ॥ २ ॥
हेमक्षीरी च कटुकी विडङ्गं ग्रंथिकं तथा ।
एतेषां पलिकैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ३ ॥
अथास्य मलिने कोष्ठे बिन्दुमात्रं प्रदापयेत् ।
यावतोऽस्य पिबेद्बिंदूंस्तावद्वारान् विरिच्यते ॥ ४ ॥
कुष्ठं गुल्ममुदावर्त्तं श्वयथुं सभगन्दरम् ।
शमयत्युदराण्यष्टौ वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥ ५ ॥
एतद्बिन्दुघृतं नाम तेनाभ्यक्तो विरिच्यते ॥ ६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

आकका दूध २ पल, थूहरका दूध २ पल, हरड १६ टंक, कबीला १०१ टंक, प्रियंगु १६ टंक, अमलतास १६ टंक, सेहुंड १ पल, नीलका बीज १ पल, निसोथ १ पल, दन्ती १ पल, शंखाहुली १ पल चित्रक १ पल, विधायरा १ पल, देवदारु १ पल, जमालगोटा १ पल, सातला १ पल, कौंच १ पल, कुटकी १ पल, वायविडंग १ पल, पीपलामूल १ पल इन सब औषधियोंको एक एक पल लेकर एक प्रस्थ घृतमें औटावे, फिर जिसका कोठा मलयुक्त हो उसको एक बूंद दे और जितनी बूंद देवे उतनेही दस्त होवें और कोढ, गुल्म, अफरा, उदावर्त्त, वमन, भगन्दर और आठ प्रकारकी उदरव्याधि दूर होवे, जैसे इन्द्रके वज्रसे वृक्ष कटता है वैसे इस बिन्दुनाम घृतसे विरेचन होवे ॥ १-६ ॥

दुष्टव्रणादौ जात्यादिकं घृतम् ।

जातीपत्रपटोलनिंबकटुकादार्वीनिशाशारिवामंजि-
ष्ठाभयसिक्थरक्तमधुकैर्नक्ताह्वबीजैः समम् ।
सर्पिः शीघ्रमनेन सूक्ष्मवदनं मर्माश्रितः
स्रावणा गंभीराः सरुजो व्रणाः सुगतिकाः
शुध्यंति रोहन्ति च ॥ १ ॥

जायफलके पत्ते, पटोल, नींबकी छाल, कुटकी, दारुहलदी, मजीठ, हरड, गौरीसर, कूठ, मोम, केशर, मुलहठी, कंजा इनकी समान मात्रा लेकर घृत डाल काढा करे, यह घृत गम्भीरव्रण, दुष्टव्रण फोडा फुंसियोंको दूर करे ॥ १ ॥

रुधिरविकारे महातिक्तकं घृतम् ।

करंजसप्तच्छदपिप्पलीनां मूलानि कृष्णा मधुका
विशाला । यवासकश्चंदनमुत्पलं च सत्रायमाणा

Aho ! Shrutgyanam

कटुका वचा च ॥ १ ॥ उशीरपाठातिविषा रजन्यौ किराततिक्तं कटुजस्य बीजम् । निवासनारग्वधमालतीनां पत्राणि मूलानि च कण्टकार्याः ॥ २ ॥ शतावरीपद्मकदेवदारुमुस्तानि कालेयककेशराणि । वासा गुडूची नतसारिवे द्वे बला पटोली त्रिफला च मूर्वा ॥ ३ ॥ नीपाकदंबौ धववेतसौ च कर्कोटकं पर्पटकं यवासः । वाराहि कन्दं दमयन्तिका च ब्राह्मी समंगर्षभवालकं च ॥ ४ ॥ एभिः समांशैरथ कार्षिकैश्च घृतस्य प्रस्थं विपचेन्नदस्य । द्रोणं जलस्याकलुषस्य दद्यात्प्रस्थद्वयं चामलकीरसस्य ॥ ५ ॥ पक्वं प्रशान्तं गतफेनशब्दं प्रयोजयेत्कुष्ठहरं प्रशस्तम्। तद्रक्तपित्तानिलसन्निपाते विस्फोटदुष्टव्रणविद्रधीषु ॥ ६ ॥ किलासकासज्वरगंडमालाग्रंथ्यर्बुदत्वग्भववातरक्तम् । घृतं महातिक्तमिदं प्रशस्तं निहंति सर्वाञ्छ्वयथून्विचर्चीन् ॥ ७ ॥

करंजके बीज, सतवन, पीपलामूल, पीपल, मुलहठी, इन्द्रायण, जवासा, चन्दन, कमल, त्रायमाण, कुटकी, वच, खस, पाढ, अतीस, दोनों हलदी, चिरायता, इन्द्रजौ, विजैसार, अमलतास, मालतीपत्र तथा जड, कटेरीकी जड, शतावर, पदमाख, पीलाचन्दन, देवदारु, मोथा, अगर, नागकेशर, अडूसा, गिलोय, तगर, सारिवा, २, नागबला, पटोल, त्रिफला, मुलहठी, नीलकन्द धायके फूल, वेतस,

Aho ! Shrutgyanam

करैलाकी जड, पित्तपापडा, जवासा, वाराहीकन्द, केवडेकी जड, ब्राह्मी, मँजीठ, ऋषभ (लहसनके मुवाफिक हिमालयके पहाडमें होता है) नेत्रवाला यह सब औषधि चार चार मासे लेवे और २५६ टंक घृतमें तथा पानी २५६ पल में औटावे फिर ६४ पल रक्खे, आमलेका, रस ५१२ टंक डाल देवे, जब झाग और शब्द बन्द होजावे तब निकाल लेवे । १८ प्रकारके कोढ, रक्तपित्त, वायुरोग, सन्निपात, दुष्ट फोडे, दुष्ट रोग, दाद, भ्रम, खांसी, ज्वर, गंडमाला, गांठ, अर्बुद, त्वचारोग और वातरक्तपर यह घृत महातीक्ष्ण है, यह घृत सम्पूर्ण प्रकारकी सूजनको दूर करता है ॥ १ ॥ ७ ॥

मस्तकरोगे षड्बिंदुघृतम् ।

शुण्ठीविडङ्गयष्ट्याह्वाभृङ्गतोयैः शृतं घृतम् ।
नस्यं षड्बिन्दुदानेन सर्वमूर्द्धगदापहम् ॥ १ ॥

सोंठ, वायविडंग, मुलहठी इनका भांगरेके काढेमें घृत बनाय नास देनेसे संपूर्ण मस्तकरोग जाते हैं ॥ १ ॥

वायुविकारे दशमूलादिघृतम् ।

दशमूलस्य निर्यूहेर्जीवनीयैः पलोन्मितैः ।
क्षीरेण च घृतं पक्वं तर्प्पणं पवनार्तिजित् ॥
क्वाथेन त्रिगुणं सर्पिः प्रस्थसाध्यपयःसमम् ॥ १ ॥

दशमूल १ पल, जीवनीयगण १ पल, इनको दूध और घीमें औटावे, जब काढा हो तब काढेसे तिगुना घी और दूध २५६ टंक डाले । यह संपूर्ण वायुरोगोंका नाश करता है ॥ १ ॥

अश्वगंधाघृतम् ।

अश्वगंधाकषायेण कल्के क्षीरं चतुर्गुणम् ।
घृतपक्वं तु वातघ्नं वृष्यं मांसविवर्द्धनम् ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

असगन्धका काढा कर चौगुणा दूध उसमें डाले, फिर घृतमें पकावे यह घृत वायुको दूर करे तथा मांसको बढावे और वृष्य है ॥ १ ॥

वातरक्ते गुडूचीघृतम् ।

अमृतायाः कषायेण कल्केन च महौषधात् ।
मृद्वग्निना घृतं सिद्धं वातरक्तहरं परम् ॥ १ ॥
आमवातादिवातानां कृमिदुष्टव्रणान्यपि ।
अर्शांसि गुल्मांश्च तथा नाशयत्याशु योजितम् ॥ २ ॥

गिलोयके काढेमें सोंठ डालकर फिर घृत डालकर मन्दाग्निसे औटावे । यह घृत वातरक्त और आमवातयुक्त वा कृमि, दुष्टव्रण, बवासीर, गुल्म, आदि संपूर्ण रोगोंको नाश करता है ॥ १-२ ॥

वातशूले शुंठीघृतम् ।

नागरक्वाथकल्काभ्यां घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
चतुर्गुणेन तेनाथ केवलेनोदकेन वा ॥ १ ॥
वातश्लेष्मप्रशमनमग्निदीपनकं परम् ।
नागरं घृतमित्युक्तं कट्यामशूलनाशनम् ॥ २ ॥

सोंठके, काढेको एक प्रस्थ घीमें औटावे, परन्तु सोंठका पानी घृतसे चौगुना होवे. यह घृत वातश्लेष्मको दूर करता है, मन्दाग्निको दीप्त करे यह सोंठका घृत कटिशूल, आमवात और कठिन दरदका नाश करता है ॥ १-२ ॥

लूताविचर्चिकायां काशीसादिघृतम् ।

काशीसं द्वे निशे मुस्ते हरितालं मनः शिला ।
कंपिल्लकं च गंधं च विडङ्गं गुग्गुलं तथा ॥ १ ॥
सिद्धकं मरिचं कुष्ठं तुत्थकं गौरसर्षपः ।

Aho ! Shrutgyanam

रसांजनं च सिन्दूरं श्रीवासं रक्तचन्दनम् ॥ २
अरिमेदं निम्बपत्रं करञ्जं सारिवा वचा ।
मंजिष्ठा मधुकं मांसी शिरीषं लोध्रपद्मकम् ॥ ३ ॥
हरीतकी प्रपुन्नाटं चूर्णयेत् कार्षिकां पृथक् ।
ततस्तु चूर्णमालोड्य त्रिंशत्पलमिते घृते ॥ ४ ॥
स्थापयेत्ताम्रपात्रेषु घर्मे सप्तदिनानि च ।
अस्याभ्यङ्गेन कुष्ठानि दद्रुपामाविचार्चिकाः ॥ ५ ॥
शूकदोषा विसर्प्पाश्च विस्फोटा वातरक्तजाः ।
शिरःस्फोटोपदंशश्च नाडीदुष्टव्रणानि च ॥ ६ ॥
शोफा भगन्दराश्चैव लूताः शाम्यन्ति देहिनाम् ।
शोधनं रोपणं चैव सर्ववर्णकरं मतम् ॥ ७ ॥

हीराकसीस, दोनों हलदी, मोथा, हरिताल, मैनाशिल, कबीला, गन्धक, वायविडंग, गूगल, मोम, मिरच, नीलाथोथा, सरसों, रसौत, सिन्दूर, चीढ, रक्तचन्दन, कत्था, नीमके पत्ते, करंजुआ, गौरीसर, वच, मञ्जीठ, मुलहठी, बालछड, लोध, पद्माख, हरड, पमारके बीज इन सबको जुदी २ चार चार टंक लेवे, इनका चूर्ण ३० पल घृतमें डालकर औटावे । तांबेके पात्रमें सात दिन धूपमें रक्खे । फिर मर्दन करे तो दाद, पामा, विचर्चिका, शूकदोष, विसर्प, विस्फोटक, वातरक्त, शिरदोष, गरमी, नाडीव्रण, दुष्टव्रण, भगन्दर, मकडी फैलना इनको शोधन करे और देहका कालापन दूर होवे ॥ १–७ ॥

पञ्चतिक्तकं घृतम् ।

वृषानिम्बामृताव्याघ्रीपटोलानां शृतेन च ।
कल्केन पक्वं सर्पिस्तु निहन्याद्विषमज्वरान् ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अडूसा, नींबकी छाल, गिलोय, कटेरी, पटोल इनके काढेको घीमें औटावे, यह घृत विषमज्वरको तत्काल दूर करता है ॥ १ ॥

पुष्टौ कामदेवघृतम् ।

अश्वगन्धा तुलैका स्यात्तदर्द्धो गोक्षुरस्तथा ।
बलाऽमृता शालिपर्णी विदारी च शतावरी ॥ १ ॥
पुनर्नवा स्वच्छशुण्ठी काश्मर्यास्तु दलान्यपि ।
पद्मबीजं सटी बीजं दद्याद्दशपलं घृतम् ॥ २ ॥
चतुर्द्रोणं पयःपक्त्वा पादशेषं शृतं नयेत् ।
जीवनीयगणः कुष्ठं पद्मकं रक्तचन्दनम् ॥ ३ ॥
पत्रकं पिप्पली द्राक्षा कपिकच्छुफलं तथा ।
नीलोत्पलं नागपुष्पं सारिवे द्वे तथा बला ॥ ४ ॥
पृथक्कर्षसमा भागाः शर्करायाः पलद्वयम् ।
रसस्य पौण्ड्रकेक्षूणामाढकैकं समाहरेत् ॥ ५ ॥
घृतस्य चाष्टकं दत्त्वा पाचयेन्मृदुवह्निना ।
घृतमेतन्निहन्त्याशु रक्तपित्तं सुरक्षितम् ॥ ६ ॥
हलीमकं पाण्डुरोगं व्रणभेदं स्वरक्षयम् ।
वातरक्तं मूत्रकृच्छ्रं शश्वच्छूलं तु दारयेत् ॥ ७ ॥
शुक्रक्षयमुरोदाहं कार्श्यमोजःक्षयं तथा ।
स्त्रीणां चैव प्रजननं गर्भदं शुक्रदं नृणाम् ।
कामदेवघृतं नाम हृद्यं बल्यं रसायनम् ॥ ८ ॥

अब पुष्टताके ऊपर कामदेवघृत लिखते हैं । असगन्ध १०० पल, गोखरू ५० पल, खरैटी, गिलोय, शालपर्णी,

Aho ! Shrutgyanam

विदारीकंद, शतावरी, सांठी, पीपल, सोंठ, कुम्भेरन, ककडी यह सब एक एक पल, कमलगट्टा, कचूर, बीजफल, ४० लेवे, ६४ सेर पानीमें चढावे, जब चौथाई रहजाय तब उतारलेवे जीवनीयगण (अर्थात् औषधि), कूठ, पद्माख, रक्तचंदन, तेजपात, पीपल, दाखके बीज, कौंचके बीज, कमल, नागकेशर, दोनों गौरीसर, बेलगिरी यह चार चार टंक लेवे, मिश्री २ पल, कमलकेशर तथा गौडकेशर ६४ पल डालकर पकावे, जब सिद्ध होजाय तब निकाले । यह घृत बहुत दिनोंका रक्तपित्त, हलीमक, पांडुरोग, व्रणभेद, स्वरक्षय वातरक्त, मूत्रकृच्छ्र, पसलीके दरद, पीलिया, वीर्यक्षय, पेटका दरद, दुबलापन और क्षयका नाश करे और स्त्रियोंको सन्तानदायक तथा पुरुषोंको वीर्यदायक है । यह कामदेवघृत हृदयको हित तथा बलकारक रसायन है ॥ १-८ ॥

रुधिरविकारे मंजिष्ठादिघृतम् ।

मंजिष्ठा च हरिद्रा च देवदारु हरीतकी
शृङ्गवेरं ह्यतिविषा वचा कटुकरोहिणी ॥ १ ॥
हिंगुतश्चाक्षमात्रेण तत्सिद्धमवतारयेत् ।
एतन्मांजिष्ठकं सर्पिर्बहून्रोगान्निवारयेत् ॥ २ ॥
हिक्कां श्वासं ज्वरं कुष्ठं ग्रहणीं पाण्डुरोगताम् ।
प्रमेहमधुमेहांश्च क्रिमिगुल्ममरोचकम् ॥ ३ ॥
कासं शोषमुदावर्त्तमपस्मारं तथैव च ।
अर्शांसि श्वयथुं चैव गण्डमालां तथोदरम् ॥ ४ ॥

मंजीठ, हलदी, देवदारु, हरड, सोंठ, अतीस, वच, कुटकी हींग ये एक एक पल लेकर अठगुने पानीमें पकावे, जब चौथाई रहजाय तब घृत डाल देवे, जब सिद्ध होजाय तब उतार लेवे । यह घृत बहुत दिनके रोगोंको दूर करै हिचकी, श्वास, ज्वर, कोढ, संग्रहणी,

Aho ! Shrutgyanam

पांडुरोग, प्रमेह, अर्श, सूजन, गण्डमाला, कृमिरोग, गांठ, अरुचि, खांसी, शोष, उदावर्त्त, मृगी, और उदररोगादिकोंको दूर करै॥ १-४॥

संग्रहणीविकारे कल्याणगुडः ।

पाठाधान्यजवान्यजाजिहपुषाचव्यग्निसिन्धूद्भवैः
सश्रेयस्यजमोदकीटरिपुभिः कृष्णाजटासंयुतः ।
सव्योषैः सफलत्रिकैः सत्रुटिभिस्त्वग्यत्नजैरौषधैः
प्रत्येकं पलिकैः सतैलकुडवैः सार्द्धं त्रिवृन्मुष्टिभिः॥ १॥
सर्वैरामलकीरसस्य तुलया सार्द्धं तुलार्द्धं गुडं स-
म्पाच्यो भिषजाऽवलेहवदयं प्रागभोजनाद्भुज्यते ।
ये केचिद्ग्रहणीगदाः सगुदजाः कासाः सशोफामयाः
सश्वासं श्वयथुं शिरोदररुजः कल्याणकस्तान् जयेत् २

नागपुरीययतिवर श्रीहर्षकीर्तिसंकलिते ।
वैद्यकसारोद्धारे पञ्चमघृताधिकारोऽयम् ॥ ५ ॥

पाढ, धनियां, अजमायन, जीरा, कबाबचीनी, चव्य, सेंधानोन, पीपल, अजमोद, वायविडंग, पीपलामूल, सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, इलायची, तज, तेजपात, नागकेशर यह सब बराबर अर्थात् एक एक पल लेवे । तेल ६४ टंक, निसोथ १६ टंक, आंवलोंका रस १६० टंक, गुड १००० टंक डालकर अच्छे प्रकार औटावे फिर औषधियोंको डालकर अवलेह बनावे, भोजनके प्रथम चार टंक खावे । यह गुड-संग्रहणी, उदररोग, खांसी, कंठ सूखना, श्वास, कंठसूजन आदिरोगोंका नाश करे ॥ १ ॥ २ ॥

इति श्रीमाथुरदत्तरामचौबेकृतमाथुरीमञ्जूषाभाषाटीकायां
घृताधिकारः पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ तैलाधिकारः--षष्ठोऽध्यायः ६.

सर्ववातेषु नारायणतैलम् ।

बिल्वाग्निमन्थश्योनाकपाटलापारिभद्रकाः ।
प्रसारण्यश्वगन्धा च बृहती कण्टकारिका ॥ १॥
बला चातिबला चैव श्वदंष्ट्रा सपुनर्नवा ।
एषां दशपलान्भागांश्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् ॥ २ ॥
पादशेषं परिश्रावं तैलाढकं प्रदापयेत् ।
शतपुष्पा देवदारु मांसी शैलेयकं वचा ॥ ३ ॥
चन्दनं तगरं कुष्ठमेलापर्णीचतुष्टयम् ।
रास्ना तुरगगन्धा च सैन्धवं सपुनर्नवम् ॥ ४ ॥
एषां द्विपलिकान् भागान्पेषयित्वा विनिक्षिपेत् ।
शतावरीरसं चैव तैलतुल्यं प्रदापयेत् ॥ ५ ॥
आजं वा यदि वा गव्यं दद्यात्क्षीरं चतुर्गुणम् ।
शनैर्विपाचयेत्सर्वं तत्सिद्धमवतारयेत् ॥ ६ ॥
पाने बस्तौ तथाऽभ्यङ्गे भोज्ये चैव प्रशस्यते ।
अश्वो वा वातसंभग्नो गजो वा यदि वा नरः ॥ ७ ॥
पंगुलः पीठसर्पी च तैलेनानेन सिद्ध्यते ।
अधोभागाश्च ये वाता शिरोमध्यगताश्च ये ॥ ८ ॥
दन्तशूले हनुस्तम्भे मन्यास्तम्भे गलग्रहे ।
क्षीणेंद्रिया नष्टशुक्रा ज्वरक्षीणाश्च ये नराः ॥ ९ ॥

Aho ! Shrutgyanam

बधिरा लग्नजिह्वाश्च विकला मन्दमेधसः।
मन्दप्रजा च या नारी या च गर्भं न विंदति।
कुरण्डमन्त्रवृद्धिश्च येषां तेषामिदं हितम् ॥ १० ॥
यथा नारायणो देवो दुष्टदैत्यविनाशनः।
तथेदं वातरोगाणां तैलं नारायणं स्मृतम् ॥ ११ ॥

बेल, अरणी, अरल, पाढल, नींबकी छाल, गंधप्रसारणी, असगंध, कटेरी, गंगेरन, गोखरू, सांठ यह सब दस दस पल लेकर ६४ सेर पानीमें औटावे, जब चौथाई रहजाय तब १०२४ टंक तेल डाले. सौंफ, देवदारु, बालछड, छारछबीला, वच, चन्दन, तगर, कूठ, इलायची, शालपर्णी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, पीलवनी, रास्ना, असगन्ध, सैंधानोन, सोंठ, यह सब दो दो पल ले पीसकर डालदेवे और शतावरीका रस तैलके बराबर अर्थात् चार सेर डाले, बकरी और गायका चौगुना दूध डालकर मंदी २ आंचसे पकावे, जब सिद्ध होजाय तब उतारले, फिर इस तेलको पीवे तथा मर्दन करे, भोजनके प्रथम तेल लेवे। घोडा हाथीके वातरोग तथा मनुष्यके पंगु, पीठभग्न वायु इतने रोग इस तेलके लगानेसे नाश होवें और नीचे अंगकी वायु, माथेकी वायु, दन्तशूल, हनुस्तम्भ, जाबडास्तम्भ, गलग्रह, इंद्रियक्षीण, वीर्यनष्ट, ज्वरकरके क्षीण होवे, जीभ फूलना, विकलता, मन्दबुद्धि, स्त्रीके संतान न होय, नलबंधना, आंतोंकी वृद्धि आदिक संपूर्ण रोगोंको नाश करता है ॥ १-११ ॥

जीर्णज्वरे तापातिदाहादौ च लाक्षादितैलम्।

चन्दनांबु नखं वाप्यं यष्टी शैलेयपद्मकम्।
मञ्जिष्ठा सरला दारु शटचेला नागकेशरम् ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पत्रं चैला मुरा मांसी कंकोलं च नतांबुदम् ।
हरिद्रे सारिवे तिक्तं लवङ्गागुरुकुङ्कुमम् ॥ २ ॥
त्वग्रेणुनलिकास्त्वेभिस्तैलं मस्तुचतुर्गुणम् ।
लाक्षारसं समं सिद्धं ग्रहघ्नं बलवर्णकृत् ॥ ३ ॥
अपस्मारक्षयोन्मादे कृतालक्ष्मीविनाशनम् ।
गात्राणां स्फुटने दाहे कण्डूजीर्णज्वरापहम् ॥ ४ ॥

१–चंदन, नेत्रवाला, नख, मुलहठी, शिलाजीत, पद्माख, मंजीठ, निसोथ, देवदारु, कचूर, इलायची, नागकेशर, तेजपात, बालछड, क्षीरकालोली, तगर, नागरमोथा, दोनों हलदी, दोनों गौरीसर, कुटकी, लौंग, अगर, केसर, रेणुका, चीता इनसे चौगुना तेल गायका मट्ठा ९ सेर, लाखका रस ९ सेर इन सबको औटावे, जब सिद्ध हो जाय तब काममें लावे । गलग्रहका नाश करे, शरीरका वर्ण अच्छा करे, मृगी, क्षयी, उन्मादको दूर करे, शरीरको पुष्ट करे, गात्रभंग, दाह, खाज, जीर्णज्वर आदिको दूर करे ॥ १–४ ॥

लक्षाढकं क्वाथयित्वा जलस्य चतुराढकैः ।
चतुर्थांशं शृतं नीत्वा तैलप्रस्थे विपाचयेत् ॥ १ ॥
तक्राढकं च गोदध्नस्तत्रैव च नियोजयेत् ।
शतपुष्पामश्वगन्धा हरिद्रा देवदारु च ॥ २ ॥
कटुका रेणुका मूर्वा कुष्ठं च मधुयष्टिका ।
चन्दनं मुस्तकं रास्ना पृथक्कृत्वा प्रमाणतः ॥ ३ ॥
चूर्णयेत्तत्र निक्षिप्य साधयेन्मृदुवह्निना ।
अस्याभ्यंगात्प्रशाम्यंति सर्वेऽपि विषमज्वराः ॥ ४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

वातपित्ते क्षये दाहे गुर्विणीपुष्टिदं मतम् ।
कासश्वासासृग्विकारे कण्डूशूलभ्रमेषु च ॥ ५ ॥

२–लाखका रस १०२४ टंक, पानी २५६ पल डालकर काढा करे, मीठा तेल १६ पल डाले, गायका मट्ठा १६४ पल डाले और विधिपूर्वक पकावे फिर सौंफ, असगंध, हलदी, देवदारु, कुटकी, संभाळू, मुलहठी, कूठ, मोथा, रक्तचन्दन, रास्ना, मूर्वा इन सबको चार चार टंक ले पीसकर डाले, फिर मन्दाग्निमें पकावे, इसके मर्दन करनेसे संपूर्ण विषम ज्वर नाश होवे. वायु, पित्त क्षय, दाहको हित है और खांसी, श्वास, रुधिर विकार, खाज, शूल भ्रमादिकोंको दूर करता है. गर्भिणीको हित है ॥ १ ॥ ५ ॥

दद्रुमण्डलपामाविचर्चिकादौ मरिचादितैलम् ।

मरिचचंदनदारुनिशाद्वयं जलदमेघशिलालशकृद्रसैः।
त्रिवृतयाऽश्वहरोर्कपयोविषैः सुरभिमूत्रयुतं विप-
चेद्भिषक् ॥ १ ॥ कटुकतैलमिदं मरिचाह्वयं कठि-
नचर्मदलारसकापहम् । बहुलमण्डलसिध्मविच-
र्चिकाप्रवरकुष्ठकिलासविसर्पजित् ॥ २ ॥

मिरच, चन्दन, दोनों हलदी, देवदारु, खस, मोथा, मैनशिल, हरताल, गोबरका रस, निसोत, असगंध, आकका दूध, तेलिया मीठा इनको गोमूत्रमें औटावे, फिर कडवा तेल डालकर उतार लेवे. यह तेल चर्मदल, दाद, बडे चकत्ते, कोढ, पामा, फोडा, विचर्चिकादि संपूर्ण रोगोंको दूर करे ॥ १-२ ॥

वृद्धमरिचादितैलम् ।

मरिचं त्रिफला दन्तीक्षीरमार्कं शकृद्रसैः ।
देवदारु हरिद्रे द्वे मांसीकुष्ठं सचन्दनम् ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

विशाला करवीरं च हरितालं मनःशिला।
चित्रको लाङ्गली लाक्षा विडङ्गं चक्रमर्दकम् ॥ २ ॥
शिरीषकुटजौ निम्बसप्तपर्णस्नुहीमृता।
सम्पाको नक्तमालश्च खदिरं पिप्पली वचा ॥ ३ ॥
ज्योतिष्मती च पलिका विषं च द्विपलं नयेत्।
आढकं कटुतैलस्य गोमूत्रं च चतुर्गुणम् ॥ ४ ॥
मृत्पात्रे लोहपात्रे वा शनैर्मृद्वग्निना पचेत्।
पक्त्वा तैलवरं ह्येतत्कर्षयेत्कोषकं व्रणम् ॥ ५ ॥
पामाविचर्चिकाकण्डूदद्रुविस्फोटकानि च।
वलितं पलितं छाया नीली व्यङ्गत्वमेव च ॥ ६ ॥
अभ्यंगेन प्रणश्यन्ति सौकुमार्यं च जायते।
प्रथमे वयसि स्त्रीणां नस्यमस्य तु दीयते ॥ ७ ॥
जरामपि तथा प्राप्य नाम्ना नायाति विक्रियाम्।
बलीवर्दस्तुरंगो वा गजो वा वायुपीडितः ॥
त्रिभिरभ्यंजयेद्गाढं भवेन्मारुतविक्रमः ॥ ८ ॥

मिरच, १ पल, त्रिफला १ पल, जमालगोटेकी जड १ पल, आकका दूध दो सेर, थूहरका दूध दो सेर, गोबरका रस दो सेर, देवदारु १ पल, दोनों हलदी १ पल, बालछड १ पल, कूठ १ पल, चन्दन १ पल, इन्द्रायण १ पल, कनेरकी जड १ पल, हरताल १ पल, मैनासिल १ पल, चित्रक १ पल, करिहारी १ पल, लाख १ पल, वायविडंग १ पल, पमाडके बीज १ पल, सिरसकी छाल १ पल, कुडेकी छाल १ पल, नींबकी छाल १ पल, सातपूडा १ पल, थूहर, गिलोय, अमलतास, कंजा, जावित्री, पीपल, खैरसार, बच, माल-

Aho ! Shrutgyanam

कांगनी, मंजीठ, तेलियामीठा, कडवातेल, ६४ पल, गोमूत्र २५६ पल इनको मिट्टीके पात्रमें अथवा लोहेके पात्रमें मन्दाग्निसे पकावे। जब पकजाँय तब उतारलेवे। यह तेल कोढ, व्रण, पामा, विचर्चिका, शरीरमें गुलजट और सफेद बालोंका होना, खुजली आदिमें हितकर है इस तेलके मर्दनसे शरीर सुंदर होय. प्रथम उमरवाली स्त्रीको नास देवे तो बुढापेमें भी सुन्दर तथा दृढ शरीर होय. किसी तरह विकारको प्राप्त नहीं होय. बैल, घोडा, हाथी ये वायुविकारसे पीडित होवें तो तीन दिन मर्दन करनेसे पवनके समान पराक्रमवाला होता है ॥ १-८ ॥

सर्ववातरोगे विषगर्भतैलम् १-२।

विषं च पुष्करं कुष्ठं वचा भार्ङ्गी शतावरी।
शुण्ठी हरिद्रे लशुनं विडङ्गं देवदारु च ॥ १ ॥
अश्वगन्धाऽजमोदा च मरिचं ग्रथिकं बला।
रास्ना प्रसारिणी शिग्रु गुडूची हपुषाऽभया ॥ २ ॥
दशमूलानि निर्गुण्डी मिशी पाठा च वानरी।
विशाला शतपुष्पा च प्रत्येकं पलिकोन्मितान् ॥ ३ ॥
चतुर्गुणजलैः पक्त्वा पादशेषं शृतं नयेत्।
तिलतैलं क्षिपेत्प्रस्थं तथैरण्डं च सार्षपम् ॥ ४ ॥
धत्तूरं चाण्डभृङ्गार्करसान्प्रस्थमितान्क्षिपेत्।
पाचयेद्गोमयरसैस्तैलशेषं समुद्धरेत् ॥ ५ ॥
पलमेकं विषं चात्र सूक्ष्मं कृत्वा विनिक्षिपेत्।
सर्वेषु वातरोगेषु सदाऽभ्यङ्गो विधीयते ॥ ६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

संधिवाते सन्निपाते त्रिकपृष्ठे कटिग्रहे ।
पक्षाघाते तथाऽर्द्धांगे गात्रकंपेऽतिदारुणे ॥ ७ ॥
कुब्जके च धनुर्वाते गृध्रस्यां च प्रतानके ।
विषगर्भामिदं तैलं योजनीयं सदा बुधैः ॥ ८ ॥

१–तेलियामीठा, पोहकरमूल, सोंठ, वच, भारंगी, सतावर, मंजीठ, हलदी, लहसुन, वायविडंग, देवदारु, असगंध, अजमोद, मिरच, पीपलामूल, खरैटी, गंधप्रसारणी, सहंजना, गिलोय, हाऊबेर, हरड, दशमूल, संभालु, मेथी, पाढ, कौंचके बीज, इंद्रायणकी जड, सौंफ इन सबको एक एक पल लेकर चौगुने जलमें औटावे, जब चतुर्थांश बाकी रहे तब उतारलेवे, इसमें एक प्रस्थ मीठा तेल, एक प्रस्थ अंडीका तेल और एक प्रस्थ सरसोंका तेल डाले, पीछे इनमें धतूरा, अंड, भांगरा, आकका रस एक एक प्रस्थ डाले. फिर गोबरका रस डालकर पकावे. जब तेल सिद्ध होजाय तब एक पल विष डालकर देहमें लगावे. यह तेल संपूर्ण वातरोगोंका नाश करे, इसकी मालिशसे संधिगत वायु, सन्निपात, त्रिक, पीठ, कमर, इनका दुखना, पक्षाघात, अर्द्धांग कंपवायु, कुबडापन, धनुषवायु, गृध्रसीवायु, प्रतानवायु आदिक रोग दूर होवें यह विषगर्भ तैल है ॥ १–८ ॥

कनकश्चापि निर्गुंडी तुंबिनी सपुनर्नवा ।
वानरीयाऽश्वगंधा च प्रयुन्नाटः सचित्रकः ॥ ९ ॥
सौभांजनं काकमाची कलिहारी तु निंबकैः ।
महानिंबेश्वरी चैव दशमूली शतावरी ॥ १० ॥
कारवेल्ली सारिवे द्वे श्रीपर्णी च विदारिका ।
वज्रार्कमेषशृङ्गी च करवीरद्वयंतथा ॥ ११ ॥

Aho ! Shrutgyanam

काकजंघा त्वपामार्गस्तथा स्यात्सुप्रसारिणी ।
त्रिफला तत्समांशेन रसं तैलं समानि च ॥ १२ ॥
अशुक्तितिलतैलं च तैलमैरण्डसार्षपम् ।
पचेदेकत्र सर्वं तत्तैलं सिद्धं च बुद्धिमान् ॥ १३ ॥
त्रिकटून्यश्वगन्धा च रास्ना कुष्ठं च निंबके ।
देवदारु कलिंगं च द्वौ क्षारौ लवणानि च ॥ १४ ॥
तुत्थं कटुफलं पाठा भार्गी च नवसादरम् ।
गन्धकं पुष्करं मूलं शिलाजतु सटी वचा ॥ १५ ॥
एत नि कर्षमात्राणि तैलशेषे विनिक्षिपेत् ।
प्रसृतं च विषं दद्यात्सूक्ष्मचूर्णीकृतं क्षिपेत् ॥ १६ ॥
विषगर्भमिदं तैलं सर्वव्याधीन्व्यपोहति ।
कुक्षिभ्रूपृष्ठगण्डेषु संधानं शोफमेव च ॥ १७ ॥
गृध्रसीं च शिरोवायुं सर्वांगस्फुटनं तथा ।
दण्डापतानकाष्ठीलं कर्णनादस्य शून्यताम् ॥ १८ ॥
कम्पनं चोर्ध्ववातं च बाधिर्यं पलितं तथा ।
गण्डमालापचीग्रन्थिशिरःकम्पापतन्त्रकम् ॥ १९ ॥
अनेन सर्ववाताश्च सन्निपातास्त्रयोदश ।
वनमभ्यागते सिंहे पलायन्ते यथा मृगाः ।
तथा वातेषु सर्वेषु योजनीयं भिषग्वरैः ॥ २० ॥

२–धतूरेके बीज, संभालू, कडवी तुंबी, सोंठ, कौंचके बीज, असगंध, पमाड, चीता, सहँजना, मकोय, कालिहारी, नीबकी छाल, बकायन, दशमूल, शतावरी, करेला, दोनों

Aho ! Shrutgyanam

गौरीसर, श्रीपर्णी, विदारीकंद, सेहुंड, आक, मेढासिंगी, लाल कनेर तथा सफद कनेर, काकजंघा, ओंगा, प्रसारिणी, त्रिफला यह सब बराबर लेवे और चौगुने पानीमें काढा करे काले तिलका तेल काढेके बराबर, एरंडका तल दूना, सरसोंका तेल तिगुना इन सबको बुद्धिमान् वैद्य एकत्र कर पकावे. तदनंतर सोंठ, मिरच, पीपल, असगंध, रास्ना, कूठ, नींबकी छाल, देवदारु, इन्द्रयव, जवाखार, सज्जी, पांचोंनोंन, शुद्ध नीलाथोथा, कायफल, पाढ, भारंगी, नवसादर, गंधक, पोहकरमूल, शिलाजीत, कचूर, वच, यह औषधि चार चार टंक जब तेलमात्र शेष रहे तब डाल देवे फिर बत्तीस टंक तेलिया मीठा डाले । यह विषगर्भ तेल संपूर्ण रोगोंको दूर करता है । पीठका दरद, भौंहकी पीडा, कूखका दरद कनपटीकी पीडा, संधिपीडा, सूजन, गृध्रसी, माथेकी वायु, सर्वांगफूटन, प्रतानवायु, उदरगाठ, कर्णरोग, मूत्रवायु, कंपवायु, ऊर्ध्ववायु, अधोवायु, बहरापन, पलित, गंडमाला, अपचीवात, मस्तककंप, तेरह प्रकारका सन्निपात, आदि संपूर्ण वातरोग इस तेलसे नाश होते हैं । जैसे वनमें सिंहको देखकर सब मृग भाग जाते हैं उसी प्रकार इस दवाके सेवनसे संपूर्ण रोग नाश होते हैं । इसको अच्छा वैद्य संपूर्ण वातरोगमें देवे ॥ ९-२० ॥

मस्तकरोगे षड्बिन्दुतैलम् ।

एरण्डमूलं तगरं शताह्वा जीवंतिरास्ना लवणोत्तमं च । भृंगं विडंगं मधुयष्टिका च महौषधं चेति तिलस्य तैलम् ॥ १ ॥ एतैर्विपक्वैः पयसा च तुल्यं चतुर्गुणे भृंगरसे च सम्यक् । षड् बिन्दवो नासिकयोपयुक्ताः सर्वान्निहन्युः शिरसो

Aho ! Shrutgyanam

विकारान् ॥ २ ॥ च्युतांश्च केशान् स्खलितांश्च दन्तानुद्बद्धमूलांश्च दृढीकरोति । सुपर्णनागप्रतिमं च चक्षुर्बुद्धिं बलं चाभ्यधिकं करोति ॥ ३ ॥

एरंडमूल, तगर, सतावर, जैती, रास्ना, सेंधानोंन, भांगरा, वायविडंग, मुलहठी, सोंठ, तिलका तेल, पहले तेलको बकरीके दूधमें पकावे फिर तेलसे चौगुना भांगरेका रस डाले और औषधियोंका काढा डालकर पकावे, जब सिद्ध होजाय तब बर्ते. इस तेलकी छः बून्द नाकमें डाले तो सर्व मस्तकविकार नष्ट होवें, बालोंका दृढ करे, उखडे बालोंको फिर जमावे और दांतोंको दृढ करे, दृष्टि बढावे, बल अधिक करे ॥ १-३ ॥

वातरोगे शतावरीतैलम् ।

शतावरीरसं ग्राह्यं पाच्यं वा यन्त्रपीडितम् ।
प्रभूतं तद्रसं क्षिप्त्वा तैलस्याढकमेव च ॥ १ ॥
दधिक्षीरेण विपचेद्द्रव्याण्येतानि दापयेत् ।
शतपुष्पा वचा कुष्ठं मांसीशैलेयचन्दनैः ॥ २ ॥
प्रियंगु पद्मकं मुस्ता ह्रीबेरोशीरतट्फलम् ।
सैन्धवं मधुकं रोध्रं गैर्यकं रक्तचन्दनम् ॥ ३ ॥
चण्डा चैला मुरा स्पृक्का नलिका पद्मकेशरम् ।
श्रीवेष्टकं सर्ज्जरसं जीवकर्षभकौ सटी ॥ ४ ॥
पतंगरेणुका दार्वी कर्चूरं सारिवा तथा ।
मञ्जिष्ठा मधुकं चैव द्रव्यैरेतैः पलोन्मितैः ॥ ५ ॥
मध्यपाकं विजानीयात्ततस्तमवतारयेत् ।

Aho ! Shrutgyanam

पथ्यं पाने तथाऽभ्यंगे नस्ये योज्ये च दापयेत् ॥६॥
पीड्यमाने तथा वाते पक्षाघाताभिमंथके ।
आर्दिते कर्णशूले च उरुस्तम्भे कटिग्रहे ॥ ७ ॥
पवने च शिरःकम्पे सूतिकायां प्रदापयेत् ।
मन्यास्तम्भे धनुःकम्पे ह्यस्थिभंगे च दारुणे ॥८॥
तथा सर्वगते वायौ शुष्यमाणेषु धातुषु ।
अनार्त्तक्षीणरेतस्तु वन्ध्यायां गर्भिणीषु च ॥ ९ ॥
वृक्षं पुनर्नवाकारं बलमारोग्यदं महत् ।
शतावरीतैलमिदं सर्ववातविकारनुत् ॥ १० ॥

शतावरीका रस १०२४ टंक निकालकर मीठा तेल १०२४ टंक डाले फिर दही, दूध डालकर पकावे । सौंफ, वच, कूठ, शिलाजीत चन्दन, प्रियंगु, पद्माख, मोथा, हाऊबेर, खस, कायफल, सेंधानोंन, मुलहठी, लोध, अगर, पतंग, लाल कनेर, कस्तूरी, इलायची, बालछड, छारछबीला, कमल, नागकेशर, चीढ, राल, जीवक, ऋषभक, कचूर, संभालू, दारु हलदी, गौरीसर, मंजीठ यह सब औषधि एक एक पल लेकर तेलमें डालकर पकावे. जब पकजाँय तब उतारकर पानमें, मर्दन, नास, तथा भोजन आदिमें लेवे. यह वायुपीडा, पक्षाघात, दरद, कानका दरद, ऊरुस्तम्भ, कमरका दरद, वमन. मस्तकरोग, प्रसूतिकारोग, इन रोगोंमें अवश्य देवे । जावडास्तम्भ, धनुर्वात हडफूटन भयानक दरद, धातु सूखना, क्षीणवीर्य आदिक रोगोंको दूर करता है, वन्ध्या सेवन करे तो पुत्रवती होय. शरीरको पुष्ट करे. बल करे, आरोग्य करे, सब प्रकारके वायुके नाशक है ॥ १-१० ॥

Aho ! Shrutgyanam

वातपित्तादिरोगे बलाद्यतैलम् ।

बलाशतं गुडूच्याश्च पादं रास्नाष्टभागकम् ।
जलाढकशतैः पक्त्वा शतभागस्थिते रसे ॥ १ ॥
दधिमस्त्विक्षुनिर्यासे शुक्तैस्तैलाढके शनैः ।
पचेत्सा च पयोद्धांशं कल्कैरेभिः पलोन्मितैः ॥२॥
सटीसरलदार्व्येलामञ्जिष्ठागरुचन्दनैः ।
पद्मकात्रिफलामुस्तासूर्यपर्णीहरेणुभिः ॥ ३ ॥
यष्ट्याह्वासुरसाव्याघ्रीनखर्षभकजीवकैः ।
पलाशरसकस्तूरीनलिकाजातिकोशकैः ॥ ४ ॥
स्पृक्काकुंकुमशैलेयामालतीकट्फलांबुभिः ।
त्वक्कुन्दरसकर्पूरीतुरुष्कश्रीनिवासकैः ॥ ५ ॥
लवङ्गनखकंकोलकुष्ठमांसीप्रियंगुभिः ।
क्षीरेयतगरं वापि वचादमनकच्छुकैः ॥ ६ ॥
सनागकेशरं सिद्धे दद्याच्चात्रावतारिते ।
पलमात्रं ततः पूतं विधिना तत्प्रयोजयेत् ॥ ७ ॥
कासं श्वासं ज्वरं मूर्छां छर्दिगुल्मक्षतक्षयान् ।
दौर्बल्यं शिरसस्तापं सर्वधात्वावृतानिलम् ॥ ८ ॥
प्लीहशोषात्रपस्मारमलक्ष्मीं च प्रणाशयेत् ।
बलातैलमिदं श्रेष्ठं वातव्याधिविनाशनम् ॥ ९ ॥

खरेटी १०० पल, गिलोय २५ पल, रास्ना १२ पल, इनको दश मन पानीम पकावे जब सौ पल रहजाय तब, उतारलेवे फिर दही मट्ठा गुड इनके काढेम पकावे, फिर १

Aho ! Shrutgyanam

आढक तिलके तेलमें पकावे, बकरीके आध आढक दूधमें काढा कर इन औषधियोंको डाले–कचूर, देवदारु, दारुहलदी इलायची, मंजीठ, अगर, चन्दन, पद्माख, त्रिफला, मोथा, माषपर्णी, रेणुका, मुलहठी, रास्ना, कटेरी, नख, सुगन्धिद्रव्य, ऋषभक, जीवक, पलाश (ढाक) रस, कस्तूरी, निसोत, जायफल, केशर, शिलाजीत, मालतीपुष्प, कायफल, नेत्रवाला, तज, कुन्द, त्वचा, कपूर, लोहबान, चीढ, लौंग, करंज, मिरच, कंकोल, कूठ दोनों मरुआ, बालछड, प्रियंगू, फावूला तगर, वच, दमनफूल, कौंचके बीज, नागकेशर, जब तेल पकजाय तब इन औषधियोंको १६ टंक डालकर फिर पकावे। इसको विधि-संयुक्त सेवन करे तो खांसी, श्वास, ज्वर, मूर्च्छा, छर्दि, गोला, क्षय, दुर्बलता, मस्तकशूल, सम्पूर्ण धातुओंके भीतरकी वायु, प्लीहा, सूजन, मृगी, शरीरका दोष (मल) इतने रोगोंको बलातेल नाश करता है और सम्पूर्ण प्रकारकी वायुको दूर करता है ॥ १–९ ॥

वातरोगे प्रसारणीतैलम् ।

प्रसारणीक्काथपयोम्बुतक्रमस्त्वारनालं विपचेत्तु तैलम् । कल्कीकृतं विश्वघनांबुकुष्ठं मांसीशताह्वामरदारुसेव्यैः ॥ १ ॥ शैलेयरास्नागरुसारिवा च सिन्धूत्थबिल्वानलमंथचोच्चैः । तगरं लतांभोजपुनर्नवा स्याच्छ्योनाकयष्ट्याभकुटंनटैश्च ॥ २ ॥ छिन्नोद्भवादार्व्यभयाकरंजमेदानिशाह्वैः सफलत्रिकैश्च । एरण्डगोकंटकजीवकैश्च तत्साधितं हंत्यनिलोत्थरोगान् ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

सर्वांश्च दीप्तानपि पक्षघातान्वाताश्रिताध्मानहनु-
ग्रहादीन ॥ ४ ॥ संशुष्कभग्नप्रबलाङ्गयष्टि
योऽसाध्यतामुल्बणमारुतेन । नीतः पुमांस्तस्य
भवेदवश्यं प्रसारणीतैलमिदं हिताय ॥ ५ ॥

प्रसारणीका काढा कर दूध, दही, मट्ठा, कांजी इनको मिलाकर पकावे जब तेल शेष रहजाय तब उतारकर सोंठ, मोथा, नेत्रबाला, कूठ, अरणी, तज, मञ्जीठ, अगर, कमल, सांठी, अरलू, मुलहठी, मनसिल, छड, सौंफ, देवदारु, शिलाजीत, रास्ना, अगर, गौरीसर, सैंधानोंन, बेल, गिलोय, दारुहलदी, हरड, कांज, अष्टवर्ग, हलदी, बहेडा, आंवला, एरंड, गोखरू, जीवक इनसे सिद्ध किया तेल संपूर्ण वायुरोगोंको दूर करता है. सब इन्द्रियोंको बल करे और पक्षाघात, पेटका अफरा, हनुग्रह, गृध्रसी, सब भुजारोग, बाहुशोष, हृदय, मस्तक, शरीरफटेको उल्वण सन्निपात, आदि संपूर्ण वायुरोगोंको दूर करता है ॥ १-५ ॥

साधारणगुणभूषाद्यईचन्दनादितैलम् ।

चन्दनं पद्मकं कुष्ठमुशीरं देवदारु च ।
नागकेशरपत्रैलात्वङ्मांसीतगरं जलम् ॥ १ ॥
जातीफलं घोण्टफलं कुंकुमं जातिपत्रिका ।
नखं कुन्दरुकस्तूरी चण्डासैलेल्हदं मनः ॥ २ ॥
पतङ्गं पुष्करं मुस्ता रक्तचन्दनसारिवा ।
शटीकर्पूरमञ्जिष्ठालाक्षायष्टिप्रियंगुभिः ॥ ३ ॥
शतपुष्पा वरी मूर्वा ह्यश्वगन्धा महौषधम् ।
पद्मकेशरश्रीबिल्वमरलागरुरेणुभिः ॥ ४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

स्पृक्कालवंगकंकोलं द्रवैरेभिर्द्विकर्षकैः ।
दशमूलकषायस्य भागाः षष्ट्यायसस्तथा ॥ ५ ॥
यवकोलकुलत्थानां बलामूलस्य चैकतः ।
निक्काथ्य भागो भागाश्च तैलस्य च चतुर्दश ॥ ६ ॥
ततः पक्के विजानीयात्क्षिप्रं तदवतारयेत् ।
शुभे पात्रे विनिक्षिप्तमौषधैस्तु सुगन्धिभिः ॥ ७ ॥
प्रतीवापं ततः कार्यमेषां संयोजने विधिः ।
प्रयोज्यं सुकुमाराणामीश्वराणां सुखात्मनाम् ॥ ८ ॥
स्त्रीणां स्त्रीवृन्दभर्तॄणामलक्ष्मीकलिनाशनम् ।
सर्वकाले प्रयोगेण कांतिलावण्यपुष्टिदम् ॥ ९ ॥
जीर्णज्वरं सदाहं च शीतं च विषमज्वरम् ।
शोषापस्मारकुष्ठघ्नं वंध्यानां च सुतप्रदम् ॥ १० ॥
अशीतिं वातजान्रोगान्वातरक्तं विशेषतः ।
सूतिकाबालमर्मास्थिहतक्षीणेषु पूजितम् ॥ ११ ॥
व्याधितानां हितार्थाय ये तु कंड्वार्तिपीडिताः ।
विशेषाद्रूक्षदेहानां विचित्राणां विशेषतः ॥ १२ ॥
विनिर्मितमिदं तैलं चात्रेयेण महर्षिणा ।
न चास्मात्सहसा रोगाः प्रभवंत्यूर्ध्वजत्रुजाः ॥ १३ ॥
अस्य प्रयोगात्तैलस्य जरां न लभते नरः ।
चन्दनादि त्विदं तैलं लोकानां च हितप्रदम् ॥ १४ ॥

चन्दन, पदमाख, कूठ, उशीर, देवदारु, नागकेशर, तेजपात, इलायची, तज, बालछड, तगर, नेत्रबाला, जायफल, सुपारी,

Aho ! Shrutgyanam

केशर, जावित्री, नख, (नख नामसे प्रसिद्ध सुगंधियुक्त होता है), गोंद, कस्तूरी, कोकेछ, छारछबीला, पतंग, पोहकरमूल, मोथा, रक्तचन्दन, गारीसर, कचूर, कपूर, मजीठ, लाख, मुलहठी, प्रियंगु, सौंफ, शतावर, मूर्वा, असगन्ध, सोंठ, कमलकेशर, हाऊबेर, चीढ, पित्तपापडा, गठिवन, लौंग, कंकोल इन औषधियोंको ८ टंक लेकर और दशमूल १ भाग ले लोहेकी कढाईमें काढा करे, बेर कुलथीका काढा करे. इनको एकत्र कर और खौंटीकी जडका काढा यथोक्त कर चौगुना तेल डाले. जब परिपक्व होजावे तब उतार लवे और सुन्दर पात्रमें रख देवे और सुगंधवाली औषधियोंको ऊपरसे डाल देवे। इसके मर्दनसे शरीर सुन्दर होवे. स्त्री पुरुष दोनों लगावें तो शरीर शोभायुक्त होवे, बहुत दिनका ज्वर, दाह, शीतज्वर, विषमज्वर, मुखशोप, मृगी, कोढ आदिको दूर करे, बाँझ स्त्रीके पुत्र होय, ८० प्रकारके वातरोग, प्रसूतरोग, बालका मर्मरोग, वीर्यक्षीण, हतवीर्य, खाज, रूखी देह, त्वचाके रोग और जत्रुके ऊपर जो रोग होवें उन सबमें यह चंदनादि तेल हितकारक है. यह आत्रेय मुनिने कहा है ॥ १-१४ ॥

कुष्ठदद्रुविकारे वज्रतैलम् ।

वज्रीक्षीररविक्षीरे द्रव्यधान्यारचित्रकम् ।
महिषीविड्भवं द्रावं सर्वांशतिलतैलकम् ॥ १ ॥
पचेत्तैलावशेषं तु गोमूत्रेऽथ चतुर्गुणम् ।
तैलावशेषं पक्त्वा च तत्तैलं प्रस्थमात्रकम् ॥ २ ॥
गन्धकाग्निशिलातालविडङ्गातिविषाविषम् ।
तिक्तकोशातकी कुष्ठं वचा मांसी कटुत्रिकम् ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पीतदारु च यष्ट्याह्वं सर्जिक्षारं च जीरकम् ।
देवदारु च कर्षांशचूर्णं तैले विमिश्रयेत् ॥ ४ ॥
वज्रतैलमिति ख्यातमभ्यंगात्सर्वकुष्ठनुत् ॥ ५ ॥

थूहरका दूध, आकका दूध, धतूरेका रस, चीतेका रस, भैंसके गोबरका रस इन सबके बराबर तिलका तेल डालकर पकावे, जब तेलमात्र रहजाय तब उतार लेवे, तेल एक प्रस्थ डाले फिर गोमूत्र चौगुना डालकर पकावे फिर चीता, गण्डक, मनसिल, हरताल, वायविडङ्ग, अतीस, तेलियामीठा, सज्जीखार, जीरा, देवदारु, इनको चार चार टंक, चूर्ण कर डाले । इस तेलके लगानेसे सम्पूर्ण कुष्ठ नाश होवें ॥ १-५ ॥

कुष्ठे कालानलतैलम् ।

त्रिक्षारं पटुपञ्चकोलरजनी तालं शिला गन्धकं ।
सिन्दूरं रसराठरामठनृपं लोहं रसोनांजनम् ।
कुष्ठं तुत्थकदारुवेल्लमहिजं स्नुह्यर्कदुग्धप्लुतं ।
पाच्यं सर्षपतैलमष्टदधिकं कुष्टे हि कालानलम् ॥ १ ॥

सज्जी, जवाखार, सुहागा, पांचों नोन, बेर, हलदी, हरताल, मनसिल, गन्धक, सिन्दूर, पारा, मैंनफल, हींग, भांगरा, सार, लहसन, रसौंत, कूठ, नीलाथोथा, दारु हलदी, वायविडंग, चिरायता, थूहर, आकका दूध इन सबको बराबर लेकर सरसोंका तेल आठ पल, गायका मट्ठा ८ पल ले तेल बना लेवे । यह तेल १८ प्रकारके कुष्ठोंका नाश करे ॥ १ ॥

सिन्दूरादितैलम् १-२ ।

सिन्दूरं चन्दनं मांसी विडंगं रजनीद्वयम् ।
प्रियंगुः पद्मकं कुष्ठं मञ्जिष्ठा खदिरं वचा ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

जात्यर्कत्रिवृता निम्ब करंजविषमेव च।
कृष्णा छत्रकरोध्रं च प्रपुन्नाटं च संहरेत् ॥ २ ॥
अम्लपिष्टानि सर्वाणि योजयेत्तैलमात्रया।
अभ्यंगेन प्रयुंजीत सर्वकुष्ठविनाशनः ॥ ३ ॥
पामाविचर्चिकाकच्छूविसर्पे विहितं मतम्।
रक्तपित्तोत्थितान्हन्ति रोगानेवंविधान्बहून् ॥ ४ ॥

१-सिन्दूर, चन्दन, बालछड, वायविडंग, दोनों हलदी, प्रियंगु, पदमाख, कूठ, मंजीठ, खैरसार, बच, चमेली, आकका दूध, निसोथ, नीम्बकी छाल, कंजा तेलियामीठा, पीपल, छतोना, छारछबीला, लोध, पमारके बीज इनको एकत्र कर इमलीके रसमें पीस तेलमें पकावे, जब सिद्ध हो जाय तब मर्दन करे तो सम्पूर्ण कोढ दूर होवें, और पामा, विचर्चिका, दाद, फोडा तथा रक्तपित्तादि रोग दूर होवें १-४॥

सिन्दूरार्द्धपले पिष्टं जीरकस्य पलं तथा।
कटुतैलं पचेत्ताभ्यां सद्यः पामाहरं परम्।
वृद्धवैद्योपदेशेन पचेत्तैलं पलाष्टकम् ॥ १ ॥

२-सिन्दूर ८ टंक, जीरा १६ टंक, सरसोंका तेल ८ पल ले पकावे। इस तैलको मर्दन करनेसे पामा और कुष्ठ दूर होवें ॥ १ ॥

गुंजादितैलम्।

गुञ्जामूलं फलं तैलं तोयं द्विगुणितं पचेत्।
तस्याभ्यङ्गेन संमर्देद्गण्डमालां सुदारुणाम् ॥ १ ॥

चिरमिटीकी जड और फल साथ लेकर तेल और दुगुने पानीमें औटावे जब तैल सिद्ध होजाय तब इसके मर्दन करनेसे कठिन गंडमाला दूर होवे ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

भल्लातकतैलम् ।

भल्लातकत्र्यूषणमक्षचूर्णं कुष्ठं च गुंजा त्रिफला च तैलम् । क्षारांश्च पंचाथ विपच्य चैतदभ्यंजनाद्धन्ति च कुष्ठदद्रुम् ॥ १ ॥

भिलावा, सोंठ, मिरच, पीपल, बहेडा, कूठ, चिरमिटी, त्रिफला, कडवातेल, पांचों नोन इन औषधियोंको पकाकर तेल बनाकर इसको मर्दन करनेसे कोढ तथा दाद दूर होवे ॥ १ ॥

अर्कतैलम् ।

अर्कपत्ररसे पक्वं हरिद्राकल्कसंयुतम् ।
शोधयेत्सार्षपं तैलं पामाकच्छूविचर्चिकाः ॥ १ ॥

आकके पत्तोंके रसमें हलदी पीसकर काढा करे, सरसोंका तेल डालकर पकावे, जब, तेल शेष रहे तब उतारलेवे यह तेल पामा, दाद, विचर्चिकाको दूर करता है ॥ १ ॥

नीलकाद्यं तैलम् ।

नीलका केतकीकन्दं भृंगराजकुरण्टकः ।
तथाऽर्जुनस्य पुष्पाणि बीजकाक्षसमानपि ॥ १ ॥
कृष्णास्तिलाश्च तगरं समूलं तगरं तथा ।
अयोरजः प्रियंगुश्च दाडिमत्वग्गुडूचिका ॥ २ ॥
त्रिफला पद्मकाष्ठं च कल्कैरेभिः पृथक्पृथक् ।
कर्षमानं पचेत्तैलं त्रिफलाक्वाथसंयुतम् ॥ ३ ॥
भृंगराजरसेनैव सिद्धं केशः स्थिरीभवेत् ।
अकालपलितं कण्डूमिन्द्रलुप्तं च नाशयेत् ॥ ४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

नीलवृक्ष (पत्रज), केतकीकी जड, भांगरा, पियाबाँसा, अर्जुनवृक्षके फूल, बिजैसार, बहेडा, इनकी बराबर मात्रा ले, फिर काले तिलका तेल, तगर, कमलकी जड, लोहकी चूरा, प्रियंगू, अनारकी छाल, गिलोय, त्रिफला, पद्माख, इन सबको चार चार टंक लेकर तेलमें पकावे, फिर त्रिफलेका काढा, भांगरेका रस डालकर पकावे, जब तेल रहजाय तब उतार लेवे । इसके लगानेसे बाल स्थिर होवें और जवानीमें बाल सफेद होजायँ तो काले होवें, खाज, होनेसे बाल उडजांय तो फिर आवें ॥ १–४ ॥

रोमशातने नाडीव्रणादौ च क्षारादितैलम् ।

शुक्तिशम्बूकशङ्खानां दीर्घवृन्तान् समाक्षिकान् ।
दुग्धक्षारं समादाय खरमूत्रेण भावयेत् ॥ १ ॥
क्षाराष्टभागं विपचेत्तैलं सर्षपजं बुधः ।
इदमन्तःपुरे देयं तैलमात्रेण पूजितम् ॥ २ ॥
बिन्दुरेकः पतेद्यत्र तत्र रोम पुनर्नहि ।
इदं नाडीव्रणे तैलमश्विभ्यामेव निर्मितम् ॥ ३ ॥
अर्शांसि कुष्ठरोगाणि पामादद्रूविचर्चिकाः ।
क्षारतैलमिदं श्रेष्ठं सर्वकेशहरं परम् ॥ ४ ॥

सीप, घोंघा, बडा शंख (भानाम कट्ठ) इनको गरम कर गधेके पेशाबमें बुझावे, आठ भाग क्षारको एक भाग सरसोंके तेलमें पकावे, जब तेल शेष रहे तब उतार लेवे । यह तेल अन्तःपुरमें देवे । एक बूँद डालनेसे रोम दूर होवें, नाडीव्रणके निमित्त यह तैल अश्विनी कुमारोंने कहा है अर्श, १८ प्रकारका कोढ, पामा, दाद आदिका नाश करे । सम्पूर्ण बालोंको दूर करता ह यह क्षारतेल श्रेष्ठ है ॥ १–४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

स्तनविकारे कासीसादितैलम् ।

कासीसतुरगगन्धासांबरगजपिप्पलीविपक्वेन ।
तैलेन यान्ति वृद्धिं स्तनकर्णवरांगलिंगानि ॥ १ ॥
कटीतटनिकुंजेषु संस्थितो वातकुंजरः ।
एरण्डतैलसिंहस्य गन्धमाघ्राय गच्छति ॥ २ ॥

नागपुरीययतिवरश्रीहर्षकीर्तिसंकलिते ।
वैद्यकसारोद्धारे षष्ठस्तैलाधिकारोऽयम् ॥ ६ ॥

कासीस, असगन्ध, लोध, गजपीपल इनको तेलमें डालकर पकावे जब तेल मात्र रहजाय तब उतारलेवे । इसके मलनेसे स्त्रियोंके स्तन बढें, योनिवृद्धि तथा लिंग वृद्धि करे । कमरमें दर्द करनेवाला वातरूपी हाथी एरंडतेलरूप सिंहकी गन्ध सूंघतेही भागता है ॥१-२॥

इति श्रीदत्तरामचौबेकृतयोगचिन्तामणिमाथुरीमंजूषा-
भाषाटीकायां तैलाधिकारः षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ मिश्राधिकारः--सप्तमोऽध्यायः ७.

तत्रादौ विषयनिरूपणम् ।

गुग्गुलः शंखकद्रावो गन्धकं च शिलाजतु ।
स्वर्णताम्रादिवंगादिसारमण्डूरमारणम् ॥ १ ॥
अभ्रकं तस्य सत्त्वं च पारदं तालकं तथा ।
नागताम्रं च माक्षीकं मनःशिलादिशोधनम् ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

रसास्तथाऽऽसवारिष्टलेपाश्च मल्हमागुदम् ।
रक्तस्रावं च नस्यं च विरेको वमनं तथा ॥ ४ ॥
स्वेदबन्धेरणोद्धूलरोष्टगंडूषधूपवत् ।
तक्रपानकटीरोहा हिमा घामाश्च मुद्गकैः (?) ॥ ४ ॥
केचित्साधारणा योगाः केचित्कायचिकित्सकाः ।
वन्ध्यौषधं तथा कर्मविपाकं किंचिदुच्यते ॥ ५ ॥
ज्वरादिरोगसंख्या च नाडीमूत्रपरीक्षणम् ।
नेत्रस्यरसनाज्ञानं परीक्षा मात्रया सह ॥ ६ ॥
राजप्रशस्तिरध्याये सप्तमे परिकीर्त्तिता ॥ ७ ॥

इसमें इतनी चीजें कहेंगे-योगराजगूगल आदि १ शंखद्रावादि २, गन्धकशोधन ३, शिलाजीतशोधन ४, सुवर्ण ५, तांबा ६ वंगादिमारण ७, मण्डूरमारण ८, अभ्रक, ९ अभ्रकसत्त्व १०, पारदशोधन तथा मारण ११, हरताल शोधन मारण १२, शीसा शोधन मारण १३, सोनारूपामक्खी शोधन मारण १४, मनासिल शोधन १५, रसक्रिया १६, आसव १७, अरिष्ट १८, लेप १९, मलहम २०, रुधिरस्राव २१, नस्य २२, विरेचन २३, वमन २४, स्वेदक्रिया २५, बन्धन २६, उद्धूलन २७, रोटी बांधना २८, कुल्ला करना २९, धूप देना ३०, तक्रपान ३१, कटिरोह ३२, हिम ३३, घाम ३४, मधुरकज्वर लक्षण ३५, कुछ साधारण योग ३६, कायचिकित्सा ३७,बन्ध्या औषध३८, कर्मविपाक ३९, ज्वरादिरोगोंकी गिनती ४०, मूत्रपरीक्षा ४१, नेत्रज्ञान ४२, मुखज्ञान ४३, जिह्वाज्ञान ४४, मात्राकी परीक्षा ४५, (४१ से ४५ तक आदिमें ही कहा गया है) राजप्रशंसा ४६, ग्रन्थकी तारीफ ४७ यह सातवें अध्यायमें कही हैं ॥ १-७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

प्रथमं गुग्गुलु प्रकरणम् ।

तत्र वातव्याधौ योगराजगुग्गुलुः १-२ ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ।
भृष्टं हिंग्वजमोदा च सर्षपा जीरकद्वयम् ॥ १ ॥
रेणुकेन्द्रयवा पाठा विडङ्गं गजपिप्पली ।
कटुकाऽतिविषा भार्ङ्गी वचा मौर्वांति भागतः ॥ २ ॥
प्रत्येकं शाणमात्राणि द्रव्याणीमानि विंशतिः ।
द्रव्येभ्यः सकलेभ्यश्च त्रिफला द्विगुणा भवेत् ॥ ३ ॥
एभिश्चूर्णीकृतैः सर्वैः समो देयस्तु गुग्गुलुः ।
घृतेन पिण्डं संकुट्य धारयेद् घृतभाजने ॥ ४ ॥
गुटिकां शाणमात्रां तु कृत्वा ग्राह्या यथोचिता ।
गुग्गुलुर्योगराजोऽयं त्रिदोषघ्नो रसायनम् ॥ ५ ॥
मैथुनाहारपानानां त्यागो नैवात्र विद्यते ।
सर्वान् वातामयान्कुष्ठानर्शांसि ग्रहणीगदान् ॥ ६ ॥
प्रमेहं वातरक्तं च नाभिशूलं भगन्दरम् ।
उदावर्तं क्षयं गुल्ममपस्मारमुरोग्रहम् ॥ ७ ॥
मन्दाग्निं श्वासकासौ च नाशयेदरुचिं तथा ।
रेतोदोषहरः पुंसो रजोदोषहरः स्त्रियाः ॥ ८ ॥
पुंसामपत्यजनको वन्ध्यानां गर्भदस्तथा ।
रास्नादिक्काथसंयुक्तो विविधं हंति मारुतम् ॥ ९ ॥
काकोल्यादिशृतात्पित्तं कफमारग्वधादिना ।

Aho ! Shrutgyanam

दार्वीशृतेन मेहांश्च गोमूत्रेण च पाण्डुताम् ॥ १० ॥
मेदोवृद्धिं च मधुना कुष्ठं निंबशृतेन च।
छिन्नाक्वाथेन वातास्रं शोफं शूलं कफामयान् ॥ ११ ॥
पाटलाक्वाथसहितोविषं मूषकजं जयेत्।
त्रिफलाक्वाथसहितो नेत्रार्तिं हन्ति दारुणाम्।
पुनर्नवादिक्वाथेन हन्यात्सर्वोदराणिच ॥ १२ ॥

१–पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, भूनी हींग, अजमोदा, सरसों, दोनों जीरे, सम्भालू, इन्द्रायण, पाढ, वायविडंग, गजपीपल, कुटकी, अतीस, भारंगी, वच, मरोडफली इन २० दवाइयोंकी जुदी २ मात्रा एक एक टंक और इन सबसे दूना त्रिफला इन सबका चूर्ण कर सबके बराबर शुद्ध गूगल डाले और घीमें सानकर सबकी गोली बनाकर चिकने बर्तनमें रख देवे, २ टंकके प्रमाण गोली सेवन करे, यह योगराजगूगल संपूर्ण वातरोगोंको तथा कोढ, अर्श, संग्रहणी, प्रमेह, वातरक्त, नाभिशूल, भगंदर, उदावर्त, क्षय, गुल्म, मृगी, उरग्रह, मंदाग्नि, श्वास, खांसी, अरुचि, वीर्यगत दोष और स्त्रियोंका प्रदरको दूर करे, पुरुषोंके सन्तान उत्पत्ति करे, सर्व त्रिदोषोंका नाश करे, और रसायन है मैथुन, आहार, पानका कुछ परहेज नहीं है, वन्ध्या पुत्रवती होय और रास्नाके काढेके साथ लेवे तो बहुत प्रकारके वातरोग नाश होवें, कंकोलके काढेके साथ लेवे तौ पित्त दूर होवे, अमलतासके काढेके साथ लेय तौ कफ नाश होवे, दारुहलदीके काढेके साथ लेनेसे प्रमेह दूर होय, गोमूत्रसे लेय तौ पांडुरोग जाय, शहदके साथ लेय तो मेदरोग दूर होय, नींबकी छालके काढेके साथ लेय तौ १८ प्रकारका कोढ नाश होय, गिलोयके काढेके साथ लेय तौ आमवात, सूजन, शूल, कफ दूर होवे, पाढरीके क्वाथके साथ लेनेसे उदरविष जाय, त्रिफलके काढेके साथ लेनेसे नेत्रदरद जावे और सोंठके साथ लेनेसे संपूर्ण उदररोग नाश होवें ॥ १–१२ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ।
पाठाविडंगेन्द्रयवाहिंगुभार्गीवचान्वितैः ॥ १३ ॥
सर्षपातिविषाजाजीजीवकारेणुकान्वितैः ।
गजकृष्णाऽजमोदा च मूर्वा कटुकमिश्रितम् ॥१४ ॥
समभागान्वितैरेतैस्त्रिफला द्विगुणा भवेत् ।
त्रिफलासहितैरेतैः समभागस्तु गुग्गुलुः ॥ १५ ॥
गुग्गुलस्य समं क्षीरं क्षीरादर्द्धं च सर्पिषः ।
सर्पिःषोडशगोमूत्रं साधितं गुग्गुलीसह ॥ १६ ॥
त्रिफलासममण्डूरं लोहं चैव चतुर्गुणम् ।
मधुना परिप्लुतं चैव भेषजं तत्प्रकारयेत् ॥ १७ ॥
योगराज इति ख्यातो भक्षयेत्प्रातरुत्थितः ।
अर्शांसि वातगुल्मं च पाण्डुरोगमरोचकम् ॥१८॥
नाभिशूलमुदावर्तं प्रमेहान्वातशोणितम् ।
भगन्दरं क्षयं कुष्ठं हृद्रोगं ग्रहणीगदम् ॥ १९ ॥
महान्तमग्निसादं च श्वासं कासं तथैव च ।
रेतोदोषाश्च ये पुंसां योनिदोषाश्च योषिताम् ॥२०॥
निहंत्युदायुधान्सर्वान् दुर्वारान्नात्र संशयः ।
अस्मिन्न परिहारस्तु पानभोजनमैथुने ॥ २१ ॥

२-पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, पाढ, वायविडंग, इंद्रजौ, भुनी हींग, भारंगी, वच, सरसों, अतीस, जावित्री दोनों जीरे, सँभालू, गजपीपल, अजमोद, मरोडफली, कुटकी इनकी समान मात्रा लेवे और सबसे दूना त्रिफला और सबके बराबर शुद्ध गूगल गूगलके

Aho ! Shrutgyanam

बराबर गौका दूध, दूधसे आधा घी और घीसे सोलह गुणा गोमूत्र इन सबको मिलाकर पकाय शहद डाले, त्रिफलाके बराबर मंडूर उससे दोगुणा लोहसार, मंडूर-सार डालकर काममें लावे । इस योगराज-गूगलको प्रातःकाल सेवन करनेसे अर्श, वायुगोला, पांडुरोग, अरुचि, नाभिशूल, उदावर्त्त, प्रमेह, वातरक्त, भगंदर, क्षय, कोढ, हृदयरोग, ग्रहणी, श्वास, और खांसीको दूर करे । अग्निका दीपन करे, वीर्यको बढावे, स्त्रियोंके योनिदोषोंको दूर करे । इसपर खाना पीना कुछभी वर्जित नहीं है ॥ १३-२१ ॥

किशोरगुग्गुलुः ।

त्रिफलायास्त्रयः प्रस्थाः प्रस्थैकममृता भवेत् ।
संक्षिप्य लोहपात्रेषु सार्द्धद्रोणांबुना पचेत् ॥ १ ॥
जलमर्द्धशृतं ज्ञात्वागृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ।
तत्र क्वाथे क्षिपेच्छुद्धं गुग्गुलुं प्रस्थसम्मितम् ॥ २ ॥
पुनः प्रदेयं तत्पात्रे दर्व्या संचालयेन्मुहुः ।
सान्द्रीभूतं च तज्ज्ञात्वा गुडपाकसमाकृतिः ॥ ३ ॥
चूर्णीकृत्य ततस्तत्र द्रव्याणीमानि निक्षिपेत् ।
पथ्या द्विपलिका ज्ञेया गुडूची पलकोन्मिता ॥ ४ ॥
षडक्षं त्र्यूषणं प्रोक्तं विडंगानि पलार्द्धकम् ।
कर्षं कर्षं त्रिवृद्दन्त्यौ पीडितं स्निग्धभाजने ॥ ५ ॥
गुटिकां शाणिकां कृत्वा युंज्याद्दोषाद्यपेक्षया ।
अनुपाने भिषग् दद्यात्कोष्णं नीरं पयोऽथवा ॥ ६ ॥
मञ्जिष्ठादिशृतेनापि युक्तं युक्तिमता परम् ।
जयेत्सर्वाणि कुष्ठानि वातरक्तं त्रिदोषजम् ॥ ७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

सर्वव्रणानि गुल्मांश्च प्रमेहपिडिकास्तथा ।
प्रमेहोदरमन्दाग्निकासश्वयथुपाण्डुताः ॥ ८ ॥
हन्ति सर्वामयानित्थं सुखयुक्तो रसायनः ।
किशोरकाभिधानोऽयं कुर्यात्कैशोरकं बलम् ॥ ९ ॥
अम्लं तीक्ष्णमजीर्णं च व्यवायं श्रममातपम् ।
मद्यं रोषं त्यजेत्सम्यग्गुणार्थी पुरुसेवकः ॥ १० ॥

त्रिफला ४८ पल, गिलोय १० प्रस्थ इनको २४ सेर पानीमें डालकर लोहेके पात्रमें पकावे, जब आधा पानी शेष रहे तब उतारकर कपडेमें छानलेवे, फिर गुग्गुल १ प्रस्थ डालकर औटावे, कलछीसे हिलाता जाय, जब गुडकी चासनीके समान गाढा होजाय तब उतार ठंढा कर निम्नलिखित औषधियोंको डाले—हरड २ पल, गिलोय २ पल, सोंठ, मिरच, पीपल २४ टंक, वायविडंग ८ टंक, निसोथ ४ टंक, जमालगोटेकी जड २ टंक। फिर सबको मिलाकर एक एक टंकके प्रमाण गोलियां बनावे और चिकने बर्तनमें रख छोडे, दोष और बलाबल देखकर वैद्य गरम पानीके साथ अनुपान देवे अथवा दूध वा मंजीठके काढेसे देवे तो सम्पूर्ण रोग, वातरक्त, त्रिदोष, सब प्रकारके व्रण, गुल्म, प्रमेह, फुन्सी गांठ, १८ प्रकारका कोढ उदर विकार, मन्दाग्नि, खाँसी, सूजन, पांडुरोग, आमवात इन रोगोंको नाश करे और यह किशोर गुग्गुल जवानकासा बलकरे। जो गुणकी इच्छा करे तो खट्टा, चरपरा, अजीर्ण, श्रम, धूप, मद्य, रोष इनको त्याग करे ॥ १-१० ॥

त्रिफलागुग्गुलुः ।

त्रिपलं त्रिफलाचूर्णं कृष्णाचूर्णपलोन्मितम् ।
गुग्गुलं पञ्चपलिकं कुट्टयेत्सर्वमेकतः ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

ततस्तु गुटिकां कृत्वा प्रयुंज्याद्वह्न्यपेक्षया।
भगन्दरं गुल्मशोफमर्शांसि च विनाशयेत् ॥ २ ॥

त्रिफलाचूर्ण ३ पल, पीपल १ पल, गूगल ५ पल, इन सब को पीसकर गोली बनावे, यथायोग्य अग्नि बल देखकर गोली देवे. यह गूगल भगंन्दर, गुल्म, सूजन और अर्शको दूर करे ॥ १ ॥ २ ॥

कांचनारगुग्गुलुः।

कांचनारत्वचो ग्राह्याः पलानां दशकं बुधैः।
त्रिफला षट्पला कार्या त्रिकटु स्यात्पलत्रयम् ॥१॥
पलैकं वरुणः कार्यएलात्वक् पत्रकं तथा।
प्रत्येकं कर्षमात्रं स्यात्सर्वानेकत्र चूर्णयेत् ॥ २ ॥
यावत्सर्वमिदं चूर्णं तावन्मात्रस्तु गुग्गुलुः।
संकुटय सर्वमेकत्र पिण्डं कृत्वा च धारयेत् ॥ ३ ॥
गुटिकाः शाणिकाः कृत्वा प्रातर्ग्राह्यं यथोचितम्।
गण्डमालां जयंत्युग्रामपचीमर्बुदं तथा ॥ ४ ॥
ग्रन्थीन्व्रणानि गुल्मांश्च कुष्ठानि च भगन्दरम्।
प्रदेयश्चानुपानार्थं क्वाथो मुण्डीतिकाभवः।
क्वाथः खादिरसारस्य पथ्याक्वाथो यवोष्णकः ॥ ५ ॥

कचनारकी छाल १० पल, त्रिफला ६ पल, सोंठ, मिरच, पीपल ३ पल, बरना १ पल, इलायची, तज, तेजपात ४ टंक इन सबके बराबर गूगल डालकर गोली १ टंकके प्रमाण बनावे, प्रातःकाल बलाबल देखकर देवे तो गंडमाला, अपची, अर्बुद, गांठ, व्रण, १८ प्रकारका कोढ और भगंदरको हरे. अनुपान मुंडीके काढेके साथ तथा खैरसारके काढेके

Aho ! Shrutgyanam

साथ देवे तथा हरडके काढेके साथ देवे वा गरम पानीसे देवे तो ऊपर लिखे रोग दूर होवें ॥ १-५ ॥

गोक्षुरादिगुग्गुलुः ।

अष्टाविंशतिसंख्यानि पलान्यानीय गोक्षुरान् ।
विपचेत्षड्गुणे नीरे क्वाथो ग्राह्योऽर्द्धशेषतः ॥ १ ॥
ततः पुनः पचेत्तत्र पुरमष्टपलं क्षिपेत् ।
गुडपाकसमाकारं ज्ञात्वा तं तत्र निक्षिपेत् ॥ २ ॥
त्रिकटुत्रिफलामुस्तं चूर्णं तु पलसप्तकम् ।
तत पिण्डीकृतस्तस्य गुटिकामपि योजयेत् ॥ ३ ॥
हन्यात्प्रमेहं कृच्छ्रं च प्रदरं मूत्रघातकम् ।
वातास्रं वातरक्तं च शुक्रदोषं तथाऽश्मरीम् ॥ ४ ॥

गोखरू २८ पलको छःगुणे पानीमें औटावे, जब आधा पानी रह जाय तब उतार लेवे, छानकर ८ पल गूगल डाले, जब गाढा होजाय तब उतारलेवे और ठडा होजानेपर इन औषधियोंको डाले-सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला, मोथा ७ पलका चूर्ण कर डाले, सबको मिलाकर एक टंक प्रमाण गोली बनावे. यह औषधि प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, प्रदर, वातरक्त, वीर्यदोष और पथरी आदिको दूर करती है ॥ १-४ ॥

सिंहनादगुग्गुलुः ।

फलत्रिकोशीरविडंगदन्तीपुनर्नवाम्भोधरवह्निवि-
श्वा । रास्नामृताभीरुसुराह्वदार्वीसग्रंथिकैलेभक-
णापलांशैः ॥ १ ॥ द्रोणांभसो गुग्गुलतुल्यभागै-
रर्द्धं श्रृतैः सूक्ष्मपटान्तपूतैः । भूयः श्रृतैरंगुलि-
धेयरूपो लेहः सुशीतो भुवि भाजनस्थः ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

सुचूर्णितैस्त्र्यूषणजन्तुहंत्रीछिन्नोद्भवादार्व्यभयात्रि-
जातैः । त्रिवृत्समैरक्षमितं विचूर्णं निधाय गुप्तं
यवधान्यपूते ॥ ३ ॥ मासस्थितं प्राश्य शुभेऽह्नि
शुद्धः प्रयात्यरोगं रुजितो मनुष्यः । शोफोदर-
प्लीहरुजोविकारनाभिव्रणार्शोग्रहणीप्रदोषैः ॥ ४ ॥
सवातरक्तैः सकलैश्च कुष्ठैर्विमुच्यते पाण्डुगदैश्च
घोरैः । प्रभंजनो रोगमहातरूणां विवर्द्धनो रोग-
बलायुषां च ॥ ५ ॥ मासाध्यमस्तीति विकार-
जातं ख्यातस्तु नाम्ना भुवि सिंहनादः ॥ ६ ॥

त्रिफला, खस, वायविडंग, सोंठ, मोथा, दंती, चीता, रास्ना, गिलोय, कटसेना, देवदारु, हलदी, पीपलामूल, इलायची, गजपीपल, सोलह सेर पानी सब औषधियोंके बराबर गूगल इनको मिलाके औटावे. जब आधा पानी रहजाय तब छान लेवे. फिर मंदाग्निसे औटाकर जब गाढा होजाय तब उतारलेवे और इन औषधियोंको डाले-सोंठ, मिर्च, पीपल, वायविडंग, गिलोय, दारुहलदी, हरड, तज, तेजपात, इलायची, निसोथ इनकी समान मात्रा १४ टंक चूर्ण कर-डाले, फिर चिकने बासनमें भरकर रख देवे, यव तथा धानमें एक महीना राखै, फिर अच्छा दिन देखकर सेवन करे तो सूजन, उदररोग, प्लीहा, दरद, नाभीके व्रण, बवासीर, संग्रहणी, वातरक्त, संपूर्ण कोढ, पांडुरोग ये रोग नाश होवें । यह गूगल रोगरूपी वृक्षोंका छेदन करनेवाला है ॥ १-६ ॥

प्रमेहे मूत्रकृच्छ्रे च चन्द्रप्रभागुग्गुलुः ।

बिल्वं व्योषफलत्रिकं त्रिलवणं द्विक्षारचव्यानि
च श्यामापिप्पलिमूलमुस्तककणामाध्वीकधा-

Aho ! Shrutgyanam

न्यत्वचः । षड्ग्रंथामरदारुवारणकणाभूनिम्बदन्तीनिशापत्रैलातिविषाः पिचुप्रमितयो लोहस्य कर्षाष्टकम् ॥ १ ॥ त्वक्क्षीरं पलिकां परं दशजलान्यष्टौ शिलाजिन्मतो मत्स्यंडीकुडवोन्मितेति गुटिकां संयोज्य कुर्याद्भिषक् । तत्रैकं प्रतिवासरं सहविषाक्षौद्रेण लिह्यादिमां तप्तं मस्तुपयोरसं मधुघृतं तावत्पिबेन्मात्रया ॥ २ ॥ अर्शांसि प्रदरं ज्वरं सुविषमं नाडीव्रणानश्मरीं कृच्छ्रं विद्रधिमग्निमांद्यमुदरं पाण्ड्वामयं कामलाम् । यक्ष्माणं सभगन्दरं सपिडिकागुल्मप्रमेहारुचीरेतोदोषमुरःक्षतं कफमरुत्पित्तार्तिमुग्रां जयेत् ॥ ३ ॥ वृद्धं संजनयेद्युवानमसमौजस्कं बलं वर्द्धयेदेतस्यां न निषिद्धमंगमसकृन्नेच्छागमं मैथुनम् । विख्याता गुटिकेयमंचिततगा चंद्रप्रभानामतश्चन्द्रानन्दकरी करोति रुचिरां चन्द्रेण तुल्यां तनुम् ॥ ४ ॥

बेल, सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला, सैंधानोंन, कालानोंन, कचनोन, सज्जीखार, जवाखार, चव्य, निसोथ, पीपलामूल, मोथा चिरायता, जमालगोटेकी जड, हलदी, तेजपात, इलायची, सोनामक्खी, धनियां, तज, अजमोद, देवदारु, गजपीपल, अतीस, नींब चार टंक, लोहसार ३२ टंक, वंशलोचन १ पल, गूगल, १६० टंक, शिलाजीत ८ पल, मिश्री खांड ६४ टंक इन सबको इकट्ठा कर १ टंक प्रमाण गोली बनाकर । घृतके संग नित्य सेवन करे । मट्ठा, दूध, शहद

Aho ! Shrutgyanam

ऊपरसे पीवे, यथा बल देख लेवे। बवासीर, प्रदर विषमज्वर, नसोंके फोडे, फुन्सी, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मन्दाग्निपेटका दर्द, पांडुरोग, कमलवायु, भगन्दर, गांठ, बीस प्रकारका प्रमेह, अरुचि, वीर्यदोष, उरःक्षत, कफ, वात, पित्त इनकी पीडाको जीते. बुड्ढेको जवान करे, जब औषधिको सेवन करे तब मैथुनको न छोडदेवे। यह गूगल सम्पूर्ण रोगोंको दूर करता है ॥ १-४ ॥

शंखद्राव ।

स्फटिका च यवक्षारं सोरोऽथ नवसादरम् ।
समभागमितैरेभिः शंखद्रावो रसो मतः ॥ १ ॥
काचकूपीद्वयं नीत्वा दत्त्वा कर्पटमृत्तिकाम् ।
एकस्य विवरं कृत्वा भृत्वा चान्याः सदोषधीः ॥ २ ॥
गजकुम्भास्ययंत्रेण चुल्ल्यां च खर्परोपरि ।
धृत्वा दत्त्वा च मन्दाग्निं तद्रसं काचभाजने ॥ ३ ॥
गृहीत्वा स्थापयेत्सम्यग्ग्रहणीयं शुभे दिने ।
शंखौ द्रवति तन्मध्ये शंखद्रावस्ततो मतः ॥ ४ ॥
कुम्भकेन प्रमुंचेत जिह्वाग्रे तालुकोपरि ।
दन्ताः पतन्ति लग्नेऽस्मिञ्छेषरोगस्य का कथा ॥५॥
अखिलोदररोगाणां निहन्ता गुल्मकस्य च ।
कालिंजं प्लीहकं हन्ति हृद्रोगं ग्रहणीं यकृत् ॥ ६ ॥
ऊर्ध्वं कासं कफं श्वासं ह्यामवातं विनाशयेत् ।
कांतिं नीरोगतां पुष्टिं जठराग्निं विवर्धयेत् ॥ ७ ॥

फिटकरी, यवक्षार, शोरा, नौसादर इन सबको बराबर लेकर काचकी दो शीशी ले कपरमिट्टी कर एकमे दवा भर

Aho ! Shrutgyanam

देवे, फिर गजकुंभकर चूल्हेपर चढा मन्दाग्नि देवे, जब उसका रस दूसरी शीशीमें आजाय तब लेकर अच्छी जगह रक्खे और अच्छा दिन देखकर सेवन करे। इसमें शंख तथा कौडी डालनेसे भस्म हो जाती है इसीसे इसको शंखद्राव कहते हैं। इसकी मात्रा रुईके फोहेमें लगाकर जिह्वापर लगा देवे और जो दांतोमें लग जायगा तो दांत गिरजावेंगे और सम्पूर्ण उदररोगोंको तथा गुल्मको नाश करै। प्लीहा, हृद्रोग, ग्रहणी, यकृत्, ऊर्ध्वश्वास, कफ, खांसी, आमवात इनको दूर करे, सुन्दर काया करे, पुष्टी करे, पेटकी अग्निको, बढावे ॥ १-७ ॥

गन्धकविधिः।

लोहपात्रे विनिक्षिप्य घृतमग्नौ प्रतापयेत्।
तप्ते घृते तत्समानं क्षिप्त्वा गन्धकजं रसम् ॥ १ ॥
गलितं गन्धकं ज्ञात्वा दुग्धमध्ये विनिक्षिपेत्।
एवं गन्धकशुद्धिः स्यात सर्वकार्येषु योजयेत् ॥ २ ॥

लोहेके पात्रमें घृत डालकर तडकावे, जब खूब गरम होजाय तब गन्धक पीसकर डालदेय, जब गंधक गलजाय तब घीसहित दूधमें डालदेय. यह शुद्ध गंधक सब काममें लावे ॥ १-२ ॥

दुग्धे घृते निम्बरसे भृङ्गराजरसेऽथवा।
गन्धकं शोधयेत्प्राज्ञो दोलायन्त्रेण वाससा ॥ ३ ॥
सदुग्धभाण्डेऽपि पटस्थितोऽयं शुद्धो भवेत्कूर्म-
पुटेन गन्धः। सदुग्धभाण्डस्य मुखे सुवस्त्रं बद्धं
क्षिपेद्गन्धकसूक्ष्मखण्डान् ॥ ४ ॥ विमुद्रयित्वा

Aho ! Shrutgyanam

समितादिना तन्मन्दाग्निना यामयुगं पचेच्च ॥ ५ ॥
शोधितं गन्धकं यावत्तावती त्रिफला भवेत् ।
द्वयोस्तुल्या सिता देया कर्षार्द्धं खादयेत सुधी॥६॥
कण्डूविचार्चिकादद्रूसिध्ममण्डलकुष्ठनुत् । अम्ल-
क्षारं हिङ्गु तैलमग्नितापं च वर्जयेत् ॥ ७ ॥

दूध, घी, नींबका रस, भांगरेका रस, प्रत्येकमें गन्धकको शोधे, एक हांडीमें गन्धक कपडेकी पोटली बनाय दोलायन्त्रमें मन्दाग्निसे पकावे, फिर दूध हांडीमें भरकर ऊपर कपडा बांधकर गन्धक रख मन्दाग्निसे देय, कूर्मपुटसे इस प्रकार गन्धक शुद्ध होवे, फिर गन्धक सूक्ष्म पीसकर, कपडेमें बांधकर सूक्ष्म वस्त्रसे मुद्रा कर चार प्रहर यन्त्रमें राखे, फिर दो प्रहर मन्दाग्नि देवे, जब शुद्ध हो जाय तब त्रिफलेका चूर्ण, गन्धक त्रिफलाकी बराबर मिश्री २ टंक मिलाकर खाय तो खाज, विचार्चिका, दाद, सिध्म, मण्डल और कोढ दूर होवें । परहेज खट्टा, खारी, हींग, तेल, अग्निका तापना बन्द करे ॥ ३–७ ॥

शिलाजतुशोधनप्रकारः ।

त्रीन्वारान्प्रथमं शिलाजतु जले भाव्यं भवेत्रैफले
निःक्काथे दशमूलजे च तदनु च्छिन्नोद्भवाया रसैः ।
वात्यालं क्वथने पटोलसलिले यष्टीकषाये पुन-
र्गोमूत्रे च पयस्यथापि च गवामेषां कषाये ततः॥१॥

तीन वार पहिले शिलाजीतको त्रिफलेके काढेकी भावना देवे. फिर दशमूलके काढेकी भावना देवे. फिर गिलोयके काढेकी भावना देवे. फिर पटोलके काढेकी भावना देवे. फिर मुलहठी, गोमूत्र, दूध इनकी भावना देवे तो शुद्ध होय ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

शिलाजतुसत्त्वम् ।

शिलाजतु समानीय ग्रीष्मतप्तशिलाजतु ।
गोदुग्धैस्त्रिफलाक्काथैर्भृंगद्रावैश्च मर्दयेत् ।
आतपे दिनमेकैकं तत्सिद्धं शुद्धतां व्रजेत् ॥ १ ॥

शिलाजीतको गरमीके दिनोंमें [गौके दूधसे, त्रिफलेके काढेसे, भांगरेके रससे मर्दन करे, फिर एक एक दिन पुट देता जाय और धूपमें सुखाता जाय तो शिलाजीत शुद्ध होवे ॥ १ ॥

मुख्यं क्षिलाजतुशिलासूक्ष्मखण्डं प्रकल्पयेत् ।
निक्षिप्यात्युष्णपानीये यामैकं स्थापयेत्सुधीः ॥ १ ॥
मर्दयित्वा ततो वारि गृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ।
स्थापयित्वा च मृत्पात्रे धारयेदातपे पुनः ॥ २ ॥
आलोड्य च पुनस्तस्मादुपरिस्थं घनं नयेत् ।
अधः स्थितं च यच्छेषं तस्मिन्नीरं विनिक्षिपेत् ॥ ३ ॥
विमर्द्य धारयेद्धर्मे पूर्ववच्चैव तं नयेत् ।
एवं पुनः पुनर्नीत्वा द्विमासाभ्यां शिलाजतु ॥ ४ ॥
भूयात्कार्यक्षमं वह्नौ क्षिप्तं लिङ्गोपमं भवेत् ।
निर्धूमं च ततः शुद्धं सर्वकर्मसु योजयेत् ॥ ५ ॥
एलापिप्पलिसंयुक्तं माषमात्रं तु भक्षयेत् ।
मूत्रकृच्छ्रं मूत्ररोधं हन्ति मेहं तथा क्षयम् ॥ ६ ॥

शिलाजीतके छोटे २ टुकडे कर एक प्रहर पानीमें भिगोवे, फिर मलकर कपडेमें छानलेवे और मिट्टीके पात्रमें डालकर धूपमें रख देवे, फिर मथे जो ऊपर मलाई आवे उसे लेताजाय जो पानी नीचे शेष

Aho ! Shrutgyanam

रहे उसे फेंक देवे, ऐसे ही मलताजाय और धूपमें रख २ कर ऊपरकी मलाई लेताजाय और नीचेको फेंकता जाय, इसी तरह दो महीने शिलाजीतको शोधन करे, और अग्निपर रक्खे तो लंबासा आकार होजाय और धुआं न देवे तो जाने शुद्ध होगया । इस शिलाजीतको सब कामोंमें वर्ते । इलायची और पीपलके साथ एक महीने खाय तो मूत्रकृच्छ्र मूत्रका रुकना, क्षय इनको दूर करे ॥ १--६ ॥

स्वर्णादिधातुमारणम् ।

तैले तक्रे गवां मूत्रे कांजिके च कुलत्थके ।
तप्ततप्तानि सिंचेत द्रावे द्रावे तु सप्तधा ॥ १ ॥
सुवर्णताරताम्राणां पत्राण्यग्नौ प्रतापयेत् ।
प्रसिंचेत्तप्ततप्तानि तैले तक्रे च संस्थिते ॥ २ ॥
गोमूत्रे च कुलत्थानां कषाये च त्रिधा त्रिधा ।
एवं स्वर्णादिलोहानां विशुद्धिः संप्रजायते ॥ ३ ॥

तेल, मट्ठा, गोमूत्र, कांजी, कुलथी इन प्रत्येकमें धातुको तपा २ कर सात सात बार बुझावे, सोना, चांदी, तांबा इनके पत्र कर तपा तपा कर तेल, मट्ठा, कांजीमें बुझावे, और गोमूत्र, कुलथीके काढेमें तीन तीन बार बुझावे इस प्रकार लोहे, सोने आदिकी शुद्धि होती है ॥ १–३ ॥

मृगांकविधिः १–३ ।

स्वर्णस्य द्विगुणं सूतमम्लेन सह मर्दयेत् ।
तद्गोलकसमं गन्धं निदध्यादधरोत्तरम् ॥ १ ॥
गोकलं च ततो रुद्ध्वा शरावदृढसंपुटे ।

Aho ! Shrutgyanam

त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटेनैव चतुर्दश ॥ २ ॥
निरुत्थं जायते भस्म गंधो देयः पुनः पुनः ॥ ३ ॥

१–सोनेसे दुगुना पारा नींबूके रसमें घोटे, फिर गोली बनावे और उस गोलीके बराबर ऊपर नीचे गन्धकका संपुट देवे. फिर दो शंखोंमें रखकर सात कपरामिट्टी और ३० आरने उपलोंकी अग्नि देवे. जब भले प्रकार निर्धूम होजावे इसी तरह चौदह पुट देय और बार २ गन्धक डाले तो निरुत्थ भस्म होवे ॥ १–३ ॥

भूर्जवत्सूक्ष्मपत्राणि हेम्नः सूक्ष्माणि कारयेत् ।
तुल्यानि तानि सूतेन खल्वे क्षिप्त्वा विमर्दयेत् ॥ १ ॥
कांचनाररसेनैव ज्वालामुख्या रसेन वा ।
लांङ्गल्या वा रसैस्तावद्यावद्द्रवति पिष्टकम् ॥ २ ॥
तथा हेम्नश्चतुर्थांशं टंकणं तत्र निक्षिपेत् ।
पिष्टमौक्तिकचूर्णं च स्वर्णाद्द्विगुणितं क्षिपेत् ॥ ३ ॥
तेषु सर्वसमं गन्धं क्षिप्त्वा चैकत्र मर्दयेत् ।
तेषां कृत्वा ततो गोलं वासोभिः परिवेष्टयेत् ॥ ४ ॥
पश्चान्मृदा वेष्टयित्वा शोषयित्वा च साधयेत् ।
शरावसंपुटस्यांते तत्र मुद्रांप्रयोजयेत् ॥ ५ ॥
लवणापूरिते भांण्डे धारयेत्तं च संपुटम् ।
मुद्रां दत्वा शोषयित्वा बहुभिर्गोमयैः पचेत् ॥ ६ ॥
ततः शीते समाहृत्य गन्धं सूतसमं क्षिपेत्
धृत्वा च पूर्ववत्खल्वे पचेद्गजपुटेन च ॥ ७ ॥
स्वांगशीतं ततो नीत्वा गुंजायुग्मं प्रयोजयेत् ।

Aho ! Shrutgyanam

अष्टाभिर्मरिचैर्युक्ता कृष्णात्रययुता तथा ॥ ८ ॥
विलोक्य देया दोषादीनेकैका रसरक्तिका ।
सर्पिषा मधुना चापि देया पथ्यं च भोजयेत् ॥९॥
मृगांकोऽयं रसो हन्यात्कृशत्वं बलहीनताम् ।
श्लेष्माणं ग्रहणीं कासं श्वासं क्षयमरोचकम् ॥१०॥
अग्निं च कुरुते दीप्तं कफवातान्नियच्छति ॥ ११ ॥

२-सुवर्णका भोजपत्रके समान सूक्ष्म पत्र करे और उतनाही पारा डाल कर खरल करे, फिर कचनारका रस, ज्वालामुखीका रस, कलियारीका रस इसमें, जबतक पिष्टके समान न हो तबतक मर्दन करे, फिर सोनेसे चौथाई सुहागा डाले, फिर सोनेसे दुगुना मोतियोंका चूर्ण और सबके बराबर गन्धक डालकर मर्दन करे. फिर सबका गोला बनावे फिर उसपर कपडा लपेट पीछे कपरमिट्टी कर सुखा लेवे, जब सूखजाय तब दो शंखोंमें रखकर कपरमिट्टी कर सुखा लेवे, फिर एक हांडीमें ऊपर नीचे नोनभर बीचमें रख संपुट कपरमिट्टी कर सुखा लेवे, फिर खूब आरने ऊपलोंकी आंच देवे, जब ठंढा होजाय तब निकालकर गन्धक, पारा बराबर डालकर पूर्वोक्त रीतिसे मर्दन करे, फिर गजपुटकी आंच देवे. जब खूब ठंढा होजाय तब निकाल लेवे । आठ मिरचके योगमें तीन पीपलसयुंक्त दो रत्तीके प्रमाण देवे । जैसा दोष देखे वैसा दे, वा एक रत्ती दे, बलाबल देखकर घी, शहद पथ्यमें देवे. यह मृगांकरस कृशता, बलहानि, श्लेष्म, ग्रहणी, खांसी, श्वास, क्षय और अरुचिको दूर करे, अग्निको दीप्त करे और कफ वातका नाश करे ॥ १-११ ॥

शुद्धं सूतं स्वर्णपत्रं जम्बीरे मर्दयेत्समम् ।
तयोर्द्विगुणिता मुक्तास्त्रिभिस्तुल्यं तु गन्धकम् ॥१॥

Aho ! Shrutgyanam

टंकणं गन्धकादर्धं सर्वं जम्बीरजैर्द्रवैः ।
मर्द्यं यामेन तद्गोलं वस्त्रे बद्ध्वा विपाचयेत् ॥ २ ॥
दोलायन्त्रेण पाताले यामादुद्धृत्य शोषयेत् ।
ततो मृन्मयभाण्डांतर्लवणं चांगुलीद्वयम् ॥ ३ ॥
क्षिप्त्वा तद्विक्षिपेत्पूर्वगोलक वस्त्रवेष्टितम् ।
लवणैः पूरयेद्भाण्डं मुद्रयित्वा दिनं पचेत् ॥ ४ ॥
चुल्ल्यां क्रमाग्निना सिद्धो मृगांकोऽयं महारसः ।
राजरोगनिवृत्त्यर्थं देयो गुंजामितो घृते ।
दशभिर्मरिचैः सार्द्धं पिप्पल्या मधुनाऽपि वा ॥ ५ ॥

३-शुद्ध पारा और सुवर्णपत्र बराबर ले जम्बीरीके रसमें मर्दन करे, इनमें दूने मोती लेवे और सबके बराबर गन्धक, और गंधकसे आधा सुगाहा ले इन सबको जम्बीरीके रसमें एक प्रहर घोटकर गोला बनावे फिर ऊपर कपडा लपेटकर दोलायंत्र या पातालयंत्रमें पकावे, कांजीमें पकावे, फिर एक प्रहरके बाद सुखावे, फिर मिट्टीके बर्तनमें दो अंगुल नोन नीचे भरकर कपरमिट्टी कर एक दिन चूल्हेपर क्रम (मन्द, मध्य, तीक्ष्ण) से अग्नि देवे तो यह मृगांकमहारस सिद्ध होवे । यह यक्ष्मा रोगका नाश करे, एक रत्ती घीके साथ देय अथवा दस मिर्च अथवा पीपल शहदके साथ देवे ॥ १-५ ॥

राजमृगांकरस ।

भस्मसूतत्रयो भागा भागैकं भस्म हेमकम् ।
मृतताम्रस्य भागैकं शिलागन्धकतालकम् ॥ १ ॥
प्रतिभागद्वयं शुद्धमेकीकृत्य विचूर्णयेत् ।
वराटं पूरयेत्तेन च्छागीक्षीरेण टंकणम् ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

क्षिप्त्वा तेन मुखं रुद्ध्वा मृद्भाण्डे तन्निरोधयेत् ।
शुष्कं गजपुटे पक्त्वा चूर्णयेत्स्वांगशीतलम् ॥ ३ ॥
रसो राजमृगांकोऽयं चतुर्गुंजः क्षयापहः ।
दशपिप्पलिकाक्षौद्रे एकोनत्रिंशदूषणैः ॥ ४ ॥

पारेकी भस्म तीन भाग, सोनेका भस्म एक भाग, तांबेकी भस्म एक भाग, शिलाजीत, गन्धक, शुद्ध हरिताल ये सब दो दो भाग सबका मिला चूर्ण कर कौडियोंमें भरदेवे, फिर बकरीके दूध और सुहागेसे इनका मुह बन्द कर देवे फिर मिट्टीके पात्रमें भरकर कपर- मिट्टी कर सुखा लेवे, फिर गजपुटकी आंच देवे, जब शीतल होजाय तब निकाले. यह राजमृगांकरस चार रत्ती बलाबल देखकर देवे तो क्षयरोगका नाश करे । पीपल १०, शहद, मिरच २९ के साथ ले । यह क्षयादि रोगोंको नाश करे ॥ १-४ ॥

ताम्रमारणविधिः ।

सूक्ष्माणि ताम्रपत्राणि कृत्वा संस्वेदयेद् बुधः ।
वासरत्रयमम्लेन ततः खल्वे विनिक्षिपेत् ॥ १ ॥
पादांशं सूतकं दत्त्वा याममम्लेन मर्दयेत् ।
तत उद्धृत्य पत्राणि लेपयेद्द्विगुणेन च ॥ २ ॥
गन्धकेनाम्लपिष्टेन तस्य कुर्याच्च गोलकम् ।
धृत्वा तद्गोलकं भाण्डे शरावेण च रोधयेत् ॥ ३ ॥
वालुकाभिः प्रपूर्याथ विभूतिलवणांबुभिः ।
दत्त्वा भाण्डं मुखे मुद्रां ततश्चुल्ल्यां विपाचयेत्॥४॥
क्रमवृद्धाग्निना सम्यग्यावद्यामचतुष्टयम् ।
स्वांगशीतलमुद्धृत्य मृतताम्रं शुभं भवेत् ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

तांबेके सूक्ष्म पत्र कर शोध लेवे, फिर छाछमें तीन दिन रख मर्दनकरे, फिर चौथाई पारा डालकर इमलीके रसमें एक प्रहर मर्दन करे, फिर तांबेके पत्र निकालकर और दुगुनी गन्धक नींबूके रसमें घोटकर तांबेके पत्रों-पर लेप कर गोली बनावे. फिर दो सकोरोंको बीचमें गोली रखदेवे, कपरोटीकर एक हांडीमें बालू वा नोन भर बीचमें सरवा रखदेवे, हांडीको कपरमिट्टी कर चूल्हेपर चढावे, अग्नि क्रमसे देवे, पहले मन्दाग्नि पीछे मध्यम तत्पश्चात् तीक्ष्णाग्नि देवे, चार प्रहर भले प्रकार अग्नि देवे जब ठंढा होजाय तब निकाल लेवे, यह तांबेश्वर रस है ॥ १-५ ॥

तस्य गुणा दोषाश्च ।

ऊर्ध्वश्वासं कफं कासं हृद्रोगं पांडुतां क्षयम् ।
जयेत्प्रमेहकुष्ठार्शः शोफशूलाग्निमन्दताः ॥ १ ॥
अशुद्धं वातमुत्क्लेदं मूर्च्छादोषं करोति च ।
अपक्कं कांतिधातुघ्नं भ्रमशूलोष्मकुष्ठनुत् ॥ २ ॥
न विषं विषमित्याहुस्ताम्रं तु विषमुच्यते ।
एको दोषो विषे ताम्रे चाष्टौ दोषाः प्रकीर्तिताः ॥ ३ ॥
भ्रमो मूर्च्छा विदाहश्च स्वेदः क्लेदस्तथा तमः ।
अरुचिश्चित्तसंतापस्ताम्रे दोषः प्रकीर्तिताः ॥ ४ ॥

ऊर्ध्वश्वास, कफ, खांसी, हृद्रोग, पांडुरोग, क्षय, प्रमेह, कोढ, अर्श, सुजन, शूल और मन्दाग्निको दूर करे और जो अशुद्ध रहजाय तो वात, उत्क्लेद, मूर्च्छा दोष करे, अपक्क हो तो धातुका नाश, भ्रम, शूल, गरमी, कोढ करे। विषहीको विष मत जानो, ताम्र, विषहै। विषमें एक दोष है, ताम्बेमें आठ दोष हैं-भ्रम, मूर्च्छा, दाह, स्वेद. क्लेद तम अरुचि पित्त संताप ये तांबेमें दोष हैं ॥ १-४ ॥

वङ्गमारणविधिः ।

मृत्पात्रे द्राविते वङ्गे चिञ्चाश्वत्थत्वचो रसः ।

Aho ! Shrutgyanam

क्षिप्त्वा क्षिप्त्वा चातुर्थांशमयोदर्व्या प्रचालयेत् ॥ १॥
ततो द्वियाममात्रेण वङ्गभस्म प्रजायते ।
प्रमेहदाहपाण्डुघ्नं पुष्टिकान्तिबलप्रदम् ॥ २ ॥

मिट्टीके ठीकरेमें रांगेको गलावे इमली, पीपलकी छालका चूर्ण चौथाई डालकर लोहेकी कलछीसे चलावे तो दो प्रहरमें रांगकी भस्म हो जावेगी । प्रमेह, दाह पांडुरोगको दूर करे और पुष्टि कान्ति बलकी देनेवाली है ॥ १ ॥ २ ॥

सीसकमारणविधिः ।

अश्वस्थचिंचात्वग्भस्म भस्मतुल्या मनःशिला ।
जम्बीररसारनालैश्च पिष्ट्वा रुद्ध्वा पुटे पचेत् ॥ १ ॥
स्वांगशीतं पुनः पिष्ट्वा विंशत्यंशशिलात्मकैः ।
नागः सिंदूरवर्णाभो म्रियते सर्वकार्य कृत् ॥ २ ॥

पीपलकी छाल, इमलीकी छाल इनकी भस्म करलेवे आर शीशेकी बराबर मनशिल लेय जंभीरीके रसमें और कांजीके रसमें पीसकर शीशेके पत्रके ऊपर लेप करे और अग्नि देय जब ठंढा होजाय तब निकाल लेय, फिर बीस भाग मनसिल संपुट कर फूंके, जब सिन्दूरकासा रंग होजाय तब यह रस सब कार्योंको करै ॥ १ ॥ २ ॥

सारमारणविधिः ।

शुद्धं लोहभवं चूर्णं पातालगरुडीरसैः ।
गोमूत्रत्रिफलाक्काथैर्मर्दयित्वाऽग्निना पुटेत् ॥ १ ॥
अर्कदुग्धैः पुनः पिष्ट्वा पुटेद्यामचतुष्टयम् ।
पुनः कन्यारसैः पिष्ट्वा पचेद्गजपुटेन च ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पुटत्रयं कुमार्याश्च अर्कदुग्धे पुटत्रयम् ।
एवं सप्तपुटैर्मृत्युं लोहं चूर्णमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥
यथा यथा प्रदीयन्ते पुटास्तु बहवो यतः ।
तथा तथा विवर्द्धन्ते गुणाश्चास्य सहस्रशः ॥ ४ ॥
तावल्लोहं पुटे देयं यावच्चूर्णं कृते जले ।
निस्तरंगो लघुस्तोये समुत्तरति हंसवत् ॥ ५ ॥
तावद्विचूर्णयेदेतद्यावत्कज्जलसन्निभम् ।
करोति निहितं नेत्रे नैव पीडां मनागपि ॥ ६ ॥
आयुःप्रदाता बलवीर्यकर्ता रोगप्रहर्त्ता मदनस्य कर्त्ता ।
अयःसमानं नहि किंचिदन्यद्रसायनं श्रेष्ठतमं हितं च ७

शुद्ध लोहके चूर्णको छिरहटीके रसमें मर्दन करे और गोमूत्र, त्रिफलाके काढेमें मर्दन करे, अग्निदेय, फिर आकके दूधमें चार प्रहर भावना देवे फिर ग्वारपाठेके रसमें पीसकर गजपुटमें फूंके, फिर ग्वारपाठेमें तीन भावना देय और अर्कदूधमें ऐसे सात पुट देनेसे लोहा मरता है, और ज्यों २ जियादह पुट देय त्यों २ गुण बढते जाते हैं, वैद्य तबतक पुट देता रहे कि, जबतक जलपर तैरे नहीं और जबतक काजलके समान न होय तबतक चूर्ण करता रहे तथा नेत्रमें लगानेपर थोडी भी पीडा न करे। यह आयुका देनेवाला है वीर्य बढावे, रोगोंका नाश करे, कामोद्दीपन करे, लोहके समान दूसरा रसायन नहीं है, श्रेष्ठ और हितकारक है ॥ १-७ ॥

मण्डूरकरणम् ।

अक्षांगारे धमेत्किट्टं लोहजं तद्गवां जलैः ।
सिंचयेत्तप्ततप्तं च सप्तवारं पुनः पुनः ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

चूर्णयित्वा ततः क्वाथैर्द्विगुणैस्त्रिफला भवेत् ।
पचेत्ततश्चार्कदुग्धैर्मण्डूरं जायते परम् ॥ २ ॥
त्रिफला त्रिकटुर्मुस्ताग्निविडंगैर्गुडे गुटी ।
तक्रेण पीतमथवा मासं वा सप्तसप्तकैः ॥ ३ ॥
ऊर्ध्वश्वासे पाण्डुरोगे शोफ आमानिले कृमौ ।
मृद्भक्षितविकारेषु वारिरोगे च शस्यते ॥ ४ ॥

खैरसार वा बहेडेकी लकडीके कोयलोंमें लोहेके कीटको तपावे और गोमूत्रमें सात बार बुझावे पीछे दूना त्रिफला लेकर दोनोंको आकके दूधमें भावना देकर संपुटमें फूकदेवे तो मंडूर उत्तम बने, फिर त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल, मोथा, चित्रक, वायविडंग इनको मिलाकर गुडमें गोली बनावे, प्रातःकाल छाछके साथ गोली एक महीना या ४९ दिनमें खाय तो ऊर्ध्वश्वास, पांडुरोग, सूजन आमवात, कृमिरोग, मिट्टीविकार और पानी लगना ये सब रोग दूर होवें ॥ १-४ ॥

अभ्रकमारणविधिः ।

कृष्णाभ्रकं धमेद्वह्नौ ततो दुग्धेन सिंचयेत् ।
भिन्नपत्रं ततःकृत्वा तण्डुलीयाम्लयोर्द्रवैः ॥ १ ॥
भावयेदष्टयामं तदेवं शुध्यति चाभ्रकम् ।
बध्वा धान्ययुतं वस्त्रे मर्दयेत्कांजिकैः सहः ॥ २ ॥
आदायाम्लगतं शुद्धं शुद्धधान्याभ्रकं भवेत् ।
अर्कक्षीरैर्दिनं पिष्ट्वा चक्राकारं च कारयेत् ॥ ३ ॥
वेष्टयेदर्कपत्रांश्च सम्यग्गजपुटे पचेत् ।
पुनर्मर्द्यं पुनः पाच्यं सप्तवारं प्रयत्नतः ॥ ४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

ततो वटजटाक्काथैस्तद्वद्देयं पुटत्रयम् ।
म्रियते नात्र संदेहः सर्वकार्येषु योजयेत् ।
निश्चन्द्रमभ्रकं तत्स्याज्जरामृत्युरुजापहम् ॥ ९ ॥

काले अभ्रकको अग्निमें तपावे, फिर दूधसे सींचे, फिर जुदे २ पत्र कर आंवलोंके पानीमें और इमलीके रसमें आठ प्रहरकी भावना देवे तो अभ्रक शुद्ध होवे, फिर धान्ययुक्त कपडेमें बांधकर कांजीमें मर्दन करे तो शुद्ध धान्याभ्रक होवे, फिर आकके दूधमें एक दिन घोटकर टिकिया बनावे और आकके पत्ते ऊपर नीचे लपेटकर गजपुटकी आंच देवे फिर घोटकर आंच देवे, ऐसे ७ बार आंच देवे, फिर वटकी जडके काढेमें तीन पुट देवे, इस प्रकार निस्संदेह अभ्रक मरे फिर सब कार्योंमें वर्त्ते, जो अच्छा अभ्रक बने तो बुढापे व मृत्युको दूर करे ॥ १-९ ॥

अमृतीकरणम् ।

क्षिप्त्वाऽभ्रेण घृतं तुल्यं लोहपात्रेऽतिपाचयेत् ।
घृते जीर्णे तदभ्रं तु सर्वकार्येषु योजयेत् ॥ १ ॥

अभ्रकके बराबर घृत डाले और पात्रमें पकावे, जब सब घृत सूख-जाय तब उतारकर काममें लावे ॥ १ ॥

कृष्णाभ्रकं समादाय द्विप्रस्थं चूर्णयेद्बुधः ।
गोमूत्रालोडितं भाण्डे क्षिप्त्वा वह्नौ दिनं पचेत् ॥ १ ॥
अर्कदुग्धे पुनः पिष्ट्वा कृत्वा टिकडिकाः शुभाः ।
वेष्टयित्वाऽर्कपत्रैश्च खर्परस्थाः पुनः पचेत् ॥ २ ॥
एवमेवार्कदुग्धस्य दद्यात्सप्तपुटानि च ।
पुटत्रयं कुमार्याश्च त्रिफलायाः पुटत्रयम् ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

गुडस्य च पुटं दत्त्वा पुनः पंचामृतैः पचेत् ।
ततो वटजटाक्वाथैः सम्यग् देयं पुटत्रयम् ॥ ४ ॥
एवं निश्चन्द्रतां याति सर्वरोगेषु योजयेत् ।
मृतमभ्रं हरेन्मृत्युं जरापलितनाशनम् ॥ ५ ॥
योजितं चानुपानेन सर्वरोगहरं स्मृतम् ॥ ६ ॥

काला भोडल दो प्रस्थ चूर्ण कर आकके पत्ते लपेटकर ठीकरीमें आंच देवे, ऐसेही आकके दूधकी सात पुट देवे और पकावे, फिर तीन पुट कुमारीके रसकी देवे, फिर तीन पुट त्रिफलेके रसकी देय, फिर गुडकी एक पुट देय, फिर पञ्चामृतकी एक पुट देय, फिर बडकी जटाके काढेकी तीन पुट देय, इस प्रकार उज्वल करे, फिर सब रोगोंमें बर्ते । यह मरा हुआ अभ्रक मृतकको जिलावे, बुढापेको दूर करे अनुपानसे देय तो सहसा रोग न होवे, सब रोग नाश होवें ॥ १-६ ॥

सर्वधातुसत्त्वविधिः १-२ ।

लाक्षा मीनं पयश्छागं टंकणं मृगशृङ्गकम् ।
पिण्याकं सर्षपाशिग्रुगुंजोर्णा गुडसैन्धवम् ॥ १ ॥
यवास्तिक्ता घृतं क्षौद्रं यथालाभं विचूर्णयेत् ।
एभिर्विमिश्रिताः सर्वे धातवो गाढवह्निना ॥ २ ॥
मूषाध्माताः प्रजायन्ते मुक्तसत्त्वा न संशयः ॥ ३ ॥

१-लाख, मछली, बकरीका दूध, सुहागा, हिरनका सींग, सरसोंकी खल, सहँजना, चिरमिटी, ऊन, गुड, सेंधानोन, यव, कुटकी, घृत, शहद जिस प्रकार हो सके उस प्रकार चूर्ण करे और सब धातुमात्रका सत्व निकाले इन चीजोंका मूषा संपुटकर सत्व निकाले ॥ १-३॥

Aho ! Shrutgyanam

गुडं च गुग्गुलं चैव लाक्षापामाण्डटंकणम् ।
उष्णं मीनं समादाय समभागानि कारयेत् ॥
द्रावयेत्सर्वसत्त्वानि पाषाणादपि मृत्तिका ॥ १ ॥

२-लाख, पमार, सुहागा, ऊन, मछली इनको समान ले इन सबको मिलाकर मूसमें सत्व निकाले, इससे पत्थरसे भी मिट्टीका सत्त्व निकलता है ॥ १ ॥

मृतधातुसंजीवनी ।

घृतमधुटंकणगुञ्जागुडेन पिण्डीकृतो मृतो धातुः ।
स पुनर्जीवति यदा तदा निरुत्थो मृतो धातुः ॥ १ ॥

घी, शहद, सुहागा, चिरमिटी, गुड इनमें धातुको मिलाय गोली बनावे तो मरी हुई धातु जीवे और फिर उस धातुको मारै तो वह निरुत्थ अर्थात् पूर्ण मृत हो जाता है ॥ १ ॥

पाराशोधनविधिः ।

कुमारी चित्रकं व्याधिमूलकाकुल्यवारिणा ।
पृथक्पृथक्चतुर्यामं मर्दयेत्सर्वकर्मसु ॥ १ ॥
अंकोलेन विषं हन्ति पावकं हन्ति चित्रकैः ।
राजवृक्षैर्मलं हन्ति कुमारीसप्तकंचुकैः ॥ २ ॥

पारेको घीग्वारपाठेके रसमें मर्दन करै, चार प्रहर चीता, अमलतास, कूटमें मर्दन करे, चार प्रहर अंकोलकी जडके रसमें मर्दन करे, फिर सब काममें लावे । अंकोलके मर्दनसे पारेका विष नाश होवे, चीतेसे मर्दन करनेसे दाह दूर होवे, अमलतासके मर्दनसे मल दूर होवे, कुमारीसके मर्दन से सात काँचली पारेकी दूर होवें ॥ १-२ ॥

हरगौरीरसः ।

रसभागो भवेदेको द्विगुणो गंधको मतः ।

Aho ! Shrutgyanam

खल्वे कज्जलसंकाशं काचकुप्यां क्षिपेत्सुधीः ॥ १ ॥
खर्प्परे वालुकापूर्णे स्थापयेत्तत्र कूपिकाम् ।
इष्टकां च मुखे दत्त्वा कृत्वा कर्पटमृत्तिकाम् ॥ २ ॥
सप्तविंशतियामैश्च त्रिभिः कूपैर्विपाचयेत् ।
पश्चादूर्ध्वं समायाति रसं ज्ञात्वा विचक्षणः ॥ ३ ॥
हंसपादसमं वर्णं निष्पन्नं रसमादिशेत् ।
गुंजायुग्मं प्रदातव्यं सितादुग्धानुपानयुक् ॥ ४ ॥
प्रमेहश्वासकासेषु षंढे क्षीणेऽल्पवीर्यके ।
हरगौरीरसो देयः सर्वरोगप्रशान्तये ॥ ५ ॥
ये क्षीणागतवीर्याश्च कथं सीदन्ति ते नराः ।
ईश्वरेण त्विदं प्रोक्तं हरगौरीरसायनम् ॥ ६ ॥

एक भाग पारा, दो भाग गन्धक खरलमें घोटकर कजली करे, फिर शीशीमें डालकर इकट्ठी करे, फिर वालुकायंत्रमें रख ऊपर नीचे बालू भरे, बीचमें शीशी रक्खे और पकी ईंटसे मुख बन्द करे और विधिपूर्वक सात कपरोटी कर सत्ताईस प्रहर तीन तीन शीशियोंमें पकावे, फिर जब ऊपर उडकर आजाय तब जानो रस बन गया, सिंगरफकासा रंग निष्पन्न रस जानो । दो रत्ती पानमें ले और मिश्री मिलाकर ऊपरसे दूध पीवे. यह हरगौरीरस–प्रमेह, श्वास, खांसी, नपुंसकता, क्षीणता, वीर्यक्षय इन सब रोगोंका नाश करता है जिन मनुष्योंका वीर्य क्षीण है वे क्यों दुःख पाते हैं । ईश्वरने उनके लियेही हरगौरीरस कहा है ॥ १–६ ॥

रससिंदूरम् ।

सूतकं च समादाय द्विगुणं गन्धकं क्षिपेत् ।
ततश्च कज्जलीं कृत्वा काचशीश्यां तु धारयेत् ॥ ६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

मृन्मयां मुद्रितां दत्वा नन्दसंख्या प्रमाणतः ।
पृथग्भाण्डं तु संस्थाप्य वालुकार्द्धप्रमाणतः ॥ ७ ॥
मध्ये च शीशिकां धृत्वा मुखे मुद्रां च कारयेत् ।
द्वात्रिंशद्याममग्निश्च स्वांगशीतेऽवतारयेत् ॥ ८ ॥
रसासिंदूरनामेदं भास्करेण विनिर्मितम् ।
गुञ्जायुग्मं सदा ग्राह्यं नागवल्लीदलैः सह ॥ ९ ॥

पारेसे दूनी गन्धक डालकर कज्जली करे, फिर काचकी शीशीमें भर मुख बन्द कर कपरमिट्टी नौ बार कर एक पात्रमें आधा भाग बालू भर बीचमें शीशी रख फिर ऊपर बालू भर मुख बन्द करे. सात कपडमिट्टी कर बत्तीस प्रहरकी आंच देवे. जब ठण्ढा होजाय तब उतार लेवे । यह रससिन्दूर भास्करजीने कहा है. मात्रा दो रत्ती नित्य पानके साथ सेवन करे ॥ ६-९ ॥

मदनमुद्रा १-२ ।

नागेन्द्रसिक्थकमयोमलसर्जिकाभिर्लाक्षा च चुंबकमधूफलभूर्जपत्रम् । संकुट्यमानमतसीफलतैलमिश्रं श्रीपारदस्य मरणे मदनाख्यमुद्रा ॥ १ ॥

१-सिन्दूर, मोम, लोह, कीट, सज्जी, लाख, चुम्बकपत्थर, महुआ फल, भोजपत्र इनको कूटकर अलसीके तेलमें मिलावे. यह पारा मारनेके लिये मदनमुद्रा कही है ॥ १ ॥

उदुम्बरार्कवटदुग्धपलं पलं च लाक्षापलं पलचतुष्टय भूर्जपत्रम् । संकुट्य सर्वमतसीफलतैलमिश्रं श्रीपारदस्य मरणे मदनाख्यमुद्रा ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

२--गूलरका दूध, आकका दूध, वटका दूध एक एक पल ले, लाख १ पल और भोजपत्र चार पल ले इन सबको कूटकर अलसीके तेलमें मिलावे. यह भी पारा मारनेके लिये मदनमुद्रा है ॥ २ ॥

वज्रमुद्रा ।

खडी खदिरभस्मांबु लवणश्चाथवा ध्रुवम् ।
कारीषभस्म लवणांबु द्वाभ्यां मुद्रा प्रकीर्तिता ॥ १ ॥

खडिया, खैरसार, राख, पानी, नोन अथवा केवल राख, नोन, पानीसे यह दोनों मिलाकर वज्रमुद्रा बनती है ॥ १ ॥

पारदगुणाः ।

देहस्य शुद्धिं कुरुते च पारदो नानागदानां हरणे समर्थः । करोति पुष्टिं हरते च मृत्युं कल्पायुषं चापि करोति नूनम् ॥ १ ॥ पारदः सकलरोग- पारदो राजयक्ष्मशरणैकपारदः । सर्व रोगमपि हन्ति तत्क्षणान्नागवल्लिरसराजभक्षणात् ॥ २ मूर्च्छितो हरते व्याधिं बद्धः खेचरतां व्रजेत् । सर्वसिद्धिकरो नीलो निश्चलो मुक्तिदायकः ॥ ३ ॥ तारे गुणाशीति तदर्द्धकांते वंगे चतुःषष्टि रवौ तदर्द्धम् । हेम्नः शतैकं गगने सहस्रं वज्रे गुणाः कोटिरनंतसूते ॥ ४ ॥ संस्कारहीनं खलु सूतराजं यः सेवते तस्य करोति बाधाम् । देहस्य नाशं विदधाति नूनं कुष्ठान् समग्रान् जनयेन्नराणाम् ॥ ५ ॥ विकारो यदि जायेत पारदान्मलसंयुतात् । गंधकं

Aho ! Shrutgyanam

सेवयेद्धीमान्पाचितं विधिपूर्वकम् ॥ ६ ॥ गंधकं माषयुग्मं च नागवल्लीदलैः सह । खादेत् पारद-संग्रस्तो दोषशान्तिस्तदा भवेत् ॥ ७ ॥

पारा देहकी शुद्धि करता है और नानाप्रकारके रोगोंके नाश करनेको समर्थ है. पुष्टिकारक, मृत्युका हर्ता, निश्चय कल्पकी उमर करता है, पारा संपूर्ण रोगोंको पार करता है. शोष, यक्ष्मा, दाह इनको मेघके समान शांत करता है, पारा नागरपानके साथ सेवन करनेसे संपूर्ण रोगोंको दूर करता है. मूर्च्छित पारा रोगका नाश करता है, पारेकी गोली मुखमें रखनेसे आकाशमार्गमें होकर चले, नीला पारा सर्व सिद्ध करता, निश्चल मुक्तिका देनेवाला है, चांदीमें ८० गुण, कांतिसारमें ४० गुण, वंगमें ६४ गुण, ताँबेमें ३२ गुण, सुवर्णमें १००, अभ्रकमें १००० गुण, हीरामें १०००००० गुण, और पारेमें अनगिनत गुण जानो, पर इन सबकी भस्ममें गुण है। और संस्कारहीन पारा खाय तो अवगुण करता है, देहका नाश, कोढको करे। पारा खानेसे जो विकार होवें तो दो महीनें पानमें शुद्ध गंधकका सेवन करे तो पारा खानेके सर्व रोग शांत होवें ॥ १-७ ॥

पारदविकारशान्तिः ।

द्राक्षाकूष्मांडखण्डा च तुलसी शतपुष्पिका ।
लवङ्गतजनागं च गन्धकेन समांशकः ॥ १ ॥
कर्षमात्रपयोभुक्तं सर्वं सर्वं पृथक् पृथक् ।
सर्वयोगान्तरासाध्यसूतदोषविकारनुत् ॥ २ ॥
नागवल्लीरसं प्रस्थं भृंगराजरसं समम् ।
तुलसीरसप्रस्थं च छागीदुग्धं समांशकम् ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

मर्दयेत्सर्वगात्रेषु यामयुग्मं दिनत्रये ।
स्नानं शीतलनीरेण सूतदोषप्रसान्तये ॥ ४ ॥

मुनक्का, पेठा, खांड, तुलसी, सोफ, लौंग, तज, नागकेशर, गंधक इनकी समान मात्रा ले इन सबको गंधक संयुक्त चार टंक खाय, ऊपरसे दूध और घी पीवे, एक एक कर्ष जुदी २ औषधि लेवे, यह सब रोगोंको शांत करे और पारेके विकारोंको दूर करता है. पान और भांगरेका रस एक एक प्रस्थ लेवे, तुलसीपत्रका रस एक प्रस्थ बकरीका दूध एक प्रस्थ इनको २ प्रहर शरीरमें मर्दन करे और ठंढे पानीसे स्नान करे तो पारेका दोष दूर होय ॥ १-४ ॥

भस्मसूतम् ।

शुद्धं सूतं समं गन्धं वटक्षीरैर्विमर्दयेत् ।
पाचयेन्मृत्तिकापात्रे वटकाष्ठैर्विचालयेत् ॥ १ ॥
लघ्वग्निना दिनं पाच्यं भस्म सूतं भवेद्ध्रुवम् ।
द्विगुञ्जं नागपत्रेषु पुष्टमग्नेश्च वृद्धिकृत ॥ २ ॥

पारा ४ टंक, गंधक ४ टंक, बडके दूधमें मर्दन करे और मिट्टीके पात्रमें पकावे, बडकी लकडीसे हिलाता जाय, एक दिन मन्दाग्नि देय तो पारा भस्म हो जायगा, मात्रा एक रत्ती पानमें देवे तो पुष्टि करे, अग्नि दीपन और क्षुधाको बढावे ॥ १-२ ॥

हरितालशुद्धिः ।

तालकं कणशः कृत्वा तच्चूर्णं कांजिकेक्षिपेत् ।
दोलायंत्रेण यामैकं ततः कूष्मांडजैर्द्रवैः ॥ १ ॥
तिलतैलं पचेद्यामं यामं च त्रिफलाजलैः ।

Aho ! Shrutgyanam

एवं यंत्रे चतुर्यामं पाच्यं शुद्ध्यति तालकम् ॥ २ ॥
शुद्धं स्यात्तालकं छिन्नं कूष्माण्डसलिलेततः ।
चूर्णोदके पृथक्तैले भस्मीभूतं न दोषकृत् ॥ ३ ॥
तालकं पोट्टलीं बद्ध्वा मृद्भाण्डे कांजिके क्षिपेत् ।
दोलायंत्रेण यामैकं ततः कूष्माण्डजैर्द्रवैः ॥ ४ ॥
तिलतैले पचेद्यामं यामं च त्रिफलाजलैः ॥ ५ ॥

हरितालके टुकडे कर कांजीमें डाल एक प्रहर दोलायन्त्रमें पकावे फिर पेठेके रसमें एक प्रहर पकावे, तिलके तेल और त्रिफलेके काढेमें एक एक प्रहर पकावे, ऐसे चार प्रहर आँच देवे तो हरिताल शुद्ध होवे । उस शुद्ध हरितालको पेठेके रसमें पकावे, फिर तेलमें तथा एक प्रहर त्रिफलेके रसमें पकाय शुद्ध करलेवे तो निर्दोष होय ॥ १-५ ॥

तालं विचूर्णयेत्सूक्ष्मं मर्द्यं नागार्जुनीद्रवैः ।
सहदेव्या बलायाश्च मर्दयेद्दिवसद्वयम् ॥ ६ ॥
तत्तालं रोटकं कृत्वा च्छायायां च विशोषयेत् ।
हंडिकायंत्रमध्यस्थं प्लक्षभस्म तलोपरि ॥ ७ ॥
पाच्यं वालुक यंत्रेण भिदितं चण्डवह्निना ।
स्वांगशीतं समुद्धृत्य सर्वयोगेषु योजयेत् ॥ ८ ॥

हरितालको नागार्जनीके रसमें ३ दिन और सहदेवी कँघईके रसम २ दिन मर्दन करे फिर हरितालकी टिकिया कर छायामें सुखावे, फिर बालुकायन्त्रमें ढाककी राख भर बीचमें टिकिया रख पकावे, अतितीक्ष्ण अग्नि देय, जब ठंढी होजाय तब निकाल सम्पूर्ण काममें लावे ॥ ६-८ ॥

Aho ! Shrutgyanam

रसकर्पूरविधिः ।

पारदः स्फटिका चैव हीराकासीसमेव च ।
सैन्धवं समभागे ते विंशांशं नवसादरम् ॥ १ ॥
खल्वे विमर्द्य सर्वाणि कुमारीरसभावना ।
क्रमवृद्धाग्निना पक्वो रसः कर्पूरसंज्ञकः ॥ २ ॥

पीसी फिटकरी, हीराकसीस, नोन प्रत्येक एक एक सेर, बीसवां हिस्सा नवसादर इनको खरल कर कुमारीरसमें क्रमसे अग्नि देवे, पहिले मन्दाग्नि, फिर मध्यमाग्निं, फिर तीक्ष्णाग्नि दे तो रसकपूर बने ॥ १-२ ॥

सूतं संशोध्य चक्राभं कृत्वा लिप्त्वा च हिंगुना ।
द्विस्थालीसम्पुटे धृत्वा पूरयेल्लवणेन च ॥ ३ ॥
अधःस्थाल्यां ततो मुद्रां प्रदद्याद् दृढतां बुधैः ।
विशोष्याग्निं विधायाधो निषिंचेदंबुनोपरि ॥ ४ ॥
ततस्तु कुर्यात्तीव्राग्निं तदधः प्रहरत्रयम् ।
एवं निपातयेदूर्ध्वं रसो दोषविवर्जितः ॥ ५ ॥
अथोर्ध्वं पिठरीमध्ये लग्नो ग्राह्यो रसोत्तमः ॥ ६ ॥

पारेको शोधकर निर्मल करे, फिर हांडीमें हींगका लेप करे, दूसरी हांडीका सम्पुट कर नोनसे भर दे और हांडीमें दृढ मुद्रा देवे, जब सूख जाय तब चूल्हेपर चढावे, क्रमसे आग्नि देवे और तीन प्रहर तीक्ष्ण अग्नि देवे और पानीसे भीगा कपडा रक्खे, थोडा २ पानी डालता जाय, जब शीतल होवे तब निकाले जो ऊंचा चढजाय वो निर्दोष जानो, ऊपरकी हांडीमें हो उसे उत्तम जानो ॥ ३-६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

शुद्धरसस्य मुखकरणम् ।

अर्कसीहुंडधत्तूरलांगलीकरवीरकाः ।
गुञ्जाहिफेना चेत्येताः सप्तोपविषजातयः ॥ १ ॥
एतैर्विमर्दितः सूतश्छिन्नपक्षः प्रजायते ।
मुखं च जायते तस्य धातूंश्च ग्रसते द्रुतम् ॥ २ ॥

आक, थूहर, धतूरा, करिहारी रूखडी (तथा शाकविशेष) कनेर, चिरमिटी, अफीम यह सात उपविषकी जाति हैं । इन करके पारेको मर्दन करे तो छिन्नपक्ष होजाय और पारेके मुख होय (बुभुक्षित) सम्पूर्ण धातुओंका शीघ्र ग्रस जाय ॥ १ ॥ २ ॥

अथवा कटुकः क्षारो राजी लवणपञ्चकम् ।
रसोना नवसारश्च शिग्रुश्चैकत्र चूर्णयेत् ॥ ३ ॥
समांशैः पारदोदेतैर्जम्बीरेण द्रवेण वा ।
निम्बुतोये काञ्जिकैर्वा सोष्णखल्वे विमर्दयेत् ॥ ४ ॥
अहोरात्रत्रयेण स्याद्रसे सुरुचिरं मुखम् ॥ ५ ॥

सोंठ, मिरच, पीपल सज्जी, जवाखार, राई, पांचों नोंन, लहसन, नौसादर सहँजना इनका चूर्ण कर तीन दिन अर्थात् २४ प्रहर मर्दन करनेसे पाराके मुख होता है । इसमें सन्देह नहीं ॥ ३-५ ॥

पारदमारणविधिः ।

मृत्पिण्डे प्रक्षिपेन्नीरं तन्मध्ये च शरावकम् ।
महत्कुण्डं पिधानाभं तन्मध्ये मेखलायुतम् ॥ १ ॥
लिखेच्चमेखलामध्ये स्वर्णेनात्र रसं क्षिपेत् ।
रसस्योपरि गन्धस्य रजो दद्यात्समांशकम् ॥ २ ॥
दत्त्वोपरि शरावं च भस्ममुद्रां प्रदापयेत् ।

Aho ! Shrutgyanam

तस्योपरि पुटं दद्याच्चतुर्भिर्गोमयोपलैः ॥ ३ ॥
एवं पुनः पुनर्गन्धं षड्गुणं जारयेद्बुधः ।
गन्धे जीर्णे भवेत्सूतं तीक्ष्णाग्निः सर्वकर्मकृत् ॥ ४ ॥

धूमसाररसं तारो गन्धकं नवसादरम् ।
यामैकं मर्दयेदम्लैर्भागं कृत्वा समं समम् ॥ ५ ॥
काचकुप्यां विनिक्षिप्य तां च मृद्वस्त्रमुद्रया ।
विलिप्य परितो वक्रे मुद्रां दत्त्वा च शोषयेत् ॥ ६ ॥

अधः सच्छिद्रपिठरीमध्ये कूपीं निवेशयेत् ।
पिठरीं वालुकापूरैर्भृत्वा आकूपिकागलम् ॥ ७ ॥
निवेश्य चुल्ल्यां तदधः कुर्याद्वह्निं शनैः शनैः ।
तस्मादप्यधिकं किञ्चित्पावकं ज्वालयेत्क्रमात् ॥८॥
एवं द्वादशभिर्यामैर्म्रियते सूतकोत्तमः ।
स्फोटयेत्स्वांगशीतं त मूर्ध्वगं गन्धकं त्यजेत् ॥ ९ ॥
अधःस्थं मृतसूतं च सर्वकर्मसु योजयेत् ॥ १० ॥

मिट्टीके बरतनमें पानी भर बीचमें सरवा रक्खे, उसके ऊपर एक बडा ढक्कन ढके, उसके चारों तरफ गड्ढा करै, उस गड्ढेमें सोनेके बरतनसे रस डालता जाय, उस रसके ऊपर गन्धक पीसकर समान मात्रा डाले, ऊपर एक सरवा रक्खे, फिर भस्ममुद्रा देवे, तिसके ऊपर पुट देकर उपलोंकी आँच देवे, इसी प्रकार छः बार गन्धकको बुद्धिमान् वैद्य जलावै । जैसे २ गन्धक जले वैसे २ पारा तीक्ष्णाग्नि हो कार्य करनेवाला हो जाता है. जैसे धूमसार, पारा, फिटकरी, गन्धक, नौसादरको एक प्रहर खटाईमें मर्दन करे और

Aho ! Shrutgyanam

सब औषधि बराबर लेवे. फिर कांचकी शीशीमें भरकर एक शीशी उसके सम्पुटमें देवे, फिर वालुकायन्त्रमें शीशीके गलेतक बालू भरदेवे और हांडीके मुखमें कपरमिट्टी कर चूल्हेपर रख क्रमसे अग्नि देवे, ऐसे बारह प्रहर आँच देवे तो पारा उत्तम मरै जब ठंढा होजाय तब फोडकर ऊपरकी गन्धकछोड देवे, नीचेके पाराको काममें लावे॥१-१०॥

हिंगुलसे पारा काढनेकी विधि ।

निम्बूरसैर्निम्बपत्ररसैर्वा याममात्रकम् ।
पिष्ट्वा दरदमूर्ध्वं च पातयेत्सूतमुक्तवत् ॥
ततः शुद्धं रसं तस्मान्नीत्वा कार्येषु योजयेत् ॥ १ ॥

नींबूके रस तथा नीमके पत्तोंके रसम हिंगलूको एक प्रहर खरल करे फिर डमरूयन्त्रमें चढावे, उससे उडकर पारा ऊपर जा लगे उसे शुद्ध जाने और उसको सब काममें लावे ॥ १ ॥

हरतालशुद्धिः ।

पलाशभस्म मृद्भाण्डे क्षिप्त्वोपरि च तालकम् ।
तालोपरि पुनर्भस्म दत्त्वा स्थालीं विमुद्रयेत् ॥ १ ॥
चुल्ल्यां पचेच्चतुर्यामं पश्चात्तत्सिद्धतां व्रजेत् ।
गाढे तथाऽयसि न्यस्तं निर्धूमं च तदाशुभम् ॥ २ ॥
खण्डेन रक्तिकामात्रं खादेत्कुष्ठनिवृत्तये ।
पथ्यं मकुष्ठचणका लवणस्नेहवर्जिताः ॥ ३ ॥

ढाककी राखको हांडीमें भरकर बीचमें हरताल रक्खे, फिर मुद्रा चढाय चूल्हेपर रखकर चार प्रहर अग्नि देवे, जब मृत हो जाय तब इस प्रकार परीक्षा करे कि, लोहेको गरम कर उसमें डाले जो धुआं न देवे तो जाने शुद्ध होगई । इसको खांडमें एक रत्ती देवे तो कोढ दूर होवे । पथ्य-मोठ, नोन, चना, तेल घृत न देवे इनको छोडकर और पथ्य देवे ॥ १-३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पलमेकं शुद्धतालं कुमारीरसमर्दितम् ।
शरावसम्पुटे क्षिप्त्वा यामान्द्वादश तत्पचेत् ॥ ४ ॥

शुद्ध हरताल १ पल ले कुमारीरसमें मर्दन करे और दो शरावोंमें सम्पुट कर १२ प्रहरकी आँच देवे ॥ ४ ॥

हरितालं कर्षमात्रं मर्दितं कन्यकाद्रवैः।
सतैलं चायसे पात्रे क्षिप्त्वा मन्दाग्निना पचेत् ॥ ५ ॥

एक कर्ष हरताल कुमारीरसमें मर्दन कर लोहेके पात्रमें तेल डालकर मन्दाग्नि देवे ॥ ५ ॥

नागतांबाविधिः ।

मयूरपिच्छानादाय ज्वालयेदाज्यसर्षपैः ।
गुडगुग्गुलमीनोर्णा टंकणं सर्जिका मधु ॥ १ ॥
गुञ्जा च पिप्पली लाक्षाघृतंचैकत्र कारयेत् ।
धमेत्तदन्धमूषायां नागताम्रं प्रजायते ॥ २ ॥

मोरपख ४ सहस्त्रोंके चन्दा निकाले और मिट्टीक बडे बर्तनमें डालकर जलावे, फिर दो टंक गुड, सरसो, गूगल, छोटी मच्छी, ऊन, सुहागा, सज्जी, शहद, चिरमिठी, पापल, लाख ये सब बराबर लेकर एक हाथ नीचा गड्ढा खोदे एक ओरमें मोरपंखकी राख रक्खे और ऊपर दवाई डालता जाय और नीचेसे धोकता जाय, जब सब डालचुके और ठंडा होजाय, तब छोटे २ कण बीन लेवे और गलालेवे तो नागतांबा होवे ॥ १-२ ॥

सुवर्णमाक्षिकशोधनम् ।

माक्षिकं स्वेदयेत्पूर्वं कुलत्थक्काथयोगतः ।
अथवा नरमूत्रेण दोलायन्त्रे विशुद्ध्यति ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

माक्षिकस्य त्रया भागा भागैकं सैन्धवस्य च ।
मातुलुंगद्रवैश्चाथ जम्बीरोत्थद्रवैः पचेत् ॥ २ ॥
क्षालयेल्लोहजे पात्रे यावत्पात्रं सलोहितम् ।
भवेत्ततः सुसिद्धः स्यात्स्वर्णमाक्षिकमृच्छति ॥ ३ ॥
कुलत्थस्य कषायेण घृततैलेन वा पचेत् ।
तक्रेणऽवाजमूत्रेण म्रियते स्वर्णमाक्षिकम् ॥ ४ ॥

सोनामक्खीको पहले शहदमें फिर कुलथीके काढेमें फिर मनुष्यके मूत्रमें घोटकर दोलायंत्रमें शुद्ध करे । फिर शहद तीन भाग, सेंधानोंन एक भाग ले बिजौरा तथा जंभीरीके रसमें पकावे । उसको लोहेके पात्रमें डालकर जब लाल हो जाय तब-तक हिलावे तो सोनामक्खी शुद्ध होय । कुलथीके काढे अथवा घृत तेलमें पकावे या मट्ठामें पकावे वा बकरीके मूत्रमें पकावे तौ सोनामक्खी मरै ॥ १–४ ॥

रूपमाक्षिकशोधनम् ।

कर्कोटीमेष शृंग्युत्थैर्द्रवैर्जंबीरजैर्दिनम् ।
भावयेदातपे तीव्रे विमला शुद्धयति ध्रुवम् ॥ १ ॥

रूपामाखी कंकोडा, मेढासींगीका रस, जंभीरीका रस इनमें एक दिन भावना देकर फिर धूपमें सुखावे तो रूपामाखी शुद्ध होवे ॥ १ ॥

मनःशिलाशोधनम् ।

पचेत्र्यहमजामूत्रे दोलायन्त्रे मनःशिलाम् ।
भावयेत्सप्तधा पित्तैरजायाः शुद्धिमृच्छति ॥ १ ॥

मनशिलको बकरीके मूत्रविषे दोलायंत्रमें तीन दिन पकावे, फिर बकरीके पित्तेकी सात भावना देवे तौ शुद्ध होवे ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

नीलांजनशोधनम् ।

नीलांजनं चूर्णयित्वा जंम्बीरद्रवभावितम् ।
दिनैकमातपे शुद्धं सर्वकार्येषु योजयेत् ॥ १ ॥
एवं गैरिककासीसं टंकणानि वराटिका ।
शंखत्रुटी च कङ्कुष्ठं शुद्धिमायान्ति निश्चितम् ॥ २ ॥

सुरमाको पीसकर जंबीरीके रसकी एक दिन भावना दे, फिर धूपमें सुखावे तो शुद्ध होवे तब सब काममें वर्ते । इसी प्रकार गेरू, कसीस, सुहागा, कौडी, शंख, फिटकरी, खपरियादि शुद्ध होते हैं॥१-२

अथ रसप्रकरणम् ।

लोकनाथरसः ।

भागौ दग्धकपर्दकस्य च तथा शंखस्य भागद्वयं
भागौ गंधकसूतयोर्मिलितयोः पिष्ट्वा मरीचादपि ।
भागानां त्रितयं नियोज्य सकलं निम्बूरसैश्चूर्णितं
पीतस्तक्रमनु ग्रहण्यपहरः श्रीलोकनाथोरसः ॥ १ ॥

कौडीकी भस्म दो भाग, शंख, दो भाग, गन्धक एक भाग, पारा एक भाग इनको पीसकर तीन टंक मिरच डाल सबको मिलावे फिर नींबूके रसमें गोली बना और छाछके साथ लेवे तो यह श्रीलोकनाथ रस संग्रहणी रोगको दूर करता है ॥ १ ॥

शुद्धो बुभुक्षितः सूतो भागद्वयमितो भवेत् ।
तथा गंधकभागौ द्वौ कुर्यात्कज्जलिकां तयोः ॥ २ ॥
सूताच्चतुर्गुणेष्वेव कपर्देषु विनिक्षिपेत् ।
भागैकं टंकणं दत्त्वा गोक्षीरेण विमर्दयेत ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

तथा शंखस्य खण्डानां भागानष्टौ प्रकल्पयेत् ।
क्षिपेत् सर्वं पुटश्चान्तश्चूर्णं लिप्तशरावयोः ॥ ४ ॥
गर्ते हस्तोन्मिते धृत्वा पुटेद्गजपुटेन च ।
स्वांगशीतं समुद्धृत्य पिष्ट्वा तत्सर्वमेकतः ॥ ५ ॥
षड्गुंजासमितं चूर्णमेकोनत्रिंशदूषणैः ।
घृतेन वातजे दद्यान्नवनीतेन पित्तजे ॥ ६ ॥
क्षौद्रेण श्लेष्मजे दद्यादतीसारक्षये तथा ।
अरुचौ ग्रहणीरोगे कासमंदानले तथा ॥ ७ ॥
कासश्वासेषु गुल्मेषु लोकनाथो रसो हितः ।
तस्योपरि घृतान्नं च भुंजीत कवलत्रयम् ॥ ८ ॥
मंचे क्षणैकमुक्तान्नं शयीतानुपधानके ।
रसाच्च जायते तापस्तदा शर्करया युतम् ।
गुडूच्या वाथ गृह्णीयाद्वंशलोचनयाथवा ॥ ९ ॥

शुद्ध और भूखा पारा दो भाग, गंधक दो टंक इनकी कज्जली कर पारेसे चौगुनी कौडी डाले, सुहागा एक टंक डालकर गौके दूधमें खरल करै फिर शंखकी भस्म एक टंक डालकर फिर सबको सकोरेमें रख कपरमिट्टी कर एक हाथ गड्ढे तथा गजपुटमें फूंक देवे. जब ठंढा हो जाय तब निकाल लेवे फिर पीसकर काममें लावे । छः रत्ती रस २९ काली मिरचोंके साथ, वायुवालेको घृतमें देवे और पित्तवालेको माखनमें, कफवालेको शहदमें देवे । अतीसार और क्षयमें शहदके साथ लेवे, अरुचि, संग्रहणी, खांसी, मन्दाग्नि, श्वास, गुल्ममें लोकनाथरस फायदा करता है और तीन ग्रासोंके साथ घृत लेवे और खाटपर सीधा

Aho ! Shrutgyanam

तकिया लगाकर क्षणमात्र लेटे । रससे गरमी मालूम होवे तो मिश्री संयुक्त लेवे अथवा गिलोय वा वंशलोचनमें लेवे तो अरुचि, संग्रहणी आदि दूर होवें ॥ २–९ ॥

कफकुंजररसः १–२ ।

रसगन्धः सीपिमासं स्नुह्यर्कं च पयःपलम् ।
पलं पलं पञ्चलूणमेकीकृत्य तु चूर्णयेत् ॥ १ ॥
आलोडय चार्कदुग्धेन पूरयेच्छंखमध्यतः ।
पिप्पली विषकर्वीरं चूर्णं कृत्वा प्रलेपयेत् ॥ २ ॥
प्रज्वालयेद्याममात्रं सूक्ष्मं चूर्णं तु कारयेत् ।
कर्पूरनागपत्रैश्च देया मात्राऽर्द्धगुञ्जया ॥ ३ ॥
श्वासं कासं च हृद्रोगं कफं पञ्चविधं तथा ।
वज्रवद्धन्ति रोगांश्च रसोऽयं कफकुंजरः ॥ ४ ॥

१–पारा १६ टंक, गंधक १६ टंक, सीपी १६ टंक, थूहरका दूध १ पल, आकका दूध १ पल, पाचों नोन इनको एकत्र कर आकके दूधमें सान शंखमें भरे । पीपल, तेलिया मीठा, कनेर इनको भी शंखमें भर देवे और कपरौटी कर एक प्रहर अग्नि देवे जब ठंढा होजाय तब सबका चूर्ण कर कपूर पानके संग आधी रत्ती दे तो श्वास, खांसी, हृदयरोग, पाँच प्रकारके कफ वज्रके समान कफकुंजर रस रोगरूपी वृक्षोंको जडसे उखाडे ॥ १–४ ॥

नागं पारदसंयुतं समरिचं सद्वत्सनाभं शुभं देवा-
लीरसभावना मुनिमिता कर्चूरकाकल्ह्योः ।
देयं वल्लमितं महौषधरसैः सन्नागवल्लीदलैः श्लेष्मा-
वातविकारजाठरपरे स्यात्सन्निपाते ज्वरे ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

२–शीशा, पारा विधिपूर्वक मिलावै । विधि–शीशेको गलाकर चूनेके पानीमें तीन बार डाले, पारेको सात बार कपडेमें छानलेवे फिर ईटके कुकुआसे एक प्रहर खरल करे फिर शीशेको गलाकर पारेमें डाल देवे, मिरच ४ टंक, तेलिया मीठा एक टंक बन्दाल (डोडी) की ७, भांगरेका रस कचूरकारस अकरकराका रस, सोंठका रस, पानका रस इनकी सात २ भावना देवे । यह रस श्लेष्मविकार, वायुविकार, पेटके रोग और सन्निपातज्वरादिकोंको भी नाश करे ॥ १ ॥

श्वासकुठारो रसः ।

रसं गन्धं विषं चैव टंकणं च मनःशिला ।
एतानि टंकमात्राणि मरिचं टंककाष्टकम् ॥ १ ॥
एकैकं मरिचं दत्त्वा खल्वे सूक्ष्मं विमर्दयेत् ।
त्रिकटुं टंकषट्कं च दद्यात्पश्चाद्विमर्दयेत् ॥ २ ॥
रसः श्वासकुठारोयं पूर्णखण्डेन बुद्धिमान ।
श्वासेऽतिदुस्तरे दद्याद् गुञ्जामात्रं प्रयत्नतः ॥ ३ ॥

पारा, गन्धक, तेलिया मीठा, सुहागा, मनशिल इन सबको एक एक टंक लेवे । मिरच ८ टंक ले एक एक मिरच डालता जाय और खरल करे सोंठ, मिरच, पीपल ६ टंक डालकर महीन पीसे । इस श्वासकुठार नाम रसको बुद्धिमान पुरानी खांडके साथ देवै । बडे कठिन श्वासमें एक रत्ती मात्रा यत्नसे देवे ॥ १–३ ॥

आनन्दभैरवरसः ।

हिंगुलं वत्सनागं च मरिचं टंकणं कणा ।
जंबीरस्य रसं दत्त्वा मर्द्यं यामचतुष्टयम् ॥ १ ॥
श्वासे कासे सन्निपाते ग्रहण्यां शूलमेहयोः ।
आस्मारानिलच्छर्दौ रसश्चानन्दभैरवः ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

हिंगुल, शुद्ध तेलिया मीठा, मिरच, सुहागा, पीपल इनको जम्बीरीके रसकी चार प्रहरकी भावना देवे। यह रस खांसी श्वास, सन्निपात, संग्रहणी, शूल, प्रमेह, मृगी, वायु, छर्दि इतने रोगोंको दूर करता है। यह आनन्दभैरव रस है ॥ १ ॥ २ ॥

कालारिरसः १–२।

त्रिशाणं पारदं चैव गंधकं शाणपंचकम्।
त्रिशाणं वत्सनागं च पिप्पली दशशाणिका ॥ १ ॥
लवंगं च चतुःशाणं त्रिशाणं कनकाह्वयम्।
टंकणं वह्निशाणं च पंच जातीफलं क्षिपेत् ॥ २ ॥
मरिचं पञ्चशाणं स्यादकल्लं च त्रिशाणकम्।
करीरार्द्रकनिम्बूकैर्मर्दयेच्च दिनत्रयम् ॥ ३ ॥
कालारिरसनामाऽयं वातव्याधिविनाशनः।
मर्दने भक्षणे नस्ये द्विगुंजं संन्निपातजित् ॥ ४ ॥

१–पारा ३ टंक, गन्धक ५ टंक, तेलिया मीठा ३ टंक, पीपल १० टंक, लौंग ४ टंक, धतूरा ३ टंक, सुहागा फूला ३ टंक, जायफल ५ टंक, मिरच ५ टंक, अकरकरा ३ टंक, करील, अदरक इनको ले नींबूके रसमें तीन दिन मर्दन करै यह कालारि नाम रस मर्दन और भक्षण करै, तथा नास देवे तो वातरोगोंको दूर करै, दो रत्ती प्रमाण खाय तो सन्निपातको जीते ॥ १–४ ॥

शुद्धं सूतं मृतं ताम्रं गन्धकं नागरं विषम्।
जातीफलं लवङ्गानि कनकं मरिचैः सह ॥ ५ ॥
रसाच्च द्विगुणं ग्राह्यं टंकणं भृष्टमेव च।
पिप्पली करहाटश्चसर्वार्धंगृह्य कोविदैः ॥ ६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

कर्षमात्राणि सर्वाणि रसाद्या मरिचांतकाः ।
पिष्ट्वा सूक्ष्ममिदं योज्यं नस्यभक्षणयोर्द्वयोः ॥ ७ ॥
भावना निम्बुकावल्लीहिमार्द्रकरसैस्तथा ।
वारत्रयंसदा देयाः कालारिरससिद्धये ॥ ८ ॥
सर्वे वाताः शिरोवातो मेहः प्रस्वेद एव च ।
सूतिकानां च ये रोगाः सर्वे नश्यन्ति वेगतः ॥ ९ ॥
रसः कालारिसंज्ञोऽयं प्रतीतो बहुषु श्रुतः ।
शिरोग्रहः कर्णनादो मन्यास्तम्भो हनुग्रहः ॥ १० ॥
धनुर्वातादयोप्येवं वाह्याः पामादयस्तथा ॥ ११ ॥

२–शुद्ध पारा, फूंका तांबा, गन्धक, सोंठ, तेलिया मीठा, जायफल, लौंग, धतूरेके बीज, मिर्च, पारेसे दूना सुहागा भूना, पीपल, अकरकरा ये सब औषधि आधे ले. सब औषधि मरिच पर्यंत चार २ टंक लेवे इनको पीसकर नस्य और खानेमें वर्ते नींबूके रसकी ३ भावना, ब्राह्मीके रसकी ३ भावना, अदरखके रसकी ३ भावना कनेरके रसकी ३ भावना देय तो कालारिरस सिद्ध हो जाता है । यह संपूर्ण वात, शिरका वात, प्रमेह, पसीना, प्रसूतिकादि रोगोंको दूर करे, यह कालारिरस बहुत जगह अजमाया हुआ है. शिरोरोग, उरग्रह, मन्यास्तम्भ, जोडोंका जकडना, धनुर्वात बाहरकी खाज आदि रोगोंका नाश करता है ॥ ९–११ ॥

चैतन्ये–सूचीभरणो रसः ।

विषं पलमितं सूतं शाणकं चूर्णयेद्द्वयम् ।
तच्चूर्णं संम्पुटे धृत्वा काचलिप्तशरावयोः ॥ १ ॥
मृदं दत्वा च संशोध्य ततश्चुल्ल्यां निवेशयेत् ।

Aho ! Shrutgyanam

वह्निं शनैः शनैः कुर्यात्प्रहरद्वयसंख्यया ॥ २ ॥
ततश्चोद्घाट्य तन्मुद्रामुपरिस्थशरावकात् ।
संलग्नो यो भवेत्सूतस्तद्गृह्णीयाच्छनैः शनैः ॥ ३ ॥
वायुस्पर्शो यथा न स्यात्तथा कुप्यां निवेशयेत् ।
यावत्सूच्या मुखे लग्नं कुप्यां निर्याति भेषजम् ॥४॥
तावन्मात्रो रसो देयो मूर्च्छिते सन्निपातके ।
क्षुरेण प्रस्थिते मूर्ध्नि तत्राङ्गुल्या च घर्षयेत् ॥ ५ ॥
रक्तभेषजसंपर्कान्मूर्च्छितोऽपि हि जीवति ।
यदा तापो भवेत्तस्य मधुरं तत्र दीयते ॥ ६ ॥

शुद्ध तेलिया मीठा १ पल, पारा १ पल इन दोनोंको पीसकर कांचकी शीशीमें भर सकोरोंमें रख कपरमिट्टी मुद्रा कर धूपमें सुखावे फिर चूल्हेपर चढाकर दो प्रहरकी मन्दाग्नि देवे। जब ठंढा हो जाय तब संपुट खोले, जो काचके पात्रमें पारा लगा होवे उसे खुरच लेवे, हौले २ दूसरे पात्रमें भरकर वर्तावमें लावे. पवन न लगने देवे, फिर शीशीमें भरकर रख देय और जितना सुईके मुखमें लगे उतना काढे, सुईके अग्रभागकी बराबर मात्रा लेवे। मूर्छित सन्निपातवालेके मस्तकपर चक्कूसे थोडा चीरकर उँगलीसे मर्दन करे तो अचेत मूर्छित जीवे ऐसेही सांपका काटा भी मरावस्थासे जीवे और जिसे ताप होय तब उसे मीठा खवावे ॥ १-६ ॥

आमवाते-उदयभास्कररसः ।

पारदं गन्धकं दिव्यं व्योषं त्रिलवणानि च ।
सितकन्दा च वृद्धैला रसकर्पूरमेव च ॥ १ ॥
समानि सर्वतुल्यं च शुद्धं जैपालकं क्षिपेत् ।

Aho ! Shrutgyanam

बीजपूररसैर्भाव्यो रसो ह्युदयभास्करः ॥ २ ॥
पारदं गन्धकं व्योषं द्वौ क्षारौ लवणानि च ।
टंकणं चेति तुल्यानि जैपालं सकलैः समम् ॥ ३ ॥
भावना बीजपूरस्य सूक्ष्मं चूर्णं विचूर्णयेत् ।
संग्राह्यं रक्तिकायुग्मं वातं सामं विनाशयेत् ॥ ४ ॥
गोदुग्धं केवलं पथ्यं देयमुष्ट्रीपयोऽथवा ।
अन्नं च वर्जयेत्तावदामशोफं निवारयेत् ॥ ५ ॥

पारा, शुद्ध गंधक, सोंठ, मिरच, पीपल, तीनों नोन, मिश्री, बडी इलायचीके दाने, शुद्ध रसकपूर इन सबको बराबर ले शुद्ध जमालगोटेमें मिलाकर बिजौरेके रसकी तीन भावना देवे । यह उदयभास्कर रस है । पारा, गंधक, सोंठ, मिरच, पीपल, सज्जीखार, जवाखार, तीनों नोन ये सब बराबर लेवे, इन सबके बराबर सुहागा, जमालगोटा बराबर ले और चूर्ण कर बिजौरेके रसकी भावना देवे । इसको दो रत्ती प्रमाण मात्रा देवै तो संपूर्ण वातको नाश करे । और केवल गोदुग्ध या उँटनीका दूध पथ्यमें देवे। जबतक आमकी सूजन न जाय तबतक अन्न न खाय ॥ १-५ ॥

वातकासे भूतांकुशो रसः ।

शुद्धसूतस्य भागैकं द्विभागं शुद्धगन्धकम् ।
भागत्रयं मृतं ताम्रं मरिचं दशभागकम् ॥ १ ॥
मृताभ्रकं चतुर्भागं भागमेकं विषं क्षिपेत् ।
भूताङ्कुशस्य भागैकं सर्वमम्लेन मर्दयेत् ॥ २ ॥
यामं भूतांकुशो नाम माषैकं वातकासजित् ।
अनुपानं लिहेत्क्षौद्रं विभीतकफलत्वचा ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

शुद्ध पारा १ टंक, शुद्ध गन्धक १ टंक, तामेश्वर ३ टंक, मिर्च १० टंक, अभ्रक ४ टंक, तेलिया मीठा १ टंक सब इकट्ठी कर इमलीके रसमें एक प्रहर मर्दन करै, इस भूतांकुश रसको एक मासा ले शहद और बहेडेकी राखके साथ चाटनेसे वायुरोग और खांसी दूर हो जाता है ॥ १–३ ॥

तालकेश्वरः ॥

तालं ताप्यं शिला सूतं शुद्धं सैंधवटंकणम् ।
समांशं चूर्णयेत् खल्वे सूताद्विगुणगन्धकम् ॥ १ ॥
गन्धतुल्यं मृतं ताम्रं जम्बीर्यां दिनपंचकम् ।
मर्द्यं स्वद्भिः पुटे पाच्यं भूधरोदरसंपुटे ॥ २ ॥
पुटेपुटे द्रवैर्मर्द्यं सर्वमेकत्र षट्पलम् ।
द्विपलं मारितं ताम्रं लोहभस्म चतुःपलम् ॥ ३ ॥
जम्बीराम्लेन तत्सर्वं दिनं मर्द्यं पुटे लघु ।
त्रिंशदंशं विषं चास्य क्षिप्त्वा चूर्णं विमर्दयेत् ॥४॥
महिष्याज्येन संमिश्रं कर्षार्धं भक्षयेत्सदा ।
मध्वाज्यैर्वाकुचीचूर्णं कर्षमात्रं लिहेदनु ।
सर्वकुष्ठान्निहन्याशु महातालेश्वरो रसः ॥ ५ ॥

हरताल, सोनामक्खी, मनसिल, पारा शुद्ध, शिलाजीत, शोधा सुहागा इन सबको बराबर लेकर चूर्ण कर पारेसे दूना गंधक, गंधकके बराबर तामेश्वर लेकर जंबीरीके रसमें पांच दिन मर्दन करे। ऐसे ६ पुट देवे और जमीनमें गाड देवे। दो पुटोंमें जंबीरीका रस देता जाय सबका प्रमाण छः पल एकत्र कर दो पल तामेश्वर और लोहभस्म ४ पल इनको जंबीरीके रसमें एक दिन मर्दन करै. और तीसवां हिस्सा तेलिया मीठा डालकर चूर्ण कर भैंसके घीके साथ आधा

Aho ! Shrutgyanam

कर्ष भक्षण करे । घी, शहत इनके साथ बावचीका चूर्ण ४ टंक लेवे तौ संपूर्ण कोढोंका नाश करे । यह महातालकेश्वर रस है ॥ १-९ ॥

अतिसारे रसः ।

लवंगमहिफेनं च हिंगुलं शाल्मलीरसः ।
सितासमा गुटी ज्येष्ठा जलपीताऽतिसारजित् ॥ १ ॥

लवंग, अफीम, हींगलू, सेमल, मोचरस, मिश्री इन सबको बराबर लेकर बेरके प्रमाण गोली बनावे । एक गोली जलके साथ लेवे तो अतीसार दूर होवे ॥ १ ॥

अतिसारे--आनन्दभैरवरसः ।

दरदं वत्सनागं च मरिचं टंकणं कणा ।
चूर्णयेत् क्रमभागेन रसो ह्यानन्दभैरवः ॥ २ ॥
गुंजैका वा द्विगुंजा वा बलं ज्ञात्वा प्रयोजयेत् ।
मधुना लेहयेच्चानु कुटजस्य फलत्वचः ॥ ३ ॥
चूर्णितं कर्षमात्रं तु द्विदोषोत्थातिसारजित् ।
मध्याह्ने दापयेत्पथ्यं गोराज्यं तक्रमेव च ॥ ४ ॥
पिपासायां जलं शीतं विजयां निशि दापयेत् ॥ ५ ॥

शिंगरफ, तेलिया मीठा, मिरच, सुहागा, पीपल इन सबको बराबर लेवे और चूर्ण करे, इस आनन्दभैरव रसको एक वा दो रत्ती बलाबल देखकर शहदमें चटादेवे, कुडेकी छाल वा कुडेके फलका चूर्ण एक कर्षमात्र देवे तो द्विदोषज अतीसार दूर होवे । मध्यान्हमें गौका दूध तथा घृत और मट्ठा लेवे प्यास लगे तो टंढा जल पीवे या रात्रिको भांग पीवे ॥ २-५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

कनकसुन्दररसः ।

हिंगुलं मरिचं गन्धं पिप्पली टंकणं विषम् ।
कनकस्य च बीजानि समांशं विजयाद्रवैः ॥ १ ॥
मर्दयेद्याममात्रेण चणकाभा वटी कृता ।
भक्षिता ग्रहणीं हन्ति रसः कनकसुन्दरः ॥ २ ॥

सिंगरफ, मिरच, गन्धक, सुहागा, पीपल, तेलियामीठा, धतूरेके बीज इनको समान भाग लेकर भांगके रसमें एकप्रहर घोटकर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे । इन गोलियोंके खानेसे संग्रहणी नाश होवे ॥ १--२ ॥

अजीर्णे--क्रव्यादरसः ।

पलं रसस्य द्विपलं बलिः स्याच्छुक्लायसी चार्द्धं पलप्रमाणम्। संचूर्ण्य सर्वं द्रुतमग्नियोगादेरण्डपत्रेषु निवेशनीया ॥ १ ॥ पिष्ट्वाऽथ तां कज्जलिकां निदध्याल्लौहं च पात्रं वरपूतमस्मिन् । जम्बीरजं पक्करसं फलानि शतं तलेऽस्याग्निमथाल्पमात्रम्॥२॥ जीर्णे रसे भावितमेतदेतैः सुपंचकोलोद्भववारिपूतैः। सेवेतसाम्लैः शतपत्रयोज्यं समं रजष्टंकणजं सुमृष्टम् ॥ ३ ॥ विडं तदर्द्धं मरिचं समं च तत्सप्तवारं चणकाम्लतोयैः । क्रव्यादनामा भवति प्रसिद्धो रसस्तु मंथानकभैरवोक्तः ॥ ४ ॥ मासद्वयं सैन्धवतक्रपीतमेतस्य धन्वौ खलु भोजनान्ते । गुरूणि मांसानि पयांसि पिष्टैः कृतानि खाद्यानि फलानि वेगात ॥ ५ ॥ मात्रातिरिक्तान्यतिसेवितानि

Aho ! Shrutgyanam

यामद्वयाज्जारयति प्रसिद्धः । निहन्त्यजीर्णान्यपि षट्प्रकाराण्यग्निं करोति क्रमसेवनेन ॥ ६ ॥
कुर्याद्दीपनमुद्धतं च पवनं दुष्टामयो यक्ष्मणां ।
तुन्दस्थौल्यनिबर्हणं सुगहनं शूलार्तिनिर्मूलनम् ।
गुल्मप्लीहविनाशनो बहुरुजां विश्वासनः सन्ततं
सेव्यो ग्रंथिमहोदरापहरणः क्रव्यादनामा रसः ॥ ७ ॥

पारा १६ टंक, गंधक ३२ टंक, तांबा ८ टंक, सार ८ टंक इन सबको पीसकर देवे और एरंडके पत्तोंमें पसारे । अग्निमें फिर पीसकर कज्जली करे. फिर कपडछान कर लोहेके पात्रमें डालकर पकी जंबीरीके १०० फलोंका रस डाले नीचे मन्दाग्नि देय जब रस शोष जाय तब पंचकोलके पानीको भावना देवे. तथा अमलवेतके रसकी भावना देवे. इसके बराबर फूला सुहागा, कच्चा नोन आधा डाले. मिरच सुहागेकी बराबर डालकर चनेके खारमें सात बार मले यह क्रव्यादनाम प्रसिद्ध रस है, रसोंके बीचमें बडा भयानक रस है, दो मासे छाछ और सेंधानोंनके साथ नित्य पीवे । भोजन पीछे करे, भारी अन्न. मांस खोआ आदि, पेटेके पदार्थ, फलादि खाया होय तो इसकी यथोचित मात्रा सेवनसे दो प्रहरमें जीर्ण होवे. गरिष्ठ भोजन,मांसखाना, छाछ, मीठाफल इनके खानेसे जो अजीर्ण हुआ हो तो इस रसकी एक मात्रा रत्तीभर सेवन करनेसे दो प्रहरमें सबको भस्म कर देवे । छः प्रकारके अजीर्णका नाश करे और अग्निको प्रबल करे, क्रमसे सेवन करै तो वात और दुष्ट रोगोंको नाश करे, पेटसूजनको दूर करै, शूलका नाश करे, गुल्म, गांठ, प्लीहा इनका और बहुतसे रोगोंका नाश करे । इसका निरन्तर सेवन करनेसे सब उदरविकार दूर होवें यह क्रव्यादनामा रस अतिश्रेष्ठ है ॥ १–७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

वाजीकरणे-चन्द्रोदयरसः ।

पलं मृदुस्वर्णदलं रसेन्द्रं पलाष्टकं गन्धकषोडशांशम् । शाणैस्तु कार्पासभवैः प्रसूनैः सर्वं विमर्द्याथ कुमारिकाभिः ॥ १ ॥ तत्काचकुम्भे निहितं सुगाढे मृत्कर्पटं तद्दिवसत्रये च । पचेत्क्रमाग्नौ सिकताख्ययंत्रे ततो रजः पल्लवरागरम्यम् ॥ २ ॥ निगृह्य चैतस्य पलं पलानि चत्वारि कर्पूररजस्तथैव । जातीफलं शोषणमिन्द्रपुष्पं कस्तूरिकाया इह शाण एकः ॥ ३ ॥ चन्द्रोदयोऽयं कथितश्च मासं भक्ष्योऽहिवल्लीदलमध्यवर्ती । मदोन्मदानां प्रमदाशतानां गर्वाधिकत्वं श्लथयत्यकांडे ॥ ४ ॥ शृतं घनीभूतमतीव दुग्धं मृदूनि मांसानि च मंडकानि । लवात्रपिष्टानि भवन्ति पथ्यान्यानन्ददायीन्यपराणि चात्र ॥ ५ ॥

वलीपलितनाशनस्तनुभृतां वयः स्तम्भनः
समस्तगदखण्डनः प्रचुररोगपंचाननः ।
गृहे न रसराजको भवति यस्य चन्द्रोदयः
स पञ्चशरदर्पितो मृगदृशां कथं वल्लभः ॥ ६ ॥

सोनेके वर्क १६ टंक, शुद्ध पारा ८ पल, गंधक १६ पल, कपासके फूल १ पल इन सबको पीस ग्वारपाठेके रसमें सान आतशी शीशीमें भर कपर मिट्टी कर वालुका यंत्रमें क्रमसे दो दिन अग्नि देवे, जब लाल होजाय तब ग्रहण

Aho ! Shrutgyanam

करे । फिर १ पल कपूर, ४ पल जायफल, समुद्रशोष, लौंग, कस्तूरी १ टंक इन सबको मिलाकर वर्त्ते । इस चन्द्रोदय नाम रसको एक मासा पानमें खावे तो १०० मदमाती स्त्रियोंका गर्व भञ्जन करे । ऊपरसे कढती बिरियाका दूध पीवे, नरम मांस खावे, मैदाकी रोटी, तीतर और गरिष्ठ वस्तु गरिष्ठ बीज पथ्य ले आनंदकारी भोजन करे तो बुढापेको दूर करे देह पुष्ट करे, स्तंभनकारक है, सम्पूर्ण रोगोंको दूर करे, हाथीरूप रोगोंको यह रस सिंहसमान जानो, जिसके घरमें चन्द्रोदय रस नहीं है वे मृगनयनियोंको कैसे प्यार लगें ? ॥ १-६ ॥

कामदेवरसः ।

स्वभ्रं शुल्वं केशरं लोहचूर्णं जातीपत्रं सर्पफेनं लवङ्गम् । एलासूक्ष्मं क्षीरकं कोलनागजातीजातं चीणकावावियुक्तम् ॥१॥ अब्धेः शोषं सप्तकर्षाक्षदेशक्षौद्रैर्मिश्रं मिश्रमाकल्लयुक्तम् । क्षीणे वीर्यें रेतसां सागरोऽयं सायं भक्षेद्यो गुटीं वल्लयुक्ताम् ॥२॥ गच्छेन्नारीः साध्ययोगात्सहस्रं वृद्धो देहैर्यातु तारुण्यभाजम् । रामावश्यं सर्वकाले कृतौ च प्रोक्तो वैद्यैः कामदेवो रसोऽयम् ॥ ३ ॥

अभ्रक, तांबा, केशर, लोहसार, जावित्री, तमालपत्र, अफीम, लौंग छोटी इलायची, क्षीरकाकोली, नागकेशर, जायफल, कवावचीनी, चन्द्रोदय, समुद्रशोष ये सब औषधी सात कर्षके समान लेवे । इसमें शहद, मिश्री और अकरकरा मिलाकर लेवे तो क्षीणवीर्यवाला मनुष्य अपार वीर्यवाला होवे । इसकी गोली छः छः रत्तीकी बनाकर सायं-

Aho ! Shrutgyanam

कालको भक्षण करे ता हजार स्त्रियोंसे भोग करनेकी शक्ति होवे, वृद्ध देहवाला तरुणताको प्राप्त होवे । स्त्रियोंको सदैव वश करे । इसको वैद्योंनें कामदेवरस कहा है ॥ १–३ ॥

शुक्रल औषधिः ।

यस्माच्छुक्रस्य वृद्धिः स्याच्छुक्लं च तदुच्यते ।
यथाश्वगन्धा मुशली शर्करा च शतावरी ॥
दुग्धमाषाश्च भल्लाताः फलमज्जामलानि च ॥ १ ॥

जिस औषधिसे शुक्र (वीर्य) बढे उसको शुक्रल कहते हैं । जैसे–असगंध, मूशली, मिश्री, शतावरी, दूध, उडद, भिलावे, आम्रादिफलकी मज्जा और आमलादिक ॥ १ ॥

विरेचकरसः ।

नेपालकं पारदटंकणाक्षं क्षारो यवानीमरिचानि पथ्या ।
एरण्डबीजानि च गन्धकं च इच्छाविभेदी रसचक्रवर्ती १ ॥

शुद्ध जमालगोटा, ३ टंक, पारा ३ टंक, फूला सुहागा, जवाखार, अजवायन, मिरच, हरड, अंडी, गन्धक इनको एकत्र कर पीसलेवे, यह रस इच्छाभेदी नाम सब रसोंका राजा है ॥ १ ॥

त्रिकटु त्रिफला सूतं शुद्धं गन्धकटंकणम् ।
सर्वैः समानो जैपालो राजयोग्यं विरेचनम् ॥ २ ॥

सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, शुद्ध पारा, गन्धक, फूला सुहागा, शुद्ध जमालगोटा सबके बराबर लेवे. यह दस्तोंके लिये राजयोग्य है ॥ २ ॥

नेपालमरिचटंकणसमभागो मेलि एकीकृत्य ।
अर्द्धो हिंगुलभागो पयडो बुद्धो छुरीकारो ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

जमालगोटा, मिरच, सुहागा इनको बराबर लेकर और इनसे आधा हिंगुल डाले यह रस छुरिकार नामसे प्रसिद्ध है ॥३॥ गाथाश्लोक॥

ज्वरहारी रसः ।

नेपालकं टंकणपारदं च तुर्यं तथा चामलगन्धसारम् । सर्वैः समांशै रस एव पिष्टं ज्वरेषु सर्वेषु च नित्यमिष्टम् ॥ १ ॥ रसः प्रदेयः स्फुटमेकगुंजा पथ्यं सिता तन्दुलमुद्गयूषाः । श्रीपूज्यराजैः कथितो रसोऽयं सद्यो ज्वरं चापि निहंति सत्यम् ॥ २ ॥

जमालगोटा, शुद्ध सुहागा, पारा, शुद्ध गंधक इन सबको बराबर ले, चूर्ण कर लेवे, इसमेंसे गुंजा प्रमाण लेवे, पथ्यमिश्री, चांवल, मूंगका पानी देवे तो सम्पूर्ण ज्वरोंको दूर करे. यह रस श्रीगुरुराजने कहा है और शीघ्र ज्वरका नाश करता है ॥ १ ॥ २ ॥

ज्वरादौ–चिन्तामणिरसः १–२ ।

व्योषं गन्धं रसेन्द्रं विषमपि लवणं नागवङ्गं तथाऽभ्रं सारं त्रिक्षारयुक्तं गजकणचविका साग्निकं जीरके द्वे । पथ्या वा चूर्णमेतत्प्रबलरसयुतं नागवल्लीकरीर निम्बूकार्द्रै रसादिप्रबलरसयुतं शुद्धचिन्तामणीशः ॥ १ ॥

१–सोंठ, मिरच, पीपल, गन्धक, पारा, तेलियामीठा, पांचों नोन, सीसाभस्म, वंग अभ्रक, सज्जी, खार, सुहागा, जवाखार, चव्य, गजपीपल, चीता, दोनों जीरे हरड, पारा, गन्धक इनको पानके रस, करेलाके रस, नीम्बूके रस, और अदरखके रसकी सात २ भावना देवे, शुद्धचिन्तामणि रस है ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

सूतं गन्धकटंकणं समरिचं शुण्ठी विषं पिप्पली
सज्जिक्षारसुफान्वितं च लवणं पञ्चाभ्रकं जीरकम् ।
यावक्षारसमं समांशकमिदं खल्वे समैः शोषयेत्
सप्तैर्निम्बुभुजङ्गमार्द्रकरसैः शुद्धःस चिन्तामणिः॥२॥

२-पारा, गन्धक, सुहागा, मिरच, सोंठ, तेलिया मीठा, पीपल, सज्जी, सौंफ, पांचों नोन, अभ्रक, दोनों जीरे, जवाखार इनकी सम मात्रा लेवे, निम्बू और अदरखके रसकी सात २ भावना देवे तो शुद्धचिन्तामणि रस होवे ॥ २ ॥

त्रिपुरभैरवरसः ।

वेदवेदगुणा पृथ्वी शुण्ठी मरिचटंकणम् । चतुर्थो वत्सनागश्च रसस्त्रिपुरभैरवः ॥ १ ॥ भावना नागवल्ल्या च तथाऽऽर्द्रकस्य भावना । निम्बुकस्यापि दातव्या वारत्रयमनुक्रमात् ॥ २ ॥ सन्निपाते तथा वाते श्लेष्मरोगे महज्ज्वरे । ग्रहे च मस्तकस्यापि पीडायामुदरस्य च ॥ ३ ॥

सोंठ ४ भाग, मिरच ४ भाग, सुहागा ३ भाग, तेलिया मीठा १ भाग इनको पान, नीम्बू, अदरख इनके रसकी तीन तीन भावना अनुक्रमसे देवे और विधिसे लेवे तो सन्निपात, वात, श्लेष्म, महाज्वर, मस्तकरोग, पेटका दरद ये सब दूर होते हैं ॥ १-३ ॥

महावातज्वरांकुशरसः ।

पृष्टे तालकमेतदर्द्धममलं शंखस्य चूर्णं क्षिपेत्
प्रक्षिप्याथ नवांशकेऽपि च शिखिग्रीवां पुनःपेषयेत् ।
कौमारीरसमर्दितं गजपुटे पाच्यं च शीतं ततो

Aho ! Shrutgyanam

गृह्णीयादथ गुंजिका ज्वरहरं खंडेन संयोजयेत् ॥ १॥
एकाहं त्रितहं चतुर्थकमिदं वेलाज्वरं नाशये-
च्छीतादिज्वरसर्वनाशनकरं भानुर्यथा शर्वरीम् ।
पथ्यं दुग्धमथापि तन्दुलयुतं छागं च शीतं पयः
पेयं गव्यमिदं स्वभावजनितं पित्तं जयेद्रोगिणाम्
॥ २ ॥ ज्वराभिभूते षडहे व्यतीते विपक्कदोषे
कृतलंघनादिः । यो भेषजं वैद्यवरः प्रयुंक्ते निः-
संशयं हन्त्यचिरात्स रोगान् ॥ ३ ॥

हरतालसे आधे शंखके चूरेको ले गोमूत्रमें बुझावे. फिर शुद्ध नीलाथोथा नौ हिस्सा डालदेवे, फिर कुमारीरसके तीन पुट देकर खरल कर टिकिया बनाय शरावसंपुट कर तीन कपडमिट्टी कर गज-पुटकी आंच देवे. जब शीतल होजाय तब निकाल लेवे, इसकी मात्रा १ रत्ती या दो रत्ती गरम पानीसे देवे, ऊपरसे खांड पथ्य—दूध, चांवल, बकरीका ठंढा दूध पीवे और जितनी रुचि होय उतना यथेच्छासे दूध पीवे तो पित्तकी शांति करे खांडके संग लेवे तो एका-हिक, तृतीयक, चतुर्थक, वेलाज्वर इन सबका नाश करे और ज्वर होनेपर छः दिन लंघन करे अथवा दोष जबतक न पचे तबतक लंघन करे, पीछे इस औषधिको देवे तो रोग दूर होवे ॥ १–३ ॥

सर्वज्वरे--मृत्युंजयरसः ।

प्रवालमुक्ताफलवज्रतारसुवर्णताम्राभ्रकसारसीसाः ।
यथोत्तरा वङ्गशिलालनाथा पलोन्मितैः सूतक-
सप्तभागाः ॥१॥ चतुश्चतुः शंखकपर्दिकानां सत-

Aho ! Shrutgyanam

क्रजम्बीरविमर्दितानाम् । अहिफेनपिप्पल्यविष-
त्रपाणां पलं पलं दन्तिफलान्वितानाम् ॥ २ ॥
समस्तमेकीकृतमत्र चूर्णं दिनत्रयं चित्रकवारि
पूर्णम् विशुष्कभृङ्गारसकाकतुंडीस्नुह्यर्कधूताम-
रदारुमुण्डी ॥ ३ ॥ किरातभल्लातनिकुंभकुम्भाकुठ
रवीराकरवीररम्भा ॥ ४ ॥ बला त्रिवृन्नागवल्ल्या-
खुकर्णी कटुत्रिकं शीतिशिवाद्रिकर्णी । यासोऽ-
मृताकाण्डरुहासलज्जा विंशो वृषाक्षां च रुजः
सगुञ्जा ॥ ५ ॥ अमीभिरुच्चाभुजगार्तियुक्तैर्वराह-
गोधाशिखिमीनपित्तैः । पृथक्पृथक्साधितमेवम-
स्यां दृढे पुटे ताम्रमये विपक्कम् ॥ ६ ॥ सुशी-
तमुद्धृत्य मुपेषणीयो रसो हि मृत्युञ्जयनामधेयः ॥७॥

मूंगा, मोतीचूर, हीरा, चांदी, सोना, तांबा, अभ्रक, गन्धक, मोम, वंग, मनशिल और हरताल ये सब एक एक पल और पारा ७ भाग, शंख, कौडी ये चार चार पल ले इनको मट्ठा और जंबीरीके रसमें घोटे । फिर तेलियामीठा, अफीम और पीपल, दन्ती, जमालगोटा प्रत्येक १ पल ले एकत्र चूर्ण कर दो दिन चीतेके काढेमें मर्दन करे । जब सूख जाय तब भांगरेका रस, काकतुंडीका रस, सेहुंड, आक, धतूरा, देवदारु, गोखरू, मुण्डी, चिरायता, भिलावा, जमालगोटा, नागहूली, वनतुलसी, कांकनेर, केला, खिरैंटी, निसोथ, गंगेरन, मूसाकर्णी, सोंठ, मिरच, पीपल, सैंधानोन, विष्णुक्रांता, जवासा, गिलोय, कुटकी, लज्जावन्ती, अडूसा, भृङ्गराज चिरमिटी एवं सूअर, गोह, मोर, मछली इनका पित्ता इन सबको अलग २

Aho ! Shrutgyanam

साधन कर और दृढ पुट दे तांबेके पात्रमें पकावे । जब ठंढा होजाय तब इसको पीस रक्खे । इस मृत्युंजय नाम रसको बलाबल देखकर दो गुंजा मिश्रीमें देवे तो बहुत दोषोंकरके संयुक्त उग्र दोषोंको दूर करे मृत्युको जीते ॥ १-७ ॥

अथ आसवः ।

द्राक्षासवः ।

द्राक्षायाश्च पलशतं सितायास्तच्चतुर्गुणम् । कर्क-
न्धुमूलं तस्यार्द्धं मूलार्द्धं पुष्पधातकी ॥ १ ॥
क्रमुकं च लवङ्गं च जातीपुष्पं फलानि च ।
चातुर्जातं त्रिकटुकं मस्तकी करहाटकम् ॥ २ ॥
आकल्लकरसं कुष्ठं पलानि दश चाहरेत् । एभ्य-
श्चतुर्गुणं तोयं भाण्डे चैव विनिक्षिपेत् ॥ ३ ॥
स्थापयेद्भूमिमध्ये तु चतुर्दशदिनानि च । ततो
जातरसं शुद्धं क्षिपेत् कच्छपयंत्रके ॥ ४ ॥ मुद्र-
यित्वा च तस्याधो वह्निं प्रज्वालयेत्सुधीः। तस्यान्त
प्लावितं सीधुं गृह्णीयात्सर्वमेव तत् ॥ ५ ॥ पुनरेव
च तत्सीधुं क्षिपेत्कच्छपयंत्रके । धराधो निक्षिपे-
त्तस्य मृगनाभिं सकुंकुमम् ॥ ६ ॥ एतत्सिद्धं
क्षिपेद्धीमान्काचभांडे निधापयेत् । त्रिदिनेषु
व्यतीतेषु तत्पेयं पलसंख्यया ॥ ७ ॥ मध्याह्ने
द्विपलं ग्राह्यं संध्याकाले चतुःपलम् । गरिष्ठं
स्निग्धमाहारं भक्षयेदस्य सेवकः ॥ ८ ॥ वीर्या-

Aho ! Shrutgyanam

भिवृद्धिः प्रभवेन्नराणां रामा सुवश्या भवतीह लोके । त एव धन्या मनुजा नरेन्द्रा द्राक्षासवं ये किल सेवयन्ति ॥ ९ ॥

मुनक्का सौ पल, मिश्री ४०० पल, बेरकी जड ५० पल, धायके फूल २५ पल, सुपारी १० पल, लौंग, १० पल, जावित्री १० पल, जायफल १० पल, तज, इलायची, तेजपात ४० पल, सोंठ, मिरच, पीपल ३० पल, नागकेशर १० पल, मस्तंगी १० पल, कशेरू १० पल, अकरकरा १० पल, कूठ १० पल, इन औषधियोंसे चौगुना पानी मिट्टीके बरतन में भरकर दवा डालकर जमीनमें गाड देवे और १४ दिनके बाद निकालकर भभकेमें चढावे और मन्दाग्निसे सिद्ध कर केशर कस्तूरी डाल कांचके पात्रमें रख देवे । जब तीन दिन हो जायँ तब बलप्रमाण देखकर सबेरे एक पल पीवे और मध्याह्नमें दो पल लेवे और सायंकालमें चार पल पीवे । गरिष्ठ तथा चिकना आहार सेवन करे तो वीर्यको बढावे, स्त्रियोंको वशीभूत करे । लोकमें वे लोग धन्य हैं, जो द्राक्षासवका सेवन करते हैं ॥ १–९ ॥

द्राक्षारिष्टम् ।

द्राक्षातुलार्द्धं द्विद्रोणे जलस्यापि पचेत्सुधीः ।
पादशेषैकपात्रे च पूतशीते विनिक्षिपेत् ॥ १ ॥
गुडस्य द्वितुलां तत्र त्वगेला पत्रकेशरम् । प्रियंगुर्मरिचं कृष्णा विडङ्गं चेति चूर्णयेत् ॥ २ ॥
पृथक्पलोन्मितैर्भागैस्ततो भाण्डे निधापयेत् ।
समन्ततो हि दूषित्वा पचेज्जातरसं ततः ॥ ३ ॥
उरःक्षतं क्षयं हंति कास श्वासगलामयान् ॥ ४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

मुनक्का ५० पल ले दो द्रोण पानीमें औटावे जब चौथाई रहजाय तब कपडेमें छानकर ठंढा कर फिर २०० पल गुड़ डाले. फिर तज, तेजपात, इलायची, नागकेशर, प्रियंगु, मिरच, पीपल, वायविडंग इन सबको एक एक पल लेकर चूर्ण कर डाल कर हिलाता जाय । जब पककर शुद्ध हो जाय तब वर्ते । यह द्राक्षारिष्ट उरःक्षत, क्षय, खांसी, श्वास, आदिका नाश करे ॥ १-४ ॥

लोहासवः ।

लोहचूर्णं त्रिकटुकं त्रिफला च यवासकम् । विडङ्गं चित्रकं मुस्ता चतुःसंख्यापलं पृथक् ॥ १ ॥
चूर्णीकृत्य ततः क्षौद्रं चतुः षष्टिपलं क्षिपेत् । दद्याद्गुडतुलां तत्र जलं द्रोणद्वयं ततः ॥ २ ॥
घृतभाण्डे विनिक्षिप्य निदध्यान्मासमात्रकम् । लोहासवममुं मर्त्यः पिबेद्वह्निकरं परम् ॥ ३ ॥
पांडुश्वयथुगुल्मानि जाठराण्यर्शसां रुजम् । कुष्ठं प्लीहामयं कण्डूं कासं श्वासं भगन्दरम् ॥ ४ ॥
अरोचकं च ग्रहणीं हृद्रोगं च निवारयेत् ॥ ५ ॥

लोहचूर्ण ४ टंक, सोंठ, मिरच, पीपल १२ टंक, त्रिफला १२ टंक, जवासा, वायविडंग, चीता, मोथा प्रत्येक चार चार टंक ले इनका चूर्ण कर शहद ६४ पल, गुड़ १०० पल, पानी दो द्रोण चिकने पात्रमें भर सब औषधियोंको डाल एक महीनातक राखे तो यह लोहासव शुद्ध होता है । यह लोहासव अग्निको दीप्त करे एवं पांण्डुराग सूजन, गुल्म पेटके रोग, अर्श, कोढ, प्लीहा, आम, खाज, खांसी, श्वास, भगन्दर, अरुचि, संग्रहणी, हृदयरोग आदिको दूर करता है ॥ १-५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

दशमूलासवः ।

दशमूलं तुलार्द्धं च पौष्करं च तदर्द्धकम् । हरीतकीनां प्रस्थार्द्धं धात्रीप्रस्थद्वयं तथा ॥ १ ॥
चित्रकं पुष्करमितं चित्रकार्द्धं दुरालभा । गुडूच्या वै शतपलं विशाला पलपंचकम् ॥ २ ॥ खदिरस्य पलान्यष्टौ तदर्द्धं बीजकं तथा । मंजिष्ठा मधुकं कुष्ठं कपित्थं देवदारु च ॥ ३ ॥ विडङ्गं चविकं लोध्रं भार्ङ्गीचाष्टकवर्गकम् । कृष्णाजाजी पिप्पली च क्रमुकं पद्मकं सटी ॥ ४ ॥ प्रियंगुः शारिवा मांसी रेणुका नागकेशरम् । त्रिवृता रजनी रास्ना मेषशृङ्गी पुनर्नवा ॥ ५ ॥ शतं चेन्द्रयवा मुस्ता द्विपलान् क्वाथयेज्जले ।
चतुर्गुणे पादशेषे द्राक्षामष्टपलं क्षिपेत् ॥ ६ ॥
त्रिंशत्पलं तु धातक्या गुडं पलचतुःशतम् ।
मधु द्वात्रिंशत्पलं च सर्वमेकत्र कारयेत् ॥ ७ ॥
भांडे पुराणे स्निग्धे च मांसीमरिचधूपिते ।
पृथक् द्विपलिकानेतान् पिप्पली चन्दनं जलं ॥ ८ ॥
जातीफलं लवंगं च त्वगेला पत्रकेशरम् ।
कर्षमात्रं च कस्तूरीं दद्यात् पथ्यं निधापयेत् ॥ ९ ॥
ततो राजरसं शुद्धं क्षिपेत्कच्छपयंत्रके ।
कतकद्रुफलं चूर्णं क्षिपेन्निर्मलतां व्रजेत् ॥ १० ॥
पक्षादूर्ध्वं पिबेद्यस्तु मात्रया च यथाबलम् ।

Aho ! Shrutgyanam

धातुक्षयं जयत्येतत्कासं पंचविधं तथा ॥ ११ ॥
अर्शांसि षट्प्रकाराणि तथाऽष्टाबुदराणि च ।
प्रमेहं च महाव्याधिमरुचिं पाण्डुतां तथा ॥ १२ ॥
सर्वान्वातांस्तथा शूलं श्वासं छर्दिमसृग्दरम् ।
अष्टादशैव कुष्ठानि शोफं शूलं भगन्दरम् ॥ १३ ॥
शर्कराद्यं मूत्रकृच्छ्र मश्मरीं च विनाशयेत् ।
कृशस्य पुष्टिं कृत्वा च पुष्टस्यच महाबलम् ॥ १४॥
महावेगो महातेजा महावेगी महोद्धतः ।
कामपुष्टिं करोत्येष वन्ध्यानां पुत्रदो भवेत् ॥ १५ ॥

दशमूल (शालपर्णी, पृष्ठिपर्णी, दोनों कटेरी, गोखरू, बेल, अरणी, अरलु, खंभारि, पाढ) ५० पल, पोहकर मूल २५ पल, हरड ३८ पल, आंवला १२८ पल, चीता २५ पल, जवासा १२ पल, गिलोय १०० पल, इन्द्रायण ५ पल, खैरसार ८ पल, बिजैसार ४ पल, मंजीठ, मुलहठी, कूठ, कैथ, देवदारु, वायविडंग, चव्य, लोध, भारंगी, अष्टवर्ग, (जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धी, वृद्धी) काला जीरा, पीपल, पठानीलोध, पद्माख, कचूर, प्रियंगु, सारिवा, बालछड, रेणुका, नागकेशर, निसोत, हलदी, रास्ना, मेढासिंगी, सांठी, सौंफ, इन्द्रजौ, मोथा इन सबको प्रत्येक दो दो पल लेवे और इनसे चौगुने पानीमें काढा करे, जब चौथा शेष रहे तब आठ पल मुनक्का डाले और तीस पल धायके फूल १०० पल गुड, बत्तीस पल शहद सबको मिलाय पुराने चिकने बरतनमें भर दो पल बालछड और दो पल मिरचोंकी धूनी देवे. फिर पीपल, चन्दन, मोथा, जायफल, लौंग,

Aho ! Shrutgyanam

तज, तेजपात, इलायची, नागकेशर इन सब औषधियोंको चार चार टंक, कस्तूरी ४ टंक डालकर पंद्रह दिन जमीनमें गाडदेवे, जब रस शुद्ध हो जाय तब भभकेमें खैंचलेवे फिर निर्मलीके फलका चूर्ण डालनेसे जब निर्मल होजाय, तब पंद्रहदिन पीछे पीवे इसकी मात्रा बलाबल देखकर देवे । यह दशमूलासव धातुक्षय, पांच प्रकारकी खांसी, छः प्रकारकी बवासीर, आठ प्रकारके उदररोग, महारोग, प्रमेह, अरुचि, पांडुरोग, सब प्रकारके वातरोग, शूल, श्वास, वमन, प्रदर, अठारह प्रकारका कोढ, सूजन, शूल, भगन्दर, शर्करादि, मूत्रकृच्छ्र, पथरी आदि रोगोंका नाश करे. दुबलेको मोटा करे और पुष्टको महाबल करे. महावेग अति वीर्यवान् अतिबलवान कामोद्दीपन करनेवाला और वंध्याको पुत्रवती करता है ॥ १--१९ ॥

कूष्माण्डकासवः ।

कूष्माण्डं च फलं पक्कं तस्मिश्छिद्रं तु कारयेत् ।
छिद्रमध्ये गुडो देयो द्वितुलश्च शनैः शनैः ॥ १ ॥
त्वचं बीजं च उत्कृष्य स्निग्धभाण्डे निधापयेत् ।
बदरीत्वक्पलान्यष्टौ तस्य क्वाथं प्रदापयेत् ॥ २ ॥
द्वौ कसेलौ च धातक्या हपुषा च पलं पलम् ।
त्रिफला ह्रीबेरं च शृङ्गी भार्ङ्गी च पुष्करं ॥ ३ ॥
तालमूली स्वयंगुप्ता कङ्कोलं वंशलोचनम् ।
यष्टी मोचरसं मुस्ता ग्रंथिकं चाष्टवर्गकम् ॥ ४ ॥
चातुर्जातं विडङ्गानि व्योषं चित्रककुंकुमम् ।
जातीपत्रं लवङ्गं च करभं मालतीफलम् ॥ ५ ॥
दशांघ्रिरक्तसारं च कट्फलं रेणुका सटी ।

Aho ! Shrutgyanam

तिक्तसारं चतुः कर्षमाटरूषं कुलिञ्जनम् ॥ ६ ॥
अजमोदाश्वगन्धा च चव्यं माजूफलं वरी ।
सारं सूर्णं तेजबलं तालीसं श्यामपूगकम् ॥ ७ ॥
एतेषां कर्षमात्रं च सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ।
मूलभांडे क्षिपेत्सर्वं पलमेकं भजेन्नरः ॥ ८ ॥
कासं श्वासं च हृद्रोगं पाण्डुरोगं क्षतं क्षयम् ।
गुल्मोदरं ग्रहण्यर्शोमूत्रकृच्छ्रं तथाश्मरीम् ॥ ९ ॥
प्रमेहशोफातीसारवातपित्तकफापहः ।
कूष्माण्डासव इत्येष बलकृन्मलशोधनः ॥ १० ॥

पेठेके पके हुये फलमें छेद करे उस छेदमें दो तोले गुड हौले हौले भरै फिर छिलका और बीज अलगकर चिकने बरतनमें भर झड-बेरीकी ८ पल छालका काढा कर उसमें डाले। कसेला दो पल, धायके फूल दो पल, हाऊबेर १ पल, त्रिफला, काकडासिंगी, भारंगी, पोहकरमूल, मूसली, गोखरू, कंकोल, वंशलोचन, मुलहठी, मोथा, मोचरस, पीपलामूल, अष्टवर्ग, चातुर्जात, वायविडङ्ग, सोंठ, मिरच, पीपल, चीता, केशर, जायफल, अकरकरा, मालतीफल, रक्तचन्दन, दशमूल, कायफल, रेणुका, कचूर, कंद, संभालू अडूसा, कुलिंजन, अजमोद, असगन्ध, चव्य, माजूफल, शतावरी, सार, तेजबल, तालीसपत्र, चिकनी सुपारी इन सबको चार २ टंक लेकर महीन चूर्ण कर एक बरतनमें डाल देवे। उसमेंसे एक पल सेवन करनेसे खांसी, श्वास, हृदयरोग, क्षत, क्षयरोग, गांठ, उदररोग, ग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह, सूजन, अतीसार, बात, पित्त, कफ इत्यादिक रोगोंका नाश

Aho ! Shrutgyanam

करता है । यह कूष्माण्डासव बलकारी और मलका शोधनेवाला है ॥ १-१० ॥

उदरविकारे--जम्बीरद्रावः ।

शतं जम्बीररसकं रामठं च पलद्वयम् ।
सैन्धवं च विडङ्गं च पृथग्दत्त्वा पलं पलम् ॥ १ ॥
त्र्यूषणं पलमेकैकं सौवर्चलचतुष्टयम् ।
यवानिकापलं चैकं कर्षमानचतुष्टयम् ॥ २ ॥
स्निग्धभांडे विनिक्षिप्यांऽश्वशालायां निधापयेत् ।
एकविंशद्दिनं यावत्ततः सर्वं समुद्धरेत् ॥ ३ ॥
सुचन्द्रे सुदिने लोके पूजयित्वा भिषग्गुरून् ।
यकृत्प्लीहामगुल्मं च विद्रध्यष्ठीलिकादयः ॥ ४ ॥
वातगुल्ममतीसारं शूलं पार्श्वहृदामयान् ।
नाभिशूलं विबन्धं च आध्मानं च गुदोदरम् ॥ ५ ॥
नश्यंति तस्य शीघ्रेण वात श्लेष्मामयाश्चये ।
जीर्यंते तस्यकोष्ठे तु जम्बीरीद्रावसेवनात् ॥ ६ ॥

जम्बीरीका रस १०० पल, हींग २ पल, सैंधानोन, १ पल, वायविडंग १ पल, सोंठ, मिरच, पीपल एक एक पल, कालानोन ४ पल, अजवायन, १ पल, सरसों ४ पल चिकने बरतनमें भर जहां घोडा बँधता होवे वहां गाड देवे. फिर इक्कीसवें दिन निकाल अच्छा चंद्रमा अच्छा दिन देख अच्छे वैद्यका पूजन कर उसका सेवन करे तो यकृत्, प्लीहा, आम, गांठ, विद्रधि, अष्ठीलिका, वातगुल्म, अतीसार, शूल, पसली, हृदयरोग, नाभिशूल, दस्तका बन्द, अफरा, उदररोग आदिका जल्दी नाश करे और वातश्लेष्म आदि-

Aho ! Shrutgyanam

कोंको और पेटका अजीर्ण आदि इस जंबीरीद्राव सेवन करनेसे नाश होवे ॥ १-६ ॥

अथ लेपप्रकरणम्।

विसर्पादौ लेपः।

शिरीषयष्टीनतचन्दनैलामांसीहरिद्राद्वयकुष्ठवालैः।
लेपो दशांगः सघृतप्रलेपाद्विसर्पकण्डूव्रणदाहहन्ता॥ १॥

सिरसकी छाल, मुलहठी, तगर, लाल चन्दन, अलुआ, बालछड हलदी, दारु हलदी, कूठ, नेत्रवाला इन दश चीजोंको घीमें मिलाकर लेप करनेसे खुजली, फोडा, फुनसी, विसर्प, व्रण, दाह आदिका नाश होवे ॥ १ ॥

शोफे लेपः।

पुनर्नवा दारु शुण्ठी सिद्धार्थं शिग्रुरेव च।
पिष्ट्वा चैवारनालेन प्रलेपः सर्वशोफजित् ॥ १ ॥
बीजपूरजटाहिंस्रादेवदारुमहौषधैः।
रास्नाग्निमन्थलेपोऽयं वातशोथविनाशनः ॥ २ ॥

सांठीकी जड, देवदारु, सोंठ, सरसों, सहिंजना इनको पीस कांजीमें मिलाकर लेप करनेसे सब प्रकारकी सूजन जाय। बिजौरेकी जड, वायविडंग अथवा कटेरी, देवदारु, सोंठ, रास्ना, अरणी, इनका लेप करनेसे वातकी सूजन जाय ॥ १-२ ॥

मधूकं चन्दनं दूर्वा नलमूलं च पद्मकम्।
उशीरं वालकं पद्मं पित्तशोफे प्रलेपनम् ॥ ३ ॥
कृष्णा पुराणपिण्याकं शिग्रुत्वक्च शतावरी।
मूत्रे पिष्ट्वा सुखोष्णोऽयं प्रलेपः श्लेष्मशोफहा ॥ ४ ॥

Aho! Shrutgyanam

अजादुग्धतिलैर्लेपो नवनीतेन संयुतः ।
शोथमारुष्करं हन्ति लेपश्च कृष्णमार्तिकः ॥ ९ ॥

मुलहठी, चन्दन, दूर्वा, नलमूल, पद्माख, खस, नेत्रवाला, कमल इनका लेप करनेसे पित्तकी सूजन दूर होवे । पीपल, पुरानी खल, सहिंजनेकी छाल, सफेद सांठी इनको गोमूत्रमें पीस गरम कर लेप करनेसे कफकी सूजन जाय । बकरीका दूध और तिल इनको मक्खनमें मिलाकर लगानेसे भिलावेकी सूजन जाय अथवा काली मिट्टीका लेप करनेसे भी सूजन दूर होती है ॥ ३–९ ॥

शिरोर्तौ लेपः ।

कुष्ठमैरण्डतैलेन लेपः कांजिकपेषितः ।
शिरोर्तिं वातजां हन्यात् पुष्पं वा मुचुकुन्दजम् ॥ १ ॥
देवदारु नतं कुष्ठं नलदं विश्वभेषजम् ।
सकांजिकः स्नेहयुक्तो लेपो वातशिरोर्तिनुत् ॥ २ ॥
धातृकसेरुह्रीबेरपद्मपद्मकचन्दनैः ।
दूर्वोशीरनलानां च मूलैः कुर्यात्प्रलेपनम् ॥ ३ ॥
शिरोर्तिं पित्तजां हन्याद्रक्तपित्तरुजस्तथा ।
हरेणुनतशैलेयमुस्तैलागरुदारुभिः ॥ ४ ॥
मांसीरास्नासचुक्रश्च लेपः श्लेष्मशिरोर्तिनुत् ।
मरिचं कुष्ठमधुकवचाकृष्णोत्पलैस्तथा ॥ ५ ॥
लेपः सकांजिकस्नेहः सूर्यावर्त्तार्द्धभेदयोः ॥ ६ ॥
शुंठीचन्दनमेरण्डजटालेपः शिरोर्तिनुत् ।
राजिकाभिः सर्षपैश्च शुंठ्याऽथ मरिचैरथ ॥ ७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

कूठको अंडीके तेलमें या कांजीमें पीसकर लेप करनेसे वातज शिरकी पीडा दूर होवे, अथवा मुचकुन्दके फूलका लेप करनेसे भी दूर होवे । देवदारु, तगर, कूठ, बालछड, सोंठ इनको कांजी और तेलमें मिलाकर लेप करै तो वातज शिरदरद दूर होवे. आमला, कसेरू, हाऊबेर, कमल, पद्माख, चन्दन दूर्वा, खस, छड, नींबकी जड इनका लेप करनेसे पित्तज शिरदर्द और रक्तपित्तरोग दूर होवे । संभालू, तगर, पाषाणभेद, मोथा, इलायची, अगर, देवदारु, बालछड, अंडीकी जड इनको लेप करनेसे कफज शिरदरद नाश होवे । मिरच, कूठ, मुलइठी, चव्य, पीपल इनको कांजी और तेलमें पीसकर लेप करे तो आधासीसी और सूर्यावर्त्त जाय, सोंठ, चन्दन, एरंडीकी जड इनके लेपसे भी शिरदरद जाय । राई, सरसों. सोंठ, मिरच इनके लेपसे भी शिरदरद जावे ॥ १–७ ॥

कर्णपीडायां लेपः ।

कुष्ठशुंठीवचादारुशताह्वाहिंगुसैन्धवम् ।
वत्सीमूत्रशृतं तैलं सर्वकर्णामयापहम् ॥ १ ॥

कूठ, सोंठ, वच, दारुहलदी, सौंफ हींग, सैंधानोन इनको बछियाके मूत्रके साथ कानमें डालनेसे कानके सब रोग दूर हो जाँय ॥ १ ॥

उदरपीडायां लेपः ।

एलीयकं हरिद्रा च स्फटिका नवसादरम् ।
टङ्कणं धेनुमूत्रेण कोष्णं जठरलेपनम् ॥ १ ॥

एलुआ, हलदी, फटकरी, नौसादर, सुहागा इनको गोमूत्रमें पीस थोडा गरमकर पेटपर लेप करनेसे दरद जाय ॥ १ ॥

शूले लेपः ।

मदनस्य फलं तिक्तां पिष्ट्वा कांजिकवारिणा ।

Aho ! Shrutgyanam

कोष्णं कुर्यान्नाभिलेपं शूलशांतिर्भवेत्ततः ॥ १ ॥
पुष्करं शाबरं शृङ्गं कुष्ठं विश्वौषधं तथा।
उष्णोदकेन संपिष्टो लेपः शूलविनाशकृत् ॥ २ ॥

मैनफल, कुटकी, इनको कांजीके पानीमें घोल गुनगुनीकर नाभि-पर लेप करनेसे दर्द दूर होवे. पोहकरमूल, सांबरसींग, कूठ, सोंठ इनको पीसकर गरम गरम लेप करनेसे दर्द दूर होवे ॥ १-२ ॥

व्रण लपः।

गृहधूमं च कंपिल्लं टंकणं मरिचं निशा।
घृते घृष्ट्वा प्रलेपोऽयं सर्वव्रणनिवृत्तये ॥ १ ॥
तैलेन वा घृतेनैव पिष्ट्वा चूर्णं प्रलेपयेत्।
धात्रीफलानां रक्षा वा व्रणे लेप्या घृतेन सा ॥ २ ॥
अपक्को यदि वा पक्को निम्बः सर्वव्रणे हितः।
अपक्कं पाचयेन्निम्बं पक्कं चापि विशोधयेत् ॥ २ ॥

घरका धुआँ, कबीला, सुहागा, मिरच, हलदी इनको तेलमें अथवा घीमें पीसकर फोडे फुनसी पर लेप करनेसे फोडा फुनसी दूर होवें, आंवलेकी राख घीमें मिलाकर लेप करनेसे फोडा दूर होवे। नींबके पत्तोंको पीस लेप करनेसे कच्चा वा पका फोडामें हित होवे और विनापकेका पकावे और पकेको शोधन करे ॥ १-३ ॥

गंडमालादौ लेपः।

सर्षपाञ्छिग्रुबीजानि शणबीजातसीयवान्।
मूलकस्य च बीजानि तक्रेणाम्लेन पेषयेत् ॥ १ ॥
गण्डमालाऽर्बुदं गण्डं लेपेनानेन शाम्यति।

Aho ! Shrutgyanam

कटुतैलान्विते लेपात्सर्प्पकंचुकभस्मभिः ॥ २ ॥
रयः शाम्यति गण्डस्य प्रकोपात्स्फुटति ध्रुवम् ॥ ३ ॥
शाणमूलकशिग्रूणां फलानि तिलसर्षपाः ।
रामठः किण्वमलसीप्रदेहः पाचनः स्मृतः ॥ ४ ॥
दन्तीचित्रकमूलत्वक्स्नुह्यर्कपयसा गुडैः ।
भल्लातकास्थिकासीससैन्धवैर्दारुणः स्मृतः ॥ ५ ॥
कपोतकंकगृध्राणां मललेपेन दारुणः ॥ ६ ॥
दूर्वाभयासैन्धवैश्च चक्रमर्द कुठेरका ।
निशातक्रयुतो लेपः कण्डूदद्रुविनाशनः ॥ ७ ॥
चक्रहसर्षपयुक्तिलकुष्ठं वावचिकारजनीद्वयतक्रम् ।
हन्ति विचार्चिकमण्डलदद्रूर्वर्षशतान्यपि नश्यति
कण्डूः ॥ ८ ॥ पलाशपर्पटं घृष्ट्वा लेप्यं निम्बुरसेन
वा । गुञ्जादालीचित्रकं च प्रपुन्नाटजटाऽथवा ॥ ९ ॥
प्रपुन्नाटस्य बीजानि धात्री सर्ज्जरसो निशा । लेपः
सर्षपतैलेन घृष्ट्वा दद्रुविनाशनम् ॥ १० ॥

सरसों, सिरसके बीज, सनके बीज, अलशी, मूलीके बीज इनको मट्ठेमें पीसकर लेप करनेसे गंडमाला, अर्बुद, गांठ दूर होवे । सांपकी कांचलीकी राख कडुवे तेलमें मिलाकर लगानेसे गंडमाला जाय अर्थात् फूटजाय, सनके बीज, मूलीके बीज, सहँजनेकी फली, तिल, सरसों, हींग, सुराबीज, अलशी इनका लेप करनेसे पकजाय । जमालगोटा, चीतेकी जड और छाल, थूहरका दूध, आकका दूध, गुड, भिलावेकी मिंगी, कसीस, सैंधानोन इनका लेप करनेसे गंडमाला

Aho ! Shrutgyanam

जाय । पुरानी बेलगिरी, अरणी, जमालगोटा, चीता, कनेरकी जड, कबूतर और गीदडकी बीठ लेप करनेसे गंडमाला दूर हो जाय । दूर्वा, हरड, सैंधानोन, पमार, थूहर, हलदी इनको मट्ठेमें मिलाकर लेप करे तो खुजली दाद दूर होवे । पमाड, सरसों, तिल, कूठ, बावची, दोनों हलदी इनको मट्ठेमें मिलाकर लेप करनेसे विचर्चिका और सौ वर्षका दाद तथा खाज दूर होवे ढाकके बीज, पित्तपापडा इनको नींबूके रसमें लेप करनेसे दाद दूर होवे चिरमिठी, देवदारु, चीता, पमाडके बीज, इनका लेप करनेसे दाद दूर होवे. पमाडके बीज, आमलेका रस, सज्जी हलदी इनको सरसोंके तेलमें घोलकर लेप करै तो दाद दूर होवे ॥ १–१० ॥

सिध्मरोगे लेपः ।

दार्वीमूलकबीजानि तालकं सुरदारु च ।
ताम्बूलपत्रं सर्वाणि कार्षिकाणि पृथक्पृथक् ॥ १ ॥
शङ्खचूर्णं शाणमात्रं सर्वाण्येकत्र कारयेत् ।
लेपोऽयं वारिणा पिष्टः सिध्मानां नाशनं परम् ॥ २ ॥
धात्रीसर्जरसश्चैव यवक्षारश्च चूर्णितः ।
सौवीरेण प्रलेपोऽयं प्रयोज्यः सिध्मनाशकः ॥ ३ ॥
सगन्धकं यवक्षारचूर्णपिष्टं निहन्ति तान् ।
अपामार्गरसात्पिष्टमूलिकाबीजलेपतः ॥ ४ ॥
सर्वाङ्गसम्भवं सिध्मं नाशयत्यपि वेगतः ॥ ५ ॥
अनुभूतोयं लेपः ॥

दारुहलदी, मूलीके बीज, हरताल, देवदारु, पान इन सबको जुदी जुदी चार चार टंक और शंखका चूरा १ टंक

Aho ! Shrutgyanam

लेवे इन सबको इकट्ठी पीसकर लेप करनेसे सिध्मकोढ दूर होवे. आमला, केशर, सज्जी, जवाखार इनका चूर्ण कांजीमें मिलाकर लेप करनेसे सिध्म कोढ जाय । गंधक, जवाखार इनको कांजीमें मिलाकर लेप करनेसे सफेद कोढ जाय । ओंगाके रसमें मूलीके बीज मिलाकर लेप करनेसे तत्काल सर्वांगसिध्मकोढ नाश होवे ॥ १-९ ॥

तारुण्यपीडिकादौ लेपः ।

रक्तचन्दनमंजिष्ठा लोध्रं कुष्ठं प्रियंगवम् ।
वटाङ्कुरा हरिद्रे द्वे व्यङ्गहा मुखकान्तिदः ॥ १ ॥
कुष्ठतिलजीरकद्वयसिद्धार्था निशायुगै समः पयसा ।
लेपो वदनसुधाकरव्यङ्गकलङ्कं विनाशयति ॥ २ ॥
वटस्य पाण्डुपत्राणि मालती रक्तचन्दनम् ।
कुष्ठं कालीयकं लोध्रमेभिर्लेपो विधीयते ॥ ३ ॥
तारुण्यपिडिकाव्यंगनीलिकादिविनाशनम् ॥ ४ ॥

रक्तचन्दन मंजीठ, लोध. कूठ, प्रियंगु, वटके अंकुर, दोनों हलदी इनकी बराबर मात्रा दूधमें मिलाकर लेप करे तो मुखकी कांति बढे और झांईके दाग दूर होवें. कूठ, तिल, दोनों जीरे, सरसों, हलदी, दारुहलदी, इनको दूधके साथ लेप करनेसे मुखकी झाँइयोंको दूरकर मुखको चंद्रमाके समान निर्मल करता है । वटके पत्ते, चमेली, रक्तचन्दन, कूठ, अगर लोध इनका लेप करनेसे जवानी अवस्थासे होनेवाले मुहाँसे तथा मुखकी झाईं और नीले दाग दूर होवें ॥ १-४ ॥

नासारुधिरे लेपः ।

आमलकं घृतभृष्टं पिष्टं कांजिकवारिभिः ।
जयेन्मूर्द्धप्रलेपेन रक्तं नासिकया स्तुतम् ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

आमलेको घृतमें भूनकर कांजीमें पीस माथेपर लेप करै तो नाकसे खूनका बहना बन्द होवे ॥ १ ॥

नेत्ररोगे लेपः ।

पथ्यागैरिकसिंधूत्थदार्वीतार्क्ष्यसमांशकैः ।
जलपिष्टैर्बहिर्लेपः सर्वनेत्रामयापहः ॥ १ ॥
हरीतकीसैन्धवमक्षशैलैः सगैरिकास्वच्छजलेन पिष्टैः।
बहिःप्रलेपं नयनस्य कुर्यात्सर्वाक्षिरोगोपशमार्थमेतत् २

हरड, गेरू, सैंधानोन, दारुहलदी, रसौंत इनकी समान मात्रा ले जलमें पीसकर नेत्रोंमें लगावे तो नेत्रोंके सब रोग जावें, परन्तु नेत्रोंके बाहर लेप करे । हरड, सैंधानोन, अक्ष, शैल, गेरू इनको साफ जलमें पीस कर आंखोंके बाहर लेप करे तो आंखोंके सर्व रोग नाश हो जावें ॥ १ ॥ २ ॥

केशकल्पलेपः ।

अयोरजो भृङ्गराजस्त्रिफला कृष्णमृत्तिका ।
स्थितमिक्षुरसे मासं लेपनात्पलितं जयेत् ॥ १ ॥
त्रिफला नीलिकापत्रं लोहं भृङ्गरसः समम् ।
अजामूत्रेण सम्पिष्टं लेपात्कृष्णीकरं स्मृतम् ॥ २ ॥
त्रिफला लोहचूर्णं तु दाडिमं त्वग्विषं तथा ।
प्रत्येकं पञ्चपलिकं चूर्णं कुर्याद्विचक्षणः ॥ ३ ॥
भृंगराजरसस्यापि प्रस्थषट्कं प्रदापयेत् ।
क्षिप्त्वा लोहमये पात्रे भूमिमध्ये निधापयेत् ॥ ४ ॥
मासमेकं ततः कुर्याच्छागीदुग्धेन लेपनम् ।
कुर्याच्छिरसि रात्रौ च संवेष्ट्यैरंडपत्रकैः ॥ ५ ॥
स्वप्यात्प्रातस्ततःकुर्यात्स्नानं तेन प्रजायते ।

Aho ! Shrutgyanam

पलितस्य विनाशश्च त्रिभिर्लेपैर्न संशयः ॥ ६ ॥
ताम्रचूर्णं लोहचूर्णं तुत्थं माजूफलं तथा ।
धात्री भृंगरसं नीली महिदीसर्वमीलितम् ॥ ७ ॥
लोहपात्रे तु लोहस्य मुसलेन विघर्षयेत् ।
शीर्षकूर्चादिपलिते लेपनात्केशरंजनम् ॥ ८ ॥
काकिण्याः पत्रमूलं सहचरसहितं केतकीनां
च कन्दं छायाशुष्कं च भृङ्गं त्रिफलरसयुतं
तैलमध्ये निधाय । निक्षिप्त्वा लोहभाण्डे
क्षितितलनिहितं मासमेकं च यावत्केशाः
काशप्रकाशा भ्रमरकुलनिभा मासमेकं भवन्ति ॥ ९ ॥

लोहचूरा, भांगरा, त्रिफला, कालीमिट्टी इनको लोहेके पात्रमें गन्नेके रसमें एक मास पर्यंत रखकर लेप करे तो बालोंका गिरना बन्द होजाय । त्रिफला, नीलके पत्ते, लोहका चूरन इनकी समान मात्रा ले भाँगरेके रस और बकरीके मूत्रमें पीसकर लगानेसे काले बाल हो जावें. त्रिफला, लोहेका चूर, अनारकी छाल पांच २ पल लेकर भांगरेके रसमें डालकर एक महीना जमीनमें गाड देवे. फिर बकरीके दूधमें मिलाकर रातमें लेप करे और ऊपर अंडके पत्ते बांधकर सोवे. फिर प्रातःकाल स्नान करडाले तो सफेद बाल एक वारके लेपसे काले हो जावे. तांबेका चूरा, लोहेका चूरा, नीलाथोथा, माजूफल, आमले, नील, मेहँदी इनको लोहेके बरतनमें लोहेके मूसलसे घोटे. इसके लगानेसे सफेद बाल काले होजावें, काकजंघाके पत्ते और जड, पियाबाँसा, केतकीकी जड इनको छायामें सुखाकर भांगरा, त्रिफलाके

Aho ! Shrutgyanam

रससंयुक्त तैलमें डाल लोहपात्रमें एक महीने पर्यंत जमीनमें गाड देवे फिर बालोंमें लगानेसे भ्रमरके समान काले होजावें ॥ १-९ ॥

केशवर्धनम् ।

गोक्षीरे तिलपुष्पाणि तुल्येन मधुसर्पिषा ।
शिरःप्रलेपनं कुर्यात्केशसंवर्द्धनं परम ॥ १ ॥
हस्तिदन्तमषिं कृत्वा छागीदुग्धरसांजनम् ।
रोमाण्येतेन जायन्ते हस्तपादतलेष्वपि ॥ २ ॥
चतुष्पदानां त्वग्रोमनखशृङ्गास्थिभस्मभिः ।
तैलेन सह लेपोऽयं रोमसंजननं परम् ॥ ३ ॥

गौके दूधमें तिलके फूल, शहद, घी बराबर मिलाकर शिरपर लेप करे तो बाल बढैं । हांथीदांतको जलाकर रसौंतसहित बकरीके दूधमें मिलाकर शरीरमें लगानेसे हाथ पैरोंमें भी रोम बढैं। चौपायोंकी खाल और उनके रोम, नख, सींग, हाड इन सबकी भस्म करलेवे, फिर तेलके साथ मिला कर लेप करनेसे रोम उत्पन्न होवें ॥ १–३ ॥

रोमशातनम् ।

शंखचूर्णस्य भागौ द्वौ हरितालैकभागकम् ।
मनःशिलार्द्धभागा स्यात्सर्जिका चैकभागिका ॥१॥
लेपोऽयं वारिपिष्टस्तु केशानुत्पाट्य दीयते ।
अनया लेपयुक्त्या च सप्तवेलं प्रयुक्तया ॥ २ ॥
निर्मूलनं स्यात्केशस्य क्षपणस्य शिरो यथा ॥ ३ ॥

शंखकी भस्म दो टंक, हरताल १ टंक, मनसिल आधी टंक सज्जीखार १ टंक इनको पानीमें पीसकर लगावे तो बालोंको उखाडे और सात बार लगानेसे निर्मूल करै । जैसे जैनी वैरागीका शिर ॥ १–३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अग्निदाहे लेपः ।

अग्निदग्धे तुगाक्षीरीप्लक्षचन्दनगैरिकैः ।
सामृतैः सर्पिषा स्निग्धैर्गालेपं कारयेद्भिषक् ॥ १ ॥
यवान् दग्ध्वा मषी कार्या तिलतैलेन संयुता ।
अयं सर्वाग्निदग्धेषु प्रलेपो व्रणलेपनः ॥ २ ॥
निम्बपत्राणि सुरसा कुष्ठं धात्रीफलानि च ।
ईषद्दग्धे यथालाभे लेपनं भिषगुत्तमम् ॥ ३ ॥
कुष्ठं मधुकयष्टी च चन्दनैरण्डपत्रकैः ।
मध्ये दग्धे हितो लेपो दुग्धेन परिपेषितः ॥ ४ ॥

तवाखीर, पाखर, चन्दन, गेरु, गिलोय, घीसे चिकनाई कर वैद्य लेप करे तो अग्निका जला अच्छा होवे अथवा जलाये यव तिलके तेलमें मिलाकर लगानेसे अग्निका जला और फफोला अच्छा होवे। नींबके पत्ते तथा तुलसीके पत्ते, कूठ, आमला इनका लेप करनेसे थोडा जला हो वह अच्छा होवे. कूठ, महुआ, मुलहठी, चन्दन इनका लेप दूधमें मिलाकर लगालेने मध्यम जला अच्छा होवे यह उत्तम लेप है ॥ १-४ ॥

हस्तपाददाहे लेपः ।

बदरीपल्लवलेपः श्रीखण्डारिष्टफेनसंयुक्तः ।
दातव्यः पदलेपः शाम्यति रुग्दाहकं तस्य ॥
सैन्धवं चैव खडिकालेपो दाहस्य नाशनः ॥ १ ॥

बेरके पत्तोंका लेप पैरोंपर करे वा चन्दन, नींबकी छालका लेप करनेसे पैरोंका दाह दूर होवे अथवा निमक और कलई, खडिया इनका लेप करनेसे पैरोंका दाह नष्ट होवे ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अंत्रवृद्धौ लेपः ।

लाक्षा कांचनकाबीजं शुण्ठी दारुसगैरुकम् ।
कुन्दरूकांजिकैर्लेप्यमुष्णमन्त्रविवर्द्धने ॥ १ ॥

लाख, कचनारके बीज, सोंठ, देवदारु, गेरू, कुंदुरूकी गोंद इनको कांजीके रसमें घोलकर गरम कर लेप करनेसे आंतोंका बढना दूर होवे ॥ १ ॥

नलवृद्धौ लेपः ।

एरण्डबीजं निर्गुण्डी निशा लाक्षा च पुष्करम् ।
आरनालेन संपिष्य उष्णं पिण्डीकरण्डहृत् ॥ १ ॥
रामठं सैन्धवं कुष्ठं जीरकं गोमयान्वितम् ।
लेपस्तैलेन वा सम्यगन्तर्गण्डविनाशनः ॥ २ ॥

अंडीके बीज, संभालू, हलदी, लाख, पोहकरमूल इनको कांजीमें पीस गरम कर लेप करनेसे नल न बढे. हींग, सेंधानोन, कूठ, जीरा इनको गोबरमें अथवा तेलमें पीसकर लेप करे तो अंतर्गलगंड दूर होवे ॥ १–२ ॥

अर्शसि लेपः ।

शिरीषबीजकुष्ठार्कक्षीरपिप्पलिसैन्धवाः ।
लाङ्गलीमूलगोमूत्रैरर्शोघ्नं हन्ति चित्रकैः ॥ १ ॥

शिरसके बीज, कूठ, आकका दूध, पीपल, चीता, कलिहारीकी जड, इनको गोमूत्रमें मिलाकर लगानेसे अर्शरोग अवश्य नाश होजाता है ॥ १ ॥

भगन्दरे लेपः ।

कासीस सन्धवैरण्डं तैलयुक्तं विमर्दितम् ।
भगन्दरं प्रलेपेन नाशयेन्नात्र संशयः ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

कासीस, सैंधानोन, इनको अंडीके तेलमें पीसकर लगानेसे निस्सं-
देह भगन्दर दूर होवे ॥ १ ॥

कुष्ठे लेपः ।

गृहधूमं पञ्चलवणं क्षारद्वयचक्रमर्दसलिले च ।
व्योषं विषवह्निबृहतीरात्रिद्वयकुष्ठकंपिल्लैः ॥ १ ॥
उग्रशिलासर्षपसूतक सिंदूरतुत्थकासीसैः ।
गोमूत्रे संपिष्टैः स्नुह्यर्कदुग्धान्वितैर्लेपः ॥ २ ॥

कुष्ठमपहन्त्यशेषं समुत्थितमण्डलं समुल्लिखति ।
नाशयति सप्तवाराच्चिरमपि सवर्णयेच्चित्रम् ॥ ३ ॥

शिलालकोग्रारसताप्यगन्धकं कंपिल्लतुत्थोषणसर्जिटंकणम् । कासीसकुष्ठं नवनीतसंयुतं स्रवत्सु कुष्ठेष्वधिकं प्रशस्तम् ॥ ४ ॥

घरका धुआं पांचों नोन, सज्जीखार, पमाडके बीज इन सबको पानीमें पीसकर लेप करनेसे कोढ दूर होता है अथवा सोंठ, मिरच, पीपल, तेलिया मीठा, चीता, कटेरी, दानों हलदी, कूठ, कबीला इनका लेप करनेसे कोढ जाय. वच, मनसिल, हरताल, सरसों, पारा. नीलाथोथा, कसीस इनको गोमूत्र वा थूहरके दूध अथवा आकके दूधमें पीसकर लेप करनेसे अठारह प्रकारके कोढ तथा मंडल दूर होते हैं तथा चर्मरोग भी दूर होवे और सात वार लगानेसे पुराना कोढको नाशकर समान वर्णकर देता है यह आश्चर्य है । मनसिल, हरताल, वच, पारा, गंधक, कबीला, नीलाथोथा, मिरच, सज्जी, सुहागा, कसीस, कूठ, इनको माखनके साथ लगानेसे बहता हुआ कोढ (गलितकुष्ठ) दूर होवे ॥ १–४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

श्वेतकुष्ठे लेपः ।

गुंजा वचाऽग्निकं कुष्ठं वाकुची कांजिकान्वितम् ।
सुपिष्टं चूर्णमेतेषां प्रलेपः श्वेतलक्ष्महृत् ॥ १ ॥

चिरमिठी, वच, चीता, कूठ, बावची इन सबको कांजीके, पानीमें पीसकर लगानेसे सफेद कुष्ठ दूर होवे ॥ १ ॥

पामाकण्डूनां लेपः ।

सिन्दूरं मरिचं तुत्थं रसं गन्धं द्विजीरकम् ।
गोघृतेन समायुक्तं सर्वाः कण्डूर्विनाशयेत ॥ १ ॥

पारा, गन्धक, मिरच, नीलाथोथा, सिन्दूर, दोनों जीरे इनको गौके घीमें मिलाकर लगानेसे संपूर्ण खुजली दूर होवे ॥ १ ॥

पादस्फुटितोपरि लेपः ।

कनकभुजगवल्लीमालतीपत्रदूर्वारसगदकुनटीभि-
र्मर्दितस्तैललिप्तः । अपनयति रसेन्द्रः कुष्ठकण्डू-
विचर्चिस्फुटितचरणरन्ध्रं श्यामलत्वं त्वचायाः ॥१॥

धतूरेके बीज, पान, मालतीके पत्ते, दूर्वा, पारा, कूठ, मनसिल, गंधक इनको पीसके तेलमें मर्दन करे तो यह रस कोढ खाज बिवाई इनको दूर करे और त्वचा काली होवे ॥ १ ॥

मस्सालेपः ।

चूर्णं सर्ज्जिकया घृष्टं मसा लेप्यं जलेन वा ।
तूर्णं नौसादरं चोक्तं तुत्थकं स्वर्णगैरिकम् ॥ १ ॥

चूना, सज्जी इनको पानीमें घिसकर लेप करै तो मस्से दूर होवें अथवा नौसादर, चोक, नीला थोथा, लाल गेरू इनको पानीमें घिसकर लेप करनेसे मस्से दूर होवें ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

प्रहारोपरि लेपः ।

सर्जिका च हरिद्रा च प्रहारे लेपनं हितम् ।
टंकणं सर्पिषा लेपः कालमेषीजलेन वा ॥ १ ॥

सज्जी हलदी इन दोनोंको पीसकर चोटपर लेप करनेमें आराम होवे. सुहागाको घीमें मिलाय लगानेसे या मंजीठके पानीका लेप करनेसे चोट अच्छी होवे ॥ १ ॥

ग्रन्थ्युपरि लेपः ।

मरिचं पुष्करं कुष्ठं हरिद्रा सैन्धवं वचा ।
सर्वग्रन्थौ हितो लेपः खटिकालवणेन च ॥ १ ॥

मिरच, पोहकरमूल, कूठ, हलदी, सैंधानोन, वच इनको पीसकर लेप करनेसे सर्व अंगकीगाँठ दूर होवे अथवा खडिया नोन पानीमें घिसकर गांठपर लेप करनेसे गांठ दूर होवे ॥ १ ॥

स्फोटिका (फोडा) यां लेपः ।

कृष्णाजाजी ब्रह्मदण्डी मरिचं रामपिप्पली ।
स्फोटिकायां हितो लेपः पानं वा तण्डुलांभसा॥१॥

काला जीरा, ब्रह्मदंडी, मिरच, पीपल इनको पीस लेप करनेसे फोडा आराम होवे वा चांवलोंके पानीके साथ इनको पीनेसे आराम होवे ॥ १ ॥

वातरक्ते लेपः ।

दूर्वा मूर्वा शठी शुंठी धान्यकं मधुयष्टिका ।
सुपिष्टं शीततोयेन रक्तवाते प्रलेपनम् ॥ १ ॥

दूर्वा, मूर्वा, सोंठ, धनियां मुलहठी इनको ठंढे पानीमें घिसकर लेप करनेसे वातरक्त दूर होवे ॥ १ ॥

पादस्फोटोपरि लेपः ।

ललनास्तनदुग्धेन सिक्तं गुडघृतं मधु ।

Aho ! Shrutgyanam

गैरिका स्फुटपादोऽपि जायते पंकजोपमः ॥ १ ॥

स्त्रीके स्तनका दूध, गुड, घी, शहद, गेरू इनको मिलाय लेप करनेसे फटे हुए पैर कमलके समान होवें ॥ १ ॥

भगे लेपः ।

सूकडं धातुकी जांगी सौराष्ट्री फुल्लकं तथा ।
माजूफलं हीहबेरं लोध्रं दाडिमत्वक्तथा ।
कादंबर्या भगे लेपो गाढीकरणमुत्तमम् ॥ १ ॥

कूठ, धायके फूल, बडी हरड, फूली फटकरी, माजूफल, हाऊबेर, लोध, अनारकी छाल इनमें शराब मिलाकर लेप करनेसे योनि दृढ होय (अर्थात् सिकुडजाय) ॥ १ ॥

लिङ्गदृढीकरणम् ।

मरिचं सैन्धवं कृष्णा तगरं बृहतीफलम् ।
अपामार्गस्तिलाः पुष्टं यवमाषाश्च सर्षपाः ॥ १ ॥
अश्वगन्धा च तच्चूर्णं मधुना सह योजयेत् ।
अस्य सन्ततलेपेन मर्दनाच्च प्रजायते ।
लिंगवृद्धिः स्तनोत्सेधसहिता भुजकर्णयोः ॥२ ॥
बृहतीफलसिद्धार्थकव्याधिवचातगरतुरगगन्धाभिः ।
एभिः प्रलेपितं स्यात्पुरुषवराङ्गं हयस्येव ॥ २ ॥

मिरच, सैंधानोन, पीपल, तगर, कटेरीका फल. ओंगा, तिल, कूठ, जौ, उडद, सरसों, असगंध इनका चूर्ण शहदमें मिलाकर सदा लेप करनेसे तथा मलनेसे लिंग बढे । तथा घोडेके समान हो जाय, स्तनकी वृद्धि होवे तथा भुज और कान इनकी वृद्धि होवे । बृहतीफल, सरसों, वायविडंग, वच, तगर और असगंध इनका लेप करनेसे पुरुषका लिंग घोडेके लिंगसमान होता है ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

मलहम १-२ ।

तप्ते घृते क्षिपेत्तुत्थमुत्तार्य मदनं क्षिपेत् ।
सर्वस्मिन् गलिते तस्मिश्चूर्णमेषां विनिक्षिपेत् ॥ १ ॥
कुंकुमं मुरदाशृङ्गं सिन्दूरं हिंगुलं तथा ।
क्षिप्त्वा ततो जलं भूरि हस्तेन परिमर्दयेत् ॥ २ ॥
दूरीकृत्य जलं सर्वं सिद्धभाण्डे निधापयेत् ।
दग्धव्रणे दग्धमेढ्रे चन्द्रिकायां सदाहितम् ॥ ३ ॥
तप्ते घृते क्षिपेत्तुत्थमुत्तार्य च क्षिपेदिमान् ।
कपिलं मुरदाशृङ्गं खदिरं रङ्गपत्रिका ।
क्षिप्त्वा जलं मथित्वा तत्सर्वव्रणविरोपणम् ॥ ४ ॥

१-घीको तपाकर उसमें नीलाथोथा डालकर उतारलेवे फिर मोम और नीचे लिखी औषधियोंको डाले-केशर, मुरदासिंग, सिन्दूर, सिंगरफ इनको डालकर और बहुतसा जल डालकर हाथसे मर्दन करे फिर जलको अलग कर फिर मलहमको किसी बरतनमें रखलेवे। इस महलमके लगानेसे जलनेके फफोल, गर्मीके चकत्ते और गरमी दूर होवे। तपे हुए घीमें नीलाथोथा डालकर उतारकर इन औषधियोंको और डाले--कबीला, मुरदासिंग, खैरसार, रांगके तबक इनमें जल डालकर मथे फिर अच्छे पात्रमें रक्खे इसके लगानेसे संपूर्ण व्रण दूर होवें ॥ १-४ ॥

तप्ते घृते क्षिपेद्रालमुत्तार्य च जलं क्षिपेत् ।
मथित्वा निर्जलं कृत्वा व्रणादौ तत्प्रयोजयेत् ॥ ५ ॥
मदनं मस्तकी तुत्थं रालि सिन्दूरटङ्कणम् ।
गुग्गुलं मुरदाशृङ्गं बेरजं रंगपत्रिका ॥ ६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

कंपिल्लं कुंकुमं काथं माजूमदनकट्फलम् ।
मरिचं हिंगुलं जांगी पला चेति समाः समाः ॥ ७ ॥
लोहपात्रे घृते तप्ते यथायोग्यमिमान् क्षिपेत् ।
प्रक्षिप्य च जलं पश्चान्मथित्वा जलमुत्सृजेत् ॥ ८ ॥
तत्स्थापयेच्छुभे भांडे व्रणादौ विनियोजयेत् ।
नासूरचन्दनादुष्टव्रणशोधनरोपणम् ॥ ९ ॥

२--तपे हुए घीमें राल डाल उतार कर पानी डालकर ऐसा मथे कि, उसमें पानी न रहे। इसके लगानेसे फोडा फुनसी दूर होवें। मोम, मस्तंगी, नीलाथोथा, राल, सिन्दूर, सुहागा, गूगल, मुरदासिंग, बेरकी मींगी, गोंद, रांगके वर्क, कबीला, केशर, माजूफल, मैनफलका काढा, मिरच, सिंगरफ, बडी हरड, इलायची इन सब चीजोंको बराबर लेकर लोहपात्रमें घीको तपाय उसमें यथायोग्य इन औषधियोंको डालकर मथे और जलको दूर करे फिर उस मलहमको अच्छे पात्रमें रख देवे और फोडा, फुनसियोंपर लगाये इनके लगानेसे नासूर, चकत्ते, दुष्टव्रण इनका शोधन करे तथा आराम होवे ॥५-९॥

उदरोपरि लेपः ।

विषं तुत्थं तथा गुञ्जा सिन्दूरं नवसादरम् ।
नरमूत्रेण संघृष्य कृत्वा रुधिरमोक्षणम् ॥ १ ॥
विषं च सूतं नवसादरं च मयूरतुत्थं कलहंसवल्लीम् ।
शल्ये च नष्टे शतवर्षपक्के वातारिगत्रं मुनयो वदन्ति२॥

तेलिया मीठा, नीलाथोथा, चिरमिठी, सिंदूर, नौसादर इनको मनुष्यके मूत्रमें घिसकर, रुधिर निकालकर तेलिया मीठा, पारा, नीलाथोथा, नौसादर, हंसपदी इनका लेप

Aho ! Shrutgyanam

करनेसे नष्ट संधियोंका दर्द सौ वर्षतकका पकाहुआ घाव आराम होवे, यह दवा मुनीश्वरोंने कही है ॥ १ ॥ २ ॥

विषोपरि लेपः ।

सिन्दूरं विषपारदं सुगणिका चोकं विषं सर्ज्जिका
क्षारंत्र्यूषणसंचलं सलवणा पंचार्णवाग्रे निशे ।
एरंडं स्वरगंधकं हिरमजा रक्तावली अग्निका नेपालं
नवसादरं क्षुपरकं भागैः समैः पेषयेत् ॥ १ ॥
गोमूत्रेण गुडेन चार्कपयसा स्नुह्याश्च धूमा गृहा-
देतन्नामरसेन सिंहसहितः सारङ्गराजोऽगदः ॥ २ ॥

सिन्दूर तेलियामीठा, पारा, सुहागा, चूक, निसोत, सज्जीखार, सोंठ, मिरच, पीपल,पांचों नोन, दोनों हलदी,कमलपत्र वच, फटकरी, अंडी, कपूर, मंजीठ, चीता, नौसादर इनकी बराबर मात्रा लेकर गोमूत्र तथा गुड या आकका दूध वा थूहरका दूध इनमें मिलाकर लगानेसे सम्पूर्ण विषरोग दूर होवें. यह सारंगराजने कहा है ॥१॥२॥

सर्पविषगदे लेपः ।

शम्भोः कण्ठनिवासनं मनशिला नौसादरं नीलकं
साजीचौककचूरसावणरसं धूमं च मात्राद्वयम् ।
नेपालं विषगन्धकं च लशुनं शिल्या च मूत्रं नरै-
रित्येतद्विषनाशनं हि मुनिभिः कालाहिभुक्ते स्मृतम् १

तेलियामीठा, मनसिल, नौसादर, नीलाथोथा, सज्जी, चौक, कपूर, सावनका रस, धुआं इनका दो टंक, जमालगोटा, गंधक, लहसन ये सब औषधि मनुष्यके मूत्रमें मिलाकर विषपाडापर लगावे तथा मले तो सर्पके काटनेका विष दूर होवे ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

रुधिरस्रावादौ कालनिश्चयः ।

शरत्काले वसन्ते च कुर्याद्रक्तस्रुतिंनरः ।
तुम्बीशृंगीजलौकाभिः शिरामोक्षैः करैस्तथा ॥ १ ॥
आषाढ आर्द्रा शरदीह चन्द्रा वसंतके मीनगते च भानौ ।
वमिर्विरेचं रुधिरस्रुतिश्चतदानराणांसुखदाभवन्ति ॥ २ ॥

शरत्कालमें तथा वसंतकालमें स्त्री तथा पुरुष रुधिर निकलवावें. तुम्बी, सींगी, जोंक फस्त इन करके नसोंमेंसे आषाढ और आर्द्राके सूर्यमें, शरत्, चित्राके सूर्य, वसंत, मीनके सूर्य इन ऋतुओंमें वमन, दस्त (जुलाब) और रुधिर निकलवाना पुरुषोंका सुख देनेवाला है ॥ १ ॥ २ ॥

रक्तस्रावे शृंग्यादीनामियत्ता ।

दशाङ्गुलं हरेच्छृङ्गी तुम्बी च द्वादशाङ्गुलम् ।
जलौका हस्तमात्रं तु शिरा सर्वांगशोधिनी ॥ १ ॥
क्षुरश्चांगुलमात्रंतु गृह्णाति रुधिरं बलात् ॥ २ ॥

दश अंगुल रुधिरको सींगी निकालती है और तूंबी बारह अंगुलको निकालती है, जोंक हाथभरका खून खींचती है और फस्त कुल शरीरका रुधिर निकालती है और नश्तर एक अंगुलमात्र बलकर खींचती है ॥ १ ॥ २ ॥

रक्तस्रावे योग्यरोगी ।

शोफ दाहेऽङ्गपाके च रक्तवर्णेऽसृजः स्रुतौ ।
वातरक्ते तथा कुष्ठे सपीडे दुर्जयेऽनिलेः ॥ १ ॥
पाण्डुरोगे श्लीपदे च विषदुष्टे च शोणिते ।
ग्रन्थ्यर्बुदापचीक्षुद्ररोगरक्ताधिमादिषु ॥ २ ॥
विदारीस्तनरोगेषु गात्राणां स्वरगौरवम् ।

Aho ! Shrutgyanam

रक्ताभिष्यंदरौद्रायां पूतिघ्राणस्य देहके ॥ ३ ॥
यकृत्प्लीहविसर्पेषु विद्रधौ पिटिकोद्गमे ।
कर्णोष्ठघ्राणवक्त्राणां पाके दाहे शिरोरुजि ॥ ४ ॥
उपदंशे रक्तपित्ते रक्तस्रावः प्रशस्यते ॥ ५ ॥

सूजन, दाह, अंगका पकना, देहका लाल होजाना इनमें रुधिर निकलवावे । वातरक्त, कोढ, पीनस, दुष्टवात, पांडुरोग, श्लीपद-विषदुष्ट इन करके रुधिर दुष्ट होवे तो निकलवावे और गांठ, अर्बुद, अपची, क्षुद्ररोग, रक्त व्रण, स्तनरोग, स्वरभंग, रुधिर विकार होवे तो रुधिर निकलवावे, कान, होंठ, नाक, मुँह यह सब पकजावें अथवा इनमें दाह होवे वा, शिरमें दरद होवे अथवा यकृत, प्लीहा, विसर्प विद्रधि, फोडे, उपदंश, रक्तपित्त इनमें भी रुधिर निकलवावे ॥ १–५ ॥

रक्तस्रावे अयोग्याः ।

न कुर्वीत शिरामोक्षं कृशस्यातिव्यवायिनः ।
क्लीबस्य भीरोर्गर्भिण्याः सूतिकापाण्डुरोगिणाम् ॥ १ ॥

दुर्बल, अतिमैथुन करनेवाला, नपुंसक, गर्भवाली स्त्री, भयभीत, पांडुरोगी इनका रक्त न निकाले ॥ १ ॥

रक्तस्रावे वर्ज्यानि ।

व्यायाममैथुनक्रोधशीतस्थानप्रवातकान् ।
एकाशनं दिवा निद्रां क्षाराम्लकटुभोजनम् ।
अभिजल्पं जलं भूरि त्यजेदाबलदर्शनात् ॥ १ ॥

कसरत, स्त्रीसंग, क्रोध, शीत और वातवाले स्थानमें बैठना एक बार भोजन, दिनमें सोना, खारा खट्टा कडवा भोजन, बहुत बोलना.

Aho ! Shrutgyanam

बहुत पानी पीना इन सबको जबतक देहमें बल न आवे तबतक त्याग देवे ॥ १ ॥

जलूकादिदंशस्त्रावे उपचारः।

अतिप्रवृत्ते रक्ते च यवगोधूमचूर्णकैः।
सर्पनिर्मोकचूर्णैर्वा क्षौमवस्त्रस्य भस्मना।
मुखे व्रणस्य बद्धा च शीतैश्चोपचरेद्व्रणम् ॥ १ ॥

जलौकादि दंशादिमें जो अति रुधिर बहता होवे तौ जौका आटा, गेहूंका आटा, सर्पकी कांचली, रेशमी कपडेकी राख इनको पीसकर फोडेके मुँहपर बांध देवे और शीतल उपचार करे ॥ १ ॥

नस्यविधिः।

उत्तानशायिनं किंचित्प्रलम्बशिरस नरम्।
आशीर्णहस्तपादं च वस्त्राच्छादितलोचनम् ॥ १ ॥
समुन्नमितनासाग्रं वैद्यो नस्येन योजयेत।
कोष्णमच्छिन्नधारं च हेमताराादिशुक्तिभिः ॥ २ ॥
नस्येष्वासिच्यमानेषु शिरो नैव प्रकम्पयेत्।
न कुप्येन्न प्रभाषेत नोच्छिकेन्न हसेत्तथा ॥ ३ ॥
उपविश्याथ निष्ठीवेद्घ्राणवक्त्रगतं द्रवम्।
वामदक्षिणपार्श्वाभ्यां निष्ठीवेत्सम्मुखे न हि ॥ ४ ॥

मनुष्यको सीधा सुलाकर माथा ऊंचा रक्खे और लंबा शिर कर हाथ पैरोंको फैलादेवे और कपडेसे आंख ढकलेवे और नाकको ऊंचा करके वैद्य सोना, चांदी, सीपीमें भर कर नस्य देवे, फिर गरमपानीकी धारा देवे, अच्छिन्न अर्थात धार टूटे नहीं, तथा वह नास लेनेवाला शिरको हिलावे नहीं, और न क्रोधित होवे, न बोले, न छींके,

Aho ! Shrutgyanam

न हँसे । फिर उठकर छींक लेवे और नाक मुँहसें पानीगिरे तो बांई तथा दाहिनी तरफ थूके सम्मुख न थूके । यह नास्यविधि कही है ॥ १-४ ॥

नस्यं स्याद्गुडशुंठीभ्यां विकारे वातके हितम् ।
शर्कराघृतयष्टीभिः पित्तके नस्यमेव च ॥ १ ॥
श्लेष्मके सुरसावासारसं सुविहितं च तत् ।
विडङ्गहिंगुमगधा कृमिदोषे हितं मतम् ॥ २ ॥
रक्तजेऽसृग्विरेकं तु शिरोरोगमुपक्रमः ।
शर्करा कुंकुमं नस्यं घृतभृष्टं शिरोर्तिनुत् ॥ ३ ॥
समुद्रफलनस्येन छिक्किन्या सम्भवेन वा ।
षड्बिन्दुतैलनस्येन यान्ति रोगाः कपालजाः ॥ ४ ॥

वातविकारवालेको गुड और सोंठकी नास देवै । पित्तविकारमें मिश्री घी और मुलहठीकी नास देवे । श्लेष्म (कफ) के विकारमें तुलसी, और अडूसेके रसकी नास देवे. जो मस्तकमें कीडे पड जायँ तो वायविडंग, हींग, पीपलकी नास देवे तो हित करे । रुधिरसे मस्तक भारी होजाय तो खांड और केशरको घीमें भूनकर बूराकी नास देवे । समुद्रफलकी अथवा नकछिकनीकी और षड्बिन्दु तेलकी नास लेनेसे कपाल के सब रोग नाश होवें ॥ १-४ ॥

सैन्धवं श्वेतमरिचं सर्षपाः कुष्ठमेव च ।
बस्तमूत्रेण पिष्ट्वा च नस्यं तन्द्रानिवारणम् ॥ ५ ॥
दूर्वारसो दाडिमपुष्पजो वा घ्राणप्रवृत्तेऽसृजि
नस्यमुक्तम् । स्तन्येन वाऽलक्तरसेन वापि विण्म-
क्षिकाणां विनिहन्ति हिक्काम् ॥ ६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

नस्यं दाडिमपुष्पोत्थं रसो दूर्वाभवस्तथा ।
आम्रास्थिमिलिता दूर्वा नासिकाच्युतरक्तजित् ॥ ७ ॥

सैंधानोन, सफेद मिरच, सरसों, कूठ इनको बकरीके मूत्रमें पीसकर नस्य देनेसे तन्द्रा दूर होवे. दूबका रस, अनारके फूल इनकी नस्य देनेसे नकसीर दूर होवे. स्त्रीका दूध, महावरका रस, मक्खीकी बीट इन सबकी नास देनेसे हिचकी दूर होवे । अनारके फूलका रस, दूबका रस, आमकी गुठली इनको दूबके रसमें मिलाकर नास देनेसे नकसीर बहती बन्द होवे ॥ ९-७ ॥

एकं बृहत्याः फलपिप्पलीकं शुंठीयुतं चूर्णमति प्रशस्तम् । प्राघ्रापयेद् घ्राणपुटेऽतिसंज्ञां करोति चेष्टां विनिहन्ति मूर्च्छाम् ॥ ८ ॥ एलीयकंवचा तिक्ता मुस्ता कट्फलजं रसः । उद्धूलयेत्रिदोषोत्थे स्वेदाभिष्यन्दजे ज्वरे ॥ ९ ॥

कटेरीका एक फल, पीपल और सोंठ इनका चूर्ण कर कागजकी फुकनी बनाय नाकमें फूंकनेसे मूर्च्छाका नाश करे और संज्ञा तथा चेष्टा होवे. एलुआ, वच, कुटकी, नागरमोथा, कायफल इनके रसका उद्धूलन (शरीरमें मालिश करना) त्रिदोषज्वरवालेको सचेष्ट करे ॥ ८-९ ॥

नासिकया जलपानम् ।

द्विघटिघननिशायां प्रातरुत्थाय नित्यं पिबति खलु नरो यो घ्राणरन्ध्रेण वारि । स भवति मतिपूर्णश्चक्षुषा तार्क्ष्यतुल्यो वलिपलितविहीनः सर्वरोगैर्विमुक्तः ॥ १ ॥ अपस्मारे तथोन्मादे शिरो-

Aho ! Shrutgyanam

रोगे च पीनसे। अचैतन्येऽक्षिनासादिरोगे नस्यं दिवा हितम् ॥ २ ॥ एकान्तरं द्व्यन्तरं वा नस्यं दद्याद्विचक्षणः। त्र्यहं पञ्चाहमथवा सप्ताहं वा सुयंत्रितः ॥ ३ ॥

दो घडी रात रहे तब उठकर नाकके रस्तेसे नित्य पानी पीवे तो बुद्धिमान् होवे. नेत्र गरुडके नेत्रोंके समान होजावें कभी बुढापा न आवे. तथा कोई रोग न होवे. मिरगी उन्माद, शिरके रोग, पीनस, बेहोशी, नासारोग इनमें नस्य देनाही उत्तम है। एक दिन बीचमें देकर अथवा दो दिन बीचमें देकर या तीन दिन बीचमें देकर वा सात दिन बीचमें देकर अच्छा वैद्य युक्तिपूर्वक नस्य देवे ॥ १-३ ॥

वायुरोगेषु विरेचनविधिः।

शरत्काले वसन्ते च प्रावृट्काले च देहिनाम्।
वमनं रेचनं चैव कारयेत्कुशलो भिषक् ॥ १ ॥
त्रिदिनं पाचनं पूर्वं गृहीत्वा घृतभोजनम्।
स्नेहनं स्वेदनं कृत्वा दद्यात्सम्यग्विरेचनम् ॥ २ ॥
दोषाः कदाचित्कुप्यन्ति जिता लंघनपाचनैः।
ये तु संशोधनैः शुद्धास्तेषां न पुनरुद्भवः ॥ ३ ॥
पीत्वा बिरेचनं शीतं जलैः संसिच्य चक्षुषी।
सुगन्धि किंचिदाघ्राय ताम्बूलं शीलयेन्नरः ॥ ४ ॥
निवातस्थो न वेगांश्च धारयेन्न स्वपेत्तथा।
शीताम्बु न स्पृशेत्क्वापि कोष्णं नीरं पिबेन्मुहुः ॥५॥

शरत्काल, वसंत, बरसात इन ऋतुओंमें वैद्य मनुष्योंको वमन, विरेचन करावे। पहले तीन दिनतक विरेचन (मुंजिस) देवे और

Aho ! Shrutgyanam

घृत भोजन तथा खिचडी आदि नरम भोजन करावे, तेल लगावे । पसीना निकलवावे, पीछे भले प्रकार विरेचन करावे । लंघन और पाचनेसे जो रोग जीते गये हैं वे कदाचित् कुपित होजाते हैं, परंतु संशोधन (विरेचन) से नाश हुए रोग फिर कभी उनका कोप नहीं होता, विरेचन वस्तु लेकर आंखोंको जलसे धोवे और फूल अतर इत्यादिककी कुछ सुगंध सूंघे, पान खावे, जहां हवा न लगती हो वहां बैठे, बहुतसी मेहनत न करे, सोवे नहीं, ठंढे जलका स्पर्श न करे और जब प्यास लगे गुनगुना जल वारवार पीवे ॥ १–५ ॥

इच्छाभेदी च नाराचच्छुरीकारो रसोऽथवा ।
पूज्यपादगुटी शीतं रेचत्युदयभास्करः ॥ ६ ॥
अभयामोदकं पश्चात्किरमालादिपंचकम् ।
दंती विशाला स्नुग्दुग्धखण्डेन त्रिवृता तथा ॥ ७ ॥
दुग्धेनैरंडतैलेन अथ दुग्धेन नागरम् ।
उष्ट्रीपयोऽथ कंपिल्लं घोडाचोली गुटी तथा ॥ ८ ॥
मात्रोत्कृष्टा विरेचस्य त्रिंशद्वेगैः स्मृताऽथ वा ।
वेगैर्विंशतिभिर्मध्या हीनोक्ता दशवेगकैः ॥ ९ ॥
विरेकस्यातियोगेन मूर्च्छा भ्रंशो गुदस्य च ।
शूलं कफोऽतिच्छर्दिःस्याद्रक्तं वापि विरिच्यते॥१०॥
तदा शीताम्बुना हस्तौ पादौ प्रक्षालयेन्मुहुः ॥ ११ ॥

इच्छाभेदी, नाराच, छुरीकार रस, पूज्यपाद गोली, उदय भास्कररस विरेचनको निरा ठंढे जलसे देवे, अभयादि-मोदक, अमलतासका पंचक, जमालगोटा, इन्द्रायण, सेहुं-

Aho ! Shrutgyanam

ढका दूध, खांडके संग निसोत, दूधमें अथवा सोंठ, ऊंटनीका दूध, कबीला अथवा घोडाचोली गोली देवे। तीस वेग होवें तो विरेचनको श्रेष्ठ जानना, वीस वेग होवें तो मध्यम जाने और दश वेग होवें तो हीन जुलाब जाने। विरेचन जियादा होवें तो मूर्च्छा हो, भ्रम हो, गुदामें दरद होवे, कफ और रुधिरकी उलटी करे और दस्तके रास्तेसे रुधिर जाय तो ठंढे पानीसे बार २ हाथ पैरोंको धोवे ॥ ८-११ ॥

शालिभिः षाष्टिकैर्दुग्धैर्मसूरैश्चापि भोजयेत्।
पित्ते विरेचनं युंज्यादामोद्भूते तथा गदे।
उदरे च तथाऽऽध्माने कोष्ठशुद्धौ विशेषतः ॥ १२ ॥
कुष्ठार्शः कृमिविसर्पवातासृक्पाण्डुरोगिणः।
कफकासविषार्ताश्च विरेच्याः स्युर्भिषग्वरैः ॥ १३ ॥

साँठीचावल और मसूरकी दाल पथ्यमें खावे और पित्तके रोगमें विरेचन देवे तो आमरोग, उदररोग, अफरा, कोठा इनकी शुद्धि करे. विशेष करके कोढ, अर्श, कृमी, विसर्प, वात रुधिर, पांडुरोग, कफ, खांसी, विषकी पीडावालेको विरेचन लेना चाहिये ॥ १२ ॥ १३ ॥

विरेचनायोग्याः।

बालवृद्धावतिस्निग्धः क्षतक्षीणो रुजान्वितः।
श्रांतस्तृषार्त्तः स्थूलश्च गुर्विणी च नवज्वरी ॥ १ ॥
नवप्रसूता नारी च मन्दाग्निश्च मदात्ययी।
शल्यार्दितश्च रूक्षश्च न विरेच्या विजानता ॥ २ ॥

बालक, बूढा, अतिकोमल, क्षीणबल, डरपोक, हाराहुआ, प्यास करके दुःखित, मोटा, गर्भवती स्त्री, नये ज्वरवाला, हालकी जनी हुई

Aho ! Shrutgyanam

स्त्री, मंदाग्निवाला, अत्यंत मद्य पीनेवाला, जिसकी संधियोंमें दरद होवे, रूखा भोजन करनेवाला इनको चतुर वैद्य विरेचन न देवे ॥ १ ॥ २ ॥

वमनम्।

कासे श्वासे कफव्याप्ते हृद्रोगे विषपीडिते।
गलशुंड्यां भ्रमेकुष्ठे वमनं कारयेद्भिषक् ॥ १ ॥
पीत्वा यवागूमाकण्ठं क्षीरतक्रदधीनि वा।
भुक्त्वा श्लेष्मलं भोज्यं स्निग्धः स्विन्नस्ततो वमेत् ॥ २ ॥ वमनेषु च सर्वेषु सैन्धवं मधुना हितम्। कृष्णाराठफलं सिन्धुं कफे कोष्णजलैः पिबेत् ॥ ३ ॥ पटोलवासानिम्बैश्च पित्ते शीतजलं पिबेत्। सश्लेष्मवातपीडायां सक्षीरं मदनं पिबेत् ॥ ४ ॥ अजीर्णे कोष्णपानीयं सिन्धुं पीत्वा वमेत् सुधीः। कंठमेरण्डनालेन स्पृशन्तं वामयेद्भिषक् ॥ ५ ॥ पिप्पलीन्द्रयवा सिन्धुस्तथा मदनकं फलम्। कवोष्णं मदनालीढं वामयेत्कफरोगिणम् ॥ ६ ॥ अम्लतक्रं सलवणं तथा मदनकं फलम्। तुत्थं कार्पासमज्जा वा श्वानविड् विषवामने ॥ ७ अतिवांतौ भवेद्धिक्का कंठपीडा विसंज्ञिता। शाम्यत्यनेन तृष्णायाः पीडाच्छर्दिसमुद्भवा ॥ ८ ॥ धात्र्यञ्जनारसोशीरलाजचन्दनवारिभिः। मन्थं कृत्वा पाययेच्च सघृतं क्षौद्रशर्करम् ॥ ९ ॥

Aho ! Shrutgyanam

खांसी, श्वास, कफकरके युक्त, हृदयरोग, विषपीडित, गलेमें फन्दा पडे, भ्रम, कुष्ठवाले इनको वैद्य वमन करावे। लपसी पीवे और खूब दूध पीवे अथवा मट्ठा, दही पीवे और कफकारक चीजोंका भोजन करे फिर वमन करावे। सब वमन करानेमें सैंधानोंन और शहद हितकारी है. पीपल, मैनफल, सैंधानोंन, कफविकारमें गरम जलके साथ देवे। पटोलपत्र, अडूसा. नींबके पत्ते, पित्त विकारमें ठंढे जलके साथ पीवे। कफ वात विकारमें दूधके साथ मैनफल पीवे। अजीर्ण-विकारमें सैंधानिमक गरम जलके साथ पीवे तो वमन होवे और गलेमें पतली अंडकी लकडी डालकर वैद्य वमन करावे। पीपल, इन्द्रयव, सैंधानोन, मैनफल इनको शहदमें मिलाकर चटानेसे कफरोगीको वमन होवे खट्टा, मीठा, सैंधानोन तथा मैनफल, नीलाथोथा, कपासकी मींगी अथवा कुत्तेकी बीटसे जिसने विष खाया हो उसे वमन करावे। बहुत वमन करानेसे यह रोग पैदा होते हैं-हिचकी, कण्टमें दरद, बेहोशी और प्यास लगे. इनकी शांतिके अर्थ यह दवा देवे-आमला, निसोत, खस, धानकी खील इनको जलमें मथकरके पिलावे अथवा घी शहद दे तो आराम होवे ॥ १-९ ॥

स्वेदः ।

स्वेदश्चतुर्विधः प्रोक्तस्तापोष्णौ स्वेदसंज्ञितौ ।
उपनाहो द्रवः स्वेदः सर्वे वातार्तिहारिणः ॥ १ ॥

पसीना चार तरहसे उत्पन्न होता है-एक तो ताप, दूसरा उष्ण, तीसरा उपनाह, चौथे द्रव. यह चार प्रकारके स्वेद वातके हरने-वाले हैं ॥ १ ॥

तेषु तापाभिधः स्वेदो वालुकावस्त्रपाणिभिः ।
कपालं कण्टकाङ्गारैर्यथायोग्यं प्रयुज्यते ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

ताप स्वेद वह है-जो कपडेमें वालू भरकर गरम करके सेंके अथवा ठीकरेमें अंगार भरकर सुहाता सुहाता सेंक करे ॥ २ ॥

उष्णस्वेदः प्रयोक्तव्यो लोहपिण्डेष्टकादिभिः ।
प्रतप्तैरम्लसिक्तैश्च कार्यो नक्तकवेष्टितैः ॥ ३ ॥

उष्णस्वेद-लोहेका गोला अथवा ईंट इनको गरमकर मट्ठेमें बुझाकर और कपडा लपेटकर सेंक करै ॥ ३ ॥

खर्प्परभृष्टपटस्थितकांजिकसिक्तो हि वालुकास्वेदः ।
शमयति वातकफामयमस्तकशूलांगभंगादीन् ॥ ४ ॥

खर्परके ऊपर भुनीहुई वालूको कपडेमें बांध गरम कर कांजीमें बुझाके सेंक करनेसे वायु कफके रोग, मस्तकका दरद, अंगभंग इनको यह स्वेद दूर करै ॥ ४ ॥

फलस्वेदं घटीस्वेदं वालुकास्वेदमेव च ।
कारयेद्धस्तपादेषु तथा शिरसि युक्तितः ॥ ५ ॥
अग्नितप्तेष्टका सिक्ता कांजिकेन पुनः पुनः ।
सवस्त्रया तया स्वेदो रुजं जयति वातजाम् ॥ ६ ॥
पुरुषायाममात्रं वा भूमिमुत्कीर्य खादिरैः ।
काष्ठैर्दग्ध्वा तथाऽभ्युक्ष्यक्षीरधान्याम्लवारिभिः ॥७॥
वातघ्नपत्रैराच्छाद्य शयानं स्वेदयेन्नरम् ।
एवमापादिभिः स्विन्ने शयानं स्वेदमाचरेत् ॥ ८ ॥

ईंट, पत्थर, ठीकरा, बालू इनसे स्वेद करावे और युक्ति करके इतनी जगहपर करावे-हाथ, पैर, शिर। अग्निमें ईंट वा बालूको तपाकर कांजीमें बुझाय कपडेमें बांधकर बार बार

Aho ! Shrutgyanam

सेंक करनेसे जो स्वेद उत्पन्न होता है । वह स्वेद वात करके जितने रोग उत्पन्न होते हैं उन सबका नाश करता है । पुरुषकी बराबर पृथ्वीमें लम्बा गढा खोदकर खैरसारकी लकडी उसमें जलावे पीछे अंगारोंको उसमेंसे निकाल कर दूध, कांजी या धानके पानीसे बुझाकर अंडके पत्तोंको ऊपर नीचे लगाकर और मनुष्यको सुलाकर स्वेदन करे ॥ ९ ॥

कटाहे कोष्ठके वापि सूपविष्टो विगाहयेत ।
नाभेः षडंगुलं यावन्मग्नः क्वाथस्य धारया ॥ ९ ॥
कोष्ठे च स्कन्धयोः सिक्तस्तिष्ठेत्स्निग्धतनुर्नरः ।
एवं तैलेन दुग्धेन सर्पिषा स्वेदयेन्नरः ॥ १० ॥

कढाईमें वा किसी और पात्रमें मनुष्यको बैठाकर स्वेदन करे, जबतक काढेकी धारासे टूंडी छः अंगुल ऊंची रहे अर्थात् टूंडीके नीचे जल रहे तबतक उसमें बैठा रहने दे और काढेकी धारासे (कोठा) और कन्धोंको सेंके उसी प्रकार मनुष्य खड़ा रहै, इसी प्रकार तेल दूध और घृतसे स्वेदन करे ॥ १० ॥

अथ बन्धनम् ।

तप्तभस्मनृमूत्रेणात्युष्णा गर्दभविट् तथा ।
उष्णं सर्षपपिण्याकं तैलं कोष्णा च गाढमृत् ॥ १ ॥
स्निग्धोष्णान्यर्कपत्राणि मधुकं वटपत्रकैः ।
स्वेदयित्वा च बध्नीयादुदराध्मानशान्तये ॥ २ ॥

गरम राख मनुष्यके मूत्रमें सानकर बांधे तथा गधेकी गरम लीद बांधे वा सरसोंकी गरम खल बांधे अथवा जहां घानीके बैल चला-

Aho ! Shrutgyanam

करते हैं उस जगहकी मिट्टी बांधे अथवा चिकने और गरम आकके पत्ते अथवा महुआके पत्ते तथा वडके पत्ते बांधे । इस प्रकार स्वेदन करके बांधनेसे पेटका अफरा दूर होवे ॥ १-२ ॥

बाष्पविधिः ।

अपामार्गं च निर्गुंडी मुण्डी पाता च नागरम् ।
ग्रन्थिकं निम्बपत्राणि जलेनोत्कालयेद्दृढम् ॥ १ ॥
तद्भाण्डं निश्चलं धृत्वा वस्त्रेणाच्छादयेद्वपुः ।
गृह्णाति नम्रस्तद्बाष्पं शिरःपीडां निवारयेत् ॥ २ ॥

ओंगा, सँभालू, गोरखमुंडी, पत्रज, सोंठ, पीपलामूल, नींबके पत्र इन सबको जलमें उबाले, पीछे उस पात्रको निश्चल स्थापन कर और अपने शरीरको कपडेसे ढककर उस पात्रकी भाफसे मस्तकको सेंके तो शिरपीडा दूर होवे ॥ १-२ ॥

उद्धूलनम् (उवटना) ।

पिप्पली कट्फलं शृंगी बचा कुष्ठं यवानिका ।
पुष्करं नागरं तिक्ता ग्रन्थिकं सुरदारु च ॥ १ ॥
मुद्गपिष्टं माषपिष्टं पुराणा वह्नुधेष्टका ।
तुम्ब्याश्चूर्णं वत्सनागं शिरीषस्यापि भस्म च ॥ २ ॥
त्रिचतुर्वा दृढे वस्त्रे गालनीयं पुनः पुनः ।
तच्चूर्णमर्दनाद्गात्रे शीतांगत्वं निवर्त्तयेत ॥ ३ ॥

पीपल, कायफल, काकडासिंगी, बच, कूठ, अजमायन, पोहकरमूल, सोंठ, कुटकी, पीपलामूल, देवदारु, मूंगका चून, उडदका चून, पुरानी गचका चून, पुरानी ईंटका कूकुआ, तूम्बीका चूर्ण, वच्छनागविष, सिरसकी राख इन सबको कूट पीस तीन चार बार गाढे

Aho ! Shrutgyanam

कपडेमें बार बार छाने इस चूर्णको शरीरमें मर्दन करनेसे शीतांग सन्निपात दूर होवे ॥ १-३ ॥

कृष्णा सुपर्वविटपी सह नागरेण तिक्ता च दीप-
कयुता अनुलेपनं स्यात् । चूर्णं प्रशन्तमिति
जारयते शरीरे स्वेदं च शीतलतनुत्वमिदं निहंति॥४॥

पीपल, देवदारु, सोंठ, कुटकी, अजमोद इन सबको पीसकर शरीरमें मालिश करनेसे पसीना आना और देहकी शीतलता दूर होवे ॥ ४ ॥

मस्तकटोपबंधनम् ।

कालोंजी पुष्करं कुष्ठमजगन्धा वचा विषम् ।
यवानी खुरसाणं तु सर्वं सूक्ष्मं प्रपेषयेत् ॥ १ ॥
गोधूमचूर्णरचिते रोटके निहितं तथा ।
प्रतप्तं मस्तके बद्धं सन्निपातांगशीतहृत् ॥ २ ॥

कलौंजी, पोहकरमूल, कूठ, असगंध, वच, वछुआ, खुरासानी अजमायन इन सबको महान पीसकर गेहूंकी रोटीमें रख गरम कर मस्तकमें बाँधे ता सन्निपातकी शीत नष्ट होवे ॥ १-२ ॥

नेत्रपिंडी ।

पिण्डिका कवली प्रोक्ता बद्धा वस्त्रस्य पट्टकैः ।
नेत्राभिष्यन्दयोग्या सा व्रणेष्वपि निबद्धयते॥ १ ॥
एरण्डमूलपत्रत्वङ्निर्मिता वातनाशिनी ।
पित्ताभिष्यन्दनाशाय धात्रीपिण्डी सुखावहा ॥ २ ॥
पिण्डी निम्बदलोद्भूता वातपित्तप्रणाशिनी ।
त्रिफलापिण्डिका प्रोक्ता नाशिनी श्लेष्मपित्तयोः॥३॥

Aho ! Shrutgyanam

शुण्ठीनिम्बदलैः पिण्डी सुखोष्णा स्वल्पसैन्धवाः ।
धार्या चक्षुषि संयोगाच्छोथकंडूव्यथापहा ॥ ४ ॥

पिंडिकाको कवली भी कहते हैं इस पिंडिकाको कपडेके पट्टीसे बाँधते हैं, नेत्राभिष्यंदके योग्य है. और व्रणपरभी बांधी जाती है। एरंडकी जड, तज, पत्रज इनकी बनी पिंडी वातको दूर करे। आंवलेकी पिंडी पित्तरोगोंको दूर करे। नींबके पत्तोंकी पिंडी वातपित्तके रोगोंका नाश करे। त्रिफलाकी पिंडी कफ पित्तके रोगोंका नाश करे। सोंठ, नींबके पत्त थोडा सैंधानिमक इनकी पिंडी सूजन और खुजलीयुक्त व्यथाको दूर करे ॥ १–४ ॥

अथ गण्डूषः ।

दाहतृष्णाप्रशमनं मधुगंडूषधारणम् ।
पिबेत्क्षाराग्निदग्धे च सर्पिर्धार्यं पयोऽथवा ॥ १ ॥
तैलसैन्धवगंडूषा दन्तचाले प्रशस्यते ।
शोफं मुखस्य वैरस्यं गण्डूषः कांजिकं जयेत् ॥ २ ॥

शहदके कुरले दाह और प्यासको दूर करते हैं, विषसे अथवा क्षारोंसे अथवा अग्निसे मुख जलगया हो तो दूध अथवा घृतको मुखमें रक्खे। तेल और सैंधानिमकके कुरले हिलते दांतोंवालोंको हित हैं सूजन तथा मुखकी विरसताको कांजीके कुरले दूर करें ॥ १–२ ॥

तथा सहचरक्वाथ गण्डूषो मुखपाकहृत् ।
जातीपत्रामृता द्राक्षा पाठा दार्वीफलत्रिकम् ।
पञ्चकं समधुक्काथगंडूषो मुखपाकहृत् ॥ ३ ॥

पियावांसा अथवा ऊंटकटेरीके काढेके कुरले करनेसे मुखके छाले मिटैं, जायफल, गिलोय, दाख, पाढ, दारुहल्दी

Aho ! Shrutgyanam

त्रिफला, पद्माख इनके काढेमें शहद मिलाकर कुरला करनेसे मुखके छाले दूर होवें ॥ ३ ॥

अपराजिताधूपः।

कार्पासास्थिमयूरपिच्छबृहती निर्माल्यपिंडीतक-
त्वग्वंशावृषदंशविट्तुषवचाकेशाहिनिर्मोचकैः।
नागेन्द्रद्विजशृङ्गहिंगुमरिचैस्तुल्यस्तु धूपः कृतः
स्वेदोन्मादपिशाचराक्षससुरावेशज्वरघ्नः परः ॥ १ ॥
गृहेषु धूपनं दत्तं सर्वबालग्रहाञ्जयेत्।
पिशाचान्राक्षसान्क्षिप्त्वा सर्वज्वरहरं भवेत् ॥ २ ॥

बिनौले, मोर पंख, कटेरी, शिवनिर्माल्यफूल, तगर, तज, वंशलोचन, बिलावकी विष्ठा, धानके तुष, वच, मनुष्यके बाल, काले सर्पकी कांचली, हाथीदांत, गौका सींग, हींग, मिरच इन सबको समान ले और सबके बराबर नींबके पत्ते लेवे, सबको कूट पीसकर धूप बनावे। इस धूपके देनेसे पसीना, उन्माद, पिशाच, राक्षस, देवताओंका आवेश और ज्वर ये दूर होवें घरमें इसकी धूनी देनेसे सर्व बालग्रह दूर होवें ॥ १-२ ॥

नृपशिशिरविवर्णं विश्वकन्दर्प्पपर्णी च
मलयजगिरिलोहं विग्रहं बिल्वकं च।
नखजलघनकेशी तत्प्रमाणं च पूर्वं
कमलजकृतधूपः सर्वभूतान्निहन्ति ॥ १ ॥

कपूर १६ टंक, केशर १२ टंक, कस्तूरी, चन्दन ७ टंक, अगर १० टंक, शिलाजीत ९ टंक, नख १६ टंक, नागरमोथा नेत्रवाला १६ टंक, कुडा १६ टंक इन सबको मिलाकर,

Aho ! Shrutgyanam

धूनी देवे । यह ब्रह्माजीकी बनाई धूप सर्वभूतोंको नाश करती है ॥१॥

अथ तक्रसेवनम्–योग्यायोग्याश्च ।

यथा सुराणाममृतं प्रधानं तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः । न तक्रदग्धाः प्रभवंति रोगा न तक्रसेवी व्यथते कदाचित् ॥ १ ॥ शशिकुन्दहिमोज्ज्वलशंखनिभं परिपक्ककपित्थसुगंधिरसम् । युवतीकरनिर्मलनिर्मथितं पिब मानव सर्वरुजापहरम् ॥२॥
शीतकालेऽग्निमान्द्ये च कफोच्छेदे तथामये ।
बद्धकोष्ठे च दुष्टेऽग्नावर्शोगुल्मेऽथवामये ॥ ३ ॥
शस्तं भुक्ते च तक्रं स्यादमीषां सर्वदा हितम् ।
सर्वकाले प्रशस्तं तु अजाजीलवणान्वितम् ॥ ४ ॥

जैसे देवताओंको अमृत प्रधान है, वैसे ही मनुष्योंको पृथ्वीपर छाछ कही है । छाछ सेवन करनेवालेको कदाचित् रोग नहीं होते और छाछ पीनेवाला कभी दुःखी नहीं होवे, चन्द्रमा और कुन्द तथा बर्फ वा शंखके समान उज्ज्वल पके कैथके रसकी गंधसे मिला तथा स्त्री के हाथसे मथा ऐसे मट्ठेको सर्व रोगनाशनार्थ हे मनुष्य ! तू पी । शीत कालमें, मन्दाग्निके रोगमें, कफके विकारमें, बद्धकोष्ठ, बवासीर, गोला इन रोगोंपर छाछ पीना सदैव हित है । जीरा और निमक मिलाकर छाछ पीना सदैव श्रेष्ठ है ॥ १–४ ॥

इति तक्रगुणाञ्ज्ञात्वा न दद्याद्यस्य तं शृणु ।
क्षये शोषे तथा तक्रं नोष्णकाले शरत्सु च ॥ ५ ॥
न मूर्च्छाभ्रमतृष्णासु तथा पैत्तिकरोगके ।
न शस्तं तक्रपानं च करोति विषमान् गदान् ॥ ६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

इस प्रकार छाछके गुण जानकर रोगीको देवे । अब छाछका पीना वर्जित बतलाते हैं-क्षयी, शोष, क्षीण, गरमीकी ऋतु, शरदऋतु, मूर्च्छा, भ्रम, प्यास और पित्तके रोग इनमें छाछ पीना वर्जित है ॥ ५ ॥ ६ ॥

शनैः शनैर्हरेदन्नं तक्रं तु परिवर्धयेत् ।
तक्रमेव यथाऽऽहारो भवेदन्नविवर्जितः ॥ ७ ॥
श्रमं न कुर्याद्बहुशो न कुर्याद्बहु भाषणम् ।
न कुर्यान्मैथुनं तक्रपाने क्रोधं विवर्जयेत् ॥ ८ ॥
एवं यः सेवते तक्रं ग्रहणी तस्य नश्यति ।
शीघ्रमेव न सन्देहः श्रीर्यथा द्यूतकारिणः ॥ ९ ॥
ग्रहणीरोगिणां तक्रं संग्राहि लघु दीपनम् ।
सेवनीयं सदा गव्यं त्रिदोषशमनं हितम् ॥ १० ॥

धीरे २ अन्नको छोडता जाय और छाछको बढावे इस प्रकार करते २ केवल छाछकाही आहार करै । बहुत परिश्रम करना अधिक बोलना, मैथुन और क्रोध इनको त्याग देवे । इस प्रकार सेवन करनेवालेकी संग्रहणी दूर होवे जैसा जुआवालेकी सम्पत्ति । तक्र संग्राही हलका और दीपन है इसीसे संग्रहणी रोगवालेको सदैव सेवन करना चाहिये ॥ ७ ॥ १० ॥

कठरोहः ।

षोडशपलायः कीलानि लवणं च पलद्वयम् ।
त्रिकटु त्रिफला भृंगी त्वग्लवंगं च पत्रिका ॥ १ ॥
प्रत्येकमर्द्धपलिकान्क्षिपेत्तक्रं पलत्रयम् ।
उष्णं जलं शतपलं क्षिप्त्वा भूमौनिधापयेत ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

दिनानि सप्तदश वा स्थितं निष्कासयेत्ततः ।
पलार्द्धं तु पिबेन्नित्यं श्वासपाण्डुक्षयान् जयेत् ॥ ३ ॥

लोहकी कील १६ पल, नोन दो पल त्रिकुटा प्रत्येक ८-८ टंक, भांग ८ टंक, तज ८ टंक, लौंग ८ टंक, तमालपत्र ८ टंक, छाछ ४८ टंक इनको एकत्र मिलाय १०० पल गरम जलमें मिलाकर किसी मिट्टीके बरतनमें भर पृथ्वीमें गाड देवे फिर सात वा दस दिन पीछे पृथ्वीमेंसे निकालकर ८ टंक नित्य पीवे तो श्वास, खांसी, पांडुरोग और क्षय इनको दूर करे ॥ १-३ ॥

अमृताहिमः (अठपहरी गिलोय)।

अमृताया हिमः पेयो वासायाश्च हिमस्तथा ।
प्रातः सशर्करः पेयो हितो धान्याकसंभवः ॥ १ ॥
अन्तर्दाहं तथा तृष्णां जयेत्स्रोतोधिशोधनः ।
धान्याकधात्रीवासानां द्राक्षापर्प्पटयोर्हिमः ॥ २ ॥

गिलोय वा अडूसा तथा धनियांको रातमें भिगोद और प्रातःकाल पीस कपडेमें छान मिश्री मिलाकर पीवे तो देहके भीतरका दाह, प्यास और मूत्रकृच्छ्रको दूर करे। धनियां, आंवला, अडूसा, दाख, पित्तपापडा इनका हिम रक्तपित्त, ज्वर, दाह, प्यास और शोषको दूर करे ॥ १ ॥ २ ॥

पलार्द्धमजगन्धाया अष्टयामोषितं जले ।
वर्तयित्वा पिबेत्प्रातर्हन्ति दाहं सवातकम् ॥ १ ॥
पीतो मरिचचूर्णेन तुलसीपत्रजो रसः ।
द्रोणपुष्पीरसो वापि निहन्ति विषमज्वरान् ॥ २ ॥
त्रिफलाया रसः क्षौद्रयुक्तो दार्वीरसोऽथवा ।
निंबस्य वा गुडूच्या वा पीतो जयति कामलाम् ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अमृताया रसः क्षौद्रयुक्तः सर्वप्रमेहजित् ।
वासकस्वरसः पेयो मधुना रक्तपित्तजित् ॥ ४ ॥

आधा पल अजमोद लेकर प्रातःकाल किसी मिट्टीके पात्रमें भिगोदे और दूसरे दिन निकालकर पीसे और जलमें छानकर पीवे तो वातसहित अंतर्दाह दूर होवे । तुलसीके पत्तोंके रसमें काली मिरच मिलाकर पीवे अथवा द्रोणपुष्पी (गोमा) का रस पीनेसे विषमज्वर नाश होवे । त्रिफलाके रसमें शहद मिलाकर पीवे वा दारुहलदीका रस शहद मिलाकर पीवे या नीमके पत्ते आठ प्रहर भिगोकर पीवे अथवा गिलोयका रस पीवे तो कामला नष्ट होवे । अठपहरी गिलोय शहदके साथ पीनेसे सर्व प्रमेह नाश होवें । और अठपहरी अडूसेका रस शहदके साथ पीनेसे रक्तपित्त नष्ट होवे ॥ १-४ ॥

मधूरकज्वरलक्षणम् ।

ज्वरो दाहो भ्रमो मोहो ह्यतिसारो वमिस्तृषा ।
अनिद्रा च मुखं रक्तं तालुर्जिह्वा च शुष्यति ॥ १ ॥
ग्रीवामध्ये च दृश्यन्ते स्फोटकाः सर्षपोपमाः ।
एतच्चिह्नं भवेद्यस्य स मधूरक उच्यते ॥ २ ॥

ज्वर, दाह, भ्रम, मोह, अतिसार, वमन, प्यास, निद्रानाश, मुख लाल होना, तालुवा और जीभका सूखना, नाडमें सरसोंके समान फूंसी होना ये चिह्न जिसमें होवें उसको मधूरकज्वर कहते हैं ॥१-२ ॥

मधूरकस्वरसम् ।

सहस्रवेधपाषाणं कपालं कच्छपस्य च ।
वृद्धैला तुलसीपत्रं नारिकेलास्थि नूतनम् ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

दाणा खसखसाख्याश्च गोमयस्य रसेन च ।
घृष्ट्वा पानाय दातव्यं मधूरकप्रशान्तये ॥ २ ॥

सहस्त्रवेधी पाषाण, कछवेका कपाल, बडी इलायची, तुलसीके पत्र नारियलकी नवीन जटा, खसखसके दाने इनको गोबरके रसमें घिसकर देनेसे मधुरकज्वर शांत होवे ॥ १-२ ॥

मधूरकमन्त्रम् ।

ॐ नमो अञ्जनीपूत ब्रह्मचारी वाचा अविचल स्वामिन उकाज सारिवा क्षां क्षः मगधदेशराय वडस्थान कितिहां मुसलीकन् ब्राह्मण तिणै मधुरो कियो ॥ १ ॥

करवा समेत तीन गागर भर उनमें चन्दन घिसकर डाले अगरकी धूप देवे, पीछे सफेद फूल माथेपर रखकर १०८ बार मन्त्र जपे । इस प्रकार सात दिनतक करे, स्त्रीके पास न जाय, किसी स्त्रीकी छोत लावन न पडे । जब मन्त्र पढे तब आप पवित्र होय, सफेद स्वच्छ वस्त्र पहने । रोगीको भीगी चनेकी दाल हनुमान्जीके प्रसादसे खिलावे । एक बडा मधुरा पानीके विकारसे होता है । जीभ, दांत काले होवें तो वह रोगी असाध्य है ॥ १ ॥

केचित्साधारणयोगाः ।

मधुना पिप्पली चूर्णं लिहेत्कासज्वरापहम् ।
हिक्काश्वासहरं कण्ठ्यं प्लीहघ्नं वातलोचितम् ॥ १ ॥
श्वासे कासेतथा शोषे मन्दाग्नौ विषमज्वरे ।
प्रमेहे मूत्रकृच्छ्रे च सेव्या तु मधुपिप्पली ॥ २ ॥

शहदके साथ पीपलका चूर्ण खानेसे खांसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, तापतिल्ली और वातके विकारोंको दूर करे ॥ १-२ ॥

Aho ! Shrutgyanam

वर्द्धमानपिप्पली ।

त्रिवृद्ध्या पंचवृद्ध्या वा सप्तवृद्ध्याऽथवा कणाम् ।
पिबेत्पिष्ट्वा दशदिनं तास्तथैव प्रकर्षयेत् ॥ १ ॥
एवं विंशद्दिनैः सिद्धं पिप्पली वर्द्धमानकम् ।
अनेन पाण्डुवातासृक्कासश्वासारुचिज्वराः ॥ २ ॥

तीन वा पांच वा सातसे वर्द्धमान पीपल दशदिन बढावे और दश दिनमें उसी क्रमसे ऐसे घटावे २१ दिन पीवे तो पांडुरोग, वातरक्त, खांसी, श्वास अरुचि, ज्वर उदररोग, बवासीर, क्षय, कफ, वात और उरग्रह ये रोग नष्ट होवें ॥ १-२ ॥

द्राक्षाहरीतकी ।

अपहरति रक्तपित्तं कण्डूं गुल्मं च पैत्तिकं हन्ति ।
जीर्णज्वरं शमयति मृद्वीकासंयुता पथ्या ॥ १ ॥
द्राक्षा नियोज्या द्विगुणा शिवायास्तत्कुट्टयित्वा
गुठिका विधेया । ग्राह्या द्विकर्षप्रमिता प्रभाते
मलग्रहे रोधकबद्धकोष्ठे ॥ २ ॥

दाखको हरडके साथ खानेसे रक्तपित्त, खुजली, गोला, पित्तके विकार और विषमज्वर इनको दूर करे, दो भाग दाख और एक भाग हरड इन दोनोंको कूटकर गोली बनावे, आठ मासे नित्य प्रातःकाल सेवन करे तो मलके बन्ध अरुचि और बद्धकोष्ठको दूर करै ॥ १-२ ॥

हरीतकीयोगाः ।

ग्रीष्मे तुल्यगुडां च सैन्धवयुतां मेघागमाडंबरे
सार्द्धं शर्करया शरद्यमलया शुंठ्या तुषारागमे ।
पिप्पल्या शिशिरे वसन्तसमये क्षौद्रेण संयोजितां
राजन् भक्ष हरीतकीमिव गदा नश्यन्तु ते शत्रवः ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः ।
हरते सर्वरोगांश्च तेन ख्याता हरीतकी ॥ २ ॥

ग्रीष्मऋतुमें गुडके संग, वर्षाऋतुमें सैंधवनिमकके संग, शरदऋतुमें आंवलोंके साथ. हेमंतऋतुमें सोंठके संग, शिशिर ऋतुमें पीपलके संग और वसन्तऋतुमें शहदके संग हरड खानेसे जैसे सर्वरोग नाश होते हैं इस प्रकार हे राजन् ! तेरे शत्रु नष्ट होवें । हरड-हर (शिवजीके) स्थान (कलास) में उत्पन्न हुई है स्वभावसेभी हरा रंग है तथा सर्व रोगोंको हरण (नाश) करनेवाली है, इस लिये हरीतकी नामसे कही जाती है ॥ १-२ ॥

कुटकीप्रयोगः ।

संशर्करामक्षमात्रां कटुकामुष्णवारिणा ।
पीत्वा ज्वरं जयेज्जन्तुः कफपित्तसमुद्भवम् ॥ १ ॥

मिश्री १ टंक, कुटकी १ टंक इन दोनोंको मिलाकर गरम जलके संग खाय तो ज्वर और कफ पित्तके विकार दूर होवें ॥ १ ॥

अजमोदयोगः ।

एक एव कुबेराख्यो हन्ति दोषशतत्रयम् ।
किं पुनस्त्रिभिरायुक्तः शुंठीसैन्धवरामठैः ॥ १ ॥
एक एव कुबेराख्यः पक्को घृतगुडेन च ।
कुर्यादिन्द्रियचैतन्यं हन्ति वातोदराणि च ॥ २ ॥

एक अजमोदही ३०० दोषोंका नाशक है और उसमें सोंठ, सैंधानोन और हींग मिली होवे तो फिर क्याही कहना ! एकही अजमोद गुड और घीमें पका हुआ इन्द्रियोंको चैतन्य करे और वातजन्य उदरके रोगोंको नाश करे ॥ १-२ ॥

Aho ! Shrutgyanam

शुंठीयोगः ।

गुडार्द्रकं वा गुडनागरं वा गुडाभया वा गुडपिप्पली वा । कर्षाभिवृद्ध्या त्रिफलाप्रमाणं खादेन्नरः पक्षमथापि मासम् ॥ १ ॥ शोफप्रतिश्यायगरादिरोगान् सश्वासकासारुचिपीनसादीन् । जीर्णज्वरार्शोग्रहणीविकारान्हन्यात्तथाऽन्यान्कफवातरोगान् ॥ २ ॥

गुड और अदरक, या गुड और सोंठ, अथवा गुड और हरड, वा गुड और पीपल एक कर्षकी वृद्धिसे त्रिफलाके प्रमाण एक पक्ष वा एक महीना खाय तो सूजन, विषरोग, श्वास, खांसी, अरुचि, पीनस, पुराना ज्वर, बवासीर, संग्रहणी और वात कफके संपूर्ण रोग नष्ट होवें ॥ १–२ ॥

त्रिफलायोगः ।

एका हरीतकी योज्या द्वौ च योज्यौ विभीतकौ ।
चत्वार्यामलकान्येव त्रिफलैषा प्रकीर्तिता ॥ १ ॥
त्रिफला मोहशोषघ्नी नाशयेद्विषमज्वरान् ।
दीपनी श्लेष्मपित्तघ्नी कुष्ठहंत्री रसायनी ।
सर्पिर्मधुभ्यां संयुक्ता नेत्ररोगं व्यपोहति ॥ २ ॥

हरड एक भाग, बहेडा २ भाग, आंवला ४ भाग इसको त्रिफला कहते हैं. त्रिफला-शोष, मोह, विषमज्वर, कफके विकार, पित्तके विकार कोढ इनको नाश करै और रसायन है, सहद और घृतके साथ त्रिफला खानेसे नेत्ररोगोंका नाश करे ॥ १–२ ॥

Aho ! Shrutgyanam

दशामृतहरीतकी ।

द्वौ भागौ च हरीतक्याश्चतुर्भागान्विभीतकान् ।
अष्टौ चामलकीनां तु सितां चामलकीसमाम् ॥ १ ॥
यष्टीकं पिप्पली चैव त्वक्क्षीरीं चैकभागिकाम् ।
भक्षयेन्मधुसर्पिर्भ्यां रात्रौ खादेच्च यत्नतः ॥ २ ॥
तिमिरे पुष्पके काचे पटले चार्बुदेऽपि च ।
नेत्ररोगेषु सर्वेषु दशामृतहरीतकी ॥ ३ ॥

हरड दो भाग बहेडा चार भाग, आंवला ८ भाग, मिश्री ८ भाग, मुलहठी १ टंक, वंशलोचन १ टंक पीपल १ टंक सबको मिलाकर चूर्ण करे, इसको घृत शहद के संग रात्रिको खाय तो तिमिर, फूला, काच, पटल, अर्बुद और सर्व प्रकारके नेत्ररोग नाश होवें ॥ १–३ ॥

असगन्धयोगः शुण्ठीयोगश्च ।

अश्वगन्धैकभागा स्यान्नागरं चैकभागिकम् ।
घृतभागाश्चत्वारः खण्डं षड्भागसम्मितम् ॥ १ ॥
पुष्टिदं सन्धिवातघ्नं शीतकालोचितं नृणाम् ।
कर्षं विचूर्णिता विश्वा द्विकर्षं खण्ड एव च ॥ २ ॥
घृतेन मोदको ग्राह्य उदरार्तिनिवारणे ॥ ३ ॥

असगन्ध १ भाग, सोंठ १ भाग, घृत ४ भाग, मिश्री ६ भाग इन सबको मिलाकर अनुमान मुवाफिक शरदऋतुमें नित्य भक्षण करे तो देहको पुष्ट करे, संधियोंकी बादीको दूर करे । सोंठ एक कर्ष, मिश्री दो कर्ष, दोनोंको महीन पीसकर गोली बनाय खानेसे पेटके सर्व विकार नाश होवें ॥ १–३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

चोबचीनी ।

चोबचीनीं समुत्काल्य त्रिशाणं पिबतः सदा ।
सर्ववातव्यथा यान्ति पथ्यनिर्वातसेविनः ॥ १ ॥

चोबचीनीको औटाकर तीन शाण पीवे तौ सब वातव्याधि नष्ट होवैं. इसके खानेवाला पथ्यसे और पवनरहित स्थानमें रहे ॥ १ ॥

सिद्धहरिद्रा (जमाईहलदी) ।

भागद्वयं हरिद्राया विश्वायाश्चैकभागकः ।
गुन्दोऽर्द्धांशो घृते भृष्टः खण्डं भागं चतुर्मतम् ॥ १ ॥
घृतेनालोड्य तत्सर्वं धान्यराशिविमध्यगम् ।
चतुर्दशदिनं स्थाप्यं गुप्तं यत्नेन भक्षयेत् ॥ २ ॥
अम्लक्षारादिकं वर्ज्यं माघमासे त्विदं हितम् ।
रुधिरार्तिवातभग्नेषु शुभं चक्षुःप्रसादनम् ॥ ३ ॥

हलदी दो भाग, सोंठ एक भाग, घीमें भुना गोंद आधा भाग, मिश्री चार भाग इन सबको घृतमें मिलाकर धानकी राशिमें गाड देवे, फिर चौदह दिनके उपरान्त निकालकर खावे और खट्टा, चरपरा, नमकीन न खावे. इसको माघके महीनेमें खाय तौ रुधिरके विकार, वादीके रोग और संपूर्ण नेत्रविकारोंको नाश करे ॥ १-३ ॥

सिद्धजीरकः (जमायाजीरा) ।

जीरकं भागमेकं स्यात्खण्डस्तद्द्विगुणः स्मृतः ।
चतुर्गुणं घृतं तप्तं सर्वं संमेल्य चोद्धरेत् ॥ १ ॥
गोधूमपुंजमध्ये च चतुर्दशदिनस्थितम् ।
माघमासकृतं चैतद्भक्षितं चक्षुषोर्हितम् ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

जीरा १ भाग, मिश्री दो भाग इसमें चौगुना गरम घृत डाल सबको मिलाकर उत्तम पात्रमें भर देवे और गेहूँ धानकी राशिमें गाड देवे फिर चौदह दिन बाद निकालकर शरदीके दिनोंमें खावे तो नेत्रोंको हित होवे ॥ १ ॥ २ ॥

घृतपानम् ।

शुद्धं गव्यं घृतं तप्तं मरिचैर्वा कणान्वितम् ।
रसायनं सदा पेयं घृतपानं प्रशस्यते ॥ १ ॥
रूक्षक्षतविषार्त्तानां वातपित्तविकारिणाम् ।
हीनमेधास्मृतीनां च घृतपानं प्रशस्यते ॥ २ ॥

शुद्ध घृतको तपाकर उसमें कालीमिरच वा पीपल डालकर पीवे यह रसायन है. रूक्षदेहवाला, उरःक्षत, विषपीडित, वातपित्तविकारवाला, बुद्धिहीन, स्मरणरहित ऐसे ममुष्यको घृत पीना सदा हित है ॥ १ ॥ २ ॥

निम्बपानविधिः ।

रसो निम्बस्य मंजर्याः पीतश्चैत्रे हितावहः ।
हन्ति रक्तविकारांश्च वातपित्तं कफं तथा ॥ १ ॥

चैत्रके महीनेमें नीमकी कोंपल घोटकर पीनेसे रुधिरविकारोंको तथा वात, पित्त कफके रोगोंको नष्ट करे ॥ १ ॥

खण्डपानम् ।

द्वे पले शुद्धखण्डस्य गालयित्वा जले पिबेत् ।
अङ्गसादं प्रशमयेद्रुधिरस्य विकारजम् ॥ १ ॥
कपित्थं च शताह्वा च धान्यकं खण्डसंयुतम् ।
अथवा शर्करायुक्तं ग्रीष्मकाले सुखावहम् ॥ २ ॥

मिश्री दो पलको जलमें घोलकर पीनेसे रुधिरविकारजन्य, शरी-

Aho ! Shrutgyanam

रका जकडना दूर होय । कैथ, शतावरी, धनियां, मिश्री इन सबका गरमीके दिनोंमें पीना हितकारक होता है ॥ १-२ ॥

इति साधारणयोगाः ॥

सामान्यकायचिकित्सा ।

एरण्डतैलं विषमप्रवृद्धौ सगोपयस्कं हितमेतदुक्तम् । सराजवृक्षामृतवल्लिवासाक्वाथं हितं मारुतशोणितेषु ॥ १

अंडवृद्धिमें अंडीका तेल गौके दूधमें मिलाकर पीवे. अमलतास, आमला, गिलोय, अडूसा इनका काढा वादी और रुधिरके विकार-वालोंको हित है ॥ १ ॥

मूत्रेण वा दुग्धसमन्वितं वा सर्वोदरेषु श्वयथौ च शस्तम् । पक्वाशयस्थे पवने प्रयोज्यमेरण्डतैलं हि विरेचनार्थम् ॥ १ ॥

गौके मूत्रमें अंडीका तेल डालकर पीवे, अथवा गौके दूधमें पीवे तो सब उदरके विकार तथा सूजन ये सब नाश होवें. पक्वाशयस्थ वादीमें दस्त करानेको अंडीका तेल देवे ॥ १ ॥

उन्मादिनामुन्मदमानसानामपस्मृतौ भूतहतात्मनां हि । ब्राह्मीरसः स्यात्सवचः सकुष्ठः सशंखपुष्पः ससुवर्णचूर्णः ॥ १ ॥

उन्मादवाले और मृगीरोगवाले, भूतबाधावाले इनमें ब्राह्मीके रसमें वच, कूठ, संखाहूली और धतूरेके बीजका चूर्ण मिलाकर देवे ॥ १ ॥

अक्ष्यामयेषु त्रिफला गुडूची वातासृजे गोमथितं ग्रहण्याम् । कुष्ठेषु सेव्यं खदिरस्य सारं सर्वेषु रोगेषु शिलाह्वयं च ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

नेत्ररोगमें त्रिफला, वातरक्तमें गिलोय, संग्रहणीमें छाछ, कुष्ठरोगमें खैरसार और सम्पूर्ण रोगोंमें शिलाजीत सेवन करे ॥ १ ॥

अथ दंभः ।

धनुर्वाते मृगीवाते चोन्मादे चित्तविभ्रमे ।
निश्चैतन्ये सन्निपाते दम्भं तत्र प्रदापयेत् ॥ १ ॥
भ्रुवौ शंखे च पादेषु कृकाटीमूलरंध्रयोः ।
नेत्ररोगे ह्यपस्मारे भ्रुवौ शंखौ च दम्भयेत् ॥ २ ॥
कामले पाण्डुरोगे च कृकाटयौ च प्रकोष्ठके ।
औदरेषु च सर्वेषु दम्भयेदुदरोपरि ॥ ३ ॥
हृदये यस्य पीडा स्याद्दम्भयेद्धृदयोपरि ॥ ४ ॥

धनुर्वात, मृगी, उन्मादरोग, चित्तविकार, बेहोशी और सन्निपात इन रोगोंमें दम्भ अर्थात् दाग देवे. दोनों भौंहें, कनपटी, पैर, कृकाटी, मस्तक, गुदा इनमें दाग देय. नेत्ररोग और मृगीरोग इनमें भौंह और कनपटीको दागे. कामला और पीलियामें कृकाटी (घांटी) और पेटको दागे तथा उदरके सब रोगोंमें पेटको दागे हृदयमें पीडा होवे तौ हृदयके ऊपर दाग देवे ॥ १-४ ॥

विषचिकित्सा ।

शिरीषपुष्पं सकरंजबीजं काश्मीरजं कुष्ठमनः-
शिले च । एषो गदो राजिलवृश्चिकानां संक्रां-
तिकारी कथितो जलेन ॥ १ ॥
शिरीषं मरिचं निम्बं कर्कोटी तण्डुलीयकम् ।
श्यामा पाठा च शुंठी च एकैकं विषदोषहृत ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

शिरसका फूल, कंजाके बीज, केशर, मनशिल और कूठ इनको जलमें घोलकर लगानेसे सांप और बिच्छूका विष दूर होवे । शिरस, काली मिरच, नींब, ककडी, चौलाई, मेदा, पाढ और सोंठ ये एक एक विषके दोष हरण करते हैं ॥ १ ॥ २ ॥

चिह्वायास्तालुनो योगादमृतस्रवणं तु यत् ।
विलिप्तस्तेनदंशः स्यान्निर्विषः क्षणमात्रतः ॥ १ ॥
घृतादि पेयं दष्टेन भक्ष्यं चिर्भटिकादिकम् ।
दंशे कर्णमलं बद्धं तुलसीमूलभक्षणम् ॥ २ ॥

जीभ तालुएके मिलनसे अमृत स्रवे है उसके लगानेसे विष दूर होवे. विषसे पीडित मनुष्य कालीमिरच और घृत पीवे और ककोडा आदि खाय और काटे हुए स्थानपर कानका मल बांधे अथवा तुलसीकी जड खाय तो विष दूर होवे ॥ १ ॥ २ ॥

स्त्रीणां चिकित्सा ।

जन्मवंध्या काकवंध्या मृतवत्सास्तु याः स्त्रियः ।
तासां पुत्रोदयार्थाय शम्भुर्गौरीमथाब्रवीत् ॥ १ ॥

जन्मवंध्या, काकवंध्या और मृतवत्सा ये वंध्याके तीन भेद हैं इनके चिरजीवी पुत्र होनेके अर्थ श्रीमहादेवजीने पार्वतीजीसे उपाय कहा है ॥ १ ॥

एकापत्या १ मृतापत्या २ कन्यापत्या ३ ऽनपत्यता ४
मृतपुत्रत्व ५ मित्येवं पञ्चधाऽपत्यव्याधयः ॥ २ ॥

एकही सन्तान होय, मरी सन्तान होय, कन्याही कन्या होयँ, सन्तान न होय और जो सन्तान होय सो मरजाय यह पांच प्रकारका रोग स्त्रियोंको होता है ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पुत्रोत्पत्तियोगः ।

समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत् ।
एकवर्णगवां क्षीरे कन्याहस्तेन पेषयेत् ॥ १ ॥
ऋतुकाले पिवेद्वंध्या पलार्द्धं तद्दिने दिने ।
क्षीरशाल्यन्नमुद्गं च लघ्वाहारं प्रदापयेत् ॥ २ ॥
एवं सप्तदिनं कुर्या द्वंध्यापि लभते सुतम् ॥ ३ ॥

जड और पत्तोंसहित लक्ष्मणा बूटीको रविवारके दिन उखाड लावे उसको एकरंगी गौके दूधमें कन्याके हाथसे पिसवावे जब स्त्री ऋतुमती होय और चौथे दिन जब स्नान कर चुके तब आधा पल इसको बांझ स्त्री प्रतिदिन पीवे और दूधभात और मूंग आदि हलका आहार करै इस प्रकार सात दिन करनेसे बांझ स्त्रीकोभी पुत्रका लाभ होवे ॥ १–३ ॥

श्वेतायाःकंटकार्याश्च मूलं तद्वच्च गर्भकृत् ।
न कर्म कारयेत् किंचिद्वर्जयेच्छीतमातपम् ॥ ४ ॥
अश्वगन्धाकषायेण मृद्वग्निपरिसाधितम् ।
ऋतुकाले पिबेद्वंध्या गर्भस्थापनमुत्तमम् ॥ ५ ॥
मातुलिंगशिफां नारी ऋत्वंते पयसा पिबेत् ।
नागकेशरपूरास्थिचूर्णं वा गर्भदं परम् ॥ ६ ॥

सफेद कटेरीकी जडभी गर्भदाता है, इसको खानेवाली स्त्री कुछ काम न करै और शरदी गरमीसे बचती रहे । असगंधके काढेको मंदी आगसे पकावे इस काढेको ऋतुमती स्त्री पीवे तो वंध्याके पुत्र होय । बिजौरेकी जडको स्त्री स्नान कर चौथे

Aho ! Shrutgyanam

दिन दूधके साथ पीवे तो उसके पुत्र होय अथवा नागकेशर और विजौरेकी जड दूधके संग पीवे ॥ ४–६ ॥

शिफा बर्हिशिखायास्तु क्षीरेण परिपेषितम् ।
पिबेदृतुमती नारी गर्भधारणहेतवे ॥ ७ ॥
पिप्पली शृङ्गवेरं च मरिचं केशरं तथा ।
घृतेन सह पातव्यं वन्ध्यापि लभते सुतम् ॥ ८ ॥
कोरंटकोऽश्वगन्धा च कर्कोटी शिखिचूलिका ।
एकैका कुरुते गर्भं पीता क्षीरेण योषिताम् ॥ ९ ॥
अथ मुक्ताफलमर्द्धमविद्धमृतुकालेऽर्द्धं सुजातिफलेन । विद्रुमखण्डयुतं सपयस्कं पुत्रकरं युवतेस्त्रिदिनस्थम् ॥ १० ॥

मोरशिखाके पंचांगको दूधके साथ पीवे, अथवा पीपली, अदरक, मिरच, नागकेशर इनको घृतके साथ पीवे, अथवा पियाबांसकी जड, असगंध, ककोडाकी जड और मोरशिखा यह एक एक औषधि गर्भको, करता है अथवा अनविधा मोती आधा, जायफल आधा, मूंगा आधा इनको वंध्या स्त्री तीन दिन पीवे तो गर्भ होवे ॥ ७–१० ॥

गर्भनिवारणम् ।

पलाशतरुबीजानि पिबेत्पुष्पवती तु या ।
सलिलेन त्र्यहं यावत्सा वेश्या याति वन्ध्यताम् ॥ १ ॥
फलं त्रपुषबीजानि या नारी पुष्पदर्शनात् ।
पिबेद्दिनानि सप्ताष्टौ यदि नेच्छेत्प्रसूयितुम् ॥ २ ॥
उत्काल्य बदरीलाक्षां तैलेन सह या पिबेत् ।
द्विकर्षं च ऋतोरन्ते तस्या गर्भो न जायते ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

ढाकके बीज तीन दिन ऋतुमती स्त्री घोटकर जलमें पीवे तो वेश्याभी वंध्या होवे अथवा खीराके बीज ऋतुमती सात आठ दिन पीवे तो वंध्या होय अथवा बेरकी लाखको औटाकर तेलके साथ दो कर्ष पीवे तो उस स्त्रीको गर्भ न रहे ॥ १-३ ॥

गर्भपातनम् ।

स्फटिकां वंशाशलीं चोत्काल्य कर्षद्वयं पिबेत् ।
त्र्यहं वाप्यथ सप्ताहं भ्रूणः पतति निश्चितम् ॥ १ ॥

नागपुरीययतिवरश्रीहर्षकीर्तिसंकलित ।
वैद्यकसारोद्धारे सप्तममिश्राधिकारोऽयम् ॥ ७ ॥

फिटकरी, बांसकी छाल इन दोनोंको औटाकर ८ टंकके अनुमान नित्य खाय अथवा तीन या सात दिन पीवे तो गर्भ पतन होय ॥

इति श्रीदत्तरामचौबेकृतमाथुरीमंजूषाभाषाटीकायां
मिश्राधिकारः सप्तमः ॥ ७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ कर्मविपाकप्रकरणम् ।

अरुण उवाच-कथं कार्यो दिवानाथ प्रश्नकालस्य
यो विधिः । तत्तत्कर्मविमोक्षाय तत्त-
न्निष्कृतिसूचकः ॥ १ ॥

श्रीसूर्य उवाच-आधिव्याधिमतो जन्तोर्विरक्तिर्जायते
यदा । दैवज्ञं स तदा प्राप्य निज-
दुःखं निवेदयेत् ॥ २ ॥

श्रीसूर्यनारायणसे अरुण सारथि प्रश्न करते है. हे दिवानाथ ! प्रश्नके समय किस विधिसे कर्मविपाकको देखे सो कहो । इस वचनको सुनकर श्रीसूर्यनारायण बोले कि, आधि (मनके विकार) व्याधि (देहके रोग) इनसे जब मनुष्यका चित्त उपरामको प्राप्त होय, तब दैवज्ञ (ज्योतिषी) के पास जाकर अपने दुःखको निवेदन करे. अथवा अपने घरपर आदरपूर्वक ज्योतिषीको बुलाकर श्रद्धासे विधि-पूर्वक पूजन करै तथा पंडितोंको बुलाकर शुभस्थानमें अपने इष्टदेवका पूजन करे और प्रश्नकर्त्ता ज्ञानभास्कर पुस्तकका गंधपुष्पादिसे और बहुत द्रव्यसे पूजन करे, ब्राह्मणोंको दान देवे तथा सुन्दर सोना १६ मासे और दो गौ इनको लाल कपडेसे भूषित कर पीछे इस मंत्रको पढे ॥ १-२ ॥

भगवन्देवदेवेश कर्मसाक्षिञ्जगत्प्रभो ।
प्राभृतं प्राग्बिभर्म्येव तुभ्यं पुस्तकरूपिणे ॥ १ ॥
प्रभूतेनामुना तुष्टः कर्म सम्यक् प्रकाशय ।
तत्तद्दुःखौघनाशाय दुष्कृतस्य च मे प्रभो ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

इस मंत्रको पढकर सूर्यनारायणकी प्रार्थना करै और पुस्तकको नमस्कार करके पूर्वोक्त सुवर्णादिकोंको भेटकर रविकी तरफ पूर्व मुख करके बैठे पीछे ज्योतिषी पुस्तकको देखकर जो कहै उसे श्रद्धापूर्वक श्रवण करे जब कर्मविपाक सुन चुके तब यथाशक्ति उसका जप होम दानादि करे जिन रोगोंके कर्मविपाकमें जैसा कहेंगे ॥ १-२ ॥

रोगोंके नाम ।

ज्वरोऽतिसारो ग्रहणी अर्शोऽजीर्णो विषूचिका ।
अलसश्च विलम्बी च क्रिमिरुक्पाण्डुकामला ॥ १ ॥
हलीमकं रक्तपित्तं राजयक्ष्मा उरःक्षतम् ।
कासो हिक्का सहश्वासः स्वरभेदस्त्वरोचकम् ॥ २ ॥
छर्दिस्तृष्णा च मूर्च्छाद्या रोगाः पानात्ययादयः ।
दाहोन्मादावपस्मारः कथितोऽथानिलामयः ॥ ३ ॥
वातरक्तमुरुस्तम्भ आमवातोथ शूलरुक् ।
पित्तजं शूलमानाह उदावर्तोथ गुल्मरुक् ॥ ४ ॥
हृद्रोगो मूत्रकृच्छ्रं च मूत्राघातस्तथाऽश्मरी ।
प्रमेहो मधुमेहश्च पिडिकाश्च प्रमेहजाः ॥ ५ ॥
मेदो दोषोदरं शोथो वृद्धिश्च गलगण्डका ।
गण्डमालाऽपचीग्रंथिरर्बुदं श्लीपदं तथा ॥ ६ ॥
विद्रधिव्रणशोफाश्च द्वौ व्रणौ भग्ननाडिकौ ।
भगन्दरोपदंशौ च शूकदोषास्त्वगामयाः ॥ ७ ॥
शीतपित्तमुदर्दश्च कोठश्चैवाऽम्लपित्तकम् ।
विसर्पश्च सविस्फोटः सरोमांत्यो मसूरिका ॥ ८ ॥

Aho ! Shrutgyanam

क्षुद्रास्यकर्णनासाक्षिशिरः स्त्रीबालकामयाः ।
विषं चेत्यमुमुद्दिश्य संग्रहेऽस्मिन्प्रकीर्त्तिता ॥ ९ ॥

ज्वर, अतीसार, संग्रहणी, बवासीर, अजीर्ण, हैजा, अलसक, विलम्ब, कृमिरोग, पाण्डु, और कामला, हलीमक, रक्तपित्त, क्षय, उरःक्षत, कास, श्वास, हिचकी, स्वरभङ्ग, अरुचि, कय, प्यास, मूर्च्छा इत्यादि तथा अत्यन्त मद्यपानसे उत्पन्न हुए रोग, दाह, पागलपन, मिरगी वायुरोग, वातरक्त, ऊरुस्तम्भ, आमवात, शूल, पित्तशूल, अफरा, उदावर्त, वातगुल्म, हृदयके रोग, सुजाक, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, मधुमेह, प्रमेहके फोडे, चर्बीके दोष, जलोदर, शोफ, घेघा, गण्डमाला, अपची, ग्रन्थि, अर्बुद, फीलपाव, विद्रधि, घाव, सूजन, भग्न, और नाडिके दो ज्वर, भगन्दर, गर्मी, शूकदोष, चर्मरोग, शीत, पित्त, उदर्द, कोठ, अम्लपित्त, विसर्प, बिवाई, बाल गिरना, शीतला, मुख, कान, नाक, शिरके रोग, स्त्री और बालक, इनके रोग तथा विष इनकी मुख्यतापर इस ग्रन्थमें (औषध) कहे गये हैं ॥ ९ ॥

अथ कर्मफलम् ।

जन्मान्तरकृतं पापं व्याधिरूपेण बाधते ।
तच्छान्तिरौषधैर्दानैर्जपहोमसुरार्चनैः ॥ १ ॥

जन्मांतरका किया हुआ पाप इस जन्ममें रोगरूप होकर दुःख देता है, इस कारण उसकी शांति, औषधि, जप, दान, होम देवताओंके पूजनादि विधिसे करे. देव गुरुको दुःख देनेसे और पाप कर्मोंके करनेसे जो घोर रोग होते हैं, वे असाध्य हैं ॥

Aho ! Shrutgyanam

जो मनुष्य पूर्व जन्ममें क्रूरकर्मके कर्त्ता, पापी, चुगलखोर होते हैं वे इस जन्ममें शीतज्वरसे पीडित होते हैं, इसकी शांतिके लिये 'जातवेदसे' इस मन्त्रको १०००० दश हजार बार जपे, पीछे ब्राह्मण भोजन करावे तथा हजार कलशसे श्रीमहादेवजीका अभिषेक और १०० सौ ब्राह्मणोंको भोजन करावे यह माहेश्वरज्वर (गरमज्वर) में करे ॥ १ ॥

कुम्भदानविधि ।

मिट्टीका लाल घडा लाकर उसको चावलोंपर स्थापित करे, उसको सफेद कपडेमें लपेट देवे तथा तिल वा खांड अथवा जलसे उसको भरदेवे. पीछे धूप, दीप फूल आदिसे उसका पूजन करे, कुम्भदानकी विधिसे दान कर देवे. गुरु ब्राह्मण इनकी भक्ति करे ॥

यज्ञकी अग्निका बुझानेवाला, तलाव बावडी आदिका तोडनेवाला अतिसाररोगवाला होवे. और जो अपनी साध्वी स्त्रीका परित्याग करे वो संग्रहणी रोगवाला होवे. दोनों अर्थात् अतिसारवाला और संग्रहणीवाला मनुष्य महादेवजीकी रुद्रीके १०८ पाठ करे और दिव्य गोदान करे ॥

धेनुदानविधि ।

दिव्य गौ लेकर गोदानपद्धतिकी रीतिसे उसका पूजन कर वेदपाठी ब्राह्मणको दान करे । जो मनुष्य गौको मोल लेकर दूने मोलसे बेचे अथवा गौका व्यापार करे अथवा द्रव्य लेकर गौ पुजावे या द्रव्य लेकर देवताकी पूजा करे तथा होम करावे, वह मनुष्य हर्षरोगी होवे. इस कारण इतनी वस्तुओंको मोल न बेचे. इसकी शांति यह है कि घृत और सोनेका दान करे, अथवा सोनेकी गौका दान करे ॥

Aho ! Shrutgyanam

अन्नका चुरानेवाला मनुष्य अजीर्णरोगी होय । शूद्रका अन्न खानेवाला शूलरोगी होता है और अजीर्ण रोगसे पीडित होय । यज्ञकी अग्नि शांत करनेवाला मन्दाग्निका रोगी होय तथा गोमांस खानेवालोंको मन्दाग्नि होय, जो मनुष्यको विष देकर मारे उसके मन्दाग्नि होवे। ये पूर्वोक्त रोगी तीन पल सुवर्ण और अन्न दान करैं, अथवा सोनेकी बकरी बनाकर दान करें । हाथी, रथ, घोडेका बिगाडनेवाला कृमिरोगी होवे । पतिके मरनेके पीछे जो स्त्री रंगीन कपडे पहने वह इस जन्ममें कृमिरोगवाली होय, रंगीन बैलका दान करै । गुरु ब्राह्मण और देवताका द्रव्य चुरानेवाला पांडुरोगी होवे । नीच जातिकी स्त्रीसे भोग करनेवाला भी पांडुरोगी होवे, वह कृच्छ्रचान्द्रायण व्रत करे, १६ टंक चांदीकी पृथ्वीका दान करै कामला रोगवाला सोनेका गरुड बनाकर दान करै और यही कुम्भकामला हलीमकवाला करे । जो पूर्व जन्ममें वैद्यकशास्त्रको पढकर अन्यथा औषधि देवे वह रक्तपित्तवाला रोगी होवे. वह चरु घृतका होम करे । जो ब्राह्मणका विनाश करे । वह क्षयरोगी होय १०८ निष्क सोनेको दान करे अथवा आधा दान करे, २४ ब्राह्मण जिमावे, १०००० महादेवके मंत्रका जप करे । जो गर्वित होकर वृथा अभिमान करे, बिना धर्मशास्त्र पढे सभामें प्रायश्चित्त कहै वह राजयक्ष्माका रोगी होय, ३० निष्क सोनेका दान या गौका दान करे ॥

कृतघ्नो जायते मर्त्यः कफवाञ्छ्वासकासवान् ॥

कृतघ्नी मनुष्य कफरोगी, श्वास खांसीवाला होवे । नोन और शहदका दान करे, १००० ब्राह्मणोंको भोजन करावै । गुरुकी वाणी

Aho ! Shrutgyanam

रोकनेवाला गद्गद वाणीवाला होता है । जो ब्राह्मणके बिना जिमाये जल पान या भोजन करे सो हिचकीका रोगी होवे । चैंटी, कौवा, कुत्तेको उच्छिष्ट देवे । सो छर्दि (वमन) का रोगी होय । जो विश्वास देकर मारे सो छर्दिरोगी होवे । मार्ग चलनेसे थके मनुष्यको, गौको, ब्राह्मणको प्यासा रक्खे वह तृषारोगी तथा मूर्च्छारोगी होवे । जो शास्त्र पढकर सभामें धर्मका श्लोक न कहे, वह उन्माद पानात्यय व्याधिवाला होय, सरस्वती मंत्रका जप करे, सुवर्ण दान देवे । गौ बेचकर ऊंट खरीदनेवाला सर्वांगदाह रोगी होय । स्वामी गुरुका मारनेवाला मृगी रोगी होय, गणेशका मंत्र और सुवर्णका दान और ब्राह्मण भोजन करावे । जबरदस्ती पराई स्त्रीसे भोग करनेवाला संधिवात रोगी होय । जो वनको जलावे उसके उदरशूल होय । माता पिताके मैथुनका अनुमान करे उसके कर्णरोग होवे, पीछे बहरा होवे, घृत सोनेका दान करे । अपने वर्ण और स्वगोत्रकी स्त्रीसे गमन करनेसे वातरक्तका रोगी होय, सोनेकी लक्ष्मीनारायणकी प्रतिमा दान करे । होमकी अग्नि बुझानेवाला आमवात रोगी होय, १०००० गायत्रीका जप करे । पराये दिलका दुखानेवाला हृदयरोगी होवे । गुरुकी स्त्रीको भोगनेवाला मूत्रकृच्छ्री और सोजाक रोगी होय । लौंडेबाज मनुष्य मूत्राघाती और फिरंगवातरोगी होय । ब्रह्माकी सोनेकी मूर्ति दान करे । परस्त्रीगामी मनुष्यके पथरीरोग होय । कन्यागामी प्रमेहरोगी होय । मातागामी ज्वररोगी होय । भाईकी स्त्रीसे भोगकर्ता मनुष्य जलप्रमेही होय । चांद्रायण व्रत करे, चांदीका दान करे । चांडाली गमनसे प्रमेही और सर्वरोगी होय । जो ब्रह्मा, विष्णु महेश इनमें भेदबुद्धि करे, वह उदररोगी होय । जो पर्वतके अग्रभागमें, जलमें, पुलिनमें, नदी

Aho ! Shrutgyanam

किनारेमें सफल वृक्षके नीचे मलमूत्रका त्याग करे तथा थूके उसके सूजनका रोग होवे ॥

विघ्नकर्त्ता च भोक्तॄणां शोफी भवति मानवः ॥

दूसरेके भोगमें जो विघ्न करे वह शोफ (सूजन) रोगी होवे, १००० गायत्रीका जप, तिल घृतका होम करे । पुत्रीसे गमनकर्त्ता अंडवृद्धि रोगवाला होवे, वह चान्द्रायणव्रत करे । विना अपराध जो राजा, सेवकके हाथ पैर छेदन करे वह दूसरे जन्ममें लँगडा लूला होय तथा टूंडा होय, रुद्रीके १०८ पाठ करे । यज्ञमें विघ्नकर्त्ता मनुष्य आंतोंकारोगी होय । गुरु और दूसरेका दुःख दाता गोल और गंड-मालाका रोगी होय । रंडा स्त्रीसे गमनकर्ता रक्तग्रंथिरोगी होय, कृच्छ्रातिकृच्छ्र चांद्रायण व्रत करे, सोनेका दान दे । स्वगोत्रकी स्त्रीग-मनसे श्लीपदवाला रोगी होय । ब्राह्मणका भोजन चुरानेवाला विद्र-धिरोगी होय । अति अभिमानसे, स्नेहसे, भयसे जो धर्म छोड दे वह व्रणरोगवाला होवे । धर्मको जानकर जो अधर्म करे सो भगंदर रोगी होय, सुवर्ण, रत्न, धान्य और वस्त्रका दान करे ॥

मातृगामी भवेद्यस्तु लिङ्गं तस्य विनश्यति ॥

मातासे गमन करनेवालेका लिंग गल जावे, पूर्वोक्त दान करे । जीवघाती कुष्ठरोगी होता है । वस्त्र चुरानेवाला सफदकुष्ठी होता है, वह सान्तपनव्रत करे । गुरुपत्नीसे गमन करनेवाला दुष्ट चर्मवाला होवे, सान और वस्त्रका दान करे । मल मूत्र त्यागकर जो पवित्रता न करे और उसी तरह भोजन करने लगे उसके गुदारोग होवे । वह चान्द्रायण व्रत करे । दुष्टवाणी बोलनेवाला मुखरोगी होवे । दूसरेका भोग देखनेवाला नेत्ररोगी होय, वह चांद्रायण व्रत करे ॥

स्रवद्गर्भा भवेत्सा तु बालकं हन्ति या पुरा ॥

जो पूर्वजन्ममें बालकको मारे उसे गर्भस्रावका रोग हो । जो स्त्री

Aho ! Shrutgyanam

पिता गुरुकी स्पर्द्धा करे वह प्रदररोगवाली होवे, कृच्छ्र चांद्रायण व्रत करे । जो स्त्री पतिके मरनेपर ब्रह्मचर्यको बिगाडे उसके योनिरोग होवे । जो पूर्वजन्ममें दूधका चोरी करे उसके स्तनोंमें दूध नहीं होय, ब्राह्मणोंको दूध अन्नका दान देवे । जो अपने पतिको छोड परपुरुषकी इच्छा करे, उसके स्तनोंपर फोड होवें और भगसे रुधिर निकले वह अग्निके मंत्रसे होम करे और जप करे ॥

ज्योतिषद्वारा वंध्याका फल ।

सुतपतिरस्तगतो वा पापयुतः पापवीक्षितो वापि ।
सन्ततिबाधां कुरुते केन्द्रे पापान्विते चन्द्रे ॥ १ ॥

जिसके जन्मपत्रमें पंचमेश सूर्यके अस्त साथ होवे अथवा पापग्रहके साथ बैठा होवे अथवा पापवीक्षित होय उसके संतानकी बाधा होवे और पापयुक्त चंद्रमा केन्द्रमें बैठा होवे तो भी संतानकी बाधा होय । पंचमस्थानमें दो पापी वा तीन अस्त होकर बैठे होयँ तो स्त्री और पुरुष दोनों वंध्या होवें, परन्तु पूर्वोक्त ग्रह शत्रुवीक्षित होवें । इनकी शांतिके अर्थ बुध और शनिको पूजन करे ॥ १ ॥

स्वर्णधेनुदानविधि ।

सम्पूज्य देवान्स्वगुरुं च नत्वा वस्त्रादिभोज्यैः
परितोषयित्वा । आराधयित्वा विधिनाम्बिकां
च ततः पिबेच्छुद्धफलं घृतं च ॥ १ ॥

जो वंध्या होय वह देवता और गुरुको नमस्कार कर भोजन वस्त्रादिसे उनको प्रसन्न करे और विधिपूर्वक पार्वतीकी आराधना करे, १६ मासे सोनेकी गौ बनाकर दान करे, पीछे फलघृत जो घृताधिकारमें लिख आये हैं उसको पीवे । वंध्यादोष दूर करनेको

Aho ! Shrutgyanam

हरिवंशपुराण स्त्री पुरुष दोनो सुनें मंगलवारका व्रत करें अथवा भागवतमें लिखे पयोव्रतको विधिपूर्वक करें, अथवा पारसनाथकी दशमीका व्रत करें ॥ १ ॥

सर्वरोगशांति।

पवित्र घरमें पवित्र मिट्टी बिछावे और कुंड मंडप बनावे. उसमें नवग्रह, दश दिक्पाल, क्षेत्रपाल, और वास्तुदेव आदिको स्थापित कर पाद्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, चंदन, धूप, दीप, फल, नैवेद्य आदिसे पूजन करे और लोहेकी चार चार अंगुलकी चार कील मंत्रितकर चारों दिशाओंमें गाड देवे, घरके चारों कोनोंमें बलिदान देवे। मंत्र यह है—

ॐ ह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः नमः श्रीशान्तये अमुकस्य गृहे शान्ति धृतिं कांतिं बुद्धि लक्ष्मीं कुरु कुरु स्वाहा ॥

फिर इसी मंत्रसे जलके कलशको अभिमंत्रित कर सबको उसके जलसे छींटा देवे, पीछे गुरुओंको वस्त्रदान देवे, तिलक करे, दक्षिणा देवे तो सर्व रोग शांत होवें ॥

अष्टौ ज्वरा द्वादश वा कुत्रचित्पञ्चविंशतिः ।
वाताश्चतुरशीतिश्च गदाः क्वापि मतान्तरे ॥ १ ॥

ज्वररोग आठ प्रकारका है, अथवा १२ प्रकारकाभी है किसी आचार्यके मतसे पच्चीस प्रकारका है । वातरोग ८४ प्रकारका है, इसी प्रकार रोगसंख्या है । यह शार्ङ्गधरके प्रथमखंडमें लिखा है देखलेना चाहिये ॥ १ ॥

अथ प्रशस्तिश्लोकाः ।

सूरीश्वरः प्रवरसिंहशिरोवतंसः श्रीचंद्रकीर्तिगुरुपादयुगप्रसादात् । गम्भीरचारुतरवैद्यकशास्त्रसारं श्रीहर्षकीर्तिवरपाठक उद्दधार ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

विचार्य पूर्वशास्त्राणि हर्षकीर्त्याह्वसूरिभिः ।
किंचिदुद्धृतमस्माभिः रहस्यं वैद्यकार्णवात् ।
आत्रेयकश्चरकवाग्भटसुश्रुताश्विहारीतवृन्दकलि-
काभृगुभेडपूर्वाः । येमीनिदानयुतकर्मविपाकमुख्या-
स्तेषांमतंसमनुसृत्यमयाकृतोयम् ॥ ३ ॥ यथा
जनानामिह वाञ्छितार्थांश्चिन्तामणिः पूरयितुं समर्थः ।
तथैव सद्भेषजभूरियोगाञ्छ्रीयोगचिन्तामणिरापिपर्ति
॥ ४ ॥ यथा योगप्रदीपोऽस्ति पूर्वयोगशतं यथा ।
तथैवायं विजयतां योगचिन्तामणिश्चिरम् ॥ ५ ॥

नागपुरीययतिवरश्रीहर्षकीर्तिसंकलिते ।

वैद्यकसारोद्धारे कर्मविपाकाधिकारोऽयम् ॥

श्रीहर्षकीर्तिनिर्मित यह योगचिन्तामणिनामक ग्रन्थ जैसे चिन्तामणिनामकरत्न सब जनोंकी कामनाको पूर्ति करता है तैसेही वैद्य लोगोंकी अभिलाषाकी पूर्ति करनेवाला है. इसमें आत्रेय भेड आदि पूर्वाचार्योंका मत संगृहीत है.

इति श्रीदत्तरामचौबेकृतमाथुरीमंजूषाभाषाटीकायां
कर्मविपाकप्रकरणम् ॥ समाप्तश्चायं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
खेतवाडी-बंबई.

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam